किस्मत का
मनोविज्ञान

कोरियाई रहस्य
आकर्षित करने के लिए
धन और सफलता

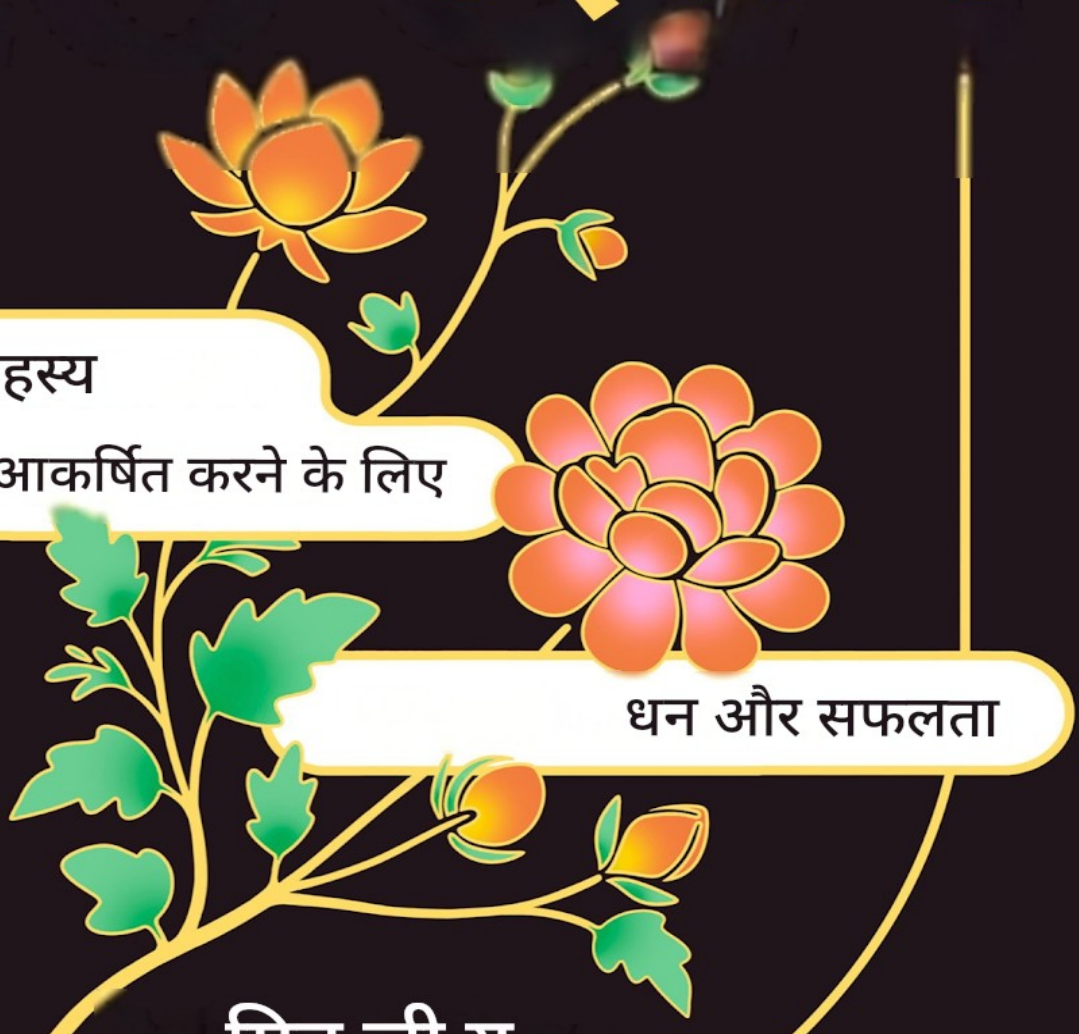

मिन जी यू

The Psychology of LUCK

Korean Secrets for Attracting Wealth and Success

Min Ji Yoo

Translated by Jinmyung Lee

Tarcher
an imprint of Penguin Random House
New York

पेंगुइन रैंडम हाउस एलएलसी का एक प्रकाशन 1745 ब्रॉडवे, न्यूयॉर्क, एनवाई 10019 penguinrandomhouse.com
मूल रूप से कोरियाई भाषा में सैम एंड पार्कर्स कंपनी लिमिटेड द्वारा 2023 में उनुई सिम्निहाक के रूप में प्रकाशित।
पहला अंग्रेजी संस्करण, संयुक्त राज्य अमेरिका में पेंगुइन रैंडम हाउस एलएलसी के एक प्रकाशन टार्चर द्वारा 2026 में प्रकाशित किया गया। कॉपीराइट © 2023 मिन जी यू द्वारा
अनुवाद का कॉपीराइट © 2026 जिनम्युंग ली के पास है। पेंगुइन रैंडम हाउस कॉपीराइट का सम्मान करता है और उसका समर्थन करता है। कॉपीराइट रचनात्मकता को बढ़ावा देता है, विविध आवाजों को प्रोत्साहित करता है, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करता है और एक जीवंत संस्कृति का निर्माण करता है। इस पुस्तक का अधिकृत संस्करण खरीदने और कॉपीराइट कानूनों का पालन करते हुए, बिना अनुमति के इसके किसी भी भाग का पुनरुत्पादन, स्कैनिंग या वितरण न करने के लिए धन्यवाद। आप लेखकों का समर्थन कर रहे हैं और पेंगुइन रैंडम हाउस को प्रत्येक पाठक के लिए पुस्तकें प्रकाशित करना जारी रखने में सक्षम बना रहे हैं। कृपया ध्यान दें कि इस पुस्तक के किसी भी भाग का उपयोग या पुनरुत्पादन कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकियों या प्रणालियों के प्रशिक्षण के उद्देश्य से किसी भी प्रकार से नहीं किया जा सकता है।
टार्चर पेंगुइन रैंडम हाउस एलएलसी का एक पंजीकृत ट्रेडमार्क है, और पत्ती के डिजाइन वाला टार्चर पेंगुइन रैंडम हाउस एलएलसी का ट्रेडमार्क है। कवर डिज़ाइन: राहेल वुई
कवर छवि: कैलेस्टिस/आईस्टॉक/गेटी इमेजेज़ प्लस पुस्तक का डिज़ाइन एंजी बूटिन द्वारा किया गया है, और इसे एस्टेले माल्मेड द्वारा ईबुक के लिए रूपांतरित किया गया है।
लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा के लिए आवेदन किया गया है। हार्डकवर ISBN 9798217176861
ईबुक ISBN 9798217176878
उत्पाद सुरक्षा और अनुपालन के लिए यूरोपीय संघ में अधिकृत प्रतिनिधि पेंगुइन रैंडम हाउस आयरलैंड, मॉरिसन चैंबर्स, 32 नासाउ स्ट्रीट, डबलिन D02 YH68, आयरलैंड, https://eu-contact.penguin.ie है। prhid_prh_7.4a_156335384_c0_r0

अंतर्वस्तु

इस संस्करण पर एक टिप्पणी
परिचय
कोई भी धनी व्यक्ति भाग्य को नकारता नहीं है निश्चितता का मनोविज्ञान
1: धन और भाग्य के छिपे रहस्य
इच्छाशक्ति का मनोविज्ञान
2: भाग्य पर विजय प्राप्त करना या भाग्य से पराजित होना आत्म-सुझाव का मनोविज्ञान
3: अवसर उन्हीं को मिलते हैं जो भविष्य को समझ सकते हैं। आत्म-परीक्षण का मनोविज्ञान
4: धनवान लोग हमेशा अपने भीतर ही उत्तर पा लेते हैं। रिश्तों का मनोविज्ञान
5: क्या पैसा स्वार्थी लोगों को पसंद करता है?
भावनाओं का मनोविज्ञान
6: भाग्य के पहिये से कुचलने से कैसे बचें
लेखक के बारे में

_ 156335384_

भाग्य के मनोविज्ञान के इस संस्करण पर एक टिप्पणी

भाग्य का मनोविज्ञान कोरिया में भाग्य की रहस्यमय और शक्तिशाली दुनिया का परिचय देता है, जैसा कि इसे समझा और व्यवहार में लाया जाता है। इस पुस्तक में, मिन जी यू बताती हैं कि भाग्य हमारे जीवन में कैसे भूमिका निभाता है और कैसे सही दृष्टिकोण और उपकरणों के साथ, आप अपने जीवन में भाग्य की शक्ति का उपयोग करके हर रूप में धन को आकर्षित कर सकते हैं।
मूल कोरियाई पाठ के इस अनुवाद को थोड़ा अनुकूलित और संपादित किया गया है ताकि गैर-कोरियाई दर्शकों के लिए अवधारणाओं को अधिक आसानी से समझा जा सके।

परिचय

कोई भी धनी व्यक्ति भाग्य को नकारता नहीं है

टेलीविजन प्रसारण की दुनिया में किस्मत और भाग्य का खेल चलता रहता है; एक वोट किसी का करियर बना या बिगाड़ सकता है। मैंने अपने करियर की शुरुआत में ही इस बात को महसूस कर लिया था, जब मैं एक ट्रॉट[*1] आइडल सिंगिंग शो पर काम कर रहा था जिसने पूरे कोरिया में धूम मचा रखी थी। प्रतिभागी, जो आमतौर पर देश भर के बाजारों और इवेंट हॉलों से टेलीविजन पर प्रस्तुति देते थे, बेसब्री से अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। उन्होंने ट्रॉट में "अगला बड़ा सितारा" बनने की उम्मीद से इस प्रतियोगिता में भाग लिया था। अगर उनकी उम्मीदें पूरी हो जातीं, तो वे गाना जारी रख पाते और अपने जुनून से जीविका भी कमा पाते। एक तरह से, यह प्रतियोगिता उनके लिए उस कठिन लड़ाई में दूसरा मौका थी जिसे वे अपने जीवन में पहले नहीं जीत पाए थे।
"अगला नंबर उसका है!"
दर्शकों ने अंतिम उम्मीदवारों का आकलन किया। मेरी नज़र में, एक उम्मीदवार इतना प्रतिभाशाली गायक और कलाकार था कि वह वोटों की गिनती में जीत या हार की परवाह किए बिना अपना भविष्य खुद बना सकता था। अंत में, उसी उम्मीदवार ने ट्रॉफी जीत ली। मैंने उसे शुरू से ही देखा था, मुझे पूरा

विश्वास था कि वह बहुत अच्छा प्रदर्शन करेगा, और मैंने अक्सर अपने सहयोगियों के साथ भी यही भावना साझा की थी।
जब मैंने टीवी प्रोड्यूसर के तौर पर काम शुरू किया, तो मेरे सहकर्मी अक्सर मुझसे कहते थे कि मेरी अंतर्ज्ञान शक्ति असाधारण है। ऐसा लगता था कि मैं किसी उभरते सितारे की प्रतिभा को उसकी पहली मुलाकात में ही पहचान लेती थी। मैं प्रतिभाशाली लोगों को लोकप्रिय होने से बहुत पहले ही पहचान लेती थी और उन्हें अपने शो में शामिल कर लेती थी। सिनेमैटोग्राफर से लेकर शो के लेखकों तक, हर कोई मेरे बारे में आपस में कहता था, "मानना पड़ेगा, उसकी अंतर्ज्ञान शक्ति अद्भुत है," या "शायद वह भविष्य देख सकती है।" वे जिस बात का वर्णन करने की कोशिश कर रहे थे, वह एक ऐसी अंतर्ज्ञान शक्ति थी जो किसी को देखते ही मुझे तुरंत महसूस हो जाती थी, एक ऐसी सहज प्रवृत्ति जो अपनी सादगी और सीधेपन में लगभग स्वाभाविक थी।
किसी के भविष्य के बारे में यह अंतर्ज्ञान मुझे बचपन से ही मौजूद था। भाग्य बताने की यह क्षमता मेरे परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही थी।

पुराने समय में, सरकारी पदों पर इल-ग्वान[*2] (ज्योतिषी) और जी-ग्वान[*3] (भूवैज्ञानिक) हुआ करते थे। एक ज्योतिषी शुभ तिथियों के बारे में सलाह देने के लिए पारंपरिक ज्योतिष और भविष्यवाणियों के ज्ञान का उपयोग करता था। भूवैज्ञानिकों की बात करें तो, लोग घर बनाने या कब्र खोदने जैसी चीजों के लिए उपयुक्त भूमि खोजने के लिए उनकी सेवाएं लेते थे। लोग उन्हें और आम तौर पर भविष्यवक्ताओं को अपने शहर का आध्यात्मिक नेता मानते थे। बेथलहम के तारे का अनुसरण करने वाले तीन ज्ञानी लोग सम्मानित ज्योतिषी और खगोलविद थे। वे नक्षत्रों के खगोलीय संदेशों की व्याख्या करके किसी देश के भविष्य की भविष्यवाणी भी करते थे। इन पदों को संभालने के लिए बहुत कम लोग योग्य थे, क्योंकि इसके लिए कई वर्षों के प्रशिक्षण और अध्ययन की आवश्यकता होती थी।
मेरे परिवार का एक ऐसा राज़ है जिसके बारे में कोई बात नहीं करता। हम सभी को अक्सर भविष्यसूचक सपने आते थे; मेरे पिता, मेरे बड़े भाई और मुझे। यह सब मेरी दादी की वजह से था। कई बार मेरी दादी लोगों के सपनों के ज़रिए

उनका भविष्य बता देती थीं या फिर लगातार खुद से कुछ बुदबुदाती रहती थीं, मानो कोई बांध टूट गया हो।
जैसा कि मैं इस पुस्तक में आपको दिखाऊंगा, किसी व्यक्ति के "भाग्य" का विश्लेषण करना, जो अदृश्य है, मानव इतिहास के सबसे पुराने व्यवसायों में से एक है। इस अमूर्त प्रथा के आधार का विश्लेषण और व्याख्या करना एक जटिल कार्य है। फिर भी, प्रसारण क्षेत्र में काम करते हुए, जहाँ मैंने लोगों की संपत्ति में रातोंरात लाखों का उतार-चढ़ाव देखा, भाग्य में मेरा विश्वास और भी पुख्ता हो गया। प्रसारण छोड़ने और अपना पूरा जीवन भाग्य के अध्ययन में समर्पित करने के बाद, मैंने एक और सबक सीखा: "भाग्य" और "धन" उतने ही अविभाज्य हैं जितना "मछली" "पानी" से। भाग्य को महत्व देने वाला व्यक्ति कभी गरीब नहीं होता। इसी प्रकार, भाग्य को नकारने वाला व्यक्ति कभी अमीर नहीं होता। बेशक, कुछ अपवाद भी थे, लेकिन कई लोगों के साथ काम करने और समय के साथ उनके भाग्य को देखने के बाद मेरा यही अनुभव रहा।
इसीलिए मैं लोगों को भाग्य पर विश्वास करने के लिए कहता हूँ। भाग्य उन लोगों के लिए बेकार है जो इस पर विश्वास नहीं करते। केवल अतार्किक आस्था ही आपको अतार्किक चीज़ों को समझने की शक्ति देती है, क्योंकि भाग्य आम आदमी के लिए अदृश्य है। यदि आप बेहतर भाग्य चाहते हैं या अपने लाभ के लिए इसे अधिकतम करना चाहते हैं, तो सबसे पहले आपको इस पर विश्वास करना होगा। दरअसल, आपको भाग्य पर विश्वास करने की भी आवश्यकता नहीं है। आप बस इसके प्रति सजग रहना शुरू कर सकते हैं। इससे आप अपनी इच्छाशक्ति का उपयोग करके अपने भाग्य को संवार सकेंगे और जब वह आपके जीवन में आए तो उसे लंबे समय तक बनाए रख सकेंगे। अपने जीवन में भाग्य के प्रति जागरूक रहकर आप अपनी वर्तमान स्थिति में सुधार कर सकते हैं और अपार धन-संपत्ति अर्जित कर सकते हैं, चाहे वह धन हो, प्रेम हो, सांसारिक सफलता हो या तीनों ही। भाग्य से भाग्य उत्पन्न होता है। यदि आप इसका अध्ययन करते हैं और इसका महत्व समझते हैं, तो आप इसे और अधिक आकर्षित करेंगे। यदि आप इसे नजरअंदाज करते हैं या इसके साथ बुरा व्यवहार करते हैं, तो यह आपसे दूर भाग जाएगा।
मैंने अपने जीवन में और कई अन्य लोगों के जीवन में भाग्य का अध्ययन किया है, और अब मैं उस मुकाम पर पहुँच गया हूँ जहाँ मैं अपने और दूसरों के भाग्य का आकलन अधिक यथार्थवादी ढंग से कर सकता हूँ। अब मैं समझता हूँ कि भाग्य के मामले में स्वर्ग से कोई चमत्कार नहीं होता। मैं अपने इस ज्ञान,

अपनी अंतरात्मा, अपने विविध जीवन अनुभवों और अपने सहज ज्ञान का उपयोग करके अपने प्रत्येक ग्राहक को उन आवश्यक बातों को समझाता हूँ जो भाग्य और नियति के रहस्य धन और सफलता को आकर्षित करते हैं।

मेरे काम से मुझे यह आश्चर्यजनक खोज मिली है कि भाग्य के प्रति अपने दृष्टिकोण और मानसिकता को बदलकर आप जीवन के किसी भी क्षेत्र में धनवान और सफल बन सकते हैं। कोई भी धनवान व्यक्ति भाग्य को नज़रअंदाज़ नहीं करता। यह पुस्तक धन को आकर्षित करने और भाग्य का सही उपयोग करने के रहस्यों को उन लोगों की कहानियों के माध्यम से समझाएगी जिनके साथ मैंने काम किया है या जिनका अध्ययन किया है, जिनमें आम लोग और कोरिया के कुछ सबसे धनी और प्रसिद्ध व्यक्ति शामिल हैं। उनके जीवन के माध्यम से यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि भाग्य का मनोविज्ञान हम सभी के जीवन में किस प्रकार भूमिका निभाता है।
नोट्स छोड़ें
*1 ट्रॉट एक प्रकार का लोकप्रिय कोरियाई संगीत है जो जापानी कब्जे (1910-1945) के दौरान उभरा। इसका नाम "लोमड़ी की चाल" से आया है, हालांकि दोनों शैलियों के बीच केवल दो तालों की समानता ही है। गिरावट के दौर के बाद, ट्रॉट दक्षिण कोरियाई दर्शकों के बीच लोकप्रियता हासिल कर रहा है। ट्रॉट आइडल शो के विजेता अक्सर बेहद सफल और आकर्षक गायन करियर बनाते हैं और अमीर हस्तियां बन सकते हैं।
*2 इल (दिन) ग्वान (अधिकारी) एक ऐसा पेशा है जो तीन राज्यों के काल (57 ईसा पूर्व-935 ईस्वी) से चला आ रहा है। इल-ग्वान खगोलीय पिंडों का अवलोकन करके राष्ट्र के भाग्य का पूर्वानुमान लगाने, समय और मौसम के बारे में सटीक जानकारी प्रदान करने के लिए जल घड़ी का प्रबंधन करने, कृषि नियोजन में सहायता के लिए कैलेंडर बनाए रखने आदि के लिए जिम्मेदार थे।
*3 जी (भूमि) ग्वान (अधिकारी) फेंगशुई के विशेषज्ञ थे जिन्हें सरकार द्वारा यिन/यांग और पंच ऊर्जाओं के सिद्धांतों के आधार पर भूमि और उसके भाग्य का आकलन करने और शाही मकबरे, महल, स्थानीय सरकारी कार्यालय आदि जैसे प्रमुख राष्ट्रीय स्थलों के स्थान का चयन और प्रबंधन करने के लिए नियुक्त किया गया था।

[redacted]

1

धन और भाग्य के छिपे रहस्य

भाग्य दुनिया में एक सक्रिय शक्ति है।
“लगता है उन्हें प्रति एपिसोड एक लाख डॉलर मिल रहे हैं। एक लाख डॉलर!” मुझे पता है। किसने सोचा होगा कि वे इतने मशहूर हो जाएंगे?
अरे वाह! वे कितने भाग्यशाली हैं!
जिस ब्रॉडकास्टिंग कंपनी में मैं काम करता था, उसने हाल ही में एक ड्रामा सीरीज़ का निर्माण किया, जिसमें एक मशहूर हस्ती को मुख्य भूमिका में लिया गया था। जैसे ही उन्हें चुना गया, अभिनेता और उन्हें मिलने वाले भुगतान के बारे में अफवाहें पूरे गलियारों में फैल गईं।
मैं, एक आम कर्मचारी जो कंपनी में वेतन पाता था, यह सोचकर हैरान था कि इतनी बड़ी रकम कितनी होगी। हर एपिसोड के लिए एक लाख डॉलर? सच में? मुझ जैसे जूनियर प्रोड्यूसर के लिए, जो घर से ज़्यादा रातें ऑफिस में बिताता था, इतनी बड़ी तनख्वाह का सपना देखना भी नामुमकिन था।
सच कहूँ तो, मुझे उतनी हैरानी नहीं हुई, हालाँकि मेरे साथियों को हुई थी। कोरिया में मनोरंजन जगत में धन का अंतर बहुत ज़्यादा है। एक तरफ़, खूब पैसा कमाने वाले सितारे हैं जो अपनी व्यस्त और ग्लैमरस ज़िंदगी जीते हैं।
दूसरी तरफ़, पर्दे के पीछे काम करने वाले वो लोग हैं जो खून-पसीना बहाकर उन ग्लैमरस शोज़ को बनाते हैं जिनसे इन सितारों को इतनी अच्छी कमाई मिलती है।
हमारी ज़िंदगी एक-दूसरे से बिलकुल अलग है।

मैंने कंधे उचकाए और खुद से कहा कि मुझे अपने जीवन पर ध्यान देना चाहिए। फिर भी, गलियारे में सुनी गई बातचीत ने मेरे अवचेतन मन में दबी एक बात को झकझोर दिया।

जब मैंने टेलीविजन प्रसारण में काम करना शुरू किया तब मेरी उम्र सत्ताईस साल थी। कंपनी में शामिल होते ही मुझे एक शो का ज़िम्मा सौंप दिया गया। मुझे अपना खुद का शो मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसके लिए आमतौर पर दस साल के अनुभव की आवश्यकता होती है। मशहूर हस्तियों, प्रबंधकों, स्टाइलिस्टों, कैमरा ऑपरेटरों, लेखकों और दर्जनों अन्य कर्मचारियों को निर्देशित करना एक नौसिखिए के लिए बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी थी। वह नौकरी पाना आसान नहीं था, इसलिए जब मैंने कड़ी प्रतिस्पर्धा के बावजूद वह पद हासिल किया, तो मुझे सार्वजनिक रूप से बधाई दी गई और मेरी प्रतिष्ठा बढ़ गई।
लेकिन अन्य नौकरियों की तरह, इस नौकरी का भी एक अप्रिय पहलू था। मैं अपनी नई नौकरी में इतना व्यस्त हो गया था कि कई दिनों तक घर नहीं जा पाता था। मुझे अक्सर अपने सप्ताहांत भी छोड़ने पड़ते थे। मैं एक पहिए पर दौड़ने वाले चूहे की तरह था। इस एक पहलू में, एक निर्माता का जीवन एक सेलिब्रिटी से अलग नहीं है: हम दोनों पूरी तरह से शो के शेड्यूल पर निर्भर होते हैं। शुरुआत में सब कुछ नया और दिलचस्प था। मैं सीखने के लिए उत्सुक था और निर्माता के रूप में अपना करियर शुरू करने के लिए उत्साहित था। मुझमें दृढ़ इच्छाशक्ति और ऊर्जा का ऐसा उभार था कि मुझे लगा कि मैं कुछ भी हासिल कर सकता हूँ। मैंने काम को काफी अच्छे से किया और बहुत कुछ हासिल किया। लेकिन एक साल बाद, मुझे निराशा और एक नई तरह की लालसा महसूस होने लगी। आखिर वजह क्या थी? मशहूर हस्तियाँ और निर्माता दोनों ही चकाचौंध भरी रोशनी में अथक परिश्रम करते हैं, लेकिन जो चीज हमें सबसे ज्यादा अलग करती थी, वह थी पैसा।
हालांकि हम दोनों एक ही साउंडस्टेज पर दिन-रात मेहनत कर रहे थे, लेकिन मशहूर हस्तियां हम जैसे पर्दे के पीछे काम करने वालों से कहीं ज़्यादा पैसा कमा रही थीं। मैं समझता हूँ कि कुछ लोग इसे बचकाना शिकायत मान सकते

हैं। आख़िरकार, प्रसारण कंपनियाँ भी किसी और कार्यस्थल की तरह ही होती हैं, और निर्माता तो सिर्फ़ कर्मचारी होते हैं। कुछ लोग कह सकते हैं, "अगर आपको अमीर बनना ही था, तो दूसरों के लिए काम करने के बजाय अपना खुद का व्यवसाय क्यों नहीं शुरू किया?" लेकिन अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना एक बड़ा जोखिम है: एक हज़ार डॉलर का निवेश किसी एक व्यक्ति के लिए पूरी तरह से विफलता साबित हो सकता है, जबकि दूसरा व्यक्ति अपने शुरुआती निवेश का सौ गुना कमा सकता है। क्यों?
मनोरंजन जगत में काम करते हुए, मैंने धन, सफलता और भाग्य की अप्रत्याशित शक्तियों को प्रत्यक्ष रूप से देखा। मैंने एंड्रयू के बारे में सुना, जो एक के-पॉप आइडल है जिसने गंगनम के सबसे महंगे इलाकों में से एक में जमीन खरीदी, या ईवा के बारे में, जो एक अभिनेत्री है जिसने हान नदी के नज़ारे वाले एक बहुउद्देशीय भवन में एक आलीशान अपार्टमेंट खरीदा। वे सभी मेरी ही उम्र के थे और कभी-कभी तो मुझसे छोटे भी थे। उनकी दौलत और सफलता ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया:
एंड्रयू ने इतनी जल्दी इतना पैसा कैसे कमा लिया?
मैंने तो ईवा को आजकल ज्यादा देखा भी नहीं है। वो इतनी अमीर कैसे हो
गई?
इतने सारे पैसे होने के बावजूद वे अभी काम करना बंद कर सकते हैं और
फिर भी आराम से रह सकते हैं, है ना?
मैंने उनके बोलने के तरीके, उनके रवैये, उनकी आदतों और उनके जीवन शैली पर ध्यान देना शुरू किया। मुझे लगा कि अगर मैं उन्हें ध्यान से देखूँ, तो शायद मुझे पता चल जाए कि वे दूसरों से किस तरह अलग हैं, किस चीज़ ने उन्हें इतनी दौलत दिलाई है। हो सकता है कि उन्होंने किसी बेहद महत्वपूर्ण, गुप्त जानकारी की बदौलत अपनी दौलत बनाई हो। हो सकता है कि उनके पास निवेश करने का कोई कारगर तरीका या तकनीक हो। मेरा दिमाग एक ऐसे सरल जवाब की तलाश में लगा हुआ था जिसे मैं व्यवहार में ला सकूँ।
लेकिन मुझे इसका कोई सीधा जवाब नहीं मिला। वे वे थे; मैं मैं था। वे भी मेरी तरह ही कम सोते थे और मेरी तरह ही समर्पित थे। ज़ाहिर है, वे काम के बाहर अपने समय का बेहतर उपयोग कर रहे थे।
अंततः, ड्रामा टीवी के एक एपिसोड के लिए एक लाख डॉलर पाने वाले सेलेब्रिटी और मामूली कमाई करने वाले प्रोड्यूसर, दोनों ही मेहनती लोग

हैं जो अपने दैनिक जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश कर रहे हैं। शायद मैंने गहराई से नहीं सोचा था, लेकिन मुझे अमीर और गरीब के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं दिखा। जैसे ही मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा, गलियारे में सुनी गई बातचीत मेरे कानों में गूंज उठी।
वे कितने भाग्यशाली हैं…

* * *

हाँ, किस्मत! बस यही बात थी! मुझे पूरा यकीन था। किस्मत ही वह वजह थी जिसके कारण कुछ लोग उतनी ही मेहनत और लगन से इतना कुछ हासिल कर लेते थे। पूंजीवाद की दुनिया में, जहाँ जोखिम बहुत अधिक होता है, वहाँ मेहनत या योग्यता से कहीं अधिक भाग्य का महत्व होना चाहिए। यही वह कुंजी होनी चाहिए जो लाखों डॉलर के वेतन और आलीशान घरों का ताला खोलती है।
मनोरंजन जगत में काम करते हुए, मैंने लगातार ऐसे लोगों को देखा है जो रातोंरात मशहूर हो जाते हैं जबकि दूसरे असफल होकर कंगाल हो जाते हैं। यह देखकर सबसे संशयवादी और तर्कसंगत व्यक्ति भी भाग्य के बारे में अपने विचार पर पुनर्विचार करने को मजबूर हो जाता है। कोई ऐसी शक्ति रही होगी जिसे मैं देख नहीं सकता, जिसने एक ही समय में डेब्यू करने वाले दो उभरते हुए के-पॉप कलाकारों के करियर पथ को इतना अलग बना दिया कि उनमें से केवल एक ही अपने पहले ही स्क्रीन अपीयरेंस के बाद स्टार बन पाया। मुझे अब समझ आने लगा है कि इसके पीछे भाग्य के अलावा और कोई कारण नहीं हो सकता।
मनोरंजन जगत में, एक कॉमेडियन मनोरंजन कंपनियों की लॉबी में काम की तलाश में भटकने से लेकर रातोंरात अपनी लोकप्रियता आसमान छूते देख सकता है, जहाँ शो उसके लिए होड़ मचाते हैं। यही हाल मैंने एक मशहूर गायक को किसी घोटाले में फंसने के बाद अचानक बहिष्कृत होते भी देखा है। इस दुनिया में, जीवन के चरम रूप, उतार-चढ़ाव, अच्छाई-बुराई, सब कुछ संभव है। एक आइडल शो के निर्माता के रूप में, मैंने भाग्य के इन नाटकीय बदलावों को करीब से देखा है।
एक प्रतियोगी, जिसने अपने प्रदर्शन में ज़्यादा शोर-शराबा नहीं मचाया, फिर भी हर हफ्ते उसके प्रशंसकों की संख्या बढ़ती गई। वहीं, एक अन्य प्रतियोगी, जिसे सभी अंतिम विजेता मान रहे थे, एक छोटी सी गलती के कारण शो से बाहर हो गया और गुमनामी में खो गया। अगर किसी एक प्रतियोगी का प्रदर्शन

एक हफ्ते सनसनीखेज बन जाता था, तो वह दूसरे के प्रदर्शन को भी फीका कर सकता था, चाहे वह प्रतियोगी कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो। यह प्रतियोगिता एक युद्धक्षेत्र की तरह थी, जहाँ हर दिन आश्चर्यों से भरा होता था। यह अनुमान लगाना असंभव था कि आगे क्या होगा। जैसे-जैसे मैंने शो देखा और प्रतियोगियों को हर हफ्ते आगे बढ़ते देखा, मेरे मन में यह सवाल उठने लगा: क्या प्रतिभा ही एकमात्र कारक है जो किसी प्रतियोगी के भाग्य का निर्धारण करती है? या यह मानना उचित है कि जो फाइनल तक पहुँचे हैं, उन्होंने बाहर होने वालों की तुलना में अधिक प्रयास किया है? मुझे यकीन था कि बाहर होने वालों में कुछ ऐसे प्रतियोगी भी रहे होंगे जो अधिक प्रतिभाशाली और समर्पित थे। प्रतिभा ही सब कुछ नहीं थी, लेकिन भाग्य भी नहीं। यही वास्तविकता ने मुझे सिखाया है।
जीवन में समय का ही खेल है। प्रतिभा होना ही काफी नहीं है। आपको ऐसे युग में जन्म लेना होगा जब आपकी प्रतिभा और मूल्य को पहचाना जाए!

* * *

रियलिटी शो पर काम करते हुए, मैंने भाग्य के विषय पर गहराई से सोचना शुरू किया। अप्रत्याशित रूप से, इस पर विचार करने से मुझे बहुत शांति मिली। भले ही भाग्य का ब्रह्मांड अदृश्य है, फिर भी मुझे यह भौतिक अस्तित्व की अक्सर मनमानी और कठिन परिस्थितियों की तुलना में समझना कहीं अधिक आसान लगता है। मुझे ऐसा लगा जैसे घना कोहरा छंट गया हो।
जैसे-जैसे भाग्य को समझने में मेरी रुचि बढ़ती गई, मैंने इस बारे में सोचना बंद कर दिया कि मैं बहुत पैसा क्यों नहीं कमा रहा था और अलग-अलग सवाल पूछना शुरू कर दिया:
क्या मैं भाग्य की शक्ति से अनभिज्ञ हूँ?
क्या भाग्य चुनिंदा लोगों को ही चुनता है?
मैं यह सोचे बिना नहीं रह सका कि अमीरों के भाग्य के क्या रहस्य होते हैं। कुछ लोगों के लिए भाग्य तो स्वाभाविक होता है, लेकिन दूसरों के लिए यह एक ऐसी चीज है जिसकी वे दिल से कामना करते हैं। हालांकि आप कह सकते हैं कि भाग्य किसी को भी मिल सकता है, लेकिन मुझे यह भी स्पष्ट लगता है कि कुछ लोग कभी भाग्यशाली नहीं होते।

सौभाग्य को आकर्षित करने और धन-संपत्ति बढ़ाने के लिए क्या किया जाता है? किसी व्यक्ति के भाग्य को धनी व्यक्ति के भाग्य में बदलने का सबसे तेज़ तरीका क्या है? मैं यह जानने के लिए बेचैन था, लेकिन मुझे ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा। जब मुझे बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी, तभी रहस्य खुल गया।
“आपकी संपत्ति बढ़ेगी”
एक दिन आप अपनी संपत्ति बढ़ाएंगे। फिर आप इसे और भी अधिक बढ़ाएंगे।

बच्ची की आंखें कांच के मोतियों की तरह चमक रही थीं, मानो आने वाले जीवन के सभी पहलुओं की झलक दिखा रही हों। परिवार की बड़ी-बुजुर्ग महिला ने बच्ची को कंबल में लपेटे हुए उसके भाग्य के बारे में फुसफुसाते हुए ये शब्द कहे। उस समय किसी को भी उनके कहने का अर्थ समझ नहीं आया।
मेरी दादी को असाधारण अंतर्दृष्टि प्राप्त थी। साजू[*1] और मुख-पठन[*2] में उनका ज्ञान कस्बे के निवासियों के बीच सर्वविदित था, जो नियमित रूप से पारिवारिक मामलों में उनसे परामर्श लेते थे। वे सलाह के लिए उनके पास आते थे, और जब उनका कोई अप्रत्याशित कथन उनके जीवन की घटनाओं से मेल खाता था, तो वे इसे एक प्रकार की भविष्यवाणी मानते थे। वे कृतज्ञता व्यक्त करते और अधिक समर्पण के साथ अपने दैनिक जीवन में लौट जाते थे। अपने समय में, मेरी दादी और उनके जैसी अन्य महिलाएं अपने इस वरदान के बारे में खुलकर बात नहीं कर सकती थीं। हालांकि कस्बे के अन्य निवासियों के लिए उनका महत्व कभी औपचारिक रूप से स्वीकार नहीं किया गया, फिर भी उनकी उपस्थिति कस्बे की रक्षा करने वाले एक प्राचीन वृक्ष के समान थी। मेरी दादी को मानव जीवन के भाग्य में विशेष रुचि थी: क्या सौभाग्य लाता है या दुर्भाग्य? क्या आशीर्वाद लाता है या विपत्तियाँ? किस प्रकार का जीवन समृद्धि और शांति प्रदान करता है? उन्हें हमेशा इस प्रकार के प्रश्नों में रुचि रहती थी और वे अपने पड़ोसियों के जीवन में इन बातों के घटित होने का अवलोकन करती थीं, पूछे जाने पर सलाह देती थीं और अक्सर बहुत ही मूल्यवान सलाह प्रदान करती थीं।
मेरी माँ सोचती थी कि मेरी दादी की अंतर्ज्ञान शक्ति आम लोगों से कहीं बेहतर थी। उन्हें इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं थी कि गाँव के ढोल की आवाज़ सुनकर मेरी दादी क्यों दौड़कर घर से बाहर निकल जाती थीं या गाँव वालों के उनसे मिलने आने पर वह उन्हें क्या बताती थीं। मेरी माँ हर बात को तर्क से

समझाने की ज़िद करती थीं। यहाँ तक कि जब मेरी दादी ने कोई बात कही और वह अगले ही दिन सच हो गई, तब भी मेरी माँ ने इसका कारण यह बताया कि मेरी दादी ने इतना लंबा जीवन जी लिया था कि ठोस और तर्कसंगत जानकारी के बिना भी वह सटीक अनुमान लगा सकती थीं।
मेरे जन्म के बाद मेरी दादी का रवैया बदल गया। जैसे-जैसे साल बीतते गए और मैं बड़ी होती गई, मेरी अपने भविष्य के बारे में जिज्ञासा बढ़ती गई। मैं दादी से इसके बारे में पूछती, और वह मुझे प्यार से डांटते हुए कहतीं: “बस करो। बहुत जल्दी बहुत कुछ जानने का कोई फायदा नहीं है। हर चीज का एक प्राकृतिक क्रम होता है और हर चीज का एक सही समय होता है। मैं तुम्हें बस इतना ही बताऊंगी: तुम्हारा भाग्य तुम्हारे साथ बढ़ेगा।”
मैंने बिना कुछ कहे उसकी बात सुनी, और सोचती रही कि उसका मतलब क्या है।

* * *

मेरी दादी का देहांत तब हुआ जब मैं माध्यमिक विद्यालय में थी। उनकी मृत्यु के बाद, मुझे भविष्यसूचक सपने आने लगे; मुझे उनकी कुछ क्षमताएँ विरासत में मिली थीं, भले ही मैं उन्हें अभी तक समझ नहीं पाई थी। यानी, मैं अपने माता- पिता की तरह ही थी।
मैं बहुत कुछ अनुभव करना और सीखना चाहता था। लोगों को ध्यान से देखने की मेरी समझ विकसित हो गई। बात यहीं खत्म नहीं हुई। मैं दुनिया को चलाने वाले वास्तविक जीवन के मुद्दों से भी मोहित हो गया। जब मेरी उम्र के दूसरे बच्चे यह सोच रहे थे कि बड़े होकर वे कौन सी नौकरी करेंगे या किस तरह के व्यक्ति से शादी करेंगे, तब मैं खुद से ऐसे सवाल पूछ रहा था जिनका मेरी वर्तमान स्थिति से कोई लेना-देना नहीं था।
बड़े होकर आप क्या बनना चाहते हैं?
मैं अमीर बनना चाहता हूँ। मैं बहुत सारा पैसा कमाऊँगा।
"क्यों?"
“क्योंकि मैं सचमुच अमीर बनना चाहता हूँ।”
आप इसे कैसे संभालेंगे?
“खैर, मुझे पक्का तो नहीं पता, लेकिन किसी न किसी तरह मुझे सफल होना ही है। मेरी दादी ने मुझे यही बताया था। मैं अपनी दौलत बढ़ाऊंगा।”
मैं सफल होना चाहता था और अपनी जेब पैसों से भरना चाहता था।

मेरी बेसब्री और जिज्ञासा ने मुझे बाहरी दुनिया की ओर खींच लिया। मैंने एक फैशन का व्यवसाय शुरू किया और फिर एक कैफे खोला। कॉलेज में दाखिला लेने तक मेरी मासिक आय कई हजार डॉलर हो गई थी, जिससे मैं कुछ पैसे बचा पाती थी। जहाँ मेरे दोस्त पढ़ाई में व्यस्त थे और नौकरी के लिए अपना रिज्यूमे बना रहे थे, वहीं मेरा पूरा ध्यान अपने पास मौजूद पैसों से और भी अधिक पैसा कमाने पर था।

मुझे पूरे तेरह साल लगे। बुखान पर्वत की तलहटी में, प्योंगचांग-डोंग में स्थित छह मिलियन डॉलर की कीमत वाले एक विशाल हवेली का मालिक बनने में तेरह साल। लोग मुझसे पूछते हैं कि मैं इतने आलीशान घर में कैसे रहने लगा। जब भी मैं ऐसे सवाल सुनता हूँ, मैं बस मुस्कुराता हूँ और बिना किसी झिझक के कहता हूँ: "मैं भाग्यशाली था।"
जैसे कोई टॉपर कहता है कि उसने कक्षा में जो सीखा उस पर ही ध्यान केंद्रित किया, लेकिन यह नहीं बताता कि उसने स्कूल के बाद कितनी पढ़ाई और ट्यूशन भी की, वैसे ही अधिकांश सफल लोग भी आपको ऐसा ही जवाब देंगे और कहेंगे कि यह सब किस्मत की वजह से है। जो व्यक्ति किस्मत पर विश्वास नहीं करता, वह शायद कहेगा, "ठीक है," और इस बारे में दोबारा नहीं सोचेगा। लेकिन जो व्यक्ति आमतौर पर किस्मत के प्रति सजग रहता है और उस पर दृढ़ विश्वास रखता है, वह यह जानना चाहेगा कि उस व्यक्ति ने ऐसा क्या किया जिससे वह इतना भाग्यशाली हुआ। अगर हम दोनों ने सौ प्रतिशत मेहनत की, लेकिन मुझे पाँच सौ डॉलर मिले और उसे दो हज़ार डॉलर, तो क्या यह इस बात का स्पष्ट संकेत नहीं है कि इसमें किस्मत का हाथ था?
भाग्य के अपने अध्ययन और कार्य में मैंने पाया है कि यह हवा की तरह स्वतंत्र रूप से यात्रा करता है और पानी की तरह सहजता से बहता है। भाग्य अदृश्य है, उन अतार्किक चीजों में से एक है जिन्हें केवल अंधविश्वास ही समझने में सहायक होता है। यदि आप बेहतर भाग्य चाहते हैं, या भाग्य से लाभ उठाना चाहते हैं, तो आपको भाग्य के अस्तित्व में यथासंभव विश्वास करना होगा। वास्तव में, यदि आप भाग्य में विश्वास नहीं करते हैं तो भी कोई बात नहीं। आप भाग्य के प्रति सचेत रहकर शुरुआत कर सकते हैं। इसके विचार के

प्रति जागरूक होने से आप अपनी इच्छाशक्ति को सक्रिय कर पाएंगे और अपने जीवन में हर चीज का विश्लेषण कर पाएंगे, अपने दृष्टिकोण से लेकर अपनी आदतों और अपने रिश्तों तक, ताकि आप अपने भाग्य को बेहतर बनाने और उसे अपने जीवन में अधिक से अधिक आकर्षित करने के लिए आवश्यक बदलाव कर सकें।
जब प्योंगचांग-दोंग में सूरज उगता है और अपने प्रकाश से मेरे घर को रोशन करता है, तो मेरे बगीचे में बहती हुई छोटी नदी मेरी निगाहों को घाटी की ओर ले जाती है, मानो समय का अटूट प्रवाह हो। हर सुबह, मेरी आँखों के सामने एक नया दिन खुलता है, और मैं देख सकती हूँ कि मेरी दादी के शब्द सच हो रहे हैं। मैंने सचमुच अपनी दौलत बढ़ाई है, और मैं रुकने वाली नहीं हूँ। मैं यह भी सीखना चाहती हूँ कि दूसरे लोग धन और सफलता को कैसे आकर्षित करते हैं। जीवन का पुनर्भरण
मेरे मन में यह बात पक्की है कि अगर 'A' है, तो 'B' भी अवश्य आएगा। 1 + 1 का परिणाम 2 होता है, बस। व्यावहारिक और तर्कसंगत होने के कारण, बचपन से ही मेरी गणित में अच्छी समझ रही है। मैं आसानी से समझ जाता था कि लोगों को क्या पसंद है और क्या उन्हें आकर्षित करता है। लोगों की पसंद के बारे में मेरी यही समझ टेलीविजन में काम करते समय या व्यवसाय चलाते समय मेरे बहुत काम आई। मेरा लक्ष्य लोगों के दिलों को छूना था, और मेरे शो और उत्पाद इसमें सफल रहे।
इस सफलता की कुंजी मेरे परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही अंतर्ज्ञान शक्ति थी। उस तीक्ष्ण बुद्धि के कारण ही मैं एक ऐसी प्रतिभा विकसित कर पाया जिसने मुझे ऐसे शो बनाने में मदद की जो व्यापक दर्शकों को पसंद आए। मैं यह जानने के लिए उत्सुक हो गया कि लोग किसी के बारे में यह कहकर क्या कहना चाहते हैं कि वह "चीजों को महसूस करने में माहिर है" या "उसकी अंतर्ज्ञान शक्ति अच्छी है"। आपके विचार से क्या अधिक महत्वपूर्ण है: जो दिखाई देता है या जो अदृश्य है? आपके अनुसार दुनिया पर किसका अधिक प्रभाव है? आप पर किसका अधिक प्रभाव है? मुझे लगता है कि सबसे प्रासंगिक प्रश्न यह है: आप किस पर अधिक विश्वास करते हैं?
मंच पर गाने और नाचने वाले कलाकारों की प्रतिभा, दर्शकों का ध्यान खींचने वाले पियानोवादक की मधुर धुन, पर्दे के माध्यम से दर्शकों तक पहुँचने वाला अभिनेता का करिश्मा, और किसी ऐसे भौतिक विज्ञानी की प्रतिभा जो कोई नया सिद्धांत विकसित करता है—इनमें से कोई भी चीज़ दिखाई नहीं

देती। भीड़ का उत्साह या उनकी भावनाओं का उतार-चढ़ाव भी अदृश्य होता है, लेकिन आप इसे अपनी इंद्रियों से महसूस कर सकते हैं। मुझे एहसास होने लगा कि एक "अंतर्ज्ञान" या "भावना" भी कुछ इसी तरह की होती है—एक अदृश्य चीज़ जिसमें अपार शक्ति हो सकती है। जब मैंने अपनी इंद्रियों को पूरी तरह से सचेत रखने पर ध्यान केंद्रित किया और उनसे जुड़ा रहा, तो मैं अपने हर प्रयास में सफल हो सका। इन शुरुआती सफलताओं ने बाद में मुझे एक टीवी निर्माता के रूप में एक सफल करियर बनाने में मदद की। मेरा बनाया हर शो हिट रहा। मेरी उपलब्धियाँ लगभग अमानवीय लग रही थीं, मेरे आस-पास के सभी लोगों को, यहाँ तक कि मुझे भी, आश्चर्यचकित कर रही थीं। ऐसा लग रहा था कि मेरे सामने सफलता का एक खुला रास्ता है। लेकिन वह सारी खुशी और उत्साह क्षणिक था।
जल्द ही मेरी नई परियोजनाएं अचानक विफल होने लगीं, ठीक उसी समय जब उन्हें सफलता की ओर बढ़ना चाहिए था। मैं खुद ही अपना सबसे बड़ा दुश्मन बन गया और अधीरता और दृढ़ता की कमी से प्रेरित होकर आत्मघाती निर्णय लेने लगा।
बाद में, मैंने जिन अन्य टीवी स्टूडियो में काम किया, उनमें से एक में भी ऐसा ही हुआ। उस समय, प्रसारण का भविष्य उज्ज्वल था। चूंकि मैं रिकॉर्ड पर सबसे कम उम्र का निर्माता था, इसलिए यह भी पूरी संभावना थी कि मुझे किसी दूसरी कंपनी से और भी बेहतर नौकरी का प्रस्ताव मिलेगा। फिर भी, मैंने वहाँ ठीक दो साल काम किया और फिर बिना किसी पछतावे के नौकरी छोड़ दी।
किसी तरह मुझे नया कारोबार शुरू करने का समय मिल गया। मैंने अपने खाली समय में एक प्रकाशन गृह स्थापित किया और ऐसी किताबों पर काम किया जो बेस्टसेलर बन गईं। मैंने प्रकाशन उद्योग में एक मजबूत मुकाम हासिल कर लिया, पारंपरिक प्रकाशकों द्वारा इस्तेमाल न की जाने वाली नवीन बिक्री और आक्रामक विपणन रणनीतियों के माध्यम से राजस्व अर्जित किया। इस बार भी सफलता की खुशी ज्यादा देर तक नहीं टिकी। मैं बेचैन था, और मुझे पता नहीं था कि क्यों।
मैंने एक और क्षेत्र में कदम रखा और कोरिया के सबसे सफल प्रसारण स्टेशनों में से एक द्वारा संपर्क किए जाने के बाद टेलीविजन की दुनिया में वापस आ गया। मुझे पहले से ऊंचे पद पर नियुक्त किया गया और जैसे-जैसे मैंने सफलता की सीढ़ियां चढ़ीं, अपने विचारों को लागू किया और उन्हें साकार

किया, मैं लगातार सफलताओं की ओर बढ़ता गया। फिर भी, मेरे भीतर एक ऐसी भावना थी जो हर पल मुझे कमजोर करती हुई प्रतीत होती थी, और मैं उसके आगे बेबस था।

* * *

मैं हमेशा से खुद को बेहद तर्कसंगत और समझदार इंसान समझता था, लेकिन इस बार तो मुझे खुद को समझने में भी मुश्किल हो रही थी। शायद मैं अपना मानसिक संतुलन खो रहा था। कुछ तो मुझे परेशान कर रहा था, जबकि मैं हर काम में सफलता पा रहा था। मुझे खुश होना चाहिए था, लेकिन मैं खुश नहीं था।
क्या मैं बर्नआउट का शिकार हो रहा था? क्या मैं अपने मासिक परफॉर्मेंस बोनस से नाखुश था? नहीं, ऐसा नहीं था। फिर भी, मुझे लग रहा था कि कुछ गड़बड़ है, जैसे मैं जंगल में खो गया हूँ। मेरे शो जितने लोकप्रिय होते गए, यह भावना उतनी ही प्रबल होती गई। जल्द ही यह एक निश्चित तथ्य बन गया। एक दिन जब मैं विशेष रूप से अजीब महसूस कर रहा था, मैंने अपने सुपरवाइजर से कहा: मैं अपना इस्तीफा देना चाहता/चाहती हूं।
“लेकिन तुम तो बहुत अच्छा कर रहे थे! आखिर बात क्या है?”
आखिर समस्या क्या थी? मुझे हमेशा ऐसी चीज़ क्यों फेंकनी पड़ती थी जिसकी दूसरों को बहुत ज़रूरत होती थी? मैं यह नहीं समझा पा रही थी कि मुझे हर अहम मौके पर सब कुछ क्यों बिगाड़ना पड़ता था, जबकि ऐसा करने के लिए कोई मजबूरी नहीं थी। यह सिर्फ नौकरी छोड़ने जैसे महत्वपूर्ण फैसलों की बात नहीं थी। मेरे जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी ऐसे अनगिनत उदाहरण थे जिन्हें गिनना मुश्किल है। मैं हर छोटी-बड़ी चीज़ को, ठीक उसी समय बर्बाद कर देती थी जब थोड़ी सी और मेहनत से ऐसे नतीजे मिल सकते थे जिन पर हर कोई ईर्ष्या करता।

* * *

जब मैंने अपने कार्यस्थल से इस्तीफा देने की घोषणा की, तो मेरे सहकर्मियों की प्रतिक्रिया एक जैसी थी: सभी ने मुझे ऐसा करने से रोकने की कोशिश की। जब मैंने घर पर सबको यह खबर सुनाई, तो मेरे परिवार में हलचल मच गई। मेरे माता- पिता ने मेरी नाराज़गी को क्षणिक समस्या बताकर खारिज कर दिया और मुझे बस धैर्य बनाए रखने की सलाह दी। मेरे प्रोफेसरों और सलाहकारों ने भी मेरे अचानक इस्तीफे का कड़ा विरोध किया।

इन सब के बावजूद, मैं चली गई। क्योंकि मैंने अपना दिलो-जान अपने काम में लगा दिया था, मुझे कोई पछतावा नहीं था। मैं मानो किसी वश में होकर चली गई थी, बिना आगे के कदमों के बारे में सोचे। मुझे किसी की कोई बात सुनाई नहीं दे रही थी। मेरा दिमाग विरोध में चीख रहा था, जबकि मेरा दिल आश्वस्त था कि मैंने सही फैसला लिया है।

* * *

आगे क्या करना है, इस बारे में सोचते हुए मुझे अपनी दादी की कही बात याद आ गई, या यूं कहें कि उनके शब्द बार-बार मेरे दिमाग में गूंज रहे थे: "तुम्हारी संपत्ति बढ़ेगी।"
उसका क्या मतलब था? शायद उसका मतलब यह था कि मैं न केवल अपनी संपत्ति बढ़ाऊँगा, बल्कि "संपत्ति" की व्यापक अवधारणा को भी विकसित करूँगा, चाहे वह मेरी हो या किसी और की। शायद यही वह चीज़ थी जिसमें मेरी वास्तव में रुचि थी।
किसी तरह, मुझे अपनी दादी से दूसरों के भाग्य का पूर्वाभास करने की क्षमता विरासत में मिली थी। तर्क के आधार पर मैं यह नहीं समझा सकती कि यह विरासत मुझे कैसे मिली या यह कैसे काम करती है। फिर भी, मुझे एक बात का पूरा यकीन था: रहस्यमय संयोग और समकालिकताएँ, ऐसी चीज़ें जिन्हें समझाया नहीं जा सकता, मेरे जीवन में लगातार घटित होती रहती थीं। मैंने अपनी दादी द्वारा वर्णित "अदृश्य दुनिया" को स्वीकार करना शुरू किया और उसके बारे में अधिक जिज्ञासु हो गई, और जैसे-जैसे मैंने अपने और दूसरों के भाग्य पर काम करना शुरू किया, वह मेरे सामने खुलती चली गई।
मेरे सहकर्मी मेरे जाने से नाराज़ थे। वे अभी भी एक ऐसे समाज में जी रहे थे जहाँ दिखावे को बहुत महत्व दिया जाता था, और मेरे जाने से उन्हें अपने काम के बारे में सवाल उठने लगे। मेरे मन में भी अपने काम को लेकर ऐसे ही सवाल थे, लेकिन उस दुनिया से बाहर निकलते ही मुझे शांति का अनुभव हुआ। मैंने सोचा: आखिरकार अपनी क्षमता को साकार करने का समय आ गया है!
सच कहूँ तो, मुझे कोई फर्क महसूस नहीं हुआ। मेरी दिनचर्या पहले जैसी ही थी: मैं अपने नियमित समय पर सोता था। मैं अपने नियमित समय पर उठता था, बस फर्क इतना था कि मैं "किस्मत" और पैसे के व्यापक अर्थ को समझने लगा था, और रोज़मर्रा की भागदौड़ का मुझ पर कोई असर नहीं रह गया था। मैंने पाया कि मैं

अपने रोज़ाना के काम में भागदौड़ करने और दूसरों की उम्मीदों पर खरा उतरने और उनसे आगे निकलने की कोशिश करने के मुकाबले कहीं ज़्यादा खुश था। अब मैं समझ गया था कि जीवन में आई तमाम मुसीबतें और बाधाएँ उस खुशी की बुनियाद थीं जो मुझे अब मिलने लगी थी। मैं "किस्मत" की अवधारणा को समझने लगा था और इसे अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था।

* * *

जब मैं मनोरंजन जगत में काम करता था, तो मेरा काम मशहूर हस्तियों की तस्वीरें कैमरे से खींचना था। अब, मैं लोगों के भाग्य का अनुमान लगाता हूँ। लोग मेरे पास तरह-तरह के सवाल और समस्याएँ लेकर आते हैं—जिनमें सबसे बड़ी और गंभीर समस्या पैसे से जुड़ी होती है। भले ही यह कहावत बार-बार दोहराई जाती हो कि "पैसा खुशी नहीं खरीद सकता", फिर भी पैसा इस बात का प्रतीक है कि लोग अपने भाग्य और किस्मत को कैसे देखते हैं।
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई व्यक्ति अमीर है या गरीब। धन से उत्पन्न होने वाली चिंता से कोई भी अछूता नहीं है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनकी एकमात्र इच्छा अमीर बनना होती है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो सब कुछ खो देने के बाद भी आशावान बने रहते हैं।
लोगों के मन में पैसों को लेकर कई सवाल होते हैं: कोई अमीर कैसे पैदा हो सकता है? क्या बिना धनवान बने अमीर बनना मुमकिन है? बहुत से लोग मानते हैं कि खुशी पैसों से जुड़ी होती है, और इसी वजह से वे मुझसे पैसों के बारे में तरह-तरह के सवाल पूछते हैं। जी हां, जब वे ये सवाल पूछते हैं तो असल में पैसों के बारे में ही पूछते हैं, लेकिन एक तरह से वे अपनी किस्मत और भाग्य के बारे में भी जानना चाहते हैं। और ये भी कि वे अपने जीवन में इन चीजों को और कैसे आकर्षित कर सकते हैं।

जीवन में एक ऐसा समय आता है जब हर किसी के जीवन में बदलाव आता है। येओक-हाक[*3] में, उस क्षण को ग्यो-वून-गी[*4] या "परिवर्तन काल" कहा जाता है। जैसा कि आप नाम से ही समझ सकते हैं, यह वह समय होता है जब किसी व्यक्ति का "वर्तमान भाग्य" एक "नए भाग्य" में तब्दील हो जाता है। जब जीवन अतीत को

पीछे छोड़कर आगे बढ़ता है, तो अप्रत्याशित परिवर्तन होते हैं। अक्सर लोग इस उथल-पुथल को दुर्भाग्य समझ लेते हैं।
जब कोई मुझसे पूछता है, "बिक्री लगातार गिर रही है। क्या मेरा व्यवसाय टिक पाएगा?" तो मैं अपने अनुभव के आधार पर अपना दृष्टिकोण साझा करता हूं, जो उनसे बिल्कुल अलग है।
“इस समय आपका भाग्य पुनर्जीवन के दौर से गुजर रहा है। आप अपने जीवन के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर आ गए हैं। धन के भी उतार-चढ़ाव होते रहते हैं। चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। सिर्फ इसलिए कि आपके पास अभी धन नहीं है, इसका मतलब यह नहीं है कि कभी नहीं होगा। जब आप यह समझ जाएंगे कि बदलाव की उलझन दुर्भाग्य नहीं है, तो आपकी स्थिति बदल जाएगी।”

* * *

मैं आपको जापान के ओसाका में एक करी रेस्टोरेंट की कहानी सुनाना चाहता हूँ। कोविड महामारी की शुरुआत में, मालिक को लंबे समय तक अपने व्यवसाय के खुलने का समय कम करना पड़ा, जिससे उसके पास काफी मात्रा में चावल बच गया जो बर्बाद होने वाला था। सैकड़ों लोगों को खिलाने के लिए पर्याप्त चावल को फेंकने के विचार से वह स्वाभाविक रूप से परेशान था। उस समय कई व्यवसायों की तरह, उसे हर तरफ दुर्भाग्य ही दुर्भाग्य दिखाई दे रहा था, और उसका व्यवसाय भी इससे अछूता नहीं रह सकता था।
हालांकि, उन्हें जल्द ही एहसास हुआ कि उन्हें रचनात्मक होना होगा, इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति से निपटने के तरीके खोजने होंगे। उन्होंने चावल का उपयोग करने के अन्य तरीके खोजने शुरू किए। जल्द ही उन्हें सिंगापुर में एक ऐसी कंपनी मिली जो फेंके जाने वाले बासी ब्रेड से बीयर बनाती थी। उन्होंने उनसे संपर्क किया और उनकी तकनीक का लाइसेंस प्राप्त किया, जिसका उपयोग उन्होंने चावल को पुनः उपयोग में लाने के लिए किया। काफी मेहनत के बाद, उन्होंने अपने बचे हुए चावल से अपनी खुद की क्राफ्ट बीयर तैयार की। मीडिया ने रेस्तरां मालिक की प्रेरणादायक कहानी और चावल के उपयोग के उनके अनूठे तरीके को खूब प्रचारित किया, जिसे अन्यथा फेंक दिया जाता। खाद्य असुरक्षा से जूझ रही दुनिया में चावल को बर्बाद न करने के प्रयास में, एक छोटे से करी शॉप के मालिक ने क्राफ्ट बीयर व्यवसाय की स्थापना की।

जिसे उन्होंने दुर्भाग्य समझा था, वह वास्तव में सौभाग्य की ओर एक शुभ परिवर्तन था।

जीवन में बदलाव अक्सर लोगों को चिंतित कर देता है। उन्हें डर लगता है कि उनकी खुशियाँ और सौभाग्य अचानक गायब हो जाएँगे। लेकिन मेरा मानना है कि हमें अपने भाग्य के बारे में अलग तरीके से सोचना चाहिए। कल्पना कीजिए: पृथ्वी पर कोई भी जल निकाय ऐसा नहीं है जो हर समय एक ही गति से बहता हो। कभी पानी अशांत होता है, तो कभी शांत। जल का उतार-चढ़ाव होता रहता है। मानव जीवन भी इससे अलग नहीं है। जो लोग यह जानते हैं, वे भाग्य में बदलाव आने पर विचलित नहीं होते। कुछ लोग समझते हैं कि ऐसे समय में वे वास्तव में बेहतर भाग्य को आकर्षित करने के तरीके खोजने के लिए अच्छी स्थिति में होते हैं। कोरियाई भाषा में एक शब्द है जिसका अर्थ है "पुनर्भरण"। यह इतना प्राचीन और कम इस्तेमाल होने वाला शब्द है कि आपको यह किसी शब्दकोश में नहीं मिलेगा, लेकिन पारंपरिक कोरियाई समुदायों में इसका बोलचाल में लंबे समय से प्रयोग होता रहा है। मछुआरे इस शब्द का प्रयोग किसी रोचक प्राकृतिक घटना का वर्णन करने के लिए करते हैं, जिसका मछली पकड़ने से आजीविका कमाने वालों के लिए बहुत महत्व होता है। यह "पुनर्भरण" उस स्थिति का वर्णन करता है जब तूफान समुद्र के पानी और रेत को मथ देता है, जिससे पानी गंदा हो जाता है और मछली पकड़ना मुश्किल हो जाता है। हालांकि, हवाएं थमने के तुरंत बाद, पानी शांत हो जाता है और इतना साफ हो जाता है कि आप कभी अंदाजा भी नहीं लगा पाएंगे कि अभी-अभी कोई शक्तिशाली तूफान आया था। तूफान के बाद की शांति में, साफ पानी में, बड़ी मछलियां इकट्ठा होती हैं और उन्हें पकड़ना सबसे आसान होता है।
मुझे उम्मीद है कि मछुआरों की यह कहानी और उनकी "पुनर्पूर्ति" की अवधारणा आपको याद दिलाएगी कि आप चाहे कितनी भी कठिनाइयों का सामना कर रहे हों, आसानी से निराश न हों या यह न सोचें कि आपका पूरा जीवन दुर्भाग्य के गर्त में डूब गया है। हो सकता है कि आप एक पुनर्पूर्ति के दौर से गुजर रहे हों—एक अलग तरह के तूफान से—इससे पहले कि आपका भाग्य पलट जाए।

दुनिया में सबसे अच्छी तारीफ़ "साधारण" होना है। यह 2013 की बात है। एक साधारण युवती परीक्षा की तैयारी कर रही थी। वह आत्मविश्वास से भरी हुई थी। बचपन से ही उसने कभी असफलता नहीं देखी थी और हमेशा किसी भी चुनौती का सामना करने की शक्ति में विश्वास रखती थी। उसने साहसपूर्वक परीक्षा दी, लेकिन पहले ही दौर में बाहर हो गई। कोई बात नहीं। मैं बदकिस्मत थी, उसने खुद से कहा।
परीक्षा कठिन मानी जाती थी, आखिर इसमें लिखित परीक्षा और परीक्षकों के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार दोनों शामिल थे। उसने मन ही मन सोचा कि पहली कोशिश में सफल होना नामुमकिन था। उसने दूसरी बार परीक्षा की तैयारी शुरू की। उसने अपना सारा समय पढ़ाई में लगा दिया।
उसने दूसरी बार परीक्षा के लिए आवेदन किया और उसे पूरा भरोसा था। उसने पहला भाग तो पास कर लिया, लेकिन उसकी खुशी ज्यादा देर तक नहीं टिकी: उसे पता चला कि वह लिखित परीक्षा में फेल हो गई है। उसने मन ही मन कहा, "यह साल मेरा नहीं है।"
अगले साल उसने तीसरी बार कोशिश की। लेकिन किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया। उसने अपनी असफलताओं के लिए "उस मनहूस किस्मत" को दोषी ठहराया।
कई असफल प्रयासों के बाद, उसे एक महत्वपूर्ण बात समझ में आई। परीक्षा देने के उन वर्षों के दौरान, उसने भाग्य को अपने ऊपर हावी होने दिया था। हर बार असफल होने पर, वह खुद से कहती थी, "भाग्य मेरे साथ नहीं है," या "इस बार मेरा भाग्य खराब था," ताकि उसे अच्छा महसूस हो। वह अपने लक्ष्य की ओर काम करने के बजाय सफलता के लिए "सही समय" का इंतजार कर रही थी।

* * *

दो साल बाद, उसने परीक्षा देने का इरादा छोड़ दिया। परीक्षक भी तो इंसान ही होते हैं। परीक्षा के मौखिक भाग वाले दिन उनके बदलते मिजाज का असर परीक्षा के नतीजे पर आसानी से पड़ सकता था, चाहे उसने कितनी भी पढ़ाई की हो। वह अटल मानकों के अनुसार तो ढल सकती थी, लेकिन अपूर्ण, मानवीय परिस्थितियों के अनुसार नहीं। उसने भाग्य के भरोसे रहने के बजाय अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल करके परीक्षा पास करने का पक्का इरादा कर लिया था।
उसने फैसला किया कि उसे अपनी प्रतिभा दिखाने का कोई और तरीका ढूंढना होगा। वह यह सोचने में बहुत दिमाग खपाने लगी कि यह कैसे किया जाए। आखिरकार,

उसने खुली भर्ती परीक्षाओं जैसे पारंपरिक तरीकों से हटकर इसका हल निकालने का निर्णय लिया। इसके बजाय, उसने हर उस प्रतिभा या योग्यता प्रतियोगिता में भाग लिया जो उसे मिल सकती थी: सरकार द्वारा आयोजित प्रतियोगिताएं, निजी कंपनियों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताएं और यहां तक कि सार्वजनिक सेवा विज्ञापन वीडियो के लिए आयोजित प्रतियोगिताएं भी। अंततः, उसने बत्तीस अलग-अलग प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते और उसकी कहानी कई समाचार चैनलों में छपी।
कुछ ही समय बाद, एक चमत्कार हुआ। उसके स्कूल ने उस कंपनी की ओर से उससे संपर्क किया जिसमें वह शामिल होना चाहती थी, लेकिन जिसकी परीक्षा में वह कई बार असफल हो चुकी थी। कंपनी ने एक ऐसी प्रतिभाशाली छात्रा के बारे में सुना था जिसने देश भर में हर प्रतियोगिता जीती थी, और वह उसे अपने पारंपरिक परीक्षा मानदंडों को दरकिनार करते हुए एक विशेष नौकरी का प्रस्ताव देना चाहती थी। इस तरह, 2016 में, वह छात्रा एसबीएस[*5] में कंपनी के इतिहास में सबसे कम उम्र की निर्माता के रूप में शामिल हुई।
ऑनलाइन, एसबीएस में शुरुआती स्तर की नौकरी पाने के लिए उसी परीक्षा की तैयारी कर रहे अन्य छात्रों ने ईर्ष्या से उसकी प्रशंसा की: "वाह, तुम सचमुच भाग्यशाली हो!"

* * *

लेकिन ये किस्मत की बात नहीं थी। मैं जानती हूँ, क्योंकि मैं खुद वही लड़की हूँ। मैंने अपनी किस्मत सुधारने के लिए खुद मेहनत की। अगर मैंने एक और साल बर्बाद करने का फैसला किया होता, अपनी लगातार असफलताओं के लिए बदकिस्मती को दोष देते हुए? तो शायद मैं अब भी अपनी जिंदगी बर्बाद कर रही होती, इस बात पर यकीन करते हुए कि मेरी किस्मत ही इतनी खराब है।
अब मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूँ कि भाग्य का अस्तित्व है, लेकिन किसी को भी हर चीज़ के लिए पूरी तरह से भाग्य पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। भाग्य ऐसी चीज़ है जिस पर मेहनत करनी पड़ती है, भरोसा नहीं करना चाहिए। जिस क्षण आप भाग्य को अपने जीवन पर हावी होने देते हैं, उसी क्षण आप अपने जीवन पर अपना नियंत्रण खो देते हैं।
इसीलिए आपको अपने जीवन में आने वाले हर तरह के सौभाग्य को पहचानने और उसे समेटने का प्रयास करना चाहिए। चाहे वो पल हों जो आप हर दिन देखते हैं

(जैसे कि सही समय पर बस पकड़ना, लॉटरी में दूसरा पुरस्कार जीतना) या फिर कोई असाधारण सौभाग्य जो आपको मिले (जैसे कि वो बड़ी नौकरी पाना जिसके लिए आप सबसे आगे नहीं थे, लॉटरी जीतना)—आपको हर अवसर को अपना बनाने की कोशिश करनी चाहिए, न कि उसकी उम्मीद करनी चाहिए या ये मान लेना चाहिए कि वो हमेशा आपके पास रहेगा।
भाग्य एक जलमार्ग है, और नियति एक नाव है। एक समय की बात है, एक धनी व्यक्ति था जिसे अपनी मृत्यु के बाद अपनी सारी संपत्ति पीछे छोड़ने का विचार सहन नहीं हो रहा था, इसलिए उसने प्रार्थना की।
"हे भगवान, कृपया मुझे मरने के समय अपनी सारी संपत्ति अपने साथ ले जाने की अनुमति दें।"
धनी व्यक्ति की निरंतर प्रार्थनाएं ईश्वर तक पहुंचीं, जिन्होंने अपनी अनुमति दे दी।
अपनी सारी संपत्ति को सोने में बदल लो और उसे अपने साथ ले आओ।
धनी व्यक्ति की मृत्यु हो गई, लेकिन मरने से पहले उसने अपनी सारी संपत्ति सोने में बदल ली थी। अंत में, वह सोने का भारी बोझ लिए स्वर्ग के द्वार पर पहुँचा। द्वार पर खड़े न्यायाधीश ने उसे देखकर धनी व्यक्ति से पूछा:
तुम इतना सारा सोना किसलिए लाए थे?
"आपका क्या मतलब है?"
धनी व्यक्ति ने संकरे खुले दरवाजों से स्वर्ग की एक झलक देखी। उसे आश्चर्य हुआ कि दरवाजों के पार सब कुछ सोने का बना था, खंभों से लेकर फर्श तक, यहाँ तक कि दीवारें भी। स्वर्ग में सोना तो बस एक साधारण कंकड़ के समान था।
"मेरे पास इतना पैसा था कि मैं उसे जीवन भर में भी खर्च नहीं कर सकता था, फिर भी मैं उसे हमेशा अपने साथ ढोता रहा, और किसलिए?"
धनी व्यक्ति को अपने निर्णय पर गहरा पछतावा हुआ, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। वह अब अपनी सारी संपत्ति, या उसका कोई भी हिस्सा खर्च नहीं कर सकता था।
कहते हैं कि जो पैसा आप जीते जी खर्च करते हैं, वही असल में आपका असली धन होता है। अगर उस धनी व्यक्ति ने अपनी दौलत दूसरों के साथ बाँटी होती या

उसे अपने और अपने प्रियजनों पर खर्च किया होता, तो वह शांति से इस दुनिया से विदा होता। इसके बजाय, उसने अपना सारा धन बिना खर्च किए एक कोठरी में बंद करके रखा, और इस तरह वह असल में गरीब ही रहा। वह सिर्फ बाहर से ही धनी दिखता था।

* * *

भाग्य एक जलमार्ग है और नियति एक नाव। कुछ लोग आलीशान नौका पर जन्म लेते हैं, और कुछ साधारण जहाज पर। अगर आप बदकिस्मत हैं, तो आपको सिर्फ एक बेड़ा ही मिलता है। फिर भी, चाहे आप एक अमीर व्यक्ति हों जो नौका पर सवार हों या एक गरीब व्यक्ति हों जो बेड़े पर सवार हों, हर किसी को अपनी नाव पर ही लहरों का सामना करना पड़ता है। अगर आपका भाग्य इस बात से तय होता है कि आप किस तरह की नाव पर सवार हैं, तो उन लहरों पर आप कैसे सवारी करते हैं, यह पूरी तरह आप पर, आपकी क्षमताओं और आपकी इच्छाशक्ति पर निर्भर करता है। बेशक, यह मायने रखता है कि आप किस जलमार्ग का सामना कर रहे हैं। इसकी धारा आपको अनुकूल या प्रतिकूल भाग्य की ओर ले जा सकती है। अगर यह हमेशा आपकी इच्छित दिशा में बहे तो कोई समस्या नहीं होगी, लेकिन अगर आप किसी ऐसी लहर में फंस जाते हैं जो आपको विपरीत दिशा में ले जाती है, तो आप मुसीबत में पड़ जाएंगे। आपको चप्पू चलाना बंद नहीं करना चाहिए, अन्यथा आपकी नाव उस दिशा में चली जाएगी जहाँ आप नहीं जाना चाहते।
जीवन ऐसा ही है। नौका पर जन्म लेने वाले लोग तेज लहरों की चिंता किए बिना आसानी से यात्रा कर सकते हैं। वहीं, साधारण नाव या यहाँ तक कि बेड़ा पर जन्म लेने वालों को नाव को अनचाही दिशा में जाने से रोकने या पलटने से बचाने के लिए लगातार प्रयास करना पड़ता है।
याट पर सवार लोग वे होते हैं जिन्हें हम धनवानों के घर में पैदा हुए समझते हैं। इस दुनिया में आते ही उनके पास दौलत और अच्छे भविष्य की संभावनाएं होती हैं: कंपनी के शेयर उनके नाम पर होते हैं, शायद वे अपने पारिवारिक साम्राज्य के उत्तराधिकारी भी बन चुके होते हैं, भविष्य के चैबोल (बड़े कारोबारी) बन चुके होते हैं। [*6] कोरिया में हम कहते हैं, "चैबोल तो ईश्वर प्रदत्त होते हैं।" चैबोल के रूप में जन्म लेने की संभावना बहुत कम होती है। हमें इसे भाग्य मानकर स्वीकार करना होगा।

* * *

क्या आप एक ऐसे अमीर व्यक्ति बनना चाहेंगे जिसके पास अरबों रुपये हों लेकिन वह उन्हें कभी खर्च न करे? या आप एक ऐसे अमीर व्यक्ति बनना चाहेंगे जिसके पास धन की एक अधिक यथार्थवादी मात्रा हो और जो उस धन के वश में न हो? लोग अक्सर अमीर बनने की इच्छा को अस्पष्ट शब्दों में व्यक्त करते हैं, बिना इस बात का कोई ठोस विचार रखे कि उन्हें वास्तव में कितनी राशि चाहिए या ज़रूरत है, या अगर उनके पास वह पैसा आ जाए तो वे उसे किस पर खर्च करेंगे। इसका कारण शायद यह है कि उनका जीवन बिल्कुल साधारण होता है, किसी बड़े राजतंत्र के वारिस जैसा नहीं।
फिर भी, आपको उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए। भले ही आपके अरबपति बनने की संभावना न हो, लेकिन "साधारण" होने का मतलब यह नहीं है कि आप वास्तविक रूप से अमीर नहीं हो सकते। दिखावटी तरीके से दूसरों को प्रभावित करने के लिए अमीर बनने से कहीं बेहतर है कि आपके पास एक उचित मात्रा में धन हो जिसे आप नियंत्रित कर सकें और शांत मन से खर्च कर सकें?
अधिकांश लोगों का भाग्य साधारण ही होता है। लेकिन जो लोग अमीर बनना चाहते हैं, वे साधारण भाग्य शब्द सुनते ही मुंह बना लेते हैं। भीतरी तौर पर, हर कोई यह सुनना चाहता है कि उसका भाग्य कुछ खास है।
साधारण शरीर, साधारण नौकरी, साधारण व्यक्तित्व, साधारण जीवन। एक ओर, "साधारण" होना या "साधारण भाग्य" होना यह दर्शाता है कि आप भीड़ से अलग नहीं हैं; दूसरी ओर, इसका यह भी अर्थ है कि आप किसी से कमतर नहीं हैं। यह रोचक अंतर कई लोगों को समझ नहीं आता। अगर आप सोचें तो, "साधारण" होना दुनिया की सबसे बड़ी प्रशंसा है।
जो लोग 'साधारण' शब्द को पसंद नहीं करते, उन्हें यह बात समझाने के लिए मैं तीरंदाजी के लक्ष्य का उदाहरण देता हूँ। मान लीजिए, आपके सामने पचास फीट की दूरी पर "जीवन" नाम का एक लक्ष्य है। लक्ष्य से बाहर की ओर स्कोर दस से शून्य तक होता है। सैद्धांतिक रूप से, आपका पहला तीर आठ अंक पर लगेगा, जो औसत स्कोर है। हवा के कारण आपका दूसरा तीर लक्ष्य से चूक जाएगा। लेकिन भाग्य की दुनिया अलग तरह से काम करती है। चाहे तूफान हो या भूकंप, कोई भी तीर लक्ष्य से बाहर नहीं जाता। पर्याप्त एकाग्रता के साथ, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी लक्ष्य को भेदना संभव है। ऐसा इसलिए है क्योंकि

"साधारण" का अर्थ है कि भले ही आपका निशाना शानदार न हो, जीवन में आपका तीर कभी भी लक्ष्य से पूरी तरह नहीं चूकता।
जैसा कि आप देख सकते हैं, साधारण शब्द में एक ऐसी जटिलता छिपी है जिसकी आपको शायद कल्पना भी न हो। साधारण होना—हमेशा आठ अंक पाना—वास्तव में हासिल करना मुश्किल है। अगर आप इसे दूसरे नज़रिए से देखें, तो इसका मतलब है कि आप हमेशा भाग्य के दायरे में रहते हैं, कभी भी पूरी तरह से खेल से बाहर नहीं होते। इसे समझने का एक और तरीका यह है कि आप हमेशा अपना भाग्य खुद बना सकते हैं। अगर आप तीरंदाजी का अभ्यास करते हैं, तो आप उसमें बेहतर होते जाएंगे। जीवन भी ऐसा ही हो सकता है।
सामान्य जीवन में, संभावना यही है कि आप ऐसे व्यक्ति होंगे जो अपनी दौलत को सिर्फ कहीं छिपाकर नहीं रखते बल्कि उसे खर्च भी करते हैं। अगर आप भाग्यशाली नहीं हैं कि आप उन 1 प्रतिशत लोगों में से एक हैं, तो आप उन 99 प्रतिशत धनी लोगों में शामिल होने का लक्ष्य रख सकते हैं जो अपनी दौलत को अपने हाथ में रखते हैं और उसे अपनी इच्छानुसार, जब चाहें और जिस चीज पर चाहें खर्च करते हैं।
"साधारण भाग्य" होने का सही अर्थ यही है।
पैसों के बारे में पूछे जाने वाले गलत सवाल लोगों का भविष्य बताने की मेरी क्षमता की बात फैलते ही, कई लोग मुझसे सलाह लेने आने लगे: देश के सबसे बड़े चाएबोल परिवारों में से एक का सदस्य, आगामी चुनाव का सामना कर रहे एक राजनेता और अपनी अगली परियोजनाओं का चयन कर रहे मशहूर हस्तियां। आम दफ्तर कर्मचारी भी। हालांकि हर किसी की अपनी कहानी और अपनी चिंताएं थीं, लेकिन सबसे ज़्यादा पूछे जाने वाले सवाल हमेशा धन आकर्षित करने वाले भाग्य के बारे में होते थे: "क्या मैं अमीर बनूंगा?" कुछ लोगों के मन में बेहतर जीवन जीने और अधिक सफल होने के तरीकों को लेकर सवाल होते हैं: "मेरी किस्मत कब चमकेगी?"
हर कोई अपने भविष्य को लेकर उत्सुक रहता है। मैं भी उनमें से एक थी। मैं पत्रिकाओं में मासिक राशिफल बड़े चाव से पढ़ती थी। टैरो कार्ड रीडिंग से मैं इतनी उत्साहित हो जाती थी मानो वह मेरा पूरा जीवन बदल देगी। आशा की वह हल्की सी किरण भी मेरे दिल की धड़कन बढ़ा देती थी। इससे मुझे ऐसा लगता था कि मैं भविष्य को अपने हाथों में ले सकती हूँ, चाहे वह भविष्य कितना भी अनिश्चित क्यों न हो।

सच्चाई यह है कि भाग्य का सिद्धांत उतना सीधा-सादा नहीं है जितना पैसा विशुद्ध रूप से लेन-देन पर आधारित होता है। भाग्य कोई स्वचालित प्रणाली नहीं है जो अचानक आपको एक नया जीवन दे दे, जैसे कराओके मशीन जो सिक्के डालते रहने पर नए गाने बजाती रहती है।

* * *

एक दिन मुझे तेज सिरदर्द हुआ और मैं डॉक्टर के पास गया।
आप यहाँ क्यों आए हैं?
मुझे असहनीय सिरदर्द हो रहा है।
"चलिए पहले जांच कर लेते हैं। मुझे पता लगाना होगा कि आपके सिरदर्द का कारण क्या है।"
डॉक्टर का पहला काम बीमारी का पता लगाना होता है। एक अच्छा डॉक्टर आपकी बीमारी का कारण पहचानता है और फिर उसके बाद, बीमारी को ठीक करने के विभिन्न तरीके बताता है, चाहे वह सर्जरी हो, दवाइयाँ हों या सिर्फ आराम करना। मरीज डॉक्टर के निदान के आधार पर अपने लिए सबसे उपयुक्त उपचार चुन सकता है। अंततः, अंतिम निर्णय मरीज को ही लेना होता है कि वह किस विकल्प को अपनाए।
मैंने अपने काम में पाया है कि हर व्यक्ति के भाग्य का आकलन करना लगभग एक जैसा ही होता है। कुछ लोग पैसे या शादी को लेकर चिंतित रहते हैं। कुछ लोग नौकरी बदलने या अपना कारोबार शुरू करने को लेकर परेशान रहते हैं। वे सभी मुझसे अपने सवालों के सटीक जवाब की उम्मीद करते हैं, लेकिन बहुत कम लोगों को ही वो जवाब मिलता है जो वे चाहते हैं। मैं उन्हें सच्चाई से जवाब देता हूँ, लेकिन वे मेरे जवाबों को पूरी तरह स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होते।

* * *

एक ग्राहक ने मुझे बताया कि वह पिछले तीन वर्षों से एक छोटी वितरण कंपनी में सहायक प्रबंधक के रूप में काम कर रहा है। वह मेरे पास इस उम्मीद से आया था कि मैं उसे कोई ऐसा नुस्खा दूंगा जिससे वह रातोंरात अमीर बन जाएगा। बैठते ही उन्होंने मुस्कुराते हुए मुझसे पूछा: “सब लोग हमेशा कहते आए हैं कि मेरा साजू बहुत अच्छा है। लेकिन बीस साल की उम्र में कुछ खास नहीं

हुआ। अब मैं तीस साल का हो गया हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि अभी भी मेरे लिए कुछ ठीक नहीं चल रहा है। इस उम्र तक तो मुझे कम से कम लॉटरी तो जीत लेनी चाहिए थी, आपको नहीं लगता?”
वह बेहद आत्मविश्वासी लग रहा था। उसने मुझे ऐसी नज़र से देखा मानो कह रहा हो कि उसकी किस्मत में बहुत कुछ अच्छा लिखा है, लेकिन किसी तरह वो किस्मत उसके रास्ते में कहीं खो गई है। मानो उसे वापस सही रास्ते पर लाना मेरी ज़िम्मेदारी हो।
"क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि आप वास्तव में क्या चाहते हैं?"
मुझे अमीर बनना है। क्या मैं अमीर बन पाऊंगा? क्या अगले तीन वर्षों में मेरा जीवन बेहतर होगा?
फिर उन्होंने अगले तीन वर्षों में आने वाली सफलता और धन से भरे दिनों के बारे में विस्तार से बताया, जिसके बारे में उन्हें पूरा यकीन था। यह सुनकर मैंने उनसे पूछा: "तीन साल पहले आप क्या कर रहे थे?"
“मैं पहले उसी कंपनी में काम करता था जहाँ मैं अभी काम कर रहा हूँ। बिना ज्यादा काम किए नियमित वेतन मिलना उतना बुरा नहीं लगता।”
उन्होंने मुझे अपने भविष्य का स्वरूप दिखाया था। तीन साल पहले उनका जीवन ठीक वैसा ही था जैसा तीन साल बाद उनका जीवन होगा।
मुझे तो उसका भाग्य बिल्कुल सीधा-सादा लगा: अगर आप कुछ नहीं करेंगे, तो कुछ नहीं होगा। यह दुनिया का सबसे स्वाभाविक सत्य है। तीस साल की उम्र में, क्या वह सचमुच इस बुनियादी तथ्य से अनजान था? वह भाग्य के, या यूँ कहें कि जीवन के एक मूलभूत नियम को पूरी तरह से अनदेखा कर रहा था। मेरे पास ऐसे व्यक्ति को देने के लिए कोई सलाह नहीं थी जो कुछ नहीं कर रहा था, बस अचानक धन लाभ की उम्मीद कर रहा था।
इस बीच, वह मुझे लगातार घूरता रहा, उसकी बेताब आँखें चीख रही थीं: "कृपया मुझे बताइए कि मैं अमीर बन जाऊँगा। मैं आपसे विनती करता हूँ।"
एक डॉक्टर की तरह, मैं स्थिति का आकलन करता हूँ और निदान करता हूँ। मैं कभी भी सीधे जवाब नहीं देता। मैं अपने क्लाइंट के साथ मिलकर उनकी ज़िंदगी को बेहतर बनाने के तरीके खोजने की कोशिश करता हूँ। जो भी अपनी ज़िंदगी बदलने के लिए दृढ़ संकल्पित होता है, मैं उसे गंभीरता से लेता हूँ; फिर मैं उसे हर ज़रूरी सलाह देता हूँ। हालाँकि, जो व्यक्ति मुझसे मिलने आता है और

मुझसे वही सुनने की उम्मीद करता है जो वह सुनना चाहता है, उसे मैं कुछ नहीं कह सकता।
मैं अपने ग्राहक से खुलकर बात करना चाहता था, कम से कम भाग्य के बारे में, इसलिए मैंने उनसे यह कहा: “निराशा भाग्य को दूर भगा देती है। आप भाग्य के भरोसे नहीं रह सकते। आपको अपना भाग्य स्वयं बनाना होगा। भाग्य को पाने के कई तरीके हैं। आपको उन्हें खोजना होगा।”

* * *

भौंरों को भी किसी चीज़ की ओर उड़ने के लिए एक कारण चाहिए होता है। सड़क के किनारे खिले जंगली फूल को भी अपनी सुगंध और पराग फैलाना पड़ता है, जो उसके नाज़ुक अस्तित्व के लिए एक जीवन रक्षा रणनीति है। प्रकृति ने इस प्रक्रिया में मदद की है, लेकिन फूल को यह स्वयं करना पड़ता है। भाग्य के मामले में भी नियम यही हैं। भाग्यशाली होने का अर्थ केवल इतना है कि अच्छे समय और अनुकूल परिस्थितियों का मिलना, जिससे अच्छी चीजें घटित हों। लेकिन अंत में, आपको ही मेहनत करनी होगी ताकि आपका भाग्य आपके जीवन में साकार हो सके।
उस युवक ने मुझसे शुरू में ही गलत सवाल पूछ लिया था। "क्या मेरी किस्मत में अमीर बनना लिखा है?" पूछने के बजाय, उसे मुझसे यह पूछना चाहिए था, "मैं अपनी किस्मत को अपने पक्ष में कैसे मोड़ सकता हूँ?" इससे भी बेहतर होता कि वह मुझसे पूछने से पहले खुद से यह सवाल पूछ लेता।

* * *

जैसे ही वह आदमी जाने के लिए मुड़ा, मैं समझ गया कि वह निराश था। मैंने उसकी पीठ को दूर जाते हुए देखा और मुझे लगा कि उसका भाग्य मुझसे और भी दूर जा रहा है।
परिवर्तन और संकेत जो एक नए दीर्घकालिक भाग्य का संकेत देते हैं

ऐसा कहा जाता है कि किसी व्यक्ति का दीर्घकालिक भाग्य हर दस साल में बदलता है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि यह परिवर्तन प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग समय पर होता है। नए दीर्घकालिक भाग्य के आने से पहले के एक से दो वर्ष की अवधि को ग्यो-वून-गी कहा जाता है। ग्यो-वून-गी के दौरान, प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी अपवाद के एक ही प्रकार की घटनाओं का अनुभव करता है। ये

घटनाएँ अच्छी भी हो सकती हैं और बुरी भी। लेकिन यह निश्चित है कि इस अवधि के दौरान, आने वाला भाग्य जाने वाले भाग्य से टकराता है, जिससे अभूतपूर्व भ्रम और संघर्ष उत्पन्न होता है।
दीर्घकालिक भाग्य का नया परिवर्तन कभी अचानक नहीं आता। इसके आने की सूचना हमें शरीर, मन और परिवेश में होने वाले परिवर्तनों के माध्यम से मिलती है। भाग्य में आने वाले इस परिवर्तन के संकेत शारीरिक हो सकते हैं, जैसे त्वचा के रंग में बदलाव, या आध्यात्मिक, जैसे नए मूल्यों की ओर आकर्षित होना। या फिर परिवेश में बदलाव आ सकता है, जैसे आप नए लोगों से घिरे हों और उनके साथ आपके संबंध नए तरीकों से विकसित हों। ऐसे परिवर्तन और संकेत हमें न केवल अपने वर्तमान भाग्य की जानकारी देते हैं, बल्कि निकट भविष्य का भी अंदाजा लगाने में मदद करते हैं।
हालांकि कहा जाता है कि भाग्य हर दस साल में बदलता है और इस प्रकार एक औसत जीवनकाल में कई बार आता-जाता रहता है, लेकिन यह भी कहा जाता है कि लोगों को केवल एक या दो बार ही सौभाग्य की लहर का अनुभव होता है। दूसरे शब्दों में, यह एक ऐसा दौर है जिससे हर कोई अपने जीवन में कुछ बार गुजरता है। जीवन में सफलता, असफलता, समृद्धि या अभाव इस बात पर निर्भर करता है कि आप परिवर्तन के इन संकेतों को कितनी गहराई से समझते हैं, ताकि आप अपने भाग्य का लाभ उठा सकें। जब भाग्य में कोई नया दीर्घकालिक परिवर्तन आने वाला हो, तो आपको उसे चूकने से बचाने के लिए अपनी पूरी कोशिश करनी चाहिए। नीचे कुछ सामान्य बदलाव और संकेत दिए गए हैं जो ग्यो-वून-गी में होते हैं। क्या आपको कोई बदलाव महसूस हो रहा है?
• आपके चेहरे के भाव खिल उठते हैं।
• आपकी पसंद या रुचियां बदल सकती हैं।
• आपके सामाजिक दायरे में शामिल लोग बदलते रहते हैं।
• आपके परिवेश में परिवर्तन आते हैं क्योंकि आप नौकरी या घर बदलते
हैं या शादी करते हैं।
• आपको अचानक भूख लगने लगती है।
• आपके घर के पौधे खिलते हैं और स्वस्थ रूप से बढ़ते हैं।
• दुर्भाग्यवश जब आप पर विपत्ति आती है तो आप एक कठिन दौर से गुजरते
हैं।
• आप नए समूहों और सामाजिक समुदायों का हिस्सा बन जाते हैं।

- [redacted]
- [redacted]

[redacted]

[redacted]

*1 [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted], [redacted] [redacted] [redacted]: [redacted] [redacted] "[redacted] [redacted] (□□) (□□)" [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted]

2

भाग्य पर विजय प्राप्त करना या भाग्य से पराजित होना

वह हवा जो पाल वाली नाव को आगे बढ़ाती है
“मेरी मां बहुत बीमार हैं। क्या वह ठीक हो जाएंगी?” अपनी मां के स्वास्थ्य के बारे में मुझसे मिलने आई युवती ने पूछा।
“क्या मामला गंभीर है? क्या उसने डॉक्टर को दिखाया है?” मैंने पूछा। “उसने हर तरह की जांच करवाई है। उनमें कुछ भी नहीं मिला, लेकिन वह बेहद कमजोर है और बार-बार बेहोश हो जाती है,” उसने जवाब दिया।
वह युवती बेहद चिंतित थी। अपने भाई-बहनों में सबसे छोटी, वह तीस साल से अधिक उम्र की नहीं दिखती थी और उसमें अभी भी जवानी की झलक थी। मैं समझ गया कि वह लंबे समय से अपनी माँ के बारे में चिंतित रही होगी, क्योंकि उसकी धँसी हुई आँखों में थकान के स्पष्ट लक्षण दिखाई दे रहे थे।
मुझे उसकी स्थिति से गहरी सहानुभूति हुई, शायद इसलिए कि हम लगभग एक ही उम्र के थे। उसकी सच्ची भक्ति स्पष्ट रूप से महसूस हो रही थी। मैंने तुरंत खुद को संभाला, इस उम्मीद में कि मैं उसकी चिंता को थोड़ा कम कर सकूँगी, लेकिन मैं असमंजस में थी। मेरा अंतर्ज्ञान कह रहा था कि उसकी माँ जितनी दिख रही है उससे कहीं अधिक गंभीर खतरे में है। मैं झिझक रही थी। क्या अपनी चिंतित बेटी से इतनी बेबाकी से बात करना समझदारी थी? खैर, जब उसकी माँ इतनी कमजोर हालत में दिख रही थी, तो मैं उसकी स्थिति को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती

थी। मैंने एक सुझाव दिया, इस उम्मीद में कि उसकी हालत में कम से कम थोड़ा सुधार तो होगा।
"अपनी मां के करीब रहें, भले ही कोई बड़ी समस्या न दिख रही हो। यह महत्वपूर्ण है।"
"मैं करूँगा।"

कुछ महीनों बाद, एक धुंधली सुबह, मुझे लगभग ग्यारह बजे एक फोन आया। यह वही युवती थी जिसने अपनी माँ के लिए मदद की गुहार लगाई थी। कांपती हुई आवाज़ में उसने मुझे अपनी माँ के निधन की सूचना दी।
उन्होंने कहा, "हम कुछ नहीं कर सकते थे।"
क्या मैं भाग्य के संकेत को पहचानने में असफल रहा? इस विचार ने अचानक मुझे खेद से भर दिया। मैंने मान लिया था कि वह एक विचित्र दुर्घटना का शिकार हो गई थी। मैं इससे ज़्यादा गलत नहीं हो सकता था।
मृत्यु का कारण आत्महत्या था। वह अवसाद से पीड़ित थीं। भला कौन सोच सकता था कि चौहत्तर वर्षीय महिला आत्महत्या कर लेगी? बुढ़ापे में लोग आमतौर पर स्वस्थ रहने और लंबा जीवन जीने पर ध्यान देते हैं। यह कल्पना करना कठिन था कि उनकी उम्र की कोई महिला आत्महत्या कर लेगी। उनके जीवन के बारे में मेरे मन में जो प्रबल अंतर्ज्ञान था, उसके बावजूद मैंने यह नहीं सोचा था कि माँ की दृढ़ इच्छाशक्ति इसमें भूमिका निभाएगी।
मैंने मन ही मन सोचा, इच्छाशक्ति कितनी शक्तिशाली शक्ति है!
मां के संघर्षों को महसूस करने के बावजूद यह अनुमान न लगा पाने का अनुभव कि वह उन पर कैसे प्रतिक्रिया देगी, मुझे एक बात सिखाता है: इच्छाशक्ति किसी व्यक्ति के भाग्य में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है कि यह जीवन और मृत्यु के बीच अंतर पैदा कर सकती है।
समय-समय पर, मेरी मुलाकात ऐसे लोगों से होती है जो देखने में आत्महत्या करने वाले प्रतीत होते हैं, भले ही यह आभास कितना भी अस्पष्ट क्यों न हो। म्योंगली[*1] विज्ञान के जानकार कहते हैं कि किसी व्यक्ति की जन्मतिथि का उपयोग करके उसके जन्म समय का अनुमान लगाया जा सकता है। मैं म्योंगली और जन्म समय के साथ काम नहीं करता। मेरे मामले में, मैंने माँ को घने बादलों

में लिपटा हुआ देखा था, लेकिन यह कोई संकेत नहीं था, या कम से कम मैं इसे आत्महत्या का संकेत नहीं समझ पाया।

* * *

धन के मामले में मानवीय इच्छाशक्ति विशेष रूप से प्रभावी होती है। मैंने इस बात पर पहले भी जोर दिया है, लेकिन "धन के मामले में भाग्य" का तात्पर्य केवल अनुकूल परिस्थितियों का मिलना है जो किसी को धन अर्जित करने में मदद करती हैं। इसे उस हवा की तरह समझें जो एक नाव को धकेल रही है। आप उस हवा का कैसे उपयोग करते हैं और अपनी ऊर्जा को किस दिशा में लगाते हैं, यह आप पर निर्भर करता है। मैंने बहुत से लोगों को अपने भाग्य को चुनौती देते और अपने दम पर सफलता प्राप्त करते देखा है। इसके उदाहरण आसानी से मिल जाएंगे; कुछ तो विश्व प्रसिद्ध हैं। अपनी इच्छाशक्ति के प्रयोग से अमीर बनना आपके बस में है, और यह तब और भी आसान हो जाता है जब आप यह समझ लें कि भाग्य की किसी भी हवा का उपयोग कैसे करना है जो आपकी नाव को आगे बढ़ा रही है। सॉफ्टबैंक के सीईओ सोन जियोंग-ई को जापान का सबसे अमीर आदमी कहा जाता है। ज़ैनीची कोरियाई मूल के तीसरी पीढ़ी के सोन जियोंग-ई का बचपन एक अवैध झोपड़ी में बीता और वे इतने गरीब थे कि उन्होंने मरने के बारे में भी सोचा था। लेकिन भूख से तपे हुए इस युवा ने आज जापान के सबसे धनी व्यक्ति का दर्जा हासिल कर लिया है। किसने सोचा होगा कि बिल्कुल गरीबी से उठकर वे इतनी बड़ी सफलता प्राप्त कर लेंगे?
अडानी समूह के सीईओ के मामले में भी यही बात लागू होती है। चेयरमैन गौतम अडानी एक स्व-निर्मित व्यक्ति हैं, जिन्हें आसियाना टाइम्स ने दुनिया के तीसरे सबसे धनी व्यक्ति के रूप में सूचीबद्ध किया था। वे एक ऐसी शख्सियत हैं जिन्होंने भारत में पहली पीढ़ी के स्व-निर्मित व्यक्ति बनकर इतिहास रचा। भारत एक पदानुक्रमित समाज है जो जाति व्यवस्था द्वारा कड़ाई से शासित है। नियम यह है कि धनी लोग धनी परिवारों में जन्म लेते हैं। और यही कारण है कि भारत में अधिकांश व्यवसायी धनवान परिवारों से आते हैं और अपने पारिवारिक व्यवसाय को आगे बढ़ाते हैं जो उन्हें विरासत में मिला है। लेकिन चेयरमैन अडानी इसके विपरीत हैं। एक साधारण मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे, उन्होंने एक छोटी व्यापारिक कंपनी शुरू की जो लगातार बढ़ती गई और

वे दुनिया के तीसरे सबसे धनी व्यक्ति बन गए। उनकी सफलता असाधारण थी, यहां तक कि वैश्विक स्तर पर भी, क्योंकि इसने दुनिया भर में सुर्खियां बटोरीं। कठिन बचपन बिताने वाले चेयरमैन सोन और साधारण पृष्ठभूमि से आने वाले चेयरमैन अदानी, दोनों ही अतीत में गुमनाम थे। इन दोनों का बिना किसी की मदद के विश्व अर्थव्यवस्था में नाम कमाना वाकई प्रेरणादायक है। इसके अलावा, उनके उदाहरण धनवान बनने की राह में दृढ़ इच्छाशक्ति के महत्व को साबित करते हैं।
चेयरमैन सोन ने एक बार एक साक्षात्कार में कहा था: "हर किसी को जीवन में कम से कम एक बार भाग्य का साथ मिलता है, लेकिन बहुत कम लोग इसका लाभ उठा पाते हैं।"

पहले यह माना जाता था कि सफलता 70 प्रतिशत भाग्य और 30 प्रतिशत मेहनत पर निर्भर करती है, लेकिन आज लोग कहते हैं कि यह 90 प्रतिशत भाग्य और 10 प्रतिशत मेहनत पर निर्भर करती है। यह नया विचार इस बात को दर्शाता है कि लोग भाग्य के बिना कुछ भी हासिल करना कितना मुश्किल समझते हैं, लेकिन मैं इस बात से पूरी तरह सहमत नहीं हूँ। दुनिया का सबसे अच्छा भाग्य भी इच्छाशक्ति के बिना कुछ नहीं। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि सफलता और भाग्य के चमत्कार उन लोगों को कभी नहीं मिलते जिनमें इच्छाशक्ति कम होती है।
एक दयालु व्यक्ति और एक मजबूत व्यक्ति में से, आपके विचार से कौन अधिक आसानी से धनवान बन सकता है? स्वाभाविक रूप से, उत्तर है मजबूत व्यक्ति। बेशक, एक दयालु और मजबूत व्यक्ति और भी धनवान बन सकता है, लेकिन धनवानों का भाग्य उन्हीं को मिलता है जो इसे स्वीकार करने और इसके साथ काम करने की क्षमता रखते हैं। धनवानों की इच्छाशक्ति आपकी सोच से कहीं अधिक मजबूत होती है। वे हर पल सतर्क रहते हैं ताकि जब भी सौभाग्य उनके सामने आए, वे उसे थाम सकें।
धनवान लोग भाग्य पर इतना भरोसा क्यों करते हैं? धारावाहिकों में सबसे आम कहानियों में से एक है गरीबी से अमीरी तक का सफर, जिसमें मुख्य किरदार का जीवन तब बदल जाता है जब पता चलता है कि वह एक धनी परिवार का बच्चा है। आप कह सकते हैं कि बुराई पर अच्छाई की जीत सिंड्रेला

या कोंग ज्वी और पैट ज्वी जैसी कहानियों का मुख्य संदेश है।[*3] इसी तरह, गरीबी से अमीरी तक का सफर एक ऐसा उप-कथानक है जिसने दर्शकों की रुचि को हमेशा आकर्षित किया है। मुझे लगता है कि यह कहना सही होगा कि हममें से लगभग हर किसी ने बेहतर जीवन का सपना देखा है और टीवी शो देखकर उस सपने को जिया है।

* * *

अब मान लीजिए कि आपको अचानक बहुत बड़ी विरासत मिल गई है। यह जानकर आपको कैसा लगेगा कि आपके एक दूर के रिश्तेदार, जिनसे आप कभी मिले भी नहीं हैं, ने आपके लिए अरबों की संपत्ति छोड़ी है? टीवी शो में, नायक की पहली प्रतिक्रिया - आश्चर्य के अलावा - पूरी तरह से बदलाव लाना होती है, मानो वह अपने गरीबी भरे दौर में खोई हुई हर चीज की भरपाई करना चाहता हो।
आप उनके पीछे-पीछे चलते हैं जब वे खरीदारी के लिए बेताब होकर एक आलीशान बुटीक से दूसरे में जाते हैं। वे हिमालय से लाए गए मगरमच्छ की चमड़ी से बने हर्मेस बिरकिन बैग पर हजारों डॉलर खर्च करते हैं, डायोर के जूतों के लिए कई हजार डॉलर और खर्च करते हैं, और अपने सहायक के साथ, जिनके दोनों हाथों में शॉपिंग बैग भरे होते हैं, महंगे ब्रांडों से गहनों के पूरे सेट खरीदते हैं। कुछ ही चीजों की कीमत देखते ही देखते पचास हजार डॉलर तक पहुंच जाती है, और ऐसा लगता है कि पूरे एपिसोड में वे बस यही करते रहते हैं।

* * *

ऐसे अवास्तविक दृश्यों को देखना बहुत ही वास्तविक लग सकता है, भले ही जो कुछ हो रहा हो वह पूरी तरह से काल्पनिक हो। आप सोचने लगते हैं कि मुख्य पात्र के पास चाहे कितना भी अमीर क्यों न हो जाए, क्या उसके पास कुछ बचेगा भी या नहीं।
कल्पना कीजिए कि अचानक आपके पास दस मिलियन डॉलर की संपत्ति आ गई है और आप प्रतिदिन पचास हजार डॉलर खर्च करना शुरू कर देते हैं। डेढ़ मिलियन डॉलर प्रति माह के कुल खर्च के साथ, परिवार की यह अचानक मिली संपत्ति कभी टिक नहीं पाएगी। इस रफ्तार से खर्च करते हुए, एक साल से भी कम समय में आप फिर से पूरी तरह से कंगाल हो जाएंगे।

उन ड्रामा में कभी भी बैंक बैलेंस नहीं दिखाया जाता। दस साल बाद मुख्य किरदार का क्या होगा, यह दर्शकों पर छोड़ दिया जाता है।
हालांकि रातोंरात अरबपति बनना असंभव नहीं है, लेकिन मिले हुए धन का उपयोग कैसे किया जाए यह एक अलग ही बात है। भाग्य चाहे कितना भी धन ला दे, अगर आप उसे ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं हैं तो वह सब व्यर्थ हो जाएगा। और ऐसे में आप अपने नियंत्रण से परे मुश्किलों और थका देने वाली परिस्थितियों में फंस सकते हैं। मैंने यह बात दो धनी परिवारों की कहानियों से सीखी है जिनसे मैं वास्तविक जीवन में मिला हूँ।

* * *

पहले परिवार के पास अपार संपत्ति थी, जो जापानी कब्जे के दौरान परिवार द्वारा हासिल की गई जमीन की बदौलत थी। पिता की संपत्ति बढ़कर पचास मिलियन डॉलर से भी अधिक हो गई थी। उन्हें और उनकी पत्नी को एक ही चिंता थी: उनके दो बेटे, जो तीस वर्ष के हो चुके थे, अभी भी बेहद अपरिपक्व थे।
सत्तर वर्ष की आयु पार करते ही पिता अपने पैतृक भूमि और संपत्ति के प्रबंधन के बारे में सोचने लगे। वे इस बात को लेकर चिंतित थे कि इसे अपने बेटों को कैसे सौंपें ताकि वे इसे सुरक्षित रख सकें। उन्हें अपने बेटों से परिवार की संपत्ति बढ़ाने की कोई उम्मीद नहीं थी। उनकी एकमात्र इच्छा यही थी कि वे कम से कम उस संपत्ति को सुरक्षित रखें जो उन्हें पीढ़ियों से अपने पूर्वजों से विरासत में मिली थी। लेकिन माता-पिता की इच्छा के विपरीत, दोनों भाई लगातार बेतुके व्यापारिक विचार पेश करते रहे।
“यहां से नजारा बहुत अच्छा है। चलिए एक होटल बनाते हैं।”
“पापा, खाने-पीने का व्यवसाय ही सही रास्ता है। हमें एक बड़ा कैफे खोलना चाहिए।”
बुजुर्ग दंपत्ति की परेशानी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि उनके बेटे पारिवारिक संपत्ति की देखभाल करने के बजाय हवाई सपनों में क्यों खोए हुए हैं। बेटों के बीच तनाव बढ़ता जा रहा था, क्योंकि वे बिना किसी रोक-टोक के अपने माता-पिता से अपने व्यापारिक विचारों में निवेश करने की मांग कर रहे थे। बुजुर्ग दंपत्ति को लगा कि उनके बेटों के व्यापारिक विचार अव्यावहारिक हैं और उनके सफल होने की संभावना नहीं है। अंततः, यह संघर्ष उनके बूढ़े पिता के लिए असहनीय हो गया,

और वे अपना अधिकांश समय बीमारी के कारण बिस्तर पर बिताने लगे। वे और उनकी पत्नी अपने बच्चों से दूर होते चले गए, और अंततः तनाव असहनीय होने पर बच्चे घर छोड़कर चले गए।

* * *

उनसे हुई एक मुलाकात में, बुजुर्ग दंपति ने मुझसे कहा: “हम अपने बेटों से बस यही चाहते हैं कि वे हमारी विरासत को संजोकर रखें। हम उनसे इसे आगे बढ़ाने की उम्मीद भी नहीं करते। अगर वे बस इसे सुरक्षित रख सकें और धोखाधड़ी से बच सकें…”
लेकिन बेटों की सोच अलग थी। मुझसे मुलाकात के दौरान उन्होंने कहा, “हम बहुत पैसा कमा सकते थे, लेकिन हमारे माता-पिता बहुत पुराने ख्यालों के हैं। अगर आप उस सारी जमीन को यूं ही अपने पास रखे रहें और कुछ न करें, तो उससे कुछ हासिल करने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?”
लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। बुढ़ापे की तमाम परेशानियों के साथ-साथ लंबे समय से चली आ रही बीमारी के कारण दंपति का स्वास्थ्य बिगड़ चुका था। उनकी चिंताओं ने कलह को जन्म दिया और अंततः पैसों की कमी ने एक और दुर्भाग्यपूर्ण घटना को जन्म दिया: वृद्ध दंपति अपने अंतिम समय में अकेले ही चल बसे, उनके दोनों बेटे उनके साथ नहीं थे।
माता-पिता को अपनी संपत्ति खोने का डर सता रहा था, जबकि बच्चे उस संपत्ति को पाने की लालसा रखते थे, लेकिन उन्हें यह समझ नहीं आ रहा था कि उसे कैसे प्राप्त करें। अंततः जब उन्हें अपनी विरासत मिली, तो दोनों बेटों ने उसका 80 प्रतिशत हिस्सा बेतुकी व्यावसायिक योजनाओं में बर्बाद कर दिया।

चलिए, मैं आपको एक और धनी व्यक्ति की कहानी सुनाता हूँ। उन्होंने एक छोटी गेमिंग कंपनी शुरू की, जिसे उन्होंने दस वर्षों के भीतर एक वैश्विक निगम में बदल दिया। वे निःसंदेह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। जब वे बड़े हो रहे थे, उनका परिवार इतना गरीब था कि उनकी पढ़ाई का खर्च भी नहीं उठा सकता था।

फिर भी, वंचित पृष्ठभूमि से आने वाले इस उद्यमी ने उच्च शिक्षित लोगों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में शीर्ष स्थान प्राप्त किया।
बेशक, यह आसान काम नहीं था। उन्होंने अपनी पहली कंपनी एक लाख डॉलर से शुरू की, जो उन्होंने अपने दोस्तों और परिवार से उधार लेकर जुटाए थे। कुछ ही समय बाद यह व्यवसाय विफल हो गया। हालांकि, वे सफल होने के लिए दृढ़ संकल्पित थे।
मेरी शुरुआत भले ही साधारण रही हो, लेकिन मेरा भविष्य शानदार होगा। उन्होंने खुद को संभाला और दूसरा व्यवसाय शुरू किया। नतीजा? उन्होंने इसे एक मध्यम आकार की कंपनी में बदल दिया, जिसमें लगभग एक हजार लोग कार्यरत हैं और जिसका वार्षिक राजस्व एक अरब डॉलर से अधिक है।
उन्होंने अपने बच्चों का जिस तरह से पालन-पोषण किया, वह भी उतना ही उल्लेखनीय था। अपने आदर्शों का अनुसरण करते हुए, उन्होंने उन्हें स्वयं कमाने के लिए प्रेरित किया और उन्हें आत्मनिर्भर व्यक्ति बनाया जो अपने माता-पिता पर निर्भर न हों। इसके अलावा, उन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि वे अपना व्यवसाय अपने बच्चों को नहीं सौंपेंगे। उन्होंने एक पेशेवर को नियुक्त किया जो यह सुनिश्चित करेगा कि उनके जाने के बाद भी उनकी कंपनी का प्रबंधन पारदर्शी तरीके से हो।
उन्होंने उदारतापूर्वक और बिना किसी संकोच के समाज को अपना योगदान देने का भी निश्चय किया। हालाँकि उनके बच्चों को अपने पिता के इस निर्णय से पहले तो दुख हुआ होगा, लेकिन वे शीघ्र ही अपने सपनों को साकार करने के लिए जुट गए। उन्होंने अपने माता-पिता के पदचिन्हों पर चलना शुरू किया, जो हमेशा अपने विश्वासों के अनुरूप कार्य करते थे और अपने कथनी और करनी में समानता रखते थे। सभी ने एकमत होकर परिवार की उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने अपने बच्चों की बहुत अच्छी परवरिश की।
इतना ही नहीं, उनकी कंपनी को भी देखिए!
सबसे बड़े बेटे ने अपने पिता की राह पर चलते हुए एक छोटा सा स्टार्टअप शुरू किया, जबकि सबसे छोटे बेटे ने कला के क्षेत्र में अपना करियर बनाना शुरू किया।
इस कहानी के धनी व्यक्ति को अब किसी बात की चिंता नहीं है। वह बस उस दिन का इंतजार कर रहा है जब वह शांति और सुकून से बुढ़ापा बिता सकेगा।

* * *

दो अमीर व्यक्तियों में कितना अंतर हो सकता है, यह इसी से स्पष्ट होता है। पहला व्यक्ति जन्मजात धन से चिपके रहने में व्यस्त रहता है। वहीं दूसरा व्यक्ति अपनी संपत्ति बढ़ाने के लिए अधिक सक्रिय दृष्टिकोण रखता है क्योंकि उसने एक धनी व्यक्ति के रूप में अपना भाग्य स्वयं बनाया है।
इन दोनों में से, आपको क्या लगता है कि भाग्य को लेकर कौन ज़्यादा चिंतित था? ज़्यादातर लोगों का मानना है कि दूसरा वाला ज़्यादा चिंतित था। असल में, दोनों ही भाग्य को लेकर बहुत चिंतित थे। बस उनका नज़रिया अलग-अलग था। पहला वाला भाग्य से आसानी से प्रभावित हो जाता था, जबकि दूसरा भाग्य को लेकर बिल्कुल भी परेशान नहीं होता था। अगर मुझे दोनों में से किसी एक को चुनना हो, तो मैं कहूंगा कि पहली कहानी का अमीर आदमी भाग्य को लेकर ज़्यादा चिंतित था।
बुजुर्ग दंपत्ति अपनी किस्मत से वाकिफ थे। उन्हें इस बात का पूरा एहसास था कि उन्होंने अपनी दौलत किसी मेहनत से नहीं कमाई थी। इसी सोच ने उन्हें जीवन भर इस डर में जीने पर मजबूर किया कि कहीं वे अपनी इस किस्मत को खो न दें।
बेशक, कुछ लोग सोच सकते हैं कि ऐसी छोटी-मोटी बात की चिंता करना बेवकूफी है। लेकिन, यह बुनियादी ज्ञान कि उन्हें बिना किसी मेहनत के पैसा मिला, उनके मन में यह धारणा बिठा देता है कि पैसा चिंता का स्रोत है, लगभग एक स्वाभाविक परिणाम के रूप में। यह विडंबनापूर्ण है क्योंकि वे इस बात से भली-भांति परिचित थे कि उनकी किस्मत इतनी अच्छी कैसे हुई, इस पर उनका कोई नियंत्रण नहीं था। उनके मन में यह धारणा थी कि उनकी किस्मत जितनी आसानी और तेजी से आई थी, उतनी ही आसानी से जा भी सकती है। यही कारण है कि जन्म से अमीर लोग किस्मत को लेकर अत्यधिक संवेदनशील होते हैं।
इसके विपरीत, धनी लोग जो अपने दैनिक जीवन में पूरी तरह से समर्पित होते हैं, भाग्य के प्रति इतने सहज होते हैं कि इस पर विश्वास करना लगभग असंभव लगता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे भाग्य में विश्वास नहीं करते। बल्कि वे भाग्य की अपेक्षा अपनी क्षमताओं पर अधिक भरोसा करते हैं, क्योंकि उन्होंने स्वयं अपने भाग्य का मार्ग प्रशस्त किया है। उनके जीवन के बिखर जाने का विचार उनके लिए चिंता का कोई बड़ा कारण नहीं होता। अंततः, उन्होंने ही तो अपने जीवन का निर्माण किया है।

शायद यही कारण है कि सब कुछ खो देने के बाद भी वे वीबल वोबल खिलौने की तरह फिर से उठ खड़े होते हैं। बदकिस्मती उन्हें परेशान नहीं करती। उनकी सफलता का राज उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति है, जो भाग्य के उतार-चढ़ाव के बावजूद अटल रहती है।
जन्म से ही धनी, यानी "ऊपर" के धनी लोग भाग्य से आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। वहीं, "नीचे" के धनी, यानी जो लोग सफलता प्राप्त करते हैं, भाग्य पर ही ध्यान केंद्रित करते हैं। दूसरे शब्दों में, पहले वर्ग के लोग भाग्य के बोझ तले दब जाते हैं और उसे अपने ऊपर हावी होने देते हैं, जबकि दूसरे वर्ग के लोग भाग्य को अपनी उन्नति की सीढ़ी के रूप में इस्तेमाल करते हैं। यही उन धनी लोगों का रहस्य है जो धन के साथ आने वाले बोझ को सहने में सक्षम होते हैं।
निराशा के चक्र को तोड़ना जीवन को आकार देने में इच्छाशक्ति कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है? क्या सफलता और धन प्राप्त करने के लिए इच्छाशक्ति ही काफी है? ये प्रश्न आधे सही और आधे गलत हैं।
इच्छाशक्ति किसी विशेष परिणाम की चाहत को व्यक्त करती है। उस चाहत को साकार करने के लिए क्रियाशीलता आवश्यक है। केवल सोचते रहना और कभी कुछ न करना वैसा ही है जैसे मन ही मन बिटकॉइन गिनते रहना जबकि आपके पास एक पैसा भी न हो।
मेरे एक परिचित बार परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। लॉ स्कूल से अभी-अभी स्नातक होने के बाद, वे अपने जीवन की पहली बार परीक्षा देने जा रहे थे। हालाँकि, उनके लिए यह आखिरी भी थी। उनका परिवार कठिन परिस्थितियों में था। उनकी एकल माँ के प्यार और त्याग के कारण ही वे सियोल क्षेत्र के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से स्नातक हो सके।[*4] फिर भी, हाई स्कूल से निकलते ही तुरंत कमाई शुरू करने के बजाय इतने लंबे समय तक पढ़ाई में रहने का उन पर काफी दबाव था। वे परिवार के मुखिया के रूप में अपनी ज़िम्मेदारी और एक सफल वकील बनने की अपनी इच्छा के बीच दुविधा में थे।
पढ़ाई के दौरान वह इन विचारों में उलझा रहता था और इंटरनेट कैफे में समय बिताकर अपने चिंतित मन को शांत करने की कोशिश करता था। जब असहनीय पीड़ा से वह उबर नहीं पाया, तो उसने परीक्षा के बारे में एक ज्योतिषी से सलाह ली।

मैं एक बहुत महत्वपूर्ण परीक्षा देने जा रहा हूँ। क्या मैं सफल हो पाऊँगा?
जन्मतिथि का अध्ययन कर रहे ज्योतिषी ने बीच में ही कहा:
“कौन सी परीक्षा? आपके साजू में कोई ग्वान[*5] नहीं है।”
"आपका क्या मतलब है?"
मेरा मतलब यह है कि परीक्षाएं आपको कहीं नहीं ले जाएंगी।
उसे अपनी सुनी हुई बात पर यकीन नहीं हो रहा था। नाकाम। वह एक और ज्योतिषी के पास गया, लेकिन उन्होंने भी उसे नाकाम ही बताया। उसने दस ज्योतिषियों से मुलाकात की, लेकिन हर जगह उसे वही नतीजा मिला।

* * *

ठीक एक साल बीत गया। नए साल की शुरुआत में ही उस दोस्त को वकालत का लाइसेंस मिल गया। भला ये कैसे हो सकता है? जब मैंने ये सब सुना, तो मुझे उसके लिए राहत महसूस हुई। जब वो पहली बार वकालत की परीक्षा की तैयारी कर रहा था, तो वो सीधे असफलता की ओर बढ़ रहा था, और ये सिर्फ़ ज्योतिषियों की भविष्यवाणी की वजह से नहीं था।
परिवार के दबाव के कारण उसका ध्यान भटक रहा था और वह खेल-कूद में समय बर्बाद कर रहा था। वह मुश्किल से ही क्लास में जाता था और बहुत ज़्यादा शराब पीने लगा था। उसने हार मान ली थी और कोई मेहनत नहीं की थी। अगर वह परीक्षा पास नहीं कर पाता तो कोई हैरानी नहीं होती। सौभाग्य से, ज्योतिषियों द्वारा उसकी असफलता की भविष्यवाणी सुनकर उसे होश आया। उसने खुद को संभाला और सबको गलत साबित करने के लिए बेताब हो गया।
“मैं? असफल? भाग्य मुझे हरा नहीं सकता।”
उस क्षण से, उन्होंने अपना सारा समय पढ़ाई में लगा दिया। उन्हें ऐसा करना ही था। वे अपनी माँ के ऋणी थे और उन्हें अपने परिवार की देखभाल भी करनी थी। उनके अथक प्रयासों ने उन्हें सफलता के करीब पहुँचाया। उन्होंने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति का इस्तेमाल करते हुए सही राह पर वापसी की। अंततः, उन्होंने सभी बाधाओं को पार किया और कोरिया की सबसे प्रतिष्ठित लॉ फर्म में नौकरी हासिल कर ली।
उनकी कहानी ने मुझे स्पष्ट रूप से दिखाया कि पर्याप्त इच्छाशक्ति से भाग्य का रुख पलटा जा सकता है। चाहे आप हवा की विपरीत दिशा में लहरों पर

सवार हों, अगर आप दुगनी या तिगुनी ताकत से चप्पू चलाएं तो नाव की दिशा बदल सकती है। अगर आप बुरे दौर से गुजर रहे हैं, तो चप्पू को और भी कसकर पकड़ें और तैरते रहने के लिए जी-जान से संघर्ष करें।

जूलिया रॉबर्ट्स अभिनीत फिल्म 'ईट, प्रे, लव' में एक ऐसे व्यक्ति की प्रसिद्ध कहानी दिखाई गई है जो हर हफ्ते संत मैरी की मूर्ति के सामने घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करने आता था।
"कृपया, मुझे लॉटरी जीतने दो।"
वह व्यक्ति प्रतिदिन पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करता था, उसकी आँखें आँसुओं से भरी रहती थीं। चाहे कुछ भी हो जाए, वह हमेशा प्रार्थना में लीन रहता था। तंग आकर मैरी ने अंततः उससे बात की। उसने कहा: "मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूँगी, लेकिन कृपया कम से कम एक टिकट तो खरीद लो।"
अगर आपका सपना लॉटरी जीतना और एक नई जिंदगी जीना है, तो कम से कम आप इतना तो कर ही सकते हैं कि मशहूर लॉटरी की दुकानों को ढूंढें या अंकों की शक्ति का विश्लेषण करें और उन अंकों को पहचानें जिनसे जीतने की संभावना बढ़ जाए। आखिरकार, विजेता वही होता है जो उठकर दुकान पर जाकर लॉटरी का टिकट खरीदता है। पैसा भी इससे अलग नहीं है। अगर आपके पास अभी पैसा नहीं है, तो सबसे पहले आपको यह तय करना होगा कि आप कितना पैसा कमाना चाहते हैं और उसे कैसे हासिल करेंगे।
मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। मान लीजिए कि आप एक लाख डॉलर की लग्जरी कार खरीदना चाहते हैं। आपको उम्मीद है कि अगले दो वर्षों में आपकी आय में थोड़ी वृद्धि होगी, इसलिए आप कार खरीदने के लिए इतना समय देते हैं। इसका मतलब है कि आपको कम से कम पचास हजार डॉलर प्रति वर्ष बचाने होंगे, यानी चार हजार डॉलर प्रति माह, एक हजार डॉलर प्रति सप्ताह, या एक सौ पचास डॉलर प्रतिदिन। फिर आपको यह सोचना होगा कि क्या एक साधारण नौकरी से इतनी बचत करना संभव भी है।
कुछ बुनियादी गणनाओं के बाद, आपको एहसास होता है कि आपकी आमदनी को देखते हुए दो साल में इतनी रकम बचाना बहुत मुश्किल है। इसलिए आप ज़्यादा व्यावहारिक योजनाएँ बनाना शुरू करते हैं, जैसे पाँच साल तक हर महीने दो

हज़ार डॉलर बचाना। इसे ही आप प्लान बी कहते हैं, जिसमें एक अलग लक्ष्य या लंबी समयसीमा होती है। इसी तरह आप एक लग्ज़री कार खरीदते हैं। हालाँकि ऐसे लोग कम ही होते हैं, लेकिन अपने लक्ष्य को हासिल करने वाले लोग ज़रूर होते हैं।
कभी-कभी ऐसा लगता है कि आप अपना पूरा प्रयास कर रहे हैं और बदले में आपको केवल 50 प्रतिशत ही मिल रहा है, जबकि कोई और उतनी ही मेहनत करके 200 प्रतिशत प्रतिफल प्राप्त कर रहा है। यह इस बात का संकेत है कि भाग्य का भी इसमें हाथ है। लेकिन आप यह उम्मीद नहीं कर सकते कि भाग्य आपके हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने से ही आप पर टूट पड़ेगा; आपको हर समय प्रयास करना होगा, ताकि जब भाग्य आपका साथ दे तो वह आपके प्रयासों को और भी अधिक बल दे सके।

* * *

अतृप्त लालच एक हानिकारक गुण है, लेकिन निराशावादी उदासीनता भी उतनी ही हानिकारक है। सफल लोग हर संभव प्रयास करते हैं, भाग्य का साथ मिलने पर उसे थाम लेते हैं और जब भाग्य साथ नहीं देता तो उसे अपने वश में करने की कोशिश करते हैं। अंततः, पैसा भी काम या लोगों की तरह ही एक बाहरी कारक है। इसे अपना बनाने के लिए आपको मेहनत करनी होगी। जब आप इतने सक्षम और परिपक्व हो जाते हैं कि भाग्य से सब कुछ ठीक हो जाएगा, इस आरामदायक विचार से प्रभावित न हों, तभी आप एक धनी व्यक्ति की मानसिकता के साथ जी सकते हैं, इस विश्वास के साथ कि आपके पास अपनी संपत्ति को नियंत्रित करने और उसे बढ़ाने का ज्ञान है।
“मैं भाग्यशाली था” का असली मतलब क्या है? "मैं भाग्यशाली हूं।"
इंग्लिश प्रीमियर लीग में गोल्डन बूट जीतने वाले पहले एशियाई खिलाड़ी सोन ह्युंग-मिन ने एक इंटरव्यू में यही बात कही थी। गायक पार्क जिन-यंग[*6] भी अक्सर अपने इंटरव्यू लेने वालों से कहते थे कि उनकी सफलता का 30 प्रतिशत श्रेय कड़ी मेहनत को और 70 प्रतिशत भाग्य को जाता है। क्या यह उनकी आत्मप्रशंसा हो सकती है? मुझे ऐसा नहीं लगता; सोन और पार्क दोनों ही अपनी उपलब्धियों का इतना बड़ा श्रेय भाग्य को देते हैं कि यह सच नहीं हो सकता। दोनों अपने-अपने क्षेत्र में शीर्ष पर पहुंच चुके हैं। उन्हें और प्रसिद्धि की जरूरत नहीं है, और कौशल और प्रभाव के मामले में, वे अपनी

वर्तमान स्थिति में अच्छी तरह स्थापित हैं। तो फिर वे बार-बार क्यों कहते हैं कि उनकी सफलता का इतना बड़ा श्रेय भाग्य को जाता है?
मुझे हमेशा से उन लोगों की किस्मत के बारे में जानने की उत्सुकता रही है जो अपने-अपने क्षेत्रों में शीर्ष पर पहुंचे हैं। सफलता पाने से पहले उन्हें कई बार असफल होना पड़ा होगा। उनके मामले में, मेरा तात्पर्य असफलता से है, एक छोटे से, अप्रत्याशित कारक से जो उनकी तैयारी और प्रयासों के बावजूद उनकी अपेक्षाओं को पूरी तरह से उलट देता है।
एक फुटबॉल खिलाड़ी के लिए, उदाहरण के तौर पर स्टेडियम में तेज़ हवा हो सकती है जो उसके बेहतरीन गोल किक को बिगाड़ दे या जूतों के फीते उलझ जाना। एक गायक के लिए, प्रतियोगिता से एक दिन पहले गले में खराश हो सकती है, जिससे अंतिम रैंकिंग में शीर्ष स्थान पाने की उसकी उम्मीदें टूट सकती हैं। अपनी सफलता का इतना बड़ा श्रेय भाग्य को देकर, सोन ह्युंग-मिन और पार्क जिन-यंग क्षणिक पलों को अपने प्रयास से अधिक महत्व दे रहे थे। दूसरे शब्दों में, वे तैयार थे क्योंकि उन्होंने अपनी पूरी कोशिश की थी, लेकिन वे यह भी समझते और स्वीकार करते थे कि अच्छे (और बुरे) भाग्य के क्षण उनके नियंत्रण से बाहर होते हैं।

* * *

हाल ही में मुझे एक दिलचस्प लेख मिला जिसमें उन लोगों के बारे में बताया गया था जिन्होंने दो साल से भी कम समय में अपनी नौकरी छोड़ दी थी। उनसे पूछा गया कि उन्होंने नौकरी क्यों छोड़ी। जैसा कि आप उम्मीद कर सकते हैं, अधिकांश कारण उनके कार्यस्थल की स्थितियों से संबंधित थे। सबसे बड़ा कारण था "अपने बॉस या सहकर्मियों के साथ तनावपूर्ण संबंध", इसके बाद "संगठनात्मक संस्कृति के साथ असंगति", "घटिया कल्याणकारी सुविधाएं", "ऐसी जिम्मेदारियां जो उनकी योग्यताओं के अनुरूप नहीं थीं", और "कंपनी की दूरदर्शिता की कमी"। एक जवाब ने विशेष रूप से मेरा ध्यान खींचा: "विकास और उन्नति के अवसरों की कमी।"

व्यवसाय कर्मचारियों के श्रम पर चलते हैं। क्या यह कहना उचित है कि व्यवसाय अपने कर्मचारियों को ऐसे अवसर नहीं दे रहे हैं जिनसे कर्मचारी और कंपनी दोनों को लाभ हो?
मुझे वो दिन याद हैं जब मैंने टेलीविजन निर्माता के तौर पर अपना काम शुरू किया था। ये मेरे सपनों की नौकरी थी, और मैं अपने द्वारा बनाए जाने वाले सभी कार्यक्रमों के बारे में सोचकर बेहद खुश थी। मैंने प्रतियोगिताएं जीतकर अपनी काबिलियत साबित कर दी थी। मुझे लगता था कि मुझे लोकप्रिय रुझानों की गहरी समझ है और मैं दर्शकों को लुभाने वाले कार्यक्रम बनाने के लिए तैयार हूं। अब बस मुझे इन्हें बनाना शुरू करना था। उस समय मेरी उम्र सत्ताईस वर्ष थी और मैं स्टेशन का सबसे युवा निर्माता था। मेरे सामने वरिष्ठ निर्माताओं की एक पूरी टीम खड़ी थी। शो प्रोड्यूस करने के बजाय, मुझे तुरंत सहायक निर्माता बना दिया गया। मुझे सौंपे गए छोटे-मोटे काम करते हुए मैंने सोचा: मैं भी उनके जितना अच्छा हो सकता हूँ। मुझे मौका क्यों नहीं दिया जा रहा?
जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मेरी असंतुष्टि बढ़ती गई। मैं थका हुआ और निराश था। एक दिन, मैंने आखिरकार अपना मन बना लिया।
बस इतना ही। मैं किसी के द्वारा अवसर दिए जाने का इंतजार नहीं करने वाला।
मैंने पूरे एक हफ्ते तक रात-रात भर काम किया और सप्ताहांत में मिले थोड़े से खाली समय का उपयोग अपने खुद के प्रोजेक्ट पर काम करने के लिए किया: एक खुद का बनाया हुआ शो। मैंने एक पैरोडी को म्यूजिक वीडियो फॉर्मेट में बनाया और उसे इंटरनेट पर अपलोड कर दिया। लोगों की प्रतिक्रिया ज़बरदस्त रही।
समय अनुकूल था। जब वीडियो को दस लाख बार देखा गया, तो एक और प्रसारण कंपनी ने मेरे वीडियो का उपयोग करने की अनुमति मांगी। मेरे पास मना करने का कोई कारण नहीं था। लोगों के बीच चर्चा से मेरा बनाया हुआ वीडियो इंटरनेट पर तेजी से फैल गया। कुछ दिनों बाद, मुझे मेरे बॉस के कार्यालय में बुलाया गया।
“क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई अपना काम किसी प्रतिद्वंदी को भेजने की?”

मुझे कड़ी फटकार मिली, लेकिन मेरे पास अपनी बात रखने का मौका था। मैंने साफ-साफ बताया कि मैं सिर्फ प्रसारण का काम करना चाहता था, इसलिए मैंने इसे पूरा करने का रास्ता ढूंढ लिया था। मुझे लगता है कि वह नाराज़ भी हुए और प्रभावित भी। और बस इसी तरह, मुझे अपना खुद का शो प्रोड्यूस करने का मौका मिल गया।

* * *

जब चीजें उम्मीद के मुताबिक नहीं होतीं, तो लोग अक्सर इसका कारण खुद से बाहर ढूंढने लगते हैं। वे या तो दूसरों को या अपने परिवेश को दोष देते हैं, ठीक वैसे ही जैसे सर्वेक्षण में शामिल लोगों ने कहा कि उन्हें काम पर कोई अवसर नहीं मिल रहे हैं।
बेशक, यह संभव है कि आपका कार्यस्थल आपकी प्रतिभा को दबा रहा हो और आपको अपनी क्षमता को साकार करने के अवसर से वंचित कर रहा हो। लेकिन दूसरे दृष्टिकोण से देखें तो इसका यह भी अर्थ है कि अपनी योग्यता प्रदर्शित न करने के लिए आप स्वयं भी जिम्मेदार हैं। यदि आपको केवल स्तर तीन के कार्य दिए जाते हैं जबकि आपका वास्तविक कौशल स्तर दस है, तो इसका कारण यह है कि आप वास्तव में स्तर तीन पर ही हैं। जीवन आपके लिए लाल कालीन नहीं बिछाता और यह नहीं कहता, "अब आपकी बारी है। हमें दिखाओ कि आपमें क्या है!" यदि आप वास्तव में सक्षम हैं, तो आपको इसे दूसरों को दिखाने में सक्षम होना चाहिए, चाहे वर्तमान परिस्थितियाँ इसकी अनुमति दें या न दें। जब तक आप आत्मविश्वास से अपनी क्षमताओं को दुनिया के सामने प्रदर्शित नहीं कर सकते, तब तक आप स्वयं को वास्तव में कुशल नहीं कह सकते।
धन और कौशल एक ही चीज़ हैं। धन की चाहत चाहे कितनी भी तीव्र क्यों न हो, केवल उसे हासिल कर लेना ही काफी नहीं है; ठीक वैसे ही जैसे कौशल का होना ही काफी नहीं है अगर आप उन्हें प्रदर्शित करने का तरीका न खोजें। किसी चीज़ को अपना बनाने के लिए मेहनत और ऊर्जा लगती है। अंततः, धन को आकर्षित करने की कुंजी उसके लिए अवसर पैदा करने की क्षमता में निहित है।
भाग्य वह मीठा इनाम है जो हर परिस्थिति में अपने लक्ष्य को हासिल करने वालों को मिलता है। क्या अब "मैं भाग्यशाली था" यह मुहावरा ज़्यादा स्पष्ट

हो गया है? न केवल बुनियादी और ज़रूरी शर्तें (कड़ी मेहनत और कौशल) पूरी होनी चाहिए, बल्कि मौसम भी सुहाना होना चाहिए। मैंने जिन लगभग सभी अमीर लोगों से मुलाकात की है, उन्होंने यही बात कही है। अगर आप अभी एक आम वेतनभोगी कर्मचारी हैं और एक दिन अमीर बनने का सपना देख रहे हैं, तो आपको "मैं भाग्यशाली था" मुहावरे के सही अर्थ पर गहराई से विचार करना चाहिए और अपनी क्षमताओं को साबित करने के अवसर तलाशने चाहिए।
कार्य-जीवन संतुलन का विरोधाभास
कोरिया में एक टेलीविजन शो में एक खूबसूरत अभिनेत्री नजर आई। उसकी मनमोहक सुंदरता ने सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया और उसका सुडौल शरीर किसी विलो पेड़ की शाखा की तरह था।
टीवी पर डेब्यू करने से पहले ही 'खूबसूरती' शब्द उनके साथ एक उपनाम की तरह जुड़ गया था। पड़ोस के लोग उनकी तारीफ करते हुए कहते थे कि वह मिस कोरिया बन सकती हैं। जब वह किसी दोस्त से मिलने जा रही होती थीं, तो कास्टिंग एजेंट उन्हें रास्ते में रोक लेते थे। असल में, स्ट्रीट कास्टिंग के जरिए ही उन्होंने मनोरंजन जगत में कदम रखा था। उन्हें पता था कि वह खूबसूरत हैं। वह अपनी प्रतिभा दिखाने और चमकने के लिए तैयार थीं, और कैमरे भी उनके लिए तैयार थे।
उसका अंतिम लक्ष्य अमीर बनना था, और ऐसा लग रहा था कि अगर वह ठान ले तो सफल हो जाएगी। मॉडलिंग की विशेष फीस, विज्ञापन की फीस और ब्रांड एंबेसडर बनने के अवसर, कुल मिलाकर कई लाख डॉलर, उसका इंतजार कर रहे थे। वह उन धनवान बनने के सपनों के सच होने का बेसब्री से इंतजार कर रही थी।
उनके अभिनय करियर की शुरुआत सहज रही। अपनी एजेंसी के भरपूर समर्थन और आकर्षक व्यक्तित्व के कारण उन्हें अपेक्षाकृत जल्दी ही एक सहायक भूमिका मिल गई। उनके अभिनय कौशल में अभी भी कुछ कमियाँ थीं, लेकिन दर्शकों ने एक युवा प्रतिभा के आगमन का स्वागत किया। अब उनके लिए केवल स्टारडम की ओर बढ़ना ही बाकी था। जैसे-जैसे उनकी लोकप्रियता बढ़ती गई, उन्होंने एक करीबी दोस्त के साथ मिलकर आभूषणों का व्यवसाय शुरू किया। वह अपने फैशन सेंस का प्रदर्शन करना और अतिरिक्त आय अर्जित करना चाहती थीं।
जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि वह किसी भी कठिनाई को मुश्किल से ही सहन कर पाती थी, शायद इसलिए कि उसे बचपन से ही बिना शर्त ध्यान और प्यार पाने की आदत थी। वह जो भी काम शुरू करती, उसमें उसकी रुचि जल्दी ही खत्म हो जाती और

वह जल्दी ही हार मान लेती थी। चूंकि उसने बहुत कठिनाइयाँ नहीं झेली थीं, इसलिए उसमें दृढ़ता और धैर्य की कमी थी। इसके चलते, उसके लिए किसी भी काम को जारी रखना मुश्किल हो जाता था और वह अपने प्रयासों में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करने से पहले ही बार-बार हार मान लेती थी।

* * *

अपने डेब्यू के दो साल बाद, वह साउंडस्टेज की तेज रोशनी में एक नई सीरीज की शूटिंग कर रही थी। वह मुझसे मिलने आई और दर्द से कराह रही थी।
"मिन जी, मुझे बहुत मुश्किल हो रही है।"
“क्या? क्यों?”
“मुझे उस दूसरे नाटक में सबसे छोटी बेटी का किरदार निभाना अच्छा लगा था; वह आसान था। इस बार, मेरे पास बहुत सारे संवाद हैं, और मुझे अपने हनबोक में बहुत गर्मी लग रही है।[*7] हम हमेशा पहाड़ों के बीचोंबीच, सुनसान जगह पर शूटिंग करते हैं, और मुझे लगातार एक्शन सीन करने पड़ते हैं जबकि मुझमें स्पष्ट रूप से कोई तालमेल नहीं है। साथ ही, मैं कई दिनों से ठीक से सो नहीं पाई हूँ, इसलिए इन सबके ऊपर, मेरी त्वचा की हालत भी खराब है।”
"हिम्मत रखो, यह जल्द ही खत्म हो जाएगा।"
लेकिन मेरे लिए काम और निजी जीवन के बीच संतुलन महत्वपूर्ण है।

* * *

मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। काम और निजी जीवन में संतुलन - ये तीन शब्द, उनके लंबे समय तक चलने वाले और सफल करियर की इच्छा से बिल्कुल मेल नहीं खाते थे। क्या वह मनोरंजन जगत की इस गलाकाट प्रतिस्पर्धा में, जहाँ अनगिनत मेहनती सितारे लगातार उभरते और गिरते रहते हैं, एक संतुलित जीवन की उम्मीद कर रही थीं? यह किसी अनुमानित उद्योग में कोई सामान्य नौकरी नहीं थी। हालाँकि मैंने इसे ज़ाहिर नहीं किया, मैं दंग रह गया था। मैंने मनोरंजन जगत में पर्दे के पीछे रहकर अपना करियर बनाने के अपने दिनों को याद किया। हालाँकि मैं भी काम और निजी जीवन में बेहतर संतुलन चाहता था, लेकिन यह इस उद्योग की प्रकृति ही नहीं थी। कैमरे के सामने और पीछे, हर किसी से लंबे समय तक काम करने, उच्च कोटि के कौशल और समर्पण की अपेक्षा की जाती थी।

उस समय मैंने इसे हँसी में उड़ा दिया और उसके प्रति सहानुभूति जताई। मैंने इसे एक प्यारे छोटे भाई-बहन की नादानी भरी शिकायत की तरह लिया। आखिर, वह एक अभिनेत्री थी जिसने अभी-अभी अपना करियर शुरू किया था, उसके पास इस पेशे के लिए ज़रूरी सभी शारीरिक गुण थे और वह सबकी चहेती थी। मैंने यह नहीं सोचा था कि वह हमेशा किसी भी चुनौती से दूर भागेगी; मुझे लगा कि वह धीरे- धीरे इस इंडस्ट्री के तनाव और दबावों की आदी हो जाएगी और एक सफल करियर बनाएगी। ऐसा कई अभिनेताओं, गायकों और अन्य मशहूर हस्तियों के साथ हुआ था जिनसे मैं मिला था।
अब जब मैं उसकी कहानी के बारे में सोचती हूँ, तो मुझे अफसोस होता है कि मैंने उसे और ज़्यादा सलाह और सख्ती से जवाब नहीं दिया। अगर मैं समय में पीछे जा सकती, तो मैं उससे और ज़्यादा खुलकर बात करती। मैं उसे उसकी किस्मत के बारे में जो कुछ भी समझ सकती थी, सब कुछ बता देती।
मैं उससे कहूँगी कि अगर तुम हर मोड़ पर मुश्किलों और असुविधाओं से कतराती रहोगी, तो तुम कभी भी कुछ ऐसा हासिल नहीं कर पाओगी जो लंबे समय तक टिके और तुम्हारे लिए मायने रखे। काम और निजी जीवन में सही संतुलन बनाए रखना एक अच्छा लक्ष्य है, लेकिन फिर भी तुम्हें अपनी प्रतिभा और लगन दिखाने के हर मौके का इस्तेमाल करना चाहिए, खासकर अगर तुम्हारा सपना एक सफल और लंबे समय तक चलने वाले अभिनेता बनने का है। लॉटरी जीतने की तरह, कभी-कभी किस्मत साथ देती है, लेकिन तुम्हें उसका पूरा फायदा उठाना होगा और उसे बनाए रखने और उससे लाभ कमाने के लिए मेहनत करनी होगी।
मैंने गौर किया था कि यह बात खासकर अमीरों की दुनिया में सच है। स्टार बनने की चाह रखने वाले लोगों की संख्या शायद सीमित है, लेकिन अमीर बनने की चाह रखने वालों की संख्या रेत के कणों के बराबर है। कभी-कभी अमीर बनना उतना ही मुश्किल लगता है जितना आसमान से तारा चुनना। लेकिन अमीर बनने की चाह रखने वाले कई लोग बिना खास मेहनत किए दौलत हासिल करने की उम्मीद रखते हैं। हालांकि कुछ अपवाद हो सकते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि दुनिया ऐसे काम नहीं करती।
मेरे लिए काम और निजी जीवन के बीच संतुलन महत्वपूर्ण है।
मैं काम से ज्यादा व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व देता हूं।

लोग अक्सर इस तरह की बातें कहते हैं, और यह सही या गलत का सवाल नहीं है। बल्कि यह चुनाव का मामला है; आर्थिक दृष्टि से "अमीर" होना और "काम और निजी जीवन में संतुलन" होना अक्सर एक साथ नहीं चल पाते।

अगर आप सीमित समय काम करके सीमित कमाई करना चाहते हैं, तो ठीक है। अगर आपको अमीर न बनने से कोई परेशानी नहीं है, तो आपके लिए एक ऐसा जीवन बनाना आसान होगा जिसमें काम और निजी जीवन के बीच अच्छा संतुलन हो। लेकिन क्या आप बिस्तर पर आराम से लेटे-लेटे जैसी महंगी कार चलाना चाहते हैं? क्या आप अपने करियर में दूसरों से आगे बढ़ना चाहते हैं और साथ ही अपनी हर इच्छा पूरी करना चाहते हैं, चाहे वो खरीदारी हो, यात्रा हो या आराम? ये तो सरासर अवास्तविक है, नामुमकिन तो है ही।

* * *

मनोरंजन जगत पर नजर डालें तो, सबसे ज्यादा मांग वाले प्रतिभाशाली कलाकार भी दिन-रात बिना छुट्टी लिए काम करते हैं। बेशक, कुछ लोग समय देने और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के बावजूद भी बाधाओं का सामना करते हैं। मेरे अनुभव में, जो लोग लगातार प्रयास करते रहते हैं, उन्हें हमेशा अच्छे परिणाम मिलते हैं, भले ही थोड़ी देरी से ही सही। इसीलिए मैं उन लोगों से कहता हूं जो मुझसे कहते हैं कि उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता कार्य-जीवन संतुलन है, कि वे अपने इच्छित जीवन की स्पष्ट तस्वीर बनाएं और उसी के आधार पर निर्णय लें।
जो लोग तरक्की करना चाहते हैं, उन्हें कुछ समय के लिए अपने निजी जीवन को दरकिनार करना पड़ सकता है। आप दुनिया के सबसे सक्षम और सफल सीईओ हो सकते हैं, लेकिन अगर आप अपने व्यवसाय को सुचारू रूप से चलाना और आगे बढ़ाना चाहते हैं, तो निरंतर नवाचार और विकास अनिवार्य है।
व्यवसाय चलाना साइकिल या हेलीकॉप्टर चलाने जैसा है: आपको लगातार पैडल मारते रहना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि रोटर ब्लेड घूमना बंद न करें, अन्यथा आप गिर सकते हैं या दुर्घटना का शिकार हो सकते हैं। निरंतर

तनाव अपरिहार्य है, खासकर यदि आपके सैकड़ों या हजारों कर्मचारी अपनी आजीविका के लिए आप पर निर्भर हैं।
सीईओ का जीवन आत्म-संयम से भरा होता है। इसीलिए मैं व्यापार में सफल होने के साथ-साथ कार्य-जीवन में पूर्ण संतुलन बनाए रखने की इच्छा को विरोधाभास मानता हूँ। ये दोनों बातें परस्पर विरोधी हैं।
वह युवा अभिनेत्री जो एक शीर्ष स्टार बनना चाहती थी, लेकिन इसके लिए आवश्यक त्याग करने को तैयार नहीं थी, एक आसान भूमिका से दूसरी आसान भूमिका में जाती रही, हमेशा एक सहायक भूमिका निभाती रही, अक्सर एक धनी परिवार की बेटी की भूमिका। दुर्भाग्य से, वह अभी भी बहुत चुनिंदा थी और केवल तभी ऑडिशन देती थी जब उसे भूमिका पसंद आती थी।
एक साल बीत गया, फिर दो साल। उसकी उपस्थिति धीरे-धीरे कम होती गई और अंत में वह पूरी तरह गुमनामी में खो गई। मुझे आश्चर्य होता है कि वह अब कहाँ है और क्या वह अब भी एक शानदार जीवन का सपना देख रही है।
अपनी इच्छाशक्ति को कैसे जगाएं
अब आप जान गए होंगे कि सौभाग्य प्राप्त करने में इच्छाशक्ति कितनी महत्वपूर्ण है। आप यह भी समझते हैं कि आपको अपने अवसर स्वयं बनाने होंगे और दूसरों को अपनी क्षमता दिखानी होगी। लेकिन इन सब चीजों को हासिल करने के लिए आप अपनी इच्छाशक्ति को कैसे जगाएंगे? आप खुद को कैसे तैयार करेंगे और अपनी योजना को अमल में कैसे लाएंगे? कुछ लोग धनवान बनने की प्रबल इच्छा रखते हैं, फिर भी कहते हैं कि उनमें कोई प्रेरणा नहीं है। वे दावा करते हैं कि वे बहुत सारा पैसा कमाना चाहते हैं, लेकिन साथ ही, यह सब उन्हें असंभव सा लगता है; उन्हें नहीं पता कि शुरुआत कहाँ से और कैसे करें। इच्छाशक्ति को जगाने का एक बहुत ही सरल तरीका है।

एक दिन, एक युवा उद्यमी मुझसे मिलने आया, यह जानने के लिए कि उसे अपना व्यवसाय बढ़ाना चाहिए या नहीं। जैसे ही वह अंदर आया, मैंने उसकी आँखों में एक चमक देखी। वह चतुर लग रहा था, और यह स्पष्ट था कि उसमें असाधारण दृढ़ता थी। उसकी आँखों को देखकर ही मैं उसके बारे में बहुत कुछ जान सकता था। उसकी पुतलियाँ दमक रही थीं, मानो उसकी इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प को दर्शा रही हों। उद्यमी ने मुझसे बात की।

"रेस्तरां के अपने व्यवसाय की बदौलत मैं ठीक वैसा ही अमीर व्यक्ति बन गया जैसा मैंने सपना देखा था।"
जैसे ही मैंने उसकी आँखों में देखा, कई धनी लोगों की छवि मेरे सामने कौंध गई। मैंने मन ही मन सोचा, अरे, यह तो बिल्कुल उन्हीं जैसा है। अपार धनवान नए लोगों में एक विचित्र विशेषता होती है। उन सभी की एक विशिष्ट "अमीर व्यक्ति की छवि" होती है, बिना किसी अपवाद के। इसका तात्पर्य यह है कि उन्हें इस बात का स्पष्ट अंदाजा होता है कि वे किस प्रकार के अमीर व्यक्ति बनना चाहते हैं और कितने अमीर बनना चाहते हैं।
“आप इतने सफल कैसे हुए?”
“मैंने एक ही चीज पर ध्यान केंद्रित किया। मैं हर दिन पहाड़ पर चढ़कर अपना घर देखता था।”
वह एक प्रसिद्ध रेस्तरां व्यवसायी थे, जिनके पास चियोंगडम-डोंग में इतालवी रेस्तरां से लेकर आलीशान रूफटॉप बार तक दर्जनों चेन स्टोर थे।[*8] उनके व्यवसाय से उन्हें सालाना एक अरब डॉलर से कम का राजस्व प्राप्त नहीं होता था। आज, वह एक युवा और धनी उद्यमी हैं जिनका व्यवसाय उनके भोजन और सेवा की गुणवत्ता के कारण हर साल बढ़ रहा है। हालाँकि, उन्होंने यह मुकाम आसानी से हासिल नहीं किया था; उन्होंने अपने बचपन में बहुत सारी कठिनाइयों का सामना किया था।
उनके पिता मांस के थोक व्यापार में काम करते थे। उनके पिता को आर्थिक तंगी का सामना किए बिना शायद ही कोई दिन बीतता था। परिवार का गुजारा उनकी मां की रेस्तरां में काम करके मिलने वाली आमदनी से ही चलता था। हालात और भी बदतर हो गए जब एक दिन उनके पिता ने परिवार की सारी संपत्ति गंवा दी और उन्हें अपने किराए के मकान से बेदखल कर दिया गया।
झुग्गी बस्ती में किराए के मकान में रहते हुए उस युवा उद्यमी ने मुश्किल से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की। हाई स्कूल से स्नातक होने के बाद जब तक वह सियोल नहीं चला गया, तब तक वह ऐसे घर में रहता था जिसमें हर बार बारिश होने पर पानी भर जाता था। उसे डर रहता था कि स्कूल में उसका मज़ाक उड़ाया जाएगा क्योंकि उसकी वर्दी से फफूंद की बदबू आती थी। और जब वह घर लौटता, तो उसे फिर से घर में पानी भरने की चिंता सताती रहती थी। उसके लिए, घर एक ऐसा शब्द था जिसे वह फिर से पाना चाहता था, एक खोया हुआ बचपन का सपना।

जब से वह सियोल आया था, उसके मन में एक ही बात खटकती थी। वह हमेशा अपने सपने को दोहराता रहता था: "मैं अपना खुद का घर खरीदूंगा जहाँ मैं अपनी बाकी जिंदगी बिता सकूंगा!"
फिर उसने अपने सपने को साकार करने का ठान लिया। उसने गंगनम में एक घर की कल्पना की, जो धन-दौलत का प्रतीक बन चुका एक इलाका है, और जहाँ से हान नदी का सुंदर नज़ारा दिखता हो। वह घर मूसलाधार बारिश और चोरों से पूरी तरह सुरक्षित होगा। जब वह "घर" के बारे में सोचता, तो उसके मन में बस एक ही जगह आती। वह अस्पष्ट सपने नहीं देखना चाहता था। इसलिए हर रात काम खत्म करने के बाद, वह सीधे पास के पहाड़ की ओर चल पड़ता था।
पहाड़ की चोटी से, वह हान नदी के दूसरी ओर अपने सपनों का घर देख सकता था। घर की टिमटिमाती तारों जैसी रोशनी को देखकर उसे अगले दिन को आगे बढ़ाने की शक्ति मिलती थी, क्योंकि वह कल्पना करता था कि एक दिन वह उस घर का मालिक बन जाएगा।
“एक्स अपार्टमेंट, वाई-डोंग, योंगसान जिला, पांच अरब वॉन।”
वह अपने भावी घर की विशेषताओं को मंत्र की तरह दोहराता रहा। अपने सपने को साकार करने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर, उसने घर के बारे में सब कुछ कल्पना कर लिया था, जिसमें पता और आसपास की दुकानें भी शामिल थीं।

* * *

उन्होंने कुछ और साल एक रेस्तरां में काम किया, जहाँ उन्होंने खाद्य सेवा उद्योग के सभी पहलुओं के बारे में सीखा। धीरे-धीरे उन्होंने इतनी बचत जमा कर ली कि अपना खुद का व्यवसाय शुरू कर सकें। लाभ और हानि का अच्छी तरह हिसाब लगाने के बाद, उन्होंने आखिरकार अपना पहला रेस्तरां खोला। यह कोई जोखिम भरा या अति महत्वाकांक्षी उद्यम नहीं था जिसमें वे कर्ज में डूब जाते। उन्होंने एक छोटा, सुनियोजित रेस्तरां खोला, जिसका मूल विचार सरल था
- एक धीमी और स्थिर प्रगति, लेकिन सफलता की गारंटी।
उन्होंने हर बात का ध्यान रखा था: किराया, श्रम लागत, निवेश। इसी सटीक योजना के आधार पर उन्होंने पांच वर्षों तक लगातार अपना व्यवसाय बढ़ाया और एक सफल और प्रतिष्ठित रेस्तरां व्यवसायी बन गए।
जब उनके रेस्टोरेंट ने मुनाफा कमाया, तो उन्होंने सबसे पहले अपना सपना पूरा किया: वह घर जिसके बारे में उन्होंने पूरी जिंदगी सोचा था। इस खरीद के

साथ, उन्हें अपना खोया हुआ बचपन वापस मिल गया। किसने सोचा होगा कि बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के एक युवा रेस्टोरेंट कर्मचारी इस उद्योग में इतना बड़ा नाम बन जाएगा?
युवा उद्यमी ने आगे कहा: “मुझे लगता है कि तभी मैंने एक ही लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया। मेरा इरादा धन-दौलत जमा करने का नहीं था। मैं बस इतना पैसा चाहता था जिससे एक आरामदायक घर खरीद सकूँ और अपनी माँ की देखभाल कर सकूँ। कुछ लोग महंगी विदेशी कारें या आलीशान घड़ियाँ खरीदने को प्राथमिकता देते हैं। मेरे लिए ये चीजें गौण हैं। लोग बहुत सरल होते हैं। आप किस चीज को महत्व देते हैं, यह आपके जीवन के अनुभवों पर निर्भर करता है। मेरे मामले में, मेरा लक्ष्य एक घर था क्योंकि मेरे पास उसी की कमी थी।” जब मैंने उसकी अविचलित आँखों में देखा, तो मुझे बिना किसी संदेह के पता चल गया: यह व्यक्ति और भी अमीर बनने वाला है।
सभी सफल लोगों में कुछ न कुछ ऐसा होता है जो उन्हें दूसरों से अलग बनाता है। युवा उद्यमी अपने मन में उस छवि को धीरे-धीरे साकार कर रहा था। यहाँ जिस "छवि" की मैं बात कर रहा हूँ, वह है "आप क्या हासिल करना चाहते हैं"—दूसरे शब्दों में, वह "भविष्य" जिसे आप साकार करना चाहते हैं। जेटीबीसी[*9] के मुख्य एंकर की कहानी एक और उदाहरण है जो इसके महत्व को दर्शाती है। उस एंकर को स्टेशन द्वारा एक राष्ट्रव्यापी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान जीतने के बाद नियुक्त किया गया था, जिसमें जीतने की संभावना 2000 में से 1 थी। जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने परीक्षा के लिए खुद को कैसे तैयार किया, तो उन्होंने उत्तर दिया: "मैंने प्रसारण स्टेशन में काम करने की कल्पना करके हर दिन अपने दिल को मजबूत किया।"

इसी संदर्भ में, मेरा मानना है कि आजकल चल रहे "अमीर लोगों के अनुभव" से कुछ सीख ली जा सकती है। इससे आपको पता चलेगा कि "अमीर" होने के सुख-सुविधाओं की आप वास्तव में कितनी कदर करते हैं। उदाहरण के लिए, आप किसी ऐसे पांच सितारा होटल में कई सौ डॉलर का स्वादिष्ट भोजन कर सकते हैं जहाँ आप आमतौर पर नहीं जाते, या किसी ऐसी उड़ान में प्रथम श्रेणी की सीट खरीद सकते हैं जिसका खर्च आपकी मौजूदा आमदनी से संभव नहीं है। कुछ लोग इस तरह के

फिजूलखर्ची को गलत ठहरा सकते हैं, लेकिन अमीर बनने का अनुभव लेने के लिए अमीरों की तरह पैसे खर्च करना एक अनमोल अनुभव हो सकता है।
जब आप किसी आलीशान डाइनिंग रूम में एक बड़ी मेज पर भोजन करते हैं, और कोई आपका कोट ले लेता है और आपके लिए कुर्सी खींच देता है, जब आपके अनुभव को शुरू से अंत तक सुखद बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी जाती, तब आपको एहसास होता है कि इस तरह की बारीकियों पर ध्यान देने की कोई कीमत नहीं होती। अगर आप उस अनुभव से यह सोचकर संतुष्ट हो जाते हैं कि एक अमीर व्यक्ति की दुनिया कितनी शानदार होती है और आप उस एहसास को अपने दिल में बसाना चाहते हैं, तो आप अपनी प्रेरणा को कर्म में बदलने और धनवान बनने के तरीके खोज लेंगे।
लेकिन खुद को प्रेरित करने के लिए आपको इतने महंगे कदम उठाने की ज़रूरत नहीं है। आप छोटे-छोटे कदम उठाकर भी अपने लक्ष्यों को हासिल करना शुरू कर सकते हैं। असल में, हम सभी अपने जीवन के कुछ अंशों में एक समृद्ध जीवनशैली जीते हैं, भले ही हमें इसका हमेशा एहसास न हो। उदाहरण के लिए, जब आप सालों बाद पहली बार किसी डिपार्टमेंटल स्टोर से उधार पर अच्छे कपड़े खरीदते हैं या किसी बेहद तनावपूर्ण दिन के अंत में खुद को एक शानदार डिनर से पुरस्कृत करते हैं, तो आप खुद को थोड़ी सी विलासिता का तोहफा दे रहे होते हैं।
मैं ये नहीं कह रहा कि आप YOLO (यू ओनली लिव वन्स) को अपना आदर्श वाक्य बना लें या अपनी हैसियत से ज़्यादा खर्च करें। मेरा मतलब ये है कि आप अपने लिए ठोस लक्ष्य निर्धारित करें और अपने भविष्य की ख्वाहिशों को पूरा करने में संकोच न करें। सिर्फ़ ये कहने से संतुष्ट न हों कि आप बहुत बड़ी कामयाबी हासिल करेंगे। एक समृद्ध जीवन की आपकी कल्पना इतनी स्पष्ट होनी चाहिए कि वो आपके दिमाग में हमेशा के लिए बस जाए।
स्पष्ट लक्ष्य होने से आपके कार्य अधिक ठोस हो जाते हैं, जिससे लक्ष्य प्राप्त करने की संभावना बढ़ जाती है। एक स्पष्ट उद्देश्य आपको आसानी से विचलित होने से बचाता है, भले ही कभी-कभी आप अपना दृष्टिकोण खो दें या आपका निर्णय धुंधला हो जाए। स्पष्ट उद्देश्य वाला व्यक्ति अपनी प्रेरणा बनाए रखने और धैर्य रखने की अधिक संभावना रखता है, जिससे वह व्यर्थ की चिंताओं से कम प्रभावित होता है। जिन लोगों के सपने इतने वास्तविक होते हैं कि वे लगभग साकार हो सकते हैं, वे अंततः उन्हें प्राप्त करने में सफल होते हैं।

स्पष्ट विचार ठोस परिणामों की ओर ले जाते हैं, जबकि अस्पष्ट आकांक्षाएँ कभी भी ठोस रूप नहीं ले पातीं।
कल्पना कीजिए कि आप एक धनी व्यक्ति हैं और आप एक धनी व्यक्ति के रूप में क्या हासिल करना चाहते हैं। आप जितनी अधिक जानकारी शामिल करेंगे, सफलता पाने की आपकी इच्छा उतनी ही प्रबल होगी। यह अपने लक्ष्य तक पहुँचने का एक सरल लेकिन प्रभावी तरीका है।
एक कहावत है, "अच्छे मांस की पहचान वही करते हैं जिन्होंने उसे चखा हो।" बड़ी सफलता पाने से पहले आपको छोटी-छोटी जीत हासिल करनी होंगी। उस युवा उद्यमी को मेरी सलाह की कोई ज़रूरत नहीं थी। वह पहले से ही जानता था कि उसकी स्थिति क्या है और उसे क्या करना है। हर किसी की तरह, उसे भी कुछ बुरे दौर से गुज़रना पड़ सकता है। फिर भी, वह जानता है कि वह कभी भी धनवानों की श्रेणी से बाहर नहीं निकलेगा। मुझे पूरा विश्वास है कि वह लगातार ठोस और स्पष्ट परिणाम हासिल करता रहेगा।
भाग्य की भी एक समय सीमा होती है।
क्या मैं बुढ़ापे में खुश रहूंगा?
"दस साल बाद मैं कहाँ होऊँगा?"
लोग हमेशा जीवन के अंत के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहते हैं। वे जानना चाहते हैं कि क्या वे अपने जीवन के अंतिम वर्षों में धनवान बनेंगे और सेवानिवृत्ति के बाद सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे। ऐसा करने में वे यह भूल जाते हैं कि जीवन किसी आदर्श परिदृश्य के अनुसार नहीं चलता। इसका कोई विस्तृत, पूर्वनिर्धारित मार्ग नहीं है, केवल एक सामान्य दिशा है। अंततः, विस्तृत मार्ग स्वयं तय करना आपका काम है।
जब मैं उन्हें यह बताता हूँ, तो लोग हमेशा निराश होकर पूछते हैं: "लेकिन क्या भाग्य जैसी कोई चीज़ नहीं होती? क्या आप कह रहे हैं कि साजू और म्योंगली सब झूठ हैं?"

* * *

अंततः, भाग्य अतीत, वर्तमान और भविष्य के संयुक्त प्रभाव से बनता है। इसीलिए कोई भी भविष्य की भविष्यवाणी नहीं कर सकता। यह उन महत्वपूर्ण पाठों में से एक है जो मैंने अनगिनत लोगों को देखकर सीखा है।

धन-दौलत भी वैसी ही है। बेशक, अचानक धन-दौलत मिलने की संभावना हमेशा रहती है। हालांकि, अगर आपका भाग्य ऐसा है कि आपके तीर हमेशा निशाने पर लगते हैं लेकिन कभी सटीक नहीं होते, तो ऐसी किस्मत मिलने की संभावना लगभग शून्य है।
एक आम गलतफहमी यह है कि धन के मामले में सौभाग्यशाली होने का मतलब है कि भविष्य में आपको अपार धन-संपत्ति प्राप्त होगी। ध्यान रखें कि "अमीर होने" का अर्थ और धन का मूल्य हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग होता है। कुछ लोगों के लिए दस अरब डॉलर भी शायद ही मायने रखें, जबकि दूसरों के लिए एक हजार डॉलर भी हर तरह की परेशानी से मुक्ति दिला सकता है।
इस पर विचार करना महत्वपूर्ण है: धन के मामले में भाग्यशाली होने का क्या अर्थ है? और धन के लिए हमें क्या कीमत चुकानी पड़ती है?

* * *

साइमन एक साधारण, नीरस जीवन जी रहा था। वह एक सुपरमार्केट में अंशकालिक कैशियर के रूप में काम करता था। वह हर दिन एक ही समय पर आता और अपनी शिफ्ट के दौरान मशीनी तरीके से बारकोड स्कैन करता था।
एक दिन एक ग्राहक ने उनसे कहा: "अगले साल आपके लिए पैसों के मामले में बहुत भाग्यशाली रहने वाला है।"
ग्राहक ने अपना परिचय चेहरा पढ़ने वाले के रूप में दिया। भले ही उन्होंने यह बात केवल शिष्टाचारवश कही हो, लेकिन इससे साइमन खुश हो गया। दरअसल, उस दिन से साइमन के चेहरे पर हमेशा एक बड़ी मुस्कान रहती थी। हालाँकि वह अक्सर यही सोचता था कि ऐसा कभी नहीं होगा, लेकिन उसके मन में कहीं न कहीं एक उम्मीद भरी आवाज़ गूंजने लगी, "कौन जानता है?" और वह आवाज़ धीरे-धीरे तेज़ होती गई।
इसलिए साइमन बेसब्री से इंतज़ार करता रहा। उसने तीन महीने इंतज़ार किया, जो छह महीने में बदल गया, फिर एक साल। नया साल शुरू हो चुका था, लेकिन फिर भी कुछ नहीं हुआ। साइमन उलझन में था। उसे उस अप्रत्याशित लाभ का कोई संकेत नहीं दिख रहा था जिसकी वह उम्मीद कर रहा था। उसकी आशा भरी उम्मीदें चकनाचूर हो गईं, और केवल निराशा ही हाथ लगी।

* * *

असल में, साइमन का सौभाग्य पहले ही उससे दूर जा चुका था। पिछले साल साइमन हर महीने दो हज़ार डॉलर कमा रहा था। अगले साल उसकी प्रति घंटे की मजदूरी बढ़ गई, जो अंशकालिक कामगार के लिए बहुत ही दुर्लभ बात है। चेहरे के भावों को पढ़ने वाले ने साइमन के चेहरे पर जो सौभाग्य देखा था, उसमें यह बढ़ोतरी भी शामिल थी।
धन के मामले में सौभाग्य का मतलब यह नहीं है कि आप रातोंरात अरबपति बन जाएंगे। इसका मतलब सिर्फ इतना है कि आप एक बेहतर, समृद्ध वातावरण में होंगे, जहां आपके लिए अधिक धन कमाने के अनुकूल परिस्थितियां होंगी। इसका यह बिल्कुल भी मतलब नहीं है कि लाखों डॉलर आसमान से आपके हाथों में गिरेंगे, जैसा कि साइमन ने कल्पना की थी। मेरे अनुभव के अनुसार, जब धन का सौभाग्य आपके पक्ष में आ रहा होता है, तो उसकी राशि का अनुमान लगाना असंभव है। यह एक हजार डॉलर भी हो सकता है, या एक लाख डॉलर भी।
साइमन को चेहरा देखकर भविष्यवाणी करने वाले व्यक्ति से इस बात का गुस्सा था कि उसने उसे अचानक मिले धन की सही-सही तारीख और राशि नहीं बताई। उसे यह एहसास नहीं था कि असल में उसी ने यह अवसर खो दिया था। यह उन लोगों की खासियत है जिन्हें भाग्य के आने के समय और तरीके के बारे में गलतफहमी होती है और जब भाग्य आता है तो उन्हें यह नहीं पता होता कि उसका क्या करना है। काश साइमन ने सोचा होता, "ठीक है, मेरी किस्मत पैसों के मामले में अच्छी चल रही है। चूंकि मेरी सैलरी बढ़ गई है, तो शायद मुझे उस पैसे को शेयरों में निवेश करना चाहिए, भले ही वह ज्यादा न हो।" कहानी कुछ और ही होती। अगर उसने निवेश के बारे में सीखा होता और कुछ व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया होता, तो उसे पैसों की बेहतर समझ होती, और चूंकि वह आर्थिक रूप से अच्छे दौर से गुजर रहा था, तो शायद परिणाम इतने बुरे भी नहीं होते। अगर आप लॉटरी जीतना चाहते हैं, तो कम से कम एक टिकट तो खरीदना ही होगा। धन के मामले में सौभाग्य अपने आप में कोई परिणाम नहीं है। यह एक सहायक शक्ति है जो आपके प्रयासों में मदद करती है। इसका पूरा लाभ उठाने के लिए, आपको पहले एक लक्ष्य निर्धारित करना होगा।

एक साल जितना आप सोचते हैं उससे कहीं अधिक लंबा होता है। इस दौरान बहुत कुछ हो सकता है, और जो कुछ हो सकता है वह केवल पैसे तक सीमित नहीं है। कुछ लोग कड़ी मेहनत करके मनचाहे स्कूल में दाखिला पा लेते हैं, जबकि अन्य लोग लगन से काम करके अपना व्यवसाय बढ़ाने में सफल होते हैं।
हम चुनाव करते हैं, जिम्मेदारी लेते हैं और ध्यान केंद्रित करते हैं। हम मरने तक इसी प्रक्रिया को दोहराते रहते हैं। जीवन का यही सार है। यह एक ऐसा चक्र है जो स्वतंत्र इच्छाशक्ति से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। इसमें केवल इतना ही अंतर है कि आपने अच्छा चुनाव किया या बुरा और आप उस चुनाव के प्रति कितने समर्पित थे।
आप क्या चुनाव करते हैं और उसमें कितना प्रयास लगाते हैं, यह अंततः आपकी इच्छाशक्ति पर निर्भर करता है। आपका इरादा ही सफलता और असफलता के बीच अंतर पैदा कर सकता है। साइमन की तरह कुछ न करना और फिर भी भाग्य से सफलता की उम्मीद रखना, ठीक वैसे ही है जैसे जीवन रूपी कागज पर एक शब्द भी लिखे बिना अच्छे अंक पाने की उम्मीद करना।
जो लोग पूछते हैं, "मेरी किस्मत इतनी खराब क्यों है?" उन्हें मैं यही कहता हूं, जबकि उन्हें अपनी अच्छी किस्मत का फायदा उठाना चाहिए।
भाग्य को हवाई यात्रा के माइलेज पॉइंट्स की तरह समझें। हवाई यात्रा के माइलेज की एक समय सीमा होती है, जिसके बाद वे समाप्त हो जाते हैं। क्या आप उन्हें व्यर्थ जाने देंगे? बिल्कुल नहीं। समझदारी इसी में है कि जब तक संभव हो, उनका भरपूर लाभ उठाएं। जब आपका भाग्य साथ दे, तो आपको उसका पूरा फायदा उठाने के लिए कदम उठाने चाहिए, इससे पहले कि वह समाप्त हो जाए।

* * *

आपने शायद "दस साल का भाग्य" वाली कहावत सुनी होगी।[*10] लंबा भाग्य दस साल का होता है, छोटा भाग्य पाँच साल का और मामूली भाग्य एक साल का। समय को छोटी अवधियों में विभाजित करने से हमें भाग्य के प्रवाह की सामान्य दिशा देखने में मदद मिलती है।
मैं अक्सर लोगों को इप-चुन के बाद शुरू होने वाले चंद्र नव वर्ष में सभी को मिलने वाले छोटे-मोटे सौभाग्य के विचार पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह देता हूँ। [*11] उस समय सभी को मिलने वाले छोटे-मोटे सौभाग्य का उपयोग करने की कल्पना करना, दस वर्षों तक चलने वाले सौभाग्य की कल्पना करने की

तुलना में कम चुनौतीपूर्ण लगता है। ऐसा लगेगा जैसे आप किसी विशाल, अजेय दीवार का सामना कर रहे हैं। इसके विपरीत, "इस वर्ष का सौभाग्य" हर साल नवीनीकृत होता है, जिससे सभी को एक नई शुरुआत करने का अवसर मिलता है। यह एक ऐसा क्षण है जब आपके पास इस वर्ष के सौभाग्य का उपयोग करके अपने उद्देश्यों को ऊर्जा प्रदान करने के लिए पर्याप्त अवसर होता है, भले ही इससे घटनाओं के समग्र क्रम में कोई परिवर्तन न आए।
हर साल वसंत ऋतु में इप-चुन में नए सिरे से शुरुआत करने से मन को भी सुकून मिलता है। कर्म ही सफलता की कुंजी है। आपके इरादे और आपके निर्णय आपके व्यवहार को आकार देते हैं, और आपके कर्मों का फल उस वर्ष आपके भाग्य में झलकेगा।
जीवन में आगे क्या होगा, यह कोई नहीं जानता, यहाँ तक कि अगले महीने के बारे में भी नहीं। आज की दुनिया में यह बात और भी सच है, जहाँ बदलाव की गति लगातार बढ़ती जा रही है। अगर आपको एक साल लंबा लगता है, तो इसका मतलब है कि आपके पास बदलाव करने या अपनी ज़िंदगी को एक नई दिशा देने के लिए पर्याप्त समय है।
आपको अपने भाग्य की स्पष्ट कल्पना करनी चाहिए और यह तय करना चाहिए कि आप क्या कदम उठाने जा रहे हैं। अगर आप अपने भाग्य को नजरअंदाज करेंगे तो दुनिया का सबसे अच्छा भाग्य भी हवा में गायब हो जाएगा।
अभी, जब आप इसे पढ़ रहे हैं, आपका भाग्य आपका ध्यान आकर्षित करने और पूरी तरह से फलने-फूलने की उम्मीद कर रहा है। आप इसके साथ क्या करेंगे? क्या समजे[*12] और नौ साल की घटना पर विचार करना महत्वपूर्ण है?
पारंपरिक कोरियाई लोककथाओं और भविष्यवाणियों के अनुष्ठानों के साथ-साथ बौद्ध धर्म में भी, तीन और नौ अंकों का विशेष महत्व है। "तीन वर्षों का दुर्भाग्य" एक कोरियाई मान्यता है जिसके अनुसार विपत्तियाँ हम सभी पर आती हैं, और अक्सर वे तीन-तीन के समूह में आती हैं। सामजे बौद्ध धर्म की "तीन (सम) विपत्तियों (जे)" की अवधारणा है। सामजे शब्द नौ वर्षों के अंतराल में घटित होने वाली तीन विपत्तियों का वर्णन करता है। पहले वर्ष को देउल-सामजे (आने वाली तीन विपत्तियाँ), दूसरे को नल-सामजे (समाप्त होने वाली तीन विपत्तियाँ), और तीसरे को नल-सामजे (जाने वाली तीन विपत्तियाँ) कहा जाता है। इन तीनों में से देउलसामजे सबसे भीषण है।

कोरिया में, जब भी किसी पर विपत्ति आती है, लोग इसे समजाए (अप्रत्याशित भाग्य) से जोड़ते हैं। इस तर्क के अनुसार, मानवता का आधा हिस्सा किसी न किसी समय अप्रत्याशित विपत्ति का शिकार हो जाता है।
लेकिन मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि समजाए हमेशा बुरी बात नहीं होती। जैसा कि मैंने इस किताब में पहले भी लिखा है, संकट का समय एक छिपा हुआ अवसर हो सकता है और सुखद अंत की ओर ले जा सकता है। इसीलिए लोगों ने सकारात्मक परिणाम आने पर 'बोक-समजाए' (भाग्यशाली समजाए) और इसके विपरीत स्थिति में 'अक-समजाए' (दुर्भाग्यपूर्ण समजाए) जैसे मुहावरे बनाए हैं।
नौ वर्ष की घटना या "नौ-अंत" भी कुछ अलग नहीं है। कोरियाई परंपरा में पूर्णता का प्रतीक माने जाने वाले दस से ठीक पहले नौ आता है। इसलिए नौ संख्या के गुणों को लेकर बहुत सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि नौ को परिवर्तन और अस्थिरता का समय माना जाता है—संक्षेप में, दुर्भाग्य का प्रतीक। कोरिया में, "नौ-अंत" का अर्थ 1999 या 2009 जैसे किसी वर्ष के अंत में नौ आना नहीं है, बल्कि यह किसी व्यक्ति की उस आयु को दर्शाता है जिसके अंत में नौ आता है, जैसे कि उनतीस, उनतीस या उनतालीस। इसलिए, नौ वर्ष में रहते हुए विवाह, संतानोत्पत्ति, व्यवसाय शुरू करना या घर बदलना जैसे बड़े जीवन संबंधी निर्णय लेने से बचना आवश्यक माना जाता है। उदाहरण के लिए, "उनतीस वर्ष की आयु में विवाह को टाल दें" या "उनतीस वर्ष की आयु में नया व्यवसाय शुरू न करें" जैसी सलाह दी जा सकती है। बेशक, आजकल बहुत से लोग ऐसी सलाह का पालन नहीं करते हैं।
यह कोरियाई लोगों के ऋतुओं के परिवर्तन को देखने के तरीके के समान है। "मौसम परिवर्तन" के दौरान, जो कि नए मौसम के शुरू होने से पहले अस्थिरता और उथल-पुथल से भरा समय होता है, भाग्य को भी कमज़ोर माना जाता है। लेकिन समजाए की तरह, यदि आप परिवर्तन और अस्थिरता के इन समयों के प्रति सचेत रहें और इनका लाभ उठाने का प्रयास करें, तो ये आपके लिए लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं।
संक्षेप में, मेरे अनुभव के अनुसार, समजे और नौ अंकों की घटना वास्तविक है, लेकिन कुछ लोगों पर इसका प्रभाव पड़ सकता है जबकि अन्य पर नहीं। जब आप ऐसे संभावित अशुभ समय में हों, तो शांत रहने और सावधानी बरतने की कोशिश करें ताकि दुर्भाग्य से बचा जा सके। आदर्श रूप से, जब ये समय बीत जाए, तो आप

□□□□□ □□ □□ □□□□□□□, "□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□" □□ "□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□"□

□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□, □□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□, □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□

□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□	□□□□□ □□□□□□□ □□□	□□□□□ □□□□□ □□□□□	□□□□□ □□□□□□ □□□□□	□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□
DEULSAMJAE	□□□□□ □□ □□□□□	□□□ □□ □□□□□	□□□□□ □□□□□	□□□□□ □□ □□□□□
NULSAMJAE	□□□□□ □□ □□□□□	□□□□□□ □□ □□□□□	□□□□□□ □□ □□□□□	□□□□□□□ □□ □□□□□
NALSAMJAE	□□□ □□ □□□□□	□□□□□□□ □□ □□□□□	□□□□□ □□ □□□□□	□□□□□□□ □□ □□□□□

□□□□□□ □□□□□□□

*1 □□□□□ □□ □□□□□□□□

*2 □□□□□□□□ (□□□□□□□□ □□□□□ "□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□") □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□, □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□

*3 □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□; □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□

*4 □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□

*5 □□□□□ □□□□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□ "□□□□□□□□□□□ □□", □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□, □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□

*6 □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□, □□ □□.□.□□.□., □□□□ □, □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□

*7 □□□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ "□□□□□□□□ □□□□□□□", □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□

*8 □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□-□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□

*9 □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□

*10 □□□□□ (□□) □□□□□□□ (□□□□□) □□ (□□□□□) □□□□ (□□□□□□).

*11 □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□, □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□

विभिन्न ऋतुओं में विभाजित करती हैं, जिनमें से प्रत्येक लगभग पंद्रह दिनों के अंतराल पर होती है। कोरिया में कृषि चक्रों की भविष्यवाणी करने और अन्य मौसमी अनुष्ठानों का पालन करने में इन जेओल्गी का पालन अत्यंत महत्वपूर्ण था। इप-चुन चंद्र कैलेंडर का एक बहुत ही महत्वपूर्ण दिन था, इस दिन कई अनुष्ठान आयोजित किए जाते थे ताकि उस वर्ष सफल कृषि सुनिश्चित हो सके। इप-चुन शब्द के चीनी अक्षर, जिसका अर्थ है "वसंत की शुरुआत", परंपरागत रूप से आयताकार चिह्नों पर लिखे जाते थे और सौभाग्य लाने के लिए घरों के दरवाजों के ऊपर लटकाए जाते थे (gastrotourseoul.com)।
*12 समजाए बौद्ध धर्म में "तीन आपदाएँ" हैं, या कोरियाई लोककथाओं और पारंपरिक भविष्यवाणियों
के अनुसार "दुर्भाग्य के तीन वर्ष" हैं।

आत्म -सुझाव का मनोविज्ञान

3

अवसर उन्हीं को मिलते हैं जो भविष्य को समझ सकते हैं।

अपनी अंतरात्मा की धड़कन को महसूस करें "आखिर आपको यह बात कैसे पता चली?"
मुझे पता था कि तुम कुछ ऐसा ही करोगे।
कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें आप बस "जान" जाते हैं, जैसे कि जब आपका बॉयफ्रेंड आपको धोखा दे रहा हो। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके पास सिर्फ अपनी भावनाएं ही सबूत हैं। आप इसे बकवास समझकर खारिज करना चाह सकते हैं, लेकिन चलिए इस बहस के लिए मान लेते हैं कि ऐसी बातें संभव हैं। मैंने मनोरंजन जगत में सफल लोगों में एक आम बात देखी है। उन सभी के पास एक सहज ज्ञान या अंतर्ज्ञान होता है। वे ऐसे लोग होते हैं जो शुरुआत से ही कहते हैं, "अन्ना की पहली जीत पक्की है," या "यह नया वीकेंड ड्रामा बहुत बड़ी सफलता हासिल करेगा," और फिर वे सही साबित होते हैं।
मनोरंजन जगत में शायद ही कोई ऐसा सफल व्यक्ति मिले जिसमें इस तरह की सहज बुद्धि न हो, खासकर कलाकार। गायक इसका अच्छा उदाहरण हैं। मंच पर उनका व्यक्तित्व अक्सर उनके वास्तविक जीवन से बिलकुल अलग होता है। ऐसा लगता है मानो कैमरा चालू होते ही वे अपना व्यक्तित्व बदल लेते हैं। जब मैंने मनोरंजन जगत में काम करना शुरू किया और लोगों को मंच पर आते ही मंत्रमुग्ध कर देने वाले गायकों में बदलते देखा, तो मुझे आश्चर्य हुआ, यह कैसे संभव है? लेकिन अच्छी सहज बुद्धि वाले लोग इस तरह की प्रतिभा को कलाकार के खुद देखने से बहुत पहले ही पहचान लेते हैं।

जब मैंने भाग्य की दुनिया में कदम रखा, तब मुझे समझ आया। कुछ ऐसा होता है जिसे तर्क से समझाया नहीं जा सकता, एक आवाज़ जो फुसफुसाती है, मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन चीजें इसी तरह होने वाली हैं। उस भावना को अंतर्ज्ञान कहते हैं, और यही सफलता की कुंजी है, जो धनी लोगों में बहुत विकसित होती है। धनी लोग घटनाओं का कुछ कदम आगे ही अनुमान लगाने में विशेष रूप से माहिर होते हैं। वे तुरंत समझ जाते हैं कि कोई विशेष स्थिति कैसे घटेगी और उससे पैसा कमाने का एक शानदार तरीका निकाल लेते हैं।
इस लिहाज से देखा जाए तो निवेश काफी हद तक अंतर्ज्ञान पर आधारित होता है। किसी को नहीं पता कि आज खरीदा गया शेयर सोने में तब्दील होगा या बेकार हो जाएगा, लेकिन अमीर लोग अपने अंतर्ज्ञान पर भरोसा करते हैं और अपने फैसलों को लेकर आश्वस्त रहते हैं। दिग्गज निवेशकों की दस साल आगे की भविष्यवाणी करने की क्षमता महज़ अनुमान नहीं होती।

1860 के दशक में, जेम्स कैलेब जैक्सन नामक एक अमेरिकी चिकित्सक ने देखा कि सब्जियों और पानी का आहार उनके रोगियों को विभिन्न बीमारियों से उबरने में मदद करता है। इसी अवलोकन के आधार पर, उन्होंने साबुत अनाज और पानी से बना एक स्वास्थ्यवर्धक भोजन विकसित किया, जिसे उन्होंने ग्रैनुला नाम दिया। साधारण, बिना संसाधित सामग्रियों से निर्मित, उनके इस उत्पाद ने अपने स्वास्थ्य लाभों के कारण शुरू में जनता का ध्यान आकर्षित किया। दुर्भाग्य से, जैक्सन का ग्रैनुला चबाने में बहुत सख्त था और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह बेस्वाद था। इसे कोई भी खाना नहीं चाहता था, यहाँ तक कि वे मरीज़ भी नहीं जिन्हें तुरंत ठीक होने की आवश्यकता थी।
तभी जैक्सन के साथ अस्पताल में काम करने वाले केलॉग बंधुओं, जॉन हार्वे और विल कीथ को एक शानदार विचार आया और उन्होंने जैक्सन की रचना को और अधिक स्वादिष्ट बनाने के लिए कई तरीके आजमाए। कई बार कोशिश करने और गलतियाँ करने के बाद, उन्होंने आटे को बेलकर पतले फ्लेक्स बनाने का फैसला किया। इस तरह दुनिया का सबसे लोकप्रिय अनाज ब्रांड, केलॉग्स, अस्तित्व में आया। कॉर्नफ्लेक्स की बिक्री ज़बरदस्त हुई और केलॉग बंधुओं को अपार धन और प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

यह कहानी हमें एक महत्वपूर्ण बात सिखाती है: अंतर्ज्ञान की शक्ति। अगर केलॉग बंधुओं ने यह नहीं सोचा होता कि ग्रैनुला लाभदायक हो सकता है, अगर उन्होंने केवल इसकी कमियों को देखा होता और इसकी अपार सफलता की संभावनाओं को नजरअंदाज किया होता, तो क्या वे अपनी सारी संपत्ति हासिल कर पाते? अद्भुत अंतर्ज्ञान एक रहस्यमय शक्ति है जो आपको अपने लक्ष्यों को तुरंत समझने और साकार करने में सक्षम बनाती है। कुछ लोग इसे "मन का संकल्प" भी कहते हैं। यह ठीक उसी तरह है जैसे उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाले कैमरे से तस्वीर खींची जाए, जिससे तस्वीर स्पष्ट और जीवंत आती है।

कोरियाई लोग असाधारण रूप से सहज होते हैं। तीरंदाजी, निशानेबाजी, गोल्फ और तलवारबाजी जैसी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उनके द्वारा जीते गए पदकों की संख्या पर ही गौर करें। कोरियाई राष्ट्रीय तीरंदाजी टीम, जिसे शिन-गूंग[*1] के नाम से जाना जाता है, को देखकर आप पाएंगे कि प्रतिद्वंद्वी चाहे कितने भी अंक प्राप्त कर लें या हवा की दिशा कैसी भी हो, खिलाड़ी विचलित नहीं होते। एक और उदाहरण कोरियाई माताएं हैं। रेस्तरां के रसोइयों के विपरीत, वे शायद ही कभी व्यंजनों पर निर्भर रहती हैं। वे सटीकता के बजाय अपनी सहज प्रवृत्ति से खाना बनाती हैं, फिर भी उनका खाना स्वादिष्ट होता है। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि सहज ज्ञान अत्यधिक विकसित संवेदी बोध से निकटता से जुड़ा हुआ है—तीरंदाजी के मैदान में हवा के सूक्ष्म बदलाव, या मसाले में एक छोटे से बदलाव का व्यंजन पर पड़ने वाला बड़ा प्रभाव। वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास तर्क और विवेक पर जोर देते हैं। लेकिन हाल के वर्षों में, इसके दूसरे छोर पर रुचि बढ़ी है: भावनाएं, संवेदनाएं और सहज ज्ञान।
अंतर्ज्ञान का एक हिस्सा हम सभी में जन्मजात होता है। फिर भी, सफल लोग लगातार अपने अंतर्ज्ञान को निखारते रहते हैं। वे बचपन से ही अपने आसपास की दुनिया को ध्यान से देखते और सुनते हैं। वे जितना हो सके उतना अनुभव अर्जित करते हैं, जिससे उनके मस्तिष्क के बाएँ और दाएँ भागों का संतुलित विकास होता है। ऐसा करके, वे एक भावनात्मक तर्कशक्ति विकसित करते हैं जो उनके स्वयं के विकास का आधार बनती है।

वे अपनी उस सहज शक्ति का उपयोग अवसरों को खोजने और उन्हें धन में बदलने के लिए करते हैं। लोग कहते हैं कि चौथा औद्योगिक युग आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता (SQ) का युग होगा। यह क्षमता बुद्धि-कुशलता (IQ) या भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EQ) से बिल्कुल अलग स्तर की है। दुनिया की सबसे उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) भी इसकी जगह नहीं ले सकती, क्योंकि यह उस मानसिक आयाम से संबंधित है जिसे केवल मनुष्य ही सबसे गहरे स्तर पर विकसित कर सकते हैं।
किसी महिला को अपने प्रेमी के धोखे का शक होना कोई संयोग नहीं था। उसने गौर किया कि वह बार-बार उससे छोटे-छोटे झूठ बोलता था और अक्सर डेट पर देर से आता था। ये सूक्ष्म संकेत और उसके सारे अनुभव—उसकी आवाज़, उसका लहजा, उसकी आँखों का भाव—सब मिलकर उसके मन बदलने का सबूत थे। अंततः, उसकी अंतरात्मा ने उसे सही फैसला लेने में मदद की: अपनी खुशी के लिए उससे रिश्ता तोड़ देना।
दुनिया में कुछ भी संयोग से नहीं होता। आप पैसा कमा सकते हैं और भविष्य को आकार दे सकते हैं, अगर आप अपने आसपास की दुनिया को ध्यान से देखें और सुनें और पल के प्रवाह को पढ़ना सीखें।
अमीर लोग हमेशा अपने साथ पैसे रखते हैं
वह व्यक्ति बेदाग ढंग से कपड़े पहने हुए था, हर बटन सावधानीपूर्वक बंद था। उनमें एक शिक्षक की स्पष्ट झलक थी। अब लगभग पचास वर्ष की आयु में, उन्होंने 1990 के दशक में निजी शिक्षा क्षेत्र में प्रवेश किया और तब से दस मिलियन डॉलर का निजी अकादमी साम्राज्य खड़ा कर लिया है।
मैंने उससे पूछा, "क्या तुम अभी नोट्स ले रहे हो?"
“हां, मैं उन्हें अपने पास ही रखता हूं ताकि जरूरत पड़ने पर उनका इस्तेमाल कर सकूं। यह मेरी आदत है,” उन्होंने जवाब दिया।
मुझे उस धनी व्यक्ति को देखकर जिज्ञासा हुई जो हाथ में कलम लिए मेरी बातें लिख रहा था। उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा वाले लोग आमतौर पर दूसरों की सलाह को अनसुना कर देते हैं।
मेरी मुलाकात में कुछ लोग ऐसे ही रहे हैं। आप उन्हें कितनी भी ईमानदारी से सलाह दें, वे केवल वही बातें मानते और उन पर अमल करते हैं जो उन्हें पसंद आती हैं, और नापसंद बातों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। उन्हें यह सोचकर ही चिढ़ हो जाती है कि कोई उन्हें कुछ करने के लिए कहने की हिम्मत

कैसे कर सकता है। इसके विपरीत, मेरे सामने बैठे बुजुर्ग सज्जन एक आदर्श छात्र की तरह ध्यान से सुन रहे थे।
मैंने पूछा, "क्या आप हमेशा इतनी लगन से नोट्स बनाते हैं?"
उन्होंने जवाब दिया, “हाँ, अगर मुझे लगता है कि यह उपयोगी है। अगर कोई अच्छा वाक्य, सीख या भावना मन में आती है, तो मैं उसे लिख लेता हूँ, भले ही वह उस समय प्रासंगिक न हो। मैं हमेशा उनका उपयोग करने के अवसर ढूंढता हूँ। वास्तव में, मेरे नोट्स मेरे लिए कक्षाओं में और मेरे व्यवसाय के विस्तार के दौरान बहुत उपयोगी साबित हुए हैं।”

* * *

मैं उस सज्जन की जीवन कहानी से बहुत प्रभावित हुआ। बार-बार परीक्षा में असफल होने के बाद, उन्होंने शिक्षक बनने का सपना छोड़ दिया और एक निजी शिक्षण संस्थान में ट्यूटर के रूप में पढ़ाना शुरू कर दिया। उन्हें पढ़ाना बहुत पसंद था, लेकिन उस समय निजी ट्यूटर का पेशा इतना प्रतिष्ठित नहीं माना जाता था। कॉलेज के उनके सभी दोस्त प्रमाणित शिक्षक बन चुके थे, जबकि वे एक संस्थान से दूसरे संस्थान में भटकते रहे।
शुरुआत में, वह अपनी रोज़मर्रा की ज़रूरतों को पूरा करने में ही व्यस्त था। फिर, उसे यह बात समझ में आई कि आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता एक बेहतरीन शिक्षक बनना ही है। तभी उसने मानो किसी जुनून के चलते सब कुछ लिखना शुरू कर दिया। हर कहानी उसके लिए मूल्यवान थी, बशर्ते उससे उसे और अधिक छात्रों को आकर्षित करने और उन्हें अच्छी तरह से पढ़ाने में मदद मिले।
शुरुआत में, उन्होंने अपने छात्रों की रुचि बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित किया। वे चाहते थे कि बच्चों को हंसने का मौका मिले, कुछ ऐसा जिससे वे अपनी रोज़मर्रा की दिनचर्या से थोड़ा हटकर कुछ नया सीख सकें। इसके बाद, उन्होंने गणित के सूत्रों में हास्य का समावेश किया ताकि उनके छात्र उन्हें थोड़ा आसानी से याद कर सकें।
जल्द ही अभिभावकों के बीच उनकी प्रशंसा फैल गई। एक कुशल शिक्षक से इलाके के सबसे प्रसिद्ध प्रशिक्षक बनने में उन्हें तीन साल लगे। कुछ वर्षों बाद, वे कई अकादमियों के एक समूह के सीईओ बन गए।

उन्होंने मुझसे कहा: “मेरे घर में नोटबुकों का ढेर लगा हुआ है। मैं उन सबको संभाल कर रखता हूँ। कभी-कभी लोग कहते हैं, ‘अरे, ये तो बहुत बोझिल होगा!’ लेकिन मुझे लगता है कि अब ये मेरा ही हिस्सा बन गई हैं। मैं कलम और नोटबुक के बिना घर से बाहर नहीं निकल सकता, कहीं कोई ज़रूरी बात लिख न लूँ। नोटबुक न होने का ख्याल ही मुझे बेचैन कर देता है।”
सच तो यह है कि सफलता मिलने के बाद भी उन्होंने नोट्स लेना कभी नहीं छोड़ा। चाहे वे किसी शैक्षणिक सम्मेलन में भाग ले रहे हों, किसी परिचित से मिल रहे हों या किसी महत्वपूर्ण व्यावसायिक बैठक में शामिल हो रहे हों, वे हमेशा अपनी नोटबुक साथ रखते थे। आज भी, दैनिक समाचारों या लोगों से हुई बातचीत से बने उनके नोट्स एक उपयोगी साधन हैं जो उन्हें अपने काम में सबसे आगे रहने में मदद करते हैं।
उसके कॉलेज के दोस्त अब उस पर नहीं हंसते। बल्कि, वे उसके करोड़पति होने के जीवन से ईर्ष्या करते हैं।
अंततः, हम अपने जीवन को अपने हाथों से ही आकार देते हैं। मैं हमेशा उन लोगों के व्यवहार पर ध्यान देता हूँ जो मुझसे सलाह लेने आते हैं। कुछ गरीब हैं, कुछ अमीर, लेकिन उनके रवैये से मैं एक बात निश्चित रूप से समझ सकता हूँ। सफल लोग आम लोगों से अलग व्यवहार करते हैं, यहाँ तक कि कुछ प्राप्त करने के मामले में भी। वे चमकती आँखों से मेरी ओर देखते हैं, कान खड़े कर लेते हैं और मेरी कही हर बात को ध्यान से लिख लेते हैं। संक्षेप में, वे अपनी ज़रूरत की हर चीज़ को बड़ी चतुराई से ग्रहण करते हैं। और भले ही वे उनका तुरंत उपयोग न करें, वे उन नोट्स को संभाल कर रखते हैं और उन पर तब तक विचार करते रहते हैं जब तक कि वे उनसे अपना भाग्य न बना लें।
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उस समय इसका कोई खास महत्व या गहराई नहीं है। नोट्स लेने की क्रिया ही सफलता की चाह और भाग्य को अपने पक्ष में मोड़ने की इच्छा से भरी होती है। बाद में उपयोग के लिए जानकारी रिकॉर्ड करना न केवल भाग्य की कमियों को पूरा कर सकता है, बल्कि समृद्धि लाने वाले बदलावों की दिशा में एक कदम भी साबित हो सकता है।
शुरुआती पूंजी से किस्मत कैसे आजमाएं धनवान लोग न केवल पैसा कमाने में माहिर होते हैं, बल्कि उसे बचाकर रखने में भी कुशल होते हैं। इससे मन में यह सवाल उठता है कि क्या पैसा कमाना आसान है

[redacted]

* * *

[redacted]

धनवान लोगों में अक्सर यह देखा जाता है कि वे पैसे को छूकर और महसूस करके अपने "धन के प्रति लगाव" को बनाए रखते हैं। यह प्रवृत्ति विशेष रूप से बड़े पैमाने पर व्यापार करने वाले लोगों में अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
दक्षिण कोरिया में एक मशहूर बेकरी है जिसे एक ही परिवार तीन पीढ़ियों से चला रहा है। यह बेकरी एक छोटे से प्रांतीय कस्बे में स्थित है, लेकिन यहाँ हर दिन लाखों डॉलर की बिक्री होती है। बेकरी ने पूरे शहर को एक पर्यटन स्थल में बदल दिया है। मालिकों ने एक इमारत खरीदी जिसे उन्होंने दुकान में बदल दिया, जहाँ हर दिन सैकड़ों, बल्कि हजारों ग्राहक ब्रेड खरीदने के लिए उमड़ते हैं। कारोबार इतना अच्छा चल रहा है कि कर्मचारियों को सांस लेने तक का समय नहीं मिलता। कैश रजिस्टर लगातार खुलता और बंद होता रहता है और उसमें नोट और सिक्के आते-जाते रहते हैं।
उस सारी भागदौड़ के बीच, एक व्यक्ति हर दिन प्रवेश द्वार पर खड़ा होकर सब कुछ देखता रहता है। वह बेकरी के संस्थापक हैं, जिन्होंने सबसे पहले इसे खोला था। कुछ साल पहले तक, वह हर दिन, पूरे दिन अपनी मूल दुकान पर ही रहते थे। शुरुआत में, यहाँ तक कि दुकान पर नियमित रूप से आने वाले स्थानीय लोग भी उन्हें नहीं जानते थे। बाद में, जब व्यवसाय लोकप्रिय हुआ, तब जाकर लोगों ने स्थानीय अखबार में उनका चेहरा देखा और उन्हें पहचानने लगे। उन्हें देखते हुए मुझे एहसास हुआ: वह कैश रजिस्टर पर नहीं, बल्कि पैसों के लेन-देन पर नज़र रख रहे थे।
हर मोहल्ले के अपने प्रतिष्ठित रेस्तरां होते हैं, वे व्यवसाय जो इतने बड़े होते हैं कि उन्हें पहचान का प्रतीक माना जाता है। सुवन में बहुमंजिला विशाल वांग-गाल्बी रेस्तरां से लेकर दम्यांग में वायरल हुए मूल ट्टोक-गाल्बी[*5] रेस्तरां तक, सैकड़ों मिलियन वॉन की मासिक बिक्री वाले सफल रेस्तरां के संस्थापक पूरी निष्ठा से अपने काउंटर के पीछे खड़े रहते हैं।
व्यापार में निपुणता रखने वाले और असाधारण रूप से साधन संपन्न लोगों की यही एक खास विशेषता होती है। अगर आप एक आम ऑफिस कर्मचारी हैं और आपकी तनख्वाह सीधे आपके बैंक खाते में आ जाती है, तो आप कभी भी अपने पैसे को छू नहीं पाते। जब आपके बैंक खाते में कोई रकम आती है, तो इसका मतलब है कि आपको भुगतान मिल गया है, और जब वह रकम कम हो जाती है, तो इसका मतलब है कि आपने

मुझे दूसरे देशों के बारे में तो नहीं पता, लेकिन कोरिया में खाली बटुआ कभी उपहार में नहीं दिया जाता। आमतौर पर उसमें कुछ नोट रखे जाते हैं ताकि सामने वाले को धन-संपत्ति में सौभाग्य मिले और उसका बटुआ भर जाए। कहावत है कि मुस्कुराने से सौभाग्य आता है और धन-संपत्ति साथ रखने से सौभाग्य आकर्षित होता है। बहुत सारा पैसा होना ज़रूरी नहीं; कुछ नोट भी धन-संपत्ति की नींव बन सकते हैं। अमीर लोग इसी तरह धीरे-धीरे धन जमा करते हैं, एक-एक नोट करके।
भविष्य उन्हीं का है जो इसे सबसे पहले समझ लेंगे। किसी नए टेलीविजन शो को लॉन्च करना हमेशा एक जोखिम भरा काम होता है। सिर्फ प्रोडक्शन लागत ही प्रति एपिसोड लाखों डॉलर तक हो सकती है, और बहुत से लोग शो पर अपनी आजीविका के लिए निर्भर होते हैं। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें सफलता या असफलता का ही दांव होता है। बेशक, अच्छी रेटिंग मिलने पर हर कोई खुश होता है। ऐसा होने पर, एक कर्मचारी के रूप में आपको प्रोत्साहन और अतिरिक्त छुट्टियां मिलेंगी। यदि आप लंबे समय तक बने रहते हैं और शो सफल रहता है, तो आपको त्वरित पदोन्नति की गारंटी भी मिल सकती है। लेकिन अगर इसका उल्टा हो जाए तो? इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता। फ्लॉप होने का जोखिम हिट होने के फायदों से कहीं अधिक होता है।
लाइव प्रसारण, विशेष रूप से, एक बेहद व्यस्त प्रक्रिया है। दर्शकों को लुभाने वाला शो बनाने का मतलब है अपनी मर्जी से अपनी मानसिक शांति को भंग करना। लाइव टेलीविजन इतना तनावपूर्ण होता है। लाइव प्रसारण के दौरान किसी दुर्घटना की आशंका मात्र से ही मेरा दिमाग सुन्न हो जाता था और मुझे चक्कर आने लगते थे, साथ ही दर्शकों की भारी निराशा और बॉस से डांट पड़ने का डर भी रहता था।
मुझे आश्चर्य हुआ कि अपने सपनों की जिंदगी जीने के बावजूद मुझे इतनी मुश्किल क्यों हो रही थी। अचानक मेरे मन में उन मशहूर हस्तियों के लिए असीम प्रशंसा का भाव जागा जो हर दिन कैमरे के सामने मुस्कुराते हुए नजर आते थे, चाहे उनकी असलियत कुछ भी हो।

* * *

क्लोई एक कॉमेडियन थी जिसकी लोकप्रियता हाल ही में बढ़ी थी। मैं ब्रेक के दौरान उदास चेहरे के साथ बैठा था, तभी वह मेरे पास आई और मुझसे पूछा कि क्या मेरे साथ कुछ चल रहा है। थोड़ी बातचीत के बाद, मैंने उससे पूछा: “क्या यह सब तुम्हें परेशान नहीं करता? सफलता की कोई गारंटी नहीं है; यह सब एक बड़ा जुआ है। मैं ऐसे मशहूर हस्तियों को जानता हूँ जिन्हें शो से पहले इतना डर लगता है कि उन्हें नींद की गोलियां लेनी पड़ती हैं। मैं समझता हूँ कि दुनिया ऐसे ही चलती है, लेकिन जब आपको आगे कुछ भी दिखाई न दे, तो आप शांत कैसे रह सकते हैं?”
क्लोई ने शांत भाव से मेरी चिंता देखी और फिर जवाब दिया: “मैं बिल्कुल भी चिंता नहीं करती। अगर मुझे खुद पर भरोसा नहीं होगा, तो किसे होगा? सबसे आत्मविश्वासी लोगों को भी सफलता पाने में कठिनाई होती है, तो सोचो बिना खुद पर विश्वास के क्या होगा। इस तरह की नकारात्मकता से कुछ हासिल नहीं होगा।”
वह सही थी। अपने जोशीले भाषण के दम पर क्लोई कोरियाई मनोरंजन उद्योग के जंगल जैसे कठिन क्षेत्र में टिकी रही थी। अपने दस साल के करियर में उसने तमाम उतार-चढ़ाव देखे और जनता का प्यार और खूब पैसा कमाया। और अब वह मुझसे कह रही थी कि उसकी सफलता का राज उसका विश्वास था? सच कहूँ तो, मैं निराश हो गई। मुझे उम्मीद थी कि उसकी सारी उपलब्धियों के पीछे कोई असाधारण रहस्य छिपा होगा।
अब कई साल बाद, मुझे समझ आया कि उसका क्या मतलब था। मैंने अनगिनत लोगों का भविष्य देखा है और पाया है कि सफल लोगों में एक बात समान होती है। यह एक ऐसा शब्द है जिसका इतना अधिक उपयोग हुआ है कि इसका अर्थ लगभग खो गया है: विश्वास। मैंने जितने भी लोगों से मुलाकात की है जो खुद को "सफल" कह सकते हैं, वे सभी खुद को आम लोगों से अलग नज़रिए से देखते और व्यवहार करते थे। वे जानबूझकर खुद को उस तरह का असीमित विश्वास देते थे जो आप केवल खुद को ही दे सकते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि अमीर लोग इस तरह के आत्मविश्वास को सफल कार्यों में बदलना भी जानते हैं। इसे "स्व-सुझाव" कहा जाता है। सुगंधित मोमबत्तियों के

अपने व्यवसाय के माध्यम से अपार सफलता प्राप्त करने वाले एक उद्यमी ने स्व-सुझाव के बारे में यह कहा:
मुझे किसी पर भरोसा नहीं है, सिर्फ खुद पर भरोसा है।
“यह कैसे संभव है? क्या आप अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए कुछ खास करते हैं?”
“वैसे तो ये कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन मेरी सुबह की एक दिनचर्या है। मैं जो चाहती हूँ उसे ज़ोर से बोलती हूँ। बस इतना ही। मैं अपने मन में जो कल्पना करती हूँ उसे व्यक्त करती हूँ। जैसे, ‘मैं वो इंसान बनने के करीब पहुँच रही हूँ जो सब कुछ हासिल कर सकता है’ या ‘आज एक और दिन है जब मैं सफलता की ओर कदम बढ़ा रही हूँ।’ आप जानते हैं, इस तरह की बातें।”
मैंने पूछा, "क्या आपको लगता है कि इससे कोई फर्क पड़ता है?"
“हाँ। ये वाक्य देखने में भले ही सरल और अर्थहीन लगें, लेकिन इनका असर निर्विवाद है। पहले तो मुझे भी संदेह था, लेकिन भले ही इसे साबित करने के लिए कोई वैज्ञानिक प्रमाण न हो, फिर भी इन शब्दों को ज़ोर से बोलने मात्र से ही मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। जब मैं अपने लक्ष्य को ज़ाहिर करता हूँ, तो मुझे लगता है कि मेरे कार्य और विचार उस लक्ष्य के अनुरूप हो जाते हैं। खैर, मुझे लगता है कि यही चीज़ मेरे व्यवसाय और रिश्तों में मेरी मदद करती है।”
उनकी बात में दम था। "मैं सफल हो सकता हूँ" और "मैं अमीर हो सकता हूँ" जैसे कथन बेहद अस्पष्ट हैं। ये सुनने में सकारात्मक और उत्साहवर्धक लग सकते हैं, लेकिन इनसे यह पता नहीं चलता कि वहाँ तक कैसे पहुँचा जाए। हालांकि, "मैं इसके करीब पहुँच रहा हूँ..." या "मैं इसकी ओर बढ़ रहा हूँ..." कहना अलग बात है। यह स्पष्ट रूप से आपके उद्देश्य की भावना और अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आप प्रतिदिन जो प्रयास कर रहे हैं, उसे दर्शाता है।
बाद में मुझे एहसास हुआ कि जितने लोगों ने खुद को प्रेरित किया, मैंने सोचा भी नहीं था। क्लोई के साथ भी ऐसा ही हुआ, जिसने ब्रेक के दौरान मेरा हौसला बढ़ाया। वह भी खुद को प्रेरित करने का अभ्यास कर रही थी, हालांकि उसने इसे अपनी दिनचर्या नहीं बनाया था। उसने दिन भर में अनगिनत लोगों से कहा होगा, "चिंता मत करो, सब ठीक हो जाएगा।" और हर बार, क्लोई ही वह पहली व्यक्ति थी जिसने यह संदेश सुना और उसे याद रखा।

अंतर्राष्ट्रीय स्वर्ण पदक विजेता एथलीट भी अपवाद नहीं हैं। रियो ओलंपिक में फेंसिंग के फाइनल में पार्क सांगयोंग 9-13 से पीछे थे। हारते हुए उन्हें खुद से कुछ बुदबुदाते हुए देखा गया, मानो वे कोई मंत्र पढ़ रहे हों। बाद में उन्होंने बताया कि उन्होंने दर्शकों की जयजयकार सुनी और मन ही मन दोहराया, "मैं यह कर सकता हूँ।" फिर उन्होंने हिम्मत जुटाई और अपने प्रतिद्वंद्वी को 15-14 से हराकर स्वर्ण पदक जीत लिया। उन्होंने अपना रवैया बदलकर ही मैच का रुख पलट दिया।

मैंने पाया है कि स्वयं के दम पर धनवान बनने वाले लोग एक और वर्ग हैं जो कई तरह के समान तरीके अपनाते हैं। कुछ लोग अपने पर्स में एक मंत्र रखते हैं जिसे वे नियमित रूप से निकालकर पढ़ते हैं, जबकि अन्य लोग हर रात सोने से पहले अगले वर्ष के लिए अपने जीवन को साकार करने की योजना बनाते हैं। यह एक वाक्य हो सकता है जो लक्ष्य निर्धारित करता है, किसी ऐसे व्यक्ति का चेहरा हो सकता है जिसके जैसा वे बनना चाहते हैं, या कोई मानसिक छवि जिसे वे याद रखना चाहते हैं। चाहे कुछ भी हो, धन और सफलता की इच्छा एक समान होती है। आपकी इच्छा कितनी भी प्रबल क्यों न हो, उसे अपने तक सीमित रखने से कोई परिणाम नहीं मिलेगा। आपको इसे बोलकर या लिखकर व्यक्त करना होगा, भले ही यह केवल अपने लिए हो। यही वह चीज है जो आपके शरीर को उस दिशा में प्रेरित करेगी।
जब मैं केवल उन्हीं चीजों पर विश्वास करता था जिन्हें मैं देख सकता था, तब मुझे आत्म-सुझाव का अभ्यास एक खेल जैसा लगता था। भाग्य की अदृश्य दुनिया में प्रवेश करने से मुझे प्रत्येक व्यक्ति के विश्वासों का सम्मान करना सीखने को मिला। यदि आप किसी बात पर दृढ़ विश्वास रखते हैं, तो किसी दूसरे का विश्वास आपको झूठा लग सकता है। लेकिन इसका अर्थ यह है कि आपका विश्वास भी किसी दूसरे व्यक्ति की नज़र में झूठा लग सकता है।
मुझे पहले शक होता था कि क्या पूर्ण विश्वास जैसी कोई चीज होती है, लेकिन अब मुझे यकीन हो गया है। मैंने सीखा है कि लोग किसी चीज पर शत प्रतिशत विश्वास कर सकते हैं और इससे उन्हें कल्पना से परे सफलता मिल सकती है। मैंने यह भी सीखा है कि भाग्य कभी उस व्यक्ति के पास नहीं आता जो खुद

को महत्व देना नहीं जानता और उसी के अनुसार व्यवहार नहीं करता। यह तो स्पष्ट है कि पैसे से जुड़ी हर चीज इसी तरह काम करती है।
मध्यरात्रि की प्रार्थना: धनियों की प्रार्थना
मैं सौभाग्य को कैसे आकर्षित कर सकता हूँ?
जब से मैंने ज्योतिषी बनना शुरू किया है, तब से लोग मुझसे यह सवाल लगातार पूछते आ रहे हैं। और एक सुझाव जो मैं हमेशा देती हूँ, वह है चूहे के समय की प्रार्थना, या "आधी रात की प्रार्थना"।
इसका जवाब आमतौर पर कुछ इस तरह होता है: "यह क्या है? आपको पता होना चाहिए, मैं धार्मिक नहीं हूँ।"
जिस पर मैं एक सरल स्पष्टीकरण देता हूँ: "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। महत्वपूर्ण यह है कि आप स्वयं के लिए शुभकामनाएँ दें क्योंकि प्रार्थना आप ही कर रहे हैं।"
"चूहे का घंटा" रात ग्यारह बजे से रात एक बजे के बीच के समय को दर्शाता है। प्राचीन काल में, लोग दिन के घंटों का नाम जानवरों के नाम पर रखते थे। वे दिन के चौबीस घंटों को दो-दो घंटे की अवधियों में विभाजित करते थे और उन्हें चीनी राशि चक्र के बारह जानवरों के नाम पर रखते थे, जिन्हें बारह पृथ्वी शाखाएँ भी कहा जाता है।[*6] प्रत्येक अवधि दिन के उस समय से जुड़ी होती है जब संबंधित जानवर सक्रिय होता है, और पहला घंटा चूहे का घंटा कहलाता है। हालाँकि अब हम चुक-शी (बैल का घंटा) या म्यो-शी (खरगोश का घंटा) जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं करते हैं, फिर भी हम सुबह ग्यारह बजे से दोपहर एक बजे के बीच के बारह घंटों को "दोपहर" कहते हैं,[*7] जो ओह-शी (घोड़े का घंटा) के अनुरूप है, और रात ग्यारह बजे से रात एक बजे के बीच के दो घंटों को "मध्यरात्रि" कहते हैं,[*8] जो जा-शी (चूहे का घंटा) के अनुरूप है।
तो, अब इसे कैसे शुरू करें? सबसे पहले, आपको प्रार्थना करने के लिए एक निश्चित समय या तरीका तय करना होगा। भाग्य को बढ़ाने के लिए आधी रात को प्रार्थना करना उचित माना जाता है। चीनी राशि चक्र के अनुसार, चूहे का समय परिवर्तन का समय होता है, वह समय जब आज समाप्त होता है और कल शुरू होता है। यह वह समय है जब आप शांत होकर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। यदि आप ऐसे समय में प्रार्थना करते हैं जब आपका ध्यान भटकता नहीं है और आप पूरी तरह से एकाग्र हैं, तो परिणाम निश्चित रूप से शीघ्र और प्रभावी होंगे।

परंपरागत रूप से, प्रार्थना करते समय, अक्सर ईश्वर या बुद्ध जैसे किसी दैवीय शक्ति का आह्वान किया जाता है, लेकिन आधी रात की प्रार्थना में कोई दैवीय विषय नहीं होता। आधी रात की प्रार्थना स्वयं से की गई प्रार्थना है। यदि आप धार्मिक हैं, तो आप अपने विश्वास के अनुसार ईश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि आप प्रार्थना में स्वयं पर ध्यान केंद्रित करें। आपकी प्रार्थनाएँ ईश्वर नहीं सुनता, और न ही ईश्वर उनका उत्तर देगा। आधी रात की प्रार्थना स्वयं के लिए अच्छे इरादों से प्रेरित एक विशेष कार्य है।
यह प्रक्रिया काफी सरल है। सबसे पहले, अपना परिचय दें: "मेरा नाम ____ है।"
इसके बाद, अपनी वर्तमान स्थिति का विस्तारपूर्वक वर्णन करें, और फिर स्पष्ट रूप से बताएं कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपको खुलकर बोलना होगा।
लेकिन इसे ज़ोर से बोलने की क्या ज़रूरत है?
मैं इसे अपनी डायरी में लिख सकता हूँ, है ना?
कई लोग संदेह के साथ प्रतिक्रिया देते हैं। हालाँकि, मैंने स्वयं प्रार्थना की प्रभावशीलता का अनुभव किया है, इसलिए मैं दृढ़ विश्वास के साथ उत्तर देता हूँ।
“हाँ, ज़्यादातर लोग यही करते हैं। लेकिन डायरी लिखने में बहुत कुछ छिपाना और छल करना पड़ता है। लिखावट विचारों की गति का साथ नहीं दे पाती, और आप अपने मन की बातों को संपादित करने की कोशिश में कई चीज़ें छोड़ देते हैं। दूसरी ओर, जब आप इसे ज़ोर से बोलते हैं, तो आपके सच्चे विचार बिना किसी रोक-टोक के सीधे आपके मुँह से निकल आते हैं। इस तरह, आपको किसी भी अन्य तरीके की तुलना में कहीं अधिक स्पष्ट दृष्टिकोण प्राप्त होता है।” "क्या इसीलिए आपको अपना नाम बताना पड़ता है?"
“बिल्कुल सही। अपनी पहचान को फिर से पुष्ट करने से आपके दृष्टिकोण पर प्रभाव पड़ता है। आप अपनी स्थिति के बारे में प्रार्थना करते हैं और अपनी इच्छाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं, जिससे आपको चीजों को यथार्थ रूप में देखने और आगे बढ़ने में मदद मिलती है।”

"ओह, तो यह एक प्रार्थना है जो मैं अपने लिए करती हूँ।"
"बिल्कुल।"

* * *

आधी रात की प्रार्थना करने से पहले कुछ सलाह: अपनी स्थिति और उद्देश्य को स्पष्ट रूप से परिभाषित करें। यह लॉटरी जीतना, दस लाख डॉलर पाना या अमीर बनना नहीं होना चाहिए। प्रार्थना तभी कारगर होती है जब आप किसी विशिष्ट और व्यावहारिक चीज़ की कामना करते हैं, जैसे कि कोई ऐसी घटना जो जल्द ही घटित होने की संभावना हो।
चूहे के महीने में हर रात सोने से पहले शांति से प्रार्थना करें। छह महीने बाद अपनी प्रार्थना को शब्दशः लिख लें। लिखते समय यह देखें कि स्थिति में कोई बदलाव आया है या आपकी प्रार्थना पूरी हुई है।
किसी ने मुझसे प्रार्थना के बारे में एक और सवाल पूछा: "आप इसे शुरू से लिखने के बजाय छह महीने बाद क्यों लिखते हैं?"
मैंने जवाब दिया: “जो कुछ तुमने महसूस किया है, उसका विश्लेषण करो। पिछले छह महीनों में तुमने जो भी बातें और इच्छाएं अपने मन में दोहराई हैं, उन्हें लिख लो। अगर कुछ भी बदला है, तो नीचे टिप्पणी लिखो: स्थिति कैसे बदली है, क्या तुम्हारी इच्छा पूरी हुई है, इत्यादि। अगर बात नहीं बनी, तो प्रार्थना दोहराओ और छह महीने बाद फिर से सोचो। सिर्फ़ मुश्किल हालातों या समस्याओं के बारे में बात मत करो। तुम्हें अगले कदम की रूपरेखा बनानी होगी। प्रार्थना मैं ही कर रहा हूँ, और सुन भी मैं ही रहा हूँ।”

* * *

कीथ अपने कार्यस्थल पर एक मुश्किल स्थिति में था। अत्यधिक कार्यभार के कारण उसे परेशानी हो रही थी। आधी रात की प्रार्थना में अपनी कठिनाई का जिक्र करते हुए उसने बदलाव की अपनी निजी इच्छाएं व्यक्त कीं। उसने अपनी वर्तमान टीम से तबादला या किसी अन्य नौकरी में जाने का अवसर मांगा। छह महीने बाद, कीथ ने अपनी नोटबुक खोली और अपनी प्रार्थना लिखी। उसके नीचे

उसने प्रत्येक स्थिति और प्रत्येक इच्छा के परिणाम लिखे। उसे आश्चर्य हुआ कि प्रार्थना जारी रखने के साथ ही उसकी दिनचर्या में बदलाव आने लगा।
कीथ कार्यालय कर्मचारियों के लिए निर्धारित आठ घंटे के कार्यदिवस से अधिक काम कर रहा था। प्रार्थना के माध्यम से, उसे एहसास हुआ कि अत्यधिक काम करना ही उसकी सबसे बड़ी समस्या थी, और उसने अनजाने में ही इस समस्या को हल करने के लिए छोटे-छोटे कदम उठाए। सबसे पहले, उसने अपने मासिक कार्य घंटों की गणना की और अपने बॉस को अपने अतिरिक्त समय की जानकारी दी। उसने यह भी बताया कि उसका कार्यभार एक व्यक्ति के लिए संभालना बहुत अधिक था। उसके प्रयासों से बदलाव आया। उसके बॉस ने उसके काम का बोझ कम करने के लिए उसे एक सहकर्मी के साथ काम बांटने की व्यवस्था की। इससे कीथ को थोड़ी राहत मिली। इसी बीच, कीथ ने अपने व्यक्तिगत विकास पर काम करना जारी रखा और नौकरी बदलने के अवसरों की तलाश की। उन्होंने नियमित रूप से अंग्रेजी का अध्ययन किया और इतनी अच्छी अंग्रेजी सीख ली कि अगर वे चाहें तो दूसरी कंपनी में नौकरी पा सकते हैं। हालांकि, अपने नियोक्ता को स्थिति के बारे में सूचित करने से उनका कार्यभार पहले ही आधा हो चुका था, इसलिए उन्होंने अपनी वर्तमान कंपनी में ही रहने का फैसला किया, जहां उन्हें अपनी अंग्रेजी कौशल का उपयोग करने के भरपूर अवसर मिल रहे थे।
अगर कीथ ने अपनी स्थिति को समझे बिना ही शिकायत की होती तो क्या होता? शायद वह अब भी अपनी किस्मत पर पछता रहा होता, हर दिन काम पर जाने के लिए मजबूर होता, और सोचता कि उसके पास कोई और विकल्प ही नहीं है। यह कीथ और कंपनी दोनों के लिए बुरा होता।
देखिए, अपनी परिस्थिति को सही ढंग से समझने पर जीवन कितना अलग हो सकता है। यही बात पैसों पर भी लागू होती है।

* * *

लीना एक दफ्तर में काम करने वाली महिला थी, जिसकी तनख्वाह कई सालों से नहीं बढ़ी थी। उसे हर महीने की पच्चीस तारीख को तनख्वाह मिलती थी, लेकिन उसका बैंक बैलेंस हमेशा घाटे में रहता था। उसे शक था कि क्या वह कभी घर खरीद पाएगी। बढ़ती ब्याज दरों और महंगाई के चलते, स्थिर तनख्वाह उसके लिए वेतन

में कटौती के समान थी। ऐसे समय में जब "हर चीज महंगी हो रही है, सिवाय आपकी तनख्वाह के", उसकी आमदनी स्थिर थी और शेयर बाजार में उसके निवेश में कोई बढ़ोतरी नहीं हो रही थी। लीना ने अमीर बनने की उम्मीद छोड़ दी थी, आरामदेह जीवन जीने की तो बात ही दूर।
फिर भी, उसने मुझे बताया कि आधी रात की प्रार्थना के बारे में मेरी सलाह सुनकर उसे ऐसा लगा जैसे उसके पास खोने के लिए कुछ नहीं है, इसलिए उसने प्रार्थना करना शुरू कर दिया। हर रात आधी रात को, वह हाथ जोड़कर विशेष रूप से अपने पास मौजूद धन से अधिक धन की प्रार्थना करती थी।
छह महीने पहले उसने यही प्रार्थना की थी:
विषय: “मेरा नाम लीना है।”
स्थिति: “जीवन यापन की लागत लगातार बढ़ रही है, लेकिन मेरा वेतन नहीं
बदला है। मुझे चिंता है कि मैं पर्याप्त बचत नहीं कर पा रहा हूँ।”
इच्छा: "मैं कोई ऐसा अतिरिक्त काम ढूंढना चाहता हूँ जिसे मैं समय की परवाह किए बिना कर सकूँ।"
यह वह प्रार्थना है जो उसने अपनी नोटबुक में लिखी थी और छह महीने बाद जो बदलाव आए वे इस प्रकार हैं:
विषय: “मेरा नाम लीना है।”
स्थिति: “जीवन यापन की लागत लगातार बढ़ रही है, लेकिन मेरा वेतन नहीं
बदला है। मुझे चिंता है कि मैं पर्याप्त बचत नहीं कर पा रहा हूँ।”
• मैंने अपनी कंपनी में औसत वार्षिक वेतन वृद्धि का पता लगाया और
अपनी बिक्री क्षमता को बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित किया।
दूसरी तिमाही में मेरा प्रदर्शन अच्छा रहा, इसलिए मुझे बोनस
मिला।
इच्छा: "मैं कोई ऐसा अतिरिक्त काम ढूंढना चाहता हूँ जिसे मैं समय की परवाह किए बिना कर सकूँ।"
• मैंने एक ऑनलाइन मार्केटप्लेस खोला और ग्रुप खरीदारी का आयोजन
किया। मैंने उन्हें थोड़े मुनाफे पर बेचा और कुछ अतिरिक्त आय
अर्जित की।
प्रार्थना के माध्यम से, लीना को यह एहसास हुआ कि पैसा कमाने का एकमात्र तरीका या तो अधिक कमाना है या कम खर्च करना है। सबसे पहले, उसने अपनी कंपनी की वार्षिक वेतन वृद्धि दर पर गौर किया। वहाँ कोई खास उम्मीद

नहीं दिखी, इसलिए उसने अपना पूरा ध्यान अपने काम के प्रदर्शन को बेहतर बनाने पर लगा दिया। यह बहुत ज़्यादा तो नहीं था, लेकिन फिर भी उसे दूसरी तिमाही में अपने प्रयासों के लिए बोनस मिला। उसने उस अप्रत्याशित आय को बिना एक पैसा खर्च किए किश्तों में जमा कर दिया।
लीना ने अपनी तनख्वाह के अलावा आय के अन्य स्रोतों और काम के बाद अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए क्या कर सकती है, इस बारे में सोचना शुरू कर दिया। उसका एक ब्लॉग था जहाँ वह अपने दैनिक जीवन को साझा करती थी, मुख्य रूप से उन युवा महिलाओं के लिए जो उसके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले फेस मास्क और सौंदर्य प्रसाधनों में विशेष रुचि रखती थीं। इससे उसे एक विचार आया।
मुझे पता है! मैं एक ऑनलाइन मार्केटप्लेस खोलने जा रहा हूँ।
उसने अपने ब्लॉग पर उन कॉस्मेटिक उत्पादों के बारे में बताना शुरू किया जिन्हें वह कारगर मानती थी और छोटे मुनाफे के लिए संयुक्त खरीदारी का आयोजन करने लगी। बेशक, शुरुआत में उसने बहुत पैसा नहीं कमाया, लेकिन अपनी नियमित नौकरी के अलावा आय अर्जित करने से उसे उपलब्धि और आत्मविश्वास की एक बड़ी भावना मिली।

अपनी परिस्थिति का स्पष्ट आकलन करके प्रार्थना करने से लीना के जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया। उसे देर से ही सही, आधी रात की प्रार्थनाओं का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ और उसने इसके लिए मुझे धन्यवाद दिया। वह कहती है कि अब वह एक भी प्रार्थना नहीं छोड़ती, यह उसकी स्वाभाविक आदत बन गई है। अब जब उसने इसके लाभ देख लिए हैं, तो वह प्रार्थना को यथासंभव विशिष्ट बनाने का प्रयास करती है।
जब वह प्रार्थना को अतीत का हिस्सा मानने के बजाय तत्काल प्रभाव डालने वाली क्रिया के रूप में देखती है, तो उसका मन शांत हो जाता है। वह स्पष्ट स्वर में अपना नाम लेती है, अपनी स्थिति का विस्तार से वर्णन करती है और फिर भावपूर्वक प्रार्थना करती है। वह छह महीने तक प्रतिदिन प्रार्थना करती है। फिर, वह अपनी नोटबुक में लिखती है, मानो किसी जादू से उसकी हार्दिक प्रार्थना पूरी हो गई हो।

आप चाहे जिस भी समस्या का सामना कर रहे हों, सबसे पहले आपको अपनी वास्तविक स्थिति को समझना होगा। आप कह सकते हैं कि इस लिहाज़ से, आधी रात की प्रार्थनाएँ एक ऐसा साधन हैं जिनका उपयोग आप स्वयं समस्याओं को सुलझाने के लिए कर सकते हैं, न कि ईश्वर से प्रार्थना करने का कोई प्रयास। सफलता की ओर बढ़ने का चक्र, या सफलता प्राप्त करने के लिए आपको सफलता का अनुभव क्यों करना चाहिए
एक उद्यमी ने अकेले ही स्वास्थ्यवर्धक जूस का कारोबार शुरू करके खूब पैसा कमाया था, लेकिन उसका व्यवसाय जल्द ही मुश्किलों में घिर गया। बारिश के बाद मशरूम की तरह मिलते-जुलते कॉन्सेप्ट वाले कई ब्रांड उग आए, जिससे प्रतिस्पर्धा बढ़ गई और उसके मुनाफे में भारी गिरावट आने लगी। जैसे-जैसे उसका कारोबार गिरता गया, उसकी चिंता बढ़ती गई। हालात बिगड़ने पर उसे बार-बार अपना भविष्य जानने के लिए डॉक्टर के पास जाना पड़ा।
एक दिन उसने ऐलान किया कि वह कुछ समय के लिए कारोबार से दूर हो रही है। वह आगे बढ़ने का रास्ता खोजना चाहती थी और सबसे ज़रूरी बात, अपनी असफलता के सदमे से उबरने के लिए कुछ समय लेना चाहती थी। वह बहुत परेशान थी और कारोबार में गिरती बिक्री की वजह जानने के लिए रातों की नींद हराम कर रही थी। उसके बाद कुछ समय तक मेरी उससे मुलाकात नहीं हुई।

* * *

लगभग आधा साल बीत चुका था जब मैंने उसे दोबारा देखा। उसके चेहरे पर काफी रौनक आ गई थी। आंखों के नीचे के काले घेरे गायब हो गए थे और उसकी आंखों में प्रेरणा की चमक थी। उसके गाल पिचके हुए नहीं थे, बल्कि उनमें एक स्वस्थ चमक थी। मैं समझ गया था कि वह अपने बुरे दौर से बाहर निकल चुकी है।
इससे पहले कि मैं उससे कुछ पूछ पाती, उसने बोलना शुरू कर दिया।
उन्होंने कहा, "मैंने कुछ नया शुरू किया है, मैं दुकानों का नवीनीकरण कर रही हूं।"
“आप फिर से काम पर लौट आए हैं? यह सुनकर बहुत अच्छा लगा! मुझे लगा था कि आप कुछ समय तक वापस नहीं लौटेंगे।”
“नहीं, बिलकुल नहीं। मैं ‘सफल होने’ का अभ्यास कर रहा था। हर रोज।”
इसीलिए वो इतनी बेहतर दिख रही थी। उसकी बाकी कहानी बेहद दिलचस्प थी।

अपने स्टोरों के पतन के बाद लंबे समय तक वह गहरे अवसाद में डूबी रही। उसे लगता था कि वह चाहे कुछ भी करे, असफल ही होगी। इससे पहले कि उसका अवसाद उसे पूरी तरह से जकड़ ले, वह अपने घर के पास स्थित जिम में गई, जहाँ उसे पता चला कि उसके अंदर उसकी कल्पना से कहीं अधिक शक्ति है।
उसने अपने जीवन में पहली बार व्यायाम करना शुरू किया। शुरुआत में, उसे एक पाउंड के डम्बल उठाने में भी कठिनाई होती थी। लेकिन जब उसकी मांसपेशियां थोड़ी मजबूत हो गईं, तो वज़न उसे बहुत हल्का लगने लगा और जल्द ही वह बिना किसी परेशानी के पाँच पाउंड उठाने में सक्षम हो गई। शारीरिक मेहनत तो सहन करना कठिन था, लेकिन उपलब्धि का एहसास बेहद उत्साहवर्धक था। धीरे-धीरे सफलता मिलने के बाद, उसने अपना मनोबल फिर से जुटाया और अपना व्यवसाय फिर से शुरू कर दिया।
अन्य ब्रांडों से अलग पहचान बनाने वाली नई रणनीति के आधार पर स्टोरों का नवीनीकरण करने के बाद, उन्होंने विभिन्न प्रकार के उष्णकटिबंधीय फलों को मिलाकर नए मेनू पेश किए जो युवा ग्राहकों के बीच बेहद सफल साबित हुए। प्रतिदिन छोटे-छोटे प्रयास करके और अभ्यास के माध्यम से सफलता प्राप्त करते हुए, उद्यमी एक बड़ी सफलता की तैयारी कर रही थीं।

* * *

बेशक, इसका उल्टा भी संभव है। एक बार एक बड़े समूह में काम करने वाले एक वरिष्ठ प्रबंधक मुझसे सलाह लेने आए। पदोन्नति न मिलने के ठीक बाद उन्हें एक नया प्रोजेक्ट सौंपा गया था, जिसके बाद वे बेहद तनावग्रस्त और चिंतित महसूस कर रहे थे। बच्चों के बड़े होने के साथ-साथ उन्हें निजी ट्यूशन पर भी अधिक खर्च करना पड़ रहा था। उनके लगातार बढ़ते खर्चे उन्हें कंपनी में अपनी गतिहीन स्थिति की याद दिलाते रहते थे। भले ही वे सर्वोच्च पद तक न पहुँचें, लेकिन उन्हें लगता था कि अगर उन्हें कम से कम पदोन्नति मिल जाए तो उन्हें बहुत राहत मिलेगी। उच्च मूल वेतन और प्रदर्शन बोनस के साथ, वे कम से कम 9 प्रतिशत वेतन वृद्धि की उम्मीद कर सकते थे।
मैनेजर की हालत कई सालों से बिगड़ती जा रही थी। फिर भी, मुझे लगा कि अगर वह किसी तरह उस साल को किसी तरह निकाल ले, तो उसके पास इस अंधकारमय गड्ढे

से बाहर निकलने का अच्छा मौका है। इसी सकारात्मक सोच के साथ मैंने उसे कुछ ईमानदार सलाह दी।
"जल्द ही आपकी किस्मत बेहतर हो जाएगी।"
"क्षमा मांगना?"
“बस इस बात का ध्यान रखें कि आपके सामने जो भी अवसर आएं, उनका पूरा फायदा उठाएं। आपको अपना पूरा प्रयास करना होगा; अगर आप ऐसा करेंगे, तो आपके लिए सब कुछ बदल जाएगा।”
“क्या आपको लगता है कि मैं यह कर पाऊंगा?”
“ज़रूर। अगर कोई अच्छी खबर हो तो मुझे बता देना।”
यह सुनकर वह आदमी कांप उठा। फिर वह उदास चेहरे के साथ घर की ओर चल पड़ा।

* * *

नए साल की शुरुआत में मुझे उससे जवाब मिला। उसकी आवाज़ में किसी तरह की खामोशी झलक रही थी।
बाद में, जब मुझे उसके साथ हुई घटना के बारे में पता चला, तो मुझे उस पर तरस आया। जाहिर है, अपनी किस्मत बदलने की खबर सुनकर वह उत्साहित होने के बजाय ज्यादा चिंतित था। उसे शक था कि क्या वह अकेले दम पर इस परियोजना को सफल बना पाएगा, क्योंकि उसने इससे पहले कभी भी अपने दम पर कुछ हासिल नहीं किया था।
यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। आत्म-सुधार करना उनकी खासियत नहीं थी। वे हमेशा काम पर देर से आते थे, कभी भी दूसरों से ज़्यादा मेहनत नहीं करते थे, और घर जाने के समय तक सारा दिन सिर झुकाए बैठे रहते थे। कनिष्ठ कर्मचारी से वरिष्ठ प्रबंधक तक का उनका सफ़र ज़्यादा कठिन नहीं रहा था; समय के साथ-साथ उनकी वरिष्ठता बढ़ती गई और उन्हें अलग-अलग पदनाम मिलते गए। संक्षेप में, उन्होंने कोई मेहनत नहीं की थी। उन्होंने बस नियमित रूप से काम पर आना जारी रखा था।
अब उनके डर हकीकत बन गए थे। अपने दम पर कभी कोई सफलता न मिलने के कारण, मैनेजर अपने नए प्रोजेक्ट में असफल हो गया। पदोन्नति की उसकी सारी उम्मीदें पूरी तरह से खत्म हो गईं।

क्या मजबूत चरित्र सफलता के बराबर है? कभी न कभी हम सभी ने यह सोचा है कि सफल लोग साधारण नहीं होते। अगर वे इतनी जल्दी अमीर हो गए, तो उन्होंने कुछ तो अलग किया होगा। अधिकतर लोग कुछ इस तरह सोचते हैं, बस थोड़ा-बहुत अंतर होता है:
वे दुनिया के सबसे बुरे इंसान होंगे।
इसमें कोई शक नहीं कि उनमें दिल नहीं है।
अमीर लोगों को अक्सर गुस्सैल या मुश्किल स्वभाव का दिखाया जाता है। दरअसल, कुछ लोग कहते हैं कि नरम दिल और कोमल मानसिकता से अमीर बनना नामुमकिन है। लेकिन क्या यही नियम किस्मत पर भी लागू होता है? कम से कम मेरे जानने वाले अमीर लोगों के लिए, 'गि' शब्द का इस्तेमाल बिल्कुल अलग तरह की आंतरिक शक्ति को दर्शाने के लिए किया जाता है।

एलेक्स एक संगीतकार थे जिन्होंने संगीत जगत में शिखर का मुकाम हासिल किया था। किशोरावस्था में ही के-पॉप आइडल के रूप में डेब्यू करने के बाद उन्होंने एक सफल करियर बनाया था। वे कोरिया के सभी प्रमुख संगीत कार्यक्रमों में दिखाई दिए और कई पुरस्कार समारोहों में ग्रैंड प्राइज जीते। उनके बारे में कुछ डेटिंग की अफवाहें भी उड़ी थीं, लेकिन अपनी असाधारण प्रतिभा के दम पर उन्होंने अपने हर प्रयास में अपार सफलता प्राप्त की।
उनका बिंदास अंदाज़ उनकी कमजोरी नहीं, बल्कि एक हथियार था। उनके जोशीले प्रशंसकों को उनकी बिंदास छवि बेहद पसंद थी और उन्होंने उनके चारों ओर एक ऐसा मजबूत घेरा बना लिया था जिसे कोई अफवाह तोड़ नहीं सकती थी। उनके मिलनसार स्वभाव ने उन्हें व्यापक संपर्क नेटवर्क बनाने में मदद की और उन्होंने ऑफ-सीज़न का फायदा उठाकर अपने कारोबार का विस्तार किया और एक नया व्यवसाय शुरू किया। इसमें भी वे सफल रहे। उनके पास करोड़ों की संपत्ति, आलीशान घर और ऐसी लोकप्रियता थी जो कभी कम नहीं हुई। उनके पास वो सब कुछ था जिसकी कोई कामना कर सकता है, बिल्कुल एक शक्तिशाली सम्राट की तरह। उनका करिश्माई व्यक्तित्व मनमोहक था और उनका रवैया हमेशा

आत्मविश्वास से भरा और सहज रहता था। उनके बहुत सारे प्रशंसक थे। हालांकि, समय के साथ-साथ उनकी ताकतें फीकी पड़ने लगीं।
फिर कुछ अप्रत्याशित घटित हुआ: उन्होंने निर्णय लेने में कई गलतियाँ कीं, जिनके कारण निजता से संबंधित कई विवाद और कानूनी मुद्दे उत्पन्न हुए जिन्हें सुलझाया नहीं जा सका। अफवाहें तेजी से फैलने लगीं और उनका करियर बर्बाद हो गया। उन्हें मनोरंजन जगत से बहिष्कृत कर दिया गया। उनके साथ विशेष अनुबंध करने वाले विज्ञापनदाताओं ने उन्हें रद्द करना शुरू कर दिया, और उन्हें उन सभी शो से एक-एक करके हटा दिया गया जिनमें वे नियमित रूप से दिखाई देते थे। फिर, चर्चा शुरू हुई।
"यह उनके करियर का अंत है।"
मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं उसे जाते हुए देखूंगा।
क्योंकि हम एक-दूसरे को जानते थे, इसलिए मुझे चिंता होना लाज़मी था। मुझे डर था कि कहीं वह अवसादग्रस्त न हो जाए, जैसा कि कुछ लोग कह रहे थे।
कुछ ही समय बाद मुझे एलेक्स के बारे में ताज़ा खबर मिली। लोग कह रहे थे कि वह अपने घर में छिपा हुआ है, हमेशा अंदर ही बंद रहता है। मुझे लगा कि उसने हार मान ली होगी, उसका वज़न बहुत कम हो गया होगा और उसने मनोरंजन जगत से हमेशा के लिए संन्यास लेने का फैसला कर लिया होगा। मैं पूरी तरह गलत थी। मुझे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि वह घर पर अंग्रेजी पढ़ रहा था। अंग्रेजी पढ़ रहा था? सच में? मुझे अचानक ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरे सिर पर ज़ोर से थप्पड़ मारा हो। यह लड़का वाकई कुछ अलग ही था।
घटना के बाद उनका पहला विचार देश छोड़ने का था। उन्होंने विदेश में एक नई जिंदगी शुरू करने की तैयारी शुरू कर दी थी। किसी भी कलाकार के लिए, अगर उनका करियर इस तरह खत्म हो जाए, तो पूरी तरह से टूट जाना स्वाभाविक होता। लेकिन एलेक्स ने इतनी जल्दी एक नई जिंदगी की कल्पना कर ली, यह वाकई सराहनीय था। मैं उनके धैर्य से बहुत प्रभावित हुआ।

बेन का मामला अलग था। बेन ने एक टेलीविज़न टैलेंट शो के ज़रिए सफल शुरुआत की थी, लेकिन एक निर्माता के नज़रिए से, सभी उम्मीदवारों में उसकी पहली छाप सबसे खराब थी। मुझे उसका ज़रूरत से ज़्यादा लापरवाह रवैया पसंद नहीं आया।

आम तौर पर, टैलेंट शो में परफॉर्म करने वाले लोग ज़्यादा नहीं बोलते और स्टेशन के अधिकारियों को प्रभावित करने के लिए विनम्रता से पेश आते हैं। वे बेहद घबराए हुए भी होते हैं क्योंकि गायक के रूप में डेब्यू करने का मौका पाने के लिए उन्हें ऑडिशन जीतना ही होता है। मंच पर अपनी बारी का इंतज़ार करते हुए, कुछ लोग हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं और कुछ के चेहरे पर इतना दृढ़ संकल्प दिखता है कि मानो उनकी ज़िंदगी दांव पर लगी हो।
इसके विपरीत, बेन लेखकों के साथ हंसी-मजाक कर रहे थे और मंच पर बिना किसी घबराहट के काफी आनंदित लग रहे थे। उनका व्यवहार इतना सहज था कि मुझे संदेह हुआ कि यह उनकी पहली सार्वजनिक प्रस्तुति थी।
मेरे मन में सबसे पहला ख्याल आया, "कितना घमंडी इंसान है!" लेकिन जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि यह मेरी एक और अधूरी सोच थी। शुरुआत में ऐसा लगा कि वह पिछड़ रहा है। हैरानी की बात यह थी कि वह शांत रहा और अपना प्रदर्शन जारी रखा। जैसे-जैसे प्रतियोगिता का दूसरा चरण करीब आया, उसकी अडिग और शांत स्वभाव ने शानदार नतीजे दिए। शायद घबराहट के कारण, बेहतरीन प्रतियोगियों ने भी ऐसी गलतियाँ कर दीं जो उन्होंने पहले कभी नहीं की थीं या फिर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किए बिना ही मंच से चले गए।
दूसरी ओर, बेन ने ऑडिशन के अंतिम दौर तक अपना संयम बनाए रखा। अंततः, उन्होंने इसी आत्मविश्वास को बरकरार रखते हुए शीर्ष स्थान हासिल किया। तभी मुझे एहसास हुआ: वह घमंडी नहीं थे, बल्कि आत्मविश्वासी और सहज स्वभाव के थे। आज उनकी लोकप्रियता इतनी अधिक है कि लोग उन्हें देखने के लिए कुछ भी कीमत चुकाने को तैयार हैं।

अक्सर लोग कहते हैं कि सफल लोग दृढ़ निश्चयी होते हैं। यह कथन आधा सही और आधा गलत है। एक मूर्ख व्यक्ति जो हर छोटी बात से प्रभावित हो जाता है, वह ताज पहनने के योग्य नहीं है। उन्हें यह नहीं पता होता कि जब वे किसी उत्तेजना पर प्रतिक्रिया करते हैं, तो वे अपने विरोधियों के सामने अपनी कमजोरी उजागर कर देते हैं, जिसका वे उनके खिलाफ इस्तेमाल कर सकते हैं। दृढ़ निश्चयी होने का अर्थ आक्रामक या अत्यधिक दबाव डालना नहीं है, बल्कि अपने आसपास की बातों से विचलित या विचलित न होना है।

इस लिहाज से देखा जाए तो एलेक्स और बेन दोनों ही दृढ़ निश्चयी हैं। अपनी बेहद अलग और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी उन्होंने अपना संयम बनाए रखा और बाहरी प्रभावों से विचलित या प्रभावित नहीं होने दिया। इसी शांति ने उन्हें सफलता और लोकप्रियता हासिल करने में मदद की।
असल में, मजबूत व्यक्तित्व वाले लोग आमतौर पर डिज्नी फिल्मों के किरदारों की तरह बेहद सौम्य होते हैं। डिज्नी फिल्मों के मुख्य पात्र अपने हर काम में दृढ़ और आत्मविश्वासी होते हैं। वे लगातार तनाव में नहीं रहते या ताकतवर होने का दिखावा नहीं करते। उन्हें अपनी पहचान बनाने के लिए ऊंची आवाज उठाने की जरूरत नहीं पड़ती, और उनके प्रयासों का हमेशा अच्छा परिणाम निकलता है। बेन के साथ भी ठीक यही बात थी।
आपको शायद ही कोई ऐसा धनी व्यक्ति मिले जो दृढ़ निश्चयी न हो। महत्वपूर्ण बात यह है कि आप अपने उस अडिग स्वभाव का उपयोग कैसे करते हैं, क्योंकि यही आपके भाग्य को बना या बिगाड़ सकता है।
लगातार असफल होने वाले लोगों में यह बात समान होती है।
व्यस्त और आधुनिक लोगों पर जन्म से ही सकारात्मक रहने का दबाव डाला जाता है: "हमेशा आभारी रहो," "खुशी आपकी पहुंच में है," इत्यादि।
कभी-कभी, यह ज़रूरी होता है। लेकिन कभी-कभी, ये भावनाएँ ध्यान भटकाने वाली होती हैं, न कि हमारी समस्याओं का कोई ठोस समाधान। ये अक्सर मीठी-मीठी बातें होती हैं जिन्हें हमें यह विश्वास दिलाने के लिए निगलना पड़ता है कि हालात असलियत से बेहतर हैं। ये खोखले वादे बिल्कुल भी कारगर नहीं होते, खासकर जब बात पैसे और सफलता जैसे गंभीर मामलों की हो। आप पूछेंगे क्यों? दुर्भाग्य से, हमारी आजीविका जीवन-मरण का मामला है। और इतनी महत्वपूर्ण और मूल्यवान चीज़ को मीठी-मीठी बातों से छिपाना नहीं चाहिए।

युमी की सच्चाई दर्दनाक है। भाग्य ने तय किया था कि उसका जन्म एक गरीब परिवार में होगा। उसकी माँ को सुनने में दिक्कत है और उसके पिता ड्राई क्लीनर का काम करके जैसे-तैसे घर चलाते हैं। उसे नहीं पता कि उसका भविष्य कैसा होगा, लेकिन इन कठिन परिस्थितियों के बावजूद वह अच्छे अंक लाती है। वह कॉलेज में दाखिले के लिए आवेदन करने ही वाली थी, लेकिन तैयारी के दौरान ही उसे पहली बार प्यार हुआ और उसे बेहद बड़ा धोखा मिला। उसकी जिंदगी

बिखर गई और वह उस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में दाखिला पाने में असफल रही जिसका वह सपना देख रही थी। उसने एक और साल परीक्षा की तैयारी में बिताया, एक के बाद एक कई तैयारी कक्षाओं में गई, लेकिन फिर भी उसे अस्वीकार कर दिया गया। सच्चाई से मुंह मोड़कर, युमी ने कॉलेज छात्रा होने का नाटक करना शुरू कर दिया। उसने अपने अतीत और शिक्षा के बारे में झूठ बोलकर ट्यूटर की नौकरी हासिल की और एक सफल व्यवसायी से शादी भी कर ली। जैसे-जैसे वह एक के बाद एक झूठ बोलती गई, युमी का दुख भी बढ़ता चला गया।

* * *

यह कोई सच्ची कहानी नहीं है। यह लोकप्रिय कोरियाई ड्रामा 'अन्ना' की कहानी है। युमी के झूठ के विनाशकारी परिणाम का अंदाज़ा लगाने के लिए आपको आखिरी एपिसोड देखने की ज़रूरत नहीं है।
लेकिन युमी को इसके बजाय क्या करना चाहिए था? क्या उसे बस "मैं खुश हूँ" या "मैं आभारी हूँ" जैसे सकारात्मक वाक्य दोहराते रहना चाहिए था और अपनी बदकिस्मती को नज़रअंदाज़ कर देना चाहिए था? ज़िंदगी इतनी आसान नहीं है। यह सोचना कि सब कुछ ठीक चल रहा है, इससे हालात बेहतर नहीं हो जाते। ऐसे मामले में वास्तव में केवल एक ही उत्तर है: सकारात्मक होने के बजाय यथार्थवादी बनें।
हकीकत का सामना करने से आपके घुटने कांप सकते हैं और दिल की धड़कन तेज़ हो सकती है, लेकिन हकीकत का डटकर सामना करना ही बेहतर है। ज़रा सोचिए। चाहे कितनी भी पीड़ादायक सच्चाई हो, उसका सामना करके उससे बाहर निकलना, सकारात्मकता का ढोंग करके हमेशा के लिए अंधकार में डूबे रहने से बेहतर है क्या?
काश युमी ने यह सोचा होता कि, मेरे परिवार के पास पैसे नहीं हैं, इसलिए मुझे खुद को सुधारना होगा, और अपनी सारी ऊर्जा कॉलेज में दाखिला लेने की ओर लगाई होती, तो शायद उसे दुर्भाग्य के बजाय वास्तविक भाग्य प्राप्त होता।

* * *

यही बात तब भी लागू होती है जब आप परेशान हों। किसी को माफ करके उसके द्वारा किए गए गलत काम को भूल जाना कोई अच्छी बात नहीं है। जब आपको किसी से कोई समस्या हो, तो बेहतर है कि आप उससे आमने-सामने बात करें और मामले को

सामना करने के लिए पर्याप्त सूझबूझ रखती, तो उसकी जिंदगी पूरी तरह से अलग होती। यही वह सबक है जो मुझे ड्रामा 'अन्ना' ने सिखाया: सकारात्मक होने के बजाय यथार्थवादी बनो, और दूसरों से पहले खुद को प्राथमिकता दो।

* * *

कुछ लोग तैयारी के चरण से आगे नहीं बढ़ पाते। वे कभी कोई कदम नहीं उठाते। वे बेवजह चिंता करते हैं और कार्रवाई करने की तैयारी में अपना समय बर्बाद कर देते हैं। सफलता पाने के लिए कार्रवाई करना ज़रूरी है, लेकिन ये लोग निष्क्रिय पड़े रहते हैं क्योंकि सब कुछ उनके दिमाग में ही चलता रहता है। वे संभावनाओं को खत्म नहीं होने देना चाहते।
"बात बस इतनी सी है कि मैं पूर्णतावादी हूं।"
"जब तक मैं पूरी तरह से तैयार नहीं हो जाती, तब तक मैं कुछ भी दिखाना नहीं चाहती।"
जब आप पूरी तरह से तैयार हों तभी आपका भाग्य आपका इंतजार नहीं करता। एक बात निश्चित है, कम से कम अगर आप अमीर बनना चाहते हैं: आपको यथार्थवादी नायक बनना होगा, न कि आशावादी कायर।
वे दैनिक आदतें जो आपकी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाती हैं

घर वह जगह है जहाँ आप अपना अधिकांश समय बिताते हैं, इसलिए यह सौभाग्य को आकर्षित करने का एक उत्कृष्ट आधार है। दुनिया की हर चीज में ऊर्जा नामक एक गतिशील शक्ति होती है, और आपके घर की वस्तुएं आपके आर्थिक भाग्य पर बहुत प्रभाव डालती हैं।
इसका एक आम उदाहरण आपकी निजी वस्तुएं हैं, क्योंकि ये वे वस्तुएं हैं जिन्हें आप अपने शरीर के करीब रखते हैं। यह बात विशेष रूप से आपके बटुए पर लागू होती है। धन धन को आकर्षित करता है। अपने बटुए में 10,000 वॉन का नोट मोड़कर रखने से धन का नुकसान नहीं होगा। सोने के बर्तनों का रंग आपकी ऊर्जा को प्रभावित करता है। सोने का रंग लंबे समय से धन, स्वास्थ्य और दीर्घायु से जुड़ा हुआ है। भोजन करने के बर्तनों को बदलने मात्र से ही सौभाग्य प्राप्त हो सकता है।
भाग्य को आकर्षित करने वाले ऐसे विचार काफी हद तक सदियों पुराने फेंगशुई से लिए गए हैं। यहां कुछ अन्य चीजें हैं जिन्हें आप अपने घर में

भाग्य को बेहतर बनाने के लिए कर सकते हैं। इनमें से अधिकांश को एक बार जान लेने के बाद आसानी से अमल में लाया जा सकता है।
1. छोटे गमले वाले पौधे लंबे गमले वाले पौधों से बेहतर होते हैं।
बड़ों में एक पुरानी कहावत है कि इंसान से बड़े पौधे उसकी ऊर्जा को दबा देते हैं। एक मान्यता यह भी है कि रेस्तरां, कैफे और ऐसे व्यवसाय जहां बहुत से लोग आते-जाते हैं, वहां बड़े पौधे लगाना अच्छा होता है (क्योंकि ये ऐसी जगहें हैं जहां बहुत से लोग आते-जाते हैं), लेकिन एक छोटे परिवार में, अगर बहुत बड़े पौधे हों, तो वे घर के मुखिया की ऊर्जा को दबा देते हैं।
2. फ्रिज पर चुंबक न लगाएं।
भोजन जीवन का आधार है, इसलिए कोरिया में भोजन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। अतः, यदि भोजन रखने के स्थान पर अनावश्यक वस्तुएँ अधिक मात्रा में हों, तो उस स्थान का वातावरण अस्वच्छ माना जाता है।
3. अपने पर्स में एक 10,000 वॉन का नोट रखें।
पुराने समय में, बटुआ को व्यक्ति का निजी भंडार माना जाता था, इसलिए यह मान्यता थी कि इसमें नकदी रखने से धन के मामले में सौभाग्य प्राप्त होता है। इसी कारण कोरिया में, बटुआ उपहार में देते समय, उसमें थोड़ी नकदी रखना एक प्रथा है।
4. सुनहरे रंग के चम्मच-कांटे का प्रयोग करें।
रसोई भोजन तैयार करने का स्थान है, और भोजन जीवन का आधार है, इसलिए अतीत में पेट के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज भोजन ही थी। इसीलिए रसोई में सोने या सुनहरे रंग के बर्तनों का उपयोग करने की सलाह दी जाती है, जो धन या समृद्धि का प्रतीक है।
5. बाथरूम का दरवाजा बंद रखें।
चूंकि शौचालय का अर्थ बुरी ऊर्जा को धोकर दूर करना है, इसलिए बेहतर है कि दरवाजा बंद रखा जाए ताकि बाथरूम में बची हुई कोई भी अशुद्ध ऊर्जा रहने की जगह के अन्य हिस्सों में न फैल जाए।
6. बैठक कक्ष में एक पीली वस्तु रखें।
पंच ऊर्जा सिद्धांत—लकड़ी, अग्नि, पृथ्वी, धातु और जल—में पृथ्वी स्थिरता, संतुलन और समावेशिता का प्रतीक है। चूंकि बैठक कक्ष वह स्थान

है जहां पूरा परिवार एकत्रित होता है, जो सद्भाव का प्रतीक है और संतुलन बनाए रखने वाले केंद्र के रूप में कार्य करता है, इसलिए इस स्थान पर पीले रंग की वस्तुएं रखने की सलाह दी जाती है, जो पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करती हैं।
7. प्रवेश द्वार को हमेशा साफ रखें।
प्रवेश द्वार वह पहला स्थान है जहाँ बाहर से अच्छी ऊर्जा आती है, इसलिए एक मान्यता यह है कि यदि वहाँ डिलीवरी बॉक्स या सामान का ढेर लगा हो, तो सौभाग्य प्रवेश नहीं कर पाएगा, बल्कि अवरुद्ध हो जाएगा।
8. सोते समय अपना सिर खिड़की के पास रखें।
खिड़की के पास सिर रखने का कारण यह है कि खिड़कियाँ आमतौर पर इस तरह से बनाई जाती हैं कि उनमें से सूर्य की रोशनी (उत्तर दिशा के अलावा अन्य दिशाओं से) अंदर आ सके। कोरिया में, उत्तर दिशा की ओर सिर करके सोना बहुत अशुभ माना जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि मृतकों को उसी दिशा में दफनाया जाता है। इसी कारण कोरियाई लोग दक्षिणमुखी घर को बहुत महत्व देते हैं, क्योंकि अंदर आने वाली गर्म धूप को नई शुरुआत, जीवन शक्ति और सम्मान का प्रतीक माना जाता है।
9. बाथरूम में एक छोटा पौधा रख दें।
बाथरूम एक ऐसी जगह है जहाँ नकारात्मक ऊर्जा आती-जाती रहती है, और वहाँ बहुत सारा पानी जमा हो जाता है, जिसे कोरिया में नकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है। यदि आपके अंदर यिन ऊर्जा अधिक है, तो सामंजस्य स्थापित करने के लिए आपको उस स्थान को यांग ऊर्जा से भरना होगा। हरे पौधों में यांग ऊर्जा होती है, इसलिए यिन ऊर्जा को संतुलित करने के लिए उन्हें बाथरूम में रखना अच्छा होता है।
10. गीले छाते घर के अंदर न रखें।
लोग अक्सर गीले छाते दरवाजे पर छोड़ देते हैं। लेकिन ऐसा करने से बाहर की नकारात्मक ऊर्जा अंदर जमा हो जाती है, जिससे प्रवेश द्वार अवरुद्ध हो सकता है। इसलिए गीले छातों को ऐसी जगह रखना बेहतर है जहाँ से प्रवेश द्वार साफ और सूखा रहे।
नोट्स छोड़ें
*1 एक प्रेत-समान या आत्मा-समान धनुष; विस्तार से कहें तो एक महान धनुर्धर।
*2 जोसियन राजवंश के चौथे राजा (शासनकाल 1418-1450) और कोरियाई वर्णमाला हंगुल के निर्माता।

*3 एक कोरियाई कलाकार, लेखिका, सुलेखक और कवयित्री, जिन्हें अक्सर कन्फ्यूशियस आदर्शों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। वह दक्षिण कोरियाई बैंकनोट पर चित्रित होने वाली पहली और एकमात्र महिला हैं।
*4 सोलहवीं शताब्दी के कन्फ्यूशियस विद्वान, जिन्हें टोएग्ये के नाम से भी जाना जाता है।
*5 कोरियाई व्यंजन जिसमें बीफ़ की छोटी पसली (कोरियाई में गालबी) की पैटीज़ को मीठे और नमकीन सॉस के साथ पकाया जाता है। इसे ट्टोक-गालबी कहा जाता है क्योंकि पसली (गालबी) को ट्टोक (चावल के केक) की तरह बारीक पीसकर कूटा जाता है, जिससे यह नरम और आसानी से पचने योग्य हो जाती है। वांग-गालबी नाम मांस के "जंबो" आकार को दर्शाता है, जो सामान्य गालबी के टुकड़ों से लगभग तीन से पाँच गुना बड़ा होता है।
*6 प्रत्येक सांसारिक शाखा एक जानवर से जुड़ी है: चूहा, बैल, बाघ, खरगोश, ड्रैगन, सांप, घोड़ा, भेड़, बंदर, मुर्गा, कुत्ता या सुअर।
*7 कोरियाई भाषा में जियोंग-ओह, जिसका अनुवाद "घोड़े के समय का मध्य" होता है।
*8 कोरियाई भाषा में जा-जेओंग, जिसका अनुवाद "चूहे के घंटे का मध्य" होता है।
*9 चीनी शब्द ची से, जिसका अर्थ है "ऊर्जा"। कोरियाई शब्द का उच्चारण "की" और "घी" के मिश्रण के रूप में वर्णित किया जा सकता है, लेकिन इसमें "आई" की ध्वनि छोटी होती है।
*10 लगभग 10 अमेरिकी डॉलर।

[redacted]

4

धनवान लोग हमेशा अपने भीतर ही उत्तर ढूंढ लेते हैं।

अपने स्वभाव का अनुसरण करें मुझे पैसे कमाने का कोई तरीका नहीं पता।
स्कॉट ने बड़ी मुश्किल से यह बात स्वीकार की। वह एक उद्यमी थे, जो एक सफल वित्तीय कार्यकारी के रूप में बीस साल के लंबे करियर के बाद सेवानिवृत्त होने के बाद से अपने हर प्रयास में असफल रहे थे। जब उन्हें पदावनति का सामना करना पड़ा, तो उन्होंने कंपनी छोड़ने और अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने का विकल्प चुना।
क्योंकि स्कॉट को व्यायाम करना बहुत पसंद था, इसलिए उन्होंने एक स्वास्थ्य सेवा ऐप विकसित करने का फैसला किया। हालांकि, इसे विकसित करने के लिए उन्हें अपने दो दशक के करियर में सावधानीपूर्वक बचाए गए धन का एक बड़ा हिस्सा निवेश करना पड़ा। ऐप से कभी मुनाफा नहीं हुआ। स्कॉट ने ऐप को छोड़ दिया और इसके बजाय एक फिटनेस सेंटर चलाने की कोशिश की, लेकिन वह भी सफल नहीं हुआ। उन्होंने अपनी सेवानिवृत्ति की बचत सहित अपना सारा पैसा अपने नए प्रयासों में लगा दिया था। दुर्भाग्य से, लगातार दो बार असफल होने के बाद उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ा। वित्तीय चुनौतियों ने उनके पारिवारिक जीवन को भी प्रभावित किया।
मैंने उससे कहा, "आपको पहले अपनी ऊर्जा से परिचित होना होगा।"
“माफ़ करना? तुम्हारा क्या मतलब है?” स्कॉट ने अचानक सीधा बैठते हुए पूछा।

“हर व्यक्ति की अपनी ऊर्जा होती है। यह जानकारी ही आपको पैसा कमाने का तरीका समझने में मदद करेगी। आपने ‘व्यक्तिगत रंग’ की अवधारणा के बारे में तो सुना ही होगा, है ना? हर व्यक्ति के अलग-अलग रंग और कपड़ों की शैलियाँ होती हैं, जो उनकी त्वचा के रंग और शरीर की बनावट जैसी अनूठी विशेषताओं पर निर्भर करती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम सभी का अपना एक अनूठा शारीरिक पैलेट होता है। आजकल, आपको आसानी से ऐसे विशेषज्ञ मिल जाएंगे जो परामर्श सेवाएं प्रदान करते हैं और आपको अपना व्यक्तिगत रंग खोजने में मदद करते हैं। ऐसी सेवाएं बहुत लोकप्रिय हो गई हैं क्योंकि अपने व्यक्तिगत रंग के अनुरूप कपड़े या मेकअप पहनना अपनी सुंदरता को निखारने का एक सरल लेकिन प्रभावी तरीका है।”
“मैंने जिस ऊर्जा का जिक्र किया है, उसे आप व्यक्तिगत रंग की अवधारणा के समान समझ सकते हैं। आप अपनी व्यक्तिगत ऊर्जा का पता लगा सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे आप अपने व्यक्तिगत रंग की पहचान करते हैं। यदि आप पहले से नहीं जानते हैं, तो आपको इसका पता लगाना होगा।”

* * *

मेरे जान-पहचान के ज़्यादातर अमीर लोग म्योंगली विज्ञान में रुचि रखते हैं। वे अच्छे शिक्षक ढूंढने और इसके बारे में और जानने के लिए बहुत मेहनत करते हैं। उन्हें देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि जब उनके पास पहले से ही इतना कुछ है, तो वे अपनी संपत्ति के बारे में और जानने के लिए इतनी अथक मेहनत क्यों कर रहे हैं।
अब इस बारे में सोचकर मुझे लगता है कि मैं इसका कारण समझ गया हूँ। म्योंगली का अध्ययन करके आप अपने भाग्य का पता लगा सकते हैं। जिन धनी लोगों ने इसका लगन से अध्ययन किया, वे अपनी व्यक्तिगत ऊर्जा का विश्लेषण करके उसे और भी अधिक भाग्य को और भी जल्दी प्राप्त करने के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहे थे। यही कारण है कि मैंने स्कॉट से कहा कि उसे अपनी ऊर्जा के बारे में सीखना होगा। कई धनी लोग पहले से ही इस ज्ञान को अपने जीवन में अपनाते हैं।
मैंने स्कॉट को एक और जानकारी दी: “जो लोग पैसा कमाने और उसे बढ़ाने में माहिर होते हैं, उन्हें खुद की गहरी समझ होती है और कम से कम ओह-हैंग[*1] (पांच ऊर्जाओं का सिद्धांत) की बुनियादी जानकारी होती है। वे

जानते हैं कि वे क्या कर सकते हैं और क्या नहीं कर सकते और उस ज्ञान को अपने दैनिक जीवन में लागू करने में माहिर होते हैं। इसी तरह वे और भी धनी बनते हैं।”
“ओह-हैंग, पांच ऊर्जाएं?” उसने मुझसे पूछा।
जी हाँ, सरल शब्दों में कहें तो, ये पाँच ऊर्जाएँ हैं जिनसे संसार का निर्माण होता है। इसमें कुछ भी जटिल नहीं है। इसके विपरीत, यह उतना ही स्वाभाविक है जितना ऋतुओं का परिवर्तन: लकड़ी (木), अग्नि (火), पृथ्वी (土), धातु (金) और जल (水)। ये पाँच प्रकार की ऊर्जाएँ प्रकृति और मानवता दोनों की नींव हैं। सब कुछ चक्रों में चलता है, जैसे सूर्य अस्त होने पर चंद्रमा उदय होता है और पूर्णिमा के बाद घटता है। मनुष्य प्रकृति का हिस्सा हैं, इसलिए हम भी इसी चक्र का अनुसरण करते हैं। और भाग्य भी।
"क्या आपका मतलब है कि सब कुछ गोल-गोल घूमता है?"
जी हाँ। एक उदाहरण लीजिए। हम आग जलाने के लिए लकड़ी का इस्तेमाल करते हैं। जलने के बाद बची हुई राख धरती में मिल जाती है। धरती के जमने पर वह चट्टानों या धातुओं में बदल जाती है। पानी इन चट्टानों या धातुओं से होकर बहता है, धरती में रिसता है और पेड़ों को पोषण देता है। हर तत्व एक चक्र में आता-जाता रहता है और दूसरों की मदद करता है। एक बार जब आप जान जाएंगे कि आप ऊर्जा के इस चक्र में कहाँ हैं, या आपके पास इस समय कौन सी ऊर्जा है, तो आपको पता चल जाएगा कि आपको धन कैसे मिलेगा।
“मैं समझ गया। तो अगर मैं अपनी व्यक्तिगत ऊर्जा का पता लगा लूं, तो इससे मुझे उस चक्र के भीतर जीना सीखने में मदद मिलेगी?”
“बिल्कुल सही। प्रकृति की कल्पना कीजिए। पेड़ अपनी जड़ें धरती में गहराई तक जमाते हैं और आसमान की ओर बढ़ते हैं। इसीलिए लकड़ी की ऊर्जा वाले लोग उच्च आदर्श रखते हैं और रचनात्मक कार्यों का आनंद लेते हैं, ठीक वैसे ही जैसे पेड़ अपनी शाखाओं पर फल देते हैं। अग्नि की ऊर्जा वाले लोग अग्नि की आपकी छवि से मेल खाते हैं। वे जोशीले लोग होते हैं, कर्मठ होते हैं और सम्मान को महत्व देते हैं। उन्हें सार्वजनिक ध्यान आकर्षित करने में भी कोई आपत्ति नहीं होती। इसीलिए आप पाएंगे कि उनमें से कई कला या खेल में विशेष रूप से प्रतिभाशाली होते हैं। पृथ्वी वह मिट्टी है जो जीवन का आधार है। यह विस्तृत है, शांत है और अपने चारों ओर सब कुछ समाहित करती है, इसीलिए पृथ्वी की ऊर्जा वाले लोग धैर्य की आवश्यकता वाले कार्यों के लिए

उपयुक्त होते हैं। आपका क्या विचार है? बात समझ में आ गई होगी, है ना? क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि धातु क्या करती है?”
“हम्म। अच्छा, धातु ठंडी और कठोर लगती है। इसे आग से शुद्ध भी किया जाता है…?”
बिल्कुल सही। मजबूत धातु ऊर्जा वाले लोग तर्कसंगत और यथार्थवादी होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कोई तराशा हुआ ब्लेड या रत्न। वे शांत स्वभाव के होते हैं, हर काम को बारीकी से करते हैं और बारीक, नाजुक कार्यों में माहिर होते हैं। अंत में, जल। यह नीचे की ओर बहता है, सब कुछ अपने भीतर समाहित कर लेता है और सबको आपस में मिला देता है। इसलिए जल ऊर्जा वाले लोग बहुत कुछ सीखते हैं और लगातार खुद को चुनौती देते रहते हैं क्योंकि वे बाहरी तत्वों को आत्मसात करने में अच्छे होते हैं। वे बौद्धिक कार्यों में उत्कृष्ट होते हैं।
मैंने उसे एक उदाहरण के तौर पर अपने किसी परिचित की कहानी सुनाई।

ऐलिस एक जोशीली और शानदार व्यक्तित्व वाली महिला थीं। मिलनसार और हंसमुख स्वभाव की होने के साथ-साथ, वह हर माहौल को बखूबी संभालती थीं और किसी भी स्थिति में खुशनुमा माहौल बनाने में माहिर थीं। इसके अलावा, वह लोगों से घुलने-मिलने वाली थीं और उनके साथ समय बिताना बेहद आनंददायक होता था। मुझे बचपन से ही सबका ध्यान अपनी ओर खींचना अच्छा लगता था। कराओके जाने का सुझाव मैं कभी सबसे पहले नहीं देती थी, लेकिन एक बार माइक मेरे हाथ में आ जाए तो उसे मुझसे छीनना नामुमकिन था। मुझे लगता है कि उस समय भी मुझे पता था कि मैं टीवी पर जरूर आऊंगी।
कैमरे की ओर देखते हुए उनकी मुस्कुराती आँखों में आत्मविश्वास झलक रहा था। शुरुआत से ही वह सबसे अलग थीं। वस्तुनिष्ठ रूप से कहें तो, वह किसी सौंदर्य प्रतियोगिता की पात्र जैसी खूबसूरत नहीं थीं, लेकिन अपने चुलबुले व्यक्तित्व से उन्होंने मनोरंजन जगत को शुरू से ही मोहित कर लिया था, और वह बड़ी भीड़ के सामने मंच पर आने से नहीं डरती थीं। स्टेशन की न्यूज़ एंकर बनकर उन्होंने शुरुआत में ही सबका ध्यान आकर्षित कर लिया। इतनी सफल शुरुआत के बावजूद, ऐलिस को धीरे-धीरे बेगानापन महसूस होने लगा।

मुख्य समाचार एंकर होने के नाते, उनके काम के लिए उन्हें एक पेशेवर सूट पहनना, औपचारिक हेयरस्टाइल रखना और एक ही नीरस लहजे में भाषण देना ज़रूरी था। कैमरे के सामने वह बड़ी शालीनता से मुस्कुराती थीं, लेकिन किसी तरह यह भूमिका उन्हें रास नहीं आई। सांस्कृतिक कार्यक्रम की मेजबानी करना उनके व्यक्तित्व के अनुकूल नहीं था। उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने किसी और के कपड़े पहन रखे हों। यह बात सिर्फ़ उन्होंने ही नहीं देखी; दर्शकों ने भी अपनी टिप्पणियाँ लिखकर भेजीं, जैसे, "वह सहज नहीं लग रही हैं," या "मैं शो पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाया।"

* * *

ऐलिस ने कार्रवाई करने का पक्का इरादा कर लिया। अपने हमेशा के जोशीले स्वभाव के अनुसार, उसने ज़रा भी संकोच नहीं किया। उसने अपना इस्तीफा दे दिया, उस स्थिति को खत्म करने का इंतज़ार नहीं किया जो उसके लिए ठीक नहीं थी।
मैं प्रसारण को पूरी तरह से छोड़ना नहीं चाहता। मुझे क्या करना चाहिए?
वह दर्शकों से उसी तरह जुड़ना चाहती थी जैसे वह अपने शुरुआती दिनों में जुड़ती थी। समाचार एंकर के पद से इस्तीफा देने के डेढ़ साल बाद, वह एक बिल्कुल अलग तरह के शो, होम शॉपिंग की एंकर बनकर लौटी। यह एक बेहतरीन फैसला साबित हुआ। समाचारों के विपरीत, ऐलिस को यहाँ खूब मज़ा आया और उसने अपने हंसमुख और चुलबुले व्यक्तित्व को खुलकर खुलकर दिखाया।
उसने सही दांव लगाया था। चाहे खाने के सेगमेंट के दौरान हंसी के मारे उसके मुंह से खाना निकल जाए या हेयर रोलर का प्रदर्शन गलत हो जाए और उसके बाल खराब हो जाएं, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था। वह हर अप्रत्याशित स्थिति को हास्य और कुशलता से संभालती थी। वास्तव में, उसकी अनोखी और सहजता ने दर्शकों को उसका और भी अधिक प्रिय बना दिया और उन पर भरोसा करने पर मजबूर कर दिया, जिससे रेटिंग और बिक्री में काफी वृद्धि हुई।
उन्होंने जल्द ही दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया, और होम शॉपिंग उद्योग में उन्हें इतना अनमोल माना जाने लगा कि उन्हें "होम शॉपिंग लेडी जो कुछ भी बेच सकती है" का उपनाम भी मिल गया। उनका वेतन तेजी से बढ़ा, और अफवाहें फैलने लगीं कि वह एक ऐसी इमारत में अपार्टमेंट में रहने लगी हैं जिसे केवल सबसे अमीर लोग ही खरीद सकते हैं।

ऊर्जा की शक्ति ही वह मुख्य कारण था जिसकी वजह से ऐलिस सालाना करोड़ों दर्शकों तक पहुँचने और प्रति घंटे लाखों की कमाई करने में सक्षम थी। वह अपने हर शो में जिन उत्पादों का प्रचार करती थी, वे तुरंत बिक जाते थे। अपनी ऊर्जा के अनुरूप नौकरी पाने के लिए बेहद भाग्यशाली रही, खासकर तब जब उसने जोखिम उठाकर अपनी अनुपयुक्त नौकरी से इस्तीफा दे दिया था।
ओह-हैंग के संदर्भ में, ऐलिस में अग्नि ऊर्जा है। उनका स्वभाव सूर्य के समान चमकने वाला है। एंकर के रूप में, एक तय स्क्रिप्ट का पालन करना उनकी ऊर्जा के विपरीत था; ऐसी पाबंदियों के आगे झुकना उनके लिए कठिन रहा होगा। अंततः, ऐलिस को एक नया करियर पथ मिला जिसने उन्हें अपनी ऊर्जा का उपयोग उस तरह से करने की अनुमति दी जो उनके लिए उपयुक्त था और जिससे उन्हें शानदार परिणाम मिले। आज भी, ऐलिस शायद नहीं जानतीं कि उनका ओह-हैंग क्या है। हालांकि, उन्हें यह अवश्य ही ज्ञात होगा कि उनका अंतर्निहित स्वभाव ही, जो उन्हें सूर्य के समान चमकने और ऊर्जा का संचार करने के लिए प्रेरित करता था, उनकी अपार समृद्धि का मूल कारण था।

* * *

अगर किसी व्यक्ति को ओह-हैंग के बारे में कुछ भी नहीं पता, तो क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे वे अपने ऊर्जा प्रकार के बारे में जान सकें? अगर आपने यह पता लगा लिया है कि आपके पास कौन सी ऊर्जा है, चाहे यह खोज आपने खुद की हो या किसी की मदद से, तो यही बात आपको भाग्यशाली बनाती है। अधिकतर लोग अपने जीवन में इस महत्वपूर्ण जानकारी को अनदेखा करते रहते हैं।
अपनी ऊर्जा का अंदाजा लगाने का एक तरीका है अपने वंश को देखना। आपका परिवार और जिस माहौल में आपका जन्म और पालन-पोषण हुआ है, उससे आपको एक मोटा-मोटा अंदाजा मिल सकता है। आपने शायद गौर किया होगा कि कलाकार अक्सर कलाकारों के परिवार से आते हैं, और यही बात खिलाड़ियों पर भी लागू होती है। आप शायद "खून के रिश्ते को धोखा नहीं दिया जा सकता," "शायद उन्हें यह मुझसे मिला है," या "यह खानदानी बात है" जैसी कहावतों से भी परिचित होंगे। इसका केवल दो ही मतलब हो सकता है: या तो आपको परिवार का कोई गुण विरासत में मिला है या आप उस विशेष प्रकार की ऊर्जा के लगातार संपर्क में रहे हैं।

किसी बच्चे की ऊर्जा को सबसे पहले पहचानने वाले आमतौर पर उसके माता- पिता होते हैं। एक पूर्ण रूप से सहायक परिवार, साथ ही व्यक्ति के स्वयं के प्रयास, एक प्रतिभाशाली बच्चे के विकास में योगदान दे सकते हैं। दुर्भाग्य से, कुछ ही लोग इतने भाग्यशाली होते हैं जिन्हें ये तीनों चीजें मिलती हैं: जन्मजात ऊर्जा, सहायक माता-पिता और स्वयं के प्रयास।
आप इस सिद्धांत को व्यंग्यात्मक तरीके से भी पेश कर सकते हैं, यह तर्क देते हुए कि जन्मजात भाग्य वास्तव में केवल उन्हीं लोगों का साथ देता है जो धनी माता-पिता के यहाँ पैदा होते हैं।
सच तो यह है कि आपके पास कितना भी पैसा क्यों न हो, अगर आप गलत रास्ता चुनते हैं तो आपके असफल होने की संभावना अधिक होती है क्योंकि आपको अपनी अंतर्निहित ऊर्जा का ज्ञान नहीं होता है।

बिल का जन्म डॉक्टरों के एक धनी परिवार में हुआ था। अपने भाई-बहनों में सबसे छोटा होने के नाते, बिल शुरू से ही एक उच्च पद के लिए तैयार था। उसके पिता एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय अस्पताल में अस्थि शल्य चिकित्सक थे, और उसका बड़ा भाई भी उन्हीं के नक्शेकदम पर चल रहा था।
लेकिन बिल की दिलचस्पी इसमें नहीं थी। वह बचपन से ही एक कुशल गायक थे। वह एक बेहतरीन गिटार वादक भी थे—इतने अच्छे कि यह मानना मुश्किल था कि उन्होंने ये हुनर खुद से सीखा था। उन्हें संगीत की ये प्रतिभा अपने नाना से विरासत में मिली होगी।
संगीत के प्रति जुनूनी बिल ने मनोरंजन जगत में करियर बनाने का सपना देखना शुरू कर दिया था। हाई स्कूल में पढ़ते समय ही उन्होंने एक मशहूर मनोरंजन एजेंसी के लिए ऑडिशन दिया और पहले राउंड में सफल भी हो गए। उन्होंने यह बात अपने परिवार से छुपाई, लेकिन जब बिल दूसरे ऑडिशन में हिस्सा लेने वाले थे, तब उनके माता-पिता को पता चल गया। डॉक्टरों के परिवार में एक गायक? पूरा परिवार गुस्से से भड़क उठा।
इतने कड़े विरोध का सामना करते हुए, बिल को एक चुनाव करना पड़ा: अपने माता-पिता की इच्छा के अनुसार मेडिकल स्कूल जाना, या गायक बनने के अपने सपने को पूरा करना। यह एक कठिन निर्णय था। बिल ने कभी अपने माता-पिता की

बात नहीं मानी थी, और उसके उत्कृष्ट अंक इस बात का प्रमाण थे कि उसके माता- पिता ने उसकी शिक्षा पर कितना पैसा खर्च किया था। अंततः, उसने अपने माता- पिता की इच्छा का पालन करना ही उचित समझा और वह एक दंत चिकित्सक बन गया। लेकिन जब बिल अपनी तीस की उम्र के मध्य में पहुंचा, तो अचानक बिना किसी स्पष्ट कारण के वह उदास महसूस करने लगा। उसका जीवन स्थिर था और परिवार भी अच्छा था—आखिर किस चीज की कमी थी? एक दिन, बिल ने अपना पुराना गिटार निकाला, उस पर जमी धूल की मोटी परत साफ की और तारों को ठीक किया।
जैसे ही उसने बजाना शुरू किया, ठीक वैसे ही जैसे वह हाई स्कूल में बजाता था, उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसके हाथ सुरों को याद कर रहे थे।
बिल रोमांचित हो उठा। मानो किसी ने उसके दिल में एक नई रोशनी जगा दी हो।
आश्चर्यचकित होकर उसने ठान लिया कि वह इस भावना को फिर कभी नहीं खोएगा।
बिल कभी मशहूर गायक नहीं बन पाए। वे अब भी डॉक्टर के रूप में काम करते हैं, लेकिन गीतों के माध्यम से अपने इस अफसोस को कम करते हैं।

जिन लोगों ने अपनी ऊर्जा को सही ढंग से पहचाना है, उनके सफलता के शिखर तक पहुंचने की संभावना अधिक होती है। इसके विपरीत, जो लोग अपनी ऊर्जा को नजरअंदाज करते हैं, उन्हें अपने द्वारा लिए गए निर्णयों पर पछतावा होने की संभावना अधिक होती है।
मैं अक्सर अपने ग्राहकों को एक सलाह देता हूँ: “अपने स्वभाव के अनुसार जियो।” स्वभाव से ही पता चलता है कि आपमें जन्मजात गुण होते हैं। अगर आप चाहते हैं कि सब कुछ ठीक हो, तो आपको अपने स्वाभाविक स्वभाव के साथ सामंजस्य बिठाकर जीना होगा। क्या आप हर परिस्थिति में खुद को ढालने की कोशिश करेंगे, यह जाने बिना कि आपकी ऊर्जा कितनी है? या आप अपनी ऊर्जा के प्रति सचेत रहकर ऐसा रास्ता चुनेंगे जिससे आप उसका सर्वोत्तम उपयोग कर सकें? इन सवालों के जवाब आपके जीवन की गति बदल सकते हैं। इसीलिए अपनी ऊर्जा को पहचानना इतना महत्वपूर्ण है।
यही कारण है कि सफल लोग म्योंगली का इतनी लगन से अध्ययन करते हैं। एक बार जब आप यह जान लेते हैं कि आप किस ऊर्जा के साथ पैदा हुए हैं, तो आप अपनी शक्तियों और कमजोरियों को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे और यह जान पाएंगे कि

आपको किससे बचना चाहिए और किसकी संगति में रहना चाहिए। हालांकि आपको जो उत्तर मिलेंगे वे गणित के समीकरण के परिणाम जितने सीधे-सादे नहीं होंगे, फिर भी आप एक सामान्य दिशा का पता लगा पाएंगे।
अपने अंतर्निहित स्वभाव को सही ढंग से पहचानना ही आपके भाग्य को बेहतर बनाने के लिए काफी है। अपनी ऊर्जा को पहचानना और उस ज्ञान के आधार पर अच्छे निर्णय लेना आपके बस में है। इसे समझने के लिए समय न निकालना महत्वपूर्ण अवसरों और सफलता के रास्तों से आपको वंचित कर सकता है।
“दुर्भाग्य” का “भाग्य”
भाग्य आपके स्वभाव और उसे इस्तेमाल करने के तरीके से गहराई से जुड़ा होता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप अपने जीवन की घटनाओं का सामना अपने स्वभाव का पूरा लाभ उठाते हुए करें। मैंने लोगों द्वारा बताई गई कहानियों में कुछ समानताएं देखी हैं। पहली बात तो यह है कि बहुत से लोग खुद को ऐसी उलझन भरी और मुश्किल परिस्थितियों में पाते हैं जिनके लिए वे तैयार नहीं होते। दूसरी बात यह है कि अविश्वसनीय रूप से अप्रत्याशित और परेशान करने वाली घटनाएं आपकी अपेक्षा से कहीं अधिक बार और अधिक लोगों के साथ घटित होती हैं। मुझे हमेशा उन सफल लोगों को देखकर आश्चर्य होता है जो सबसे अकल्पनीय और बेतुकी परिस्थितियों में भी अपने लिए फायदेमंद समाधान ढूंढ लेते हैं।

यह कहानी एक ऐसे उद्यमी की है जिसने बबल टी का कारोबार चलाया। वे इतने सफल हुए कि एक समय दक्षिण कोरिया भर में उनकी एक हजार से भी अधिक दुकानें थीं। कंपनी दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी। दरअसल, कंपनी के दो संस्थापक थे, आर्थर और ब्रायन। देखा जाए तो, आर्थर ने ही कंपनी की शुरुआत की थी जब उन्होंने एक विश्वविद्यालय शहर में एक छोटी सी बबल टी की दुकान खोली थी। हालांकि ब्रायन बाद में आर्थर के साथ जुड़े, लेकिन व्यवसाय को वर्तमान स्तर तक पहुंचाने में उनका ही योगदान रहा।

* * *

उनकी कहानी कई साल पहले शुरू हुई थी, जब एक दिन एक अनजान युवक आर्थर की दुकान पर आया और उनसे व्यापार के बारे में सिखाने के लिए कहा।
मैं आपसे सीखना चाहूंगा।
"माफ़ करें?"
मैं इस व्यवसाय को बढ़ाना चाहता हूं। मुझे पता है कि मैं यह कर सकता हूं।
आर्थर एक अंशकालिक कर्मचारी को काम पर रखने ही वाला था, क्योंकि उसे अकेले दुकान चलाने में कठिनाई हो रही थी। हालाँकि ब्रायन के इस साहसी आत्मविश्वास से आर्थर थोड़ा अचंभित था, फिर भी उसने उसे काम करने का तरीका सिखाया।

* * *

उस पल से ही, छोटी सी बबल टी की दुकान खूब मुनाफा कमाने लगी। ब्रायन असाधारण रूप से बुद्धिमान था। वह ग्राहकों की जरूरतों और इच्छाओं को ऐसे समझता था मानो उसे इस व्यवसाय में दशकों का अनुभव हो। उसने स्पष्ट रूप से कहा कि अगर उत्पाद महंगे होंगे तो कॉलेज के छात्र कभी भी उनकी दुकान पर पैसे खर्च नहीं करेंगे। ब्रायन ने आर्थर को समझाया कि उन्हें 2,000 वॉन से कम कीमत में बबल टी बेचना शुरू करना चाहिए।[*2] स्वादिष्ट पेय और आश्चर्यजनक रूप से कम कीमतें एक सफल संयोजन साबित हुईं। किफायती कीमतों पर स्वादिष्ट पेय पेश करने वाली इस छोटी सी बबल टी की दुकान की चर्चा तेजी से फैल गई।
बिना एक पल भी आराम किए, ब्रायन ने आस-पास के इलाकों का जायजा लिया और अपनी दूसरी दुकान खोलने के लिए सबसे अच्छी जगह की तलाश करने लगा। कॉलेज कस्बों में छोटे-छोटे कैफे की भरमार थी। उसने सबसे पहले उन इलाकों को निशाना बनाया जहाँ पैदल चलने वालों की भीड़ रहती थी। वहाँ उसने छोटे कैफे मालिकों से संपर्क किया और उन्हें समझाया कि वे थोड़ी-बहुत मरम्मत करके आसानी से बबल टी की दुकान खोल सकते हैं। उसने यह भी कहा कि कॉफी की दुकानों के विशाल सागर में छोटी-छोटी दुकानों में से एक होने के बजाय, नए-नए ट्रेंडी ड्रिंक्स बेचना और अलग-अलग तरह के उत्पाद पेश करना कहीं ज्यादा रणनीतिक है।

ब्रायन ने धीरे-धीरे अपने व्यापार नेटवर्क में और अधिक फ्रेंचाइजी को शामिल करना शुरू कर दिया। नई-नई खुलती दुकानों ने राहगीरों को आकर्षित किया और वे सोचने लगे, "यह किस तरह की दुकान है?" या फिर कहने लगे, "मुझे ऐसी दुकानें और भी ज्यादा दिख रही हैं।" कुछ लोगों ने तो खुद फ्रेंचाइजी लेने के बारे में भी सोचा।

* * *

शुरुआती दौर में, ब्रायन ने कॉलेजों के पास के इलाकों पर ध्यान केंद्रित किया। फिर, वह बड़े व्यावसायिक क्षेत्रों में विस्तार करना चाहता था जहाँ लोगों की आवाजाही अधिक हो और ग्राहकों की खर्च करने की क्षमता भी अधिक हो। उसने सोचा, अगर मैं कोई व्यवसाय शुरू करने की सोच रहा होता, तो सबसे पहले कहाँ जाता?
उन्हें अचानक एक विचार आया। वे एक स्टार्टअप मेले में गए, जहाँ उनकी मुलाकात कम पूंजी वाले छोटे कैफे मालिकों से हुई और उन्होंने उन्हें बबल टी व्यवसाय की उच्च लाभप्रदता के बारे में समझाया।
“हर जगह बहुत सारे कैफे हैं। बबल टी की दुकान कहीं बेहतर विकल्प है।” उनके बबल टी व्यवसाय से जुड़ने के लिए एक सामान्य कैफे फ्रेंचाइजी की तुलना में काफी कम प्रारंभिक निवेश की आवश्यकता थी। इसके अलावा, ब्रायन ने एक विश्वविद्यालय शहर में उनके लिए प्रमुख संपत्ति खोजने का वादा किया, जिसने उनके प्रस्ताव को वास्तव में बहुत आकर्षक बना दिया। बबल टी ब्रांड तेजी से बढ़ा और सबसे कम समय में सबसे अधिक फ्रेंचाइजी हासिल कीं। साथ ही, उन्होंने खुद को मूल प्रीमियम बबल टी ब्रांड के रूप में स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।
बात यहीं खत्म नहीं हुई। रॉयल्टी से मिलने वाले नियमित मुनाफे के अलावा, हर फ्रेंचाइजी को इंटीरियर डिजाइन और सेटअप फीस से भी अच्छी खासी एकमुश्त आय प्राप्त होती थी। ब्रायन ने कंपनी के लिए एक टिकाऊ राजस्व योजना और मजबूत ढांचा तैयार किया था, जिससे कारोबार लगातार विकास के पथ पर अग्रसर हो उठा।

* * *

पहली नज़र में ब्रायन एक ऐसे व्यक्ति लगते हैं जो हमेशा से धनी और सफल रहे हों। लेकिन असल में, उनका जन्म एक बेहद गरीब परिवार में हुआ था। वे ठीक से स्कूल की पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाए, जिसका मतलब है कि उन्हें कभी भी औपचारिक शिक्षा या व्यवसाय या प्रबंधन का प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला। उनके पास एकमात्र अच्छी बात उनकी "अवलोकन क्षमता" थी।
ब्रायन के माता-पिता को घुड़दौड़ का बहुत शौक था।
स्कूल जाने के बजाय, ब्रायन एक निजी रेसट्रैक पर काम करता था, जहाँ वह ग्राहकों को बैक्सस[*3] की बोतलें बाँटता था। अवैध जुए में भाग लेने आए वयस्कों के लिए छोटे-मोटे काम करके वह जेब खर्च कमाता था। पैसे के भूखे लोगों की सेवा करने से उसकी समझ तेज हुई और उसने लोगों को "पढ़ना" सीखा—कि उन्हें क्या पसंद है और क्या नापसंद है। इसी तरह उसने व्यापार की बारीकियां सीखीं।
आप कह सकते हैं कि उनका बचपन बहुत कष्टमय था। स्वाभाविक रूप से, वे गलत रास्ते पर जा सकते थे। लेकिन इसके बजाय, उन्होंने गरीबी और अवसरों की कमी से बाहर निकलने का रास्ता खोज लिया।

दुर्भाग्य से, ब्रायन जैसे लोग बहुत कम मिलते हैं। ज़्यादातर लोग दूसरों के जीवन में जवाब ढूंढते हैं, जिनका उनसे कोई लेना-देना नहीं होता, न कि अपने जीवन में। अपने शौक को पलायन का ज़रिया समझना नासमझी है; अक्सर, शौक सिर्फ़ एक शौक ही होता है। कोरिया में, कई लोग अपनी कॉर्पोरेट नौकरी छोड़कर फ्राइड चिकन रेस्टोरेंट का कारोबार शुरू करने का फ़ैसला करते हैं। जब उन्हें रेस्टोरेंट के कारोबार के बारे में कुछ भी पता ही नहीं है, तो वे सफलता की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? क्या उनके लिए अपने पिछले पेशे से जुड़ा कोई काम करना ज़्यादा समझदारी भरा नहीं होगा?
मान लीजिए कि आप कई सालों तक हेयरड्रेसर के रूप में काम करने के बाद नौकरी बदलना चाहते हैं। अगर आप इसी क्षेत्र में कुछ नया करते हैं, जैसे बालों से संबंधित नए उपकरण या डाई विकसित करना, तो आप निश्चित रूप से अच्छा पैसा कमा सकते हैं। लेकिन अगर आपने पूरी जिंदगी हेयरड्रेसर के रूप में काम

किया है और अचानक सिर्फ इसलिए बेकरी खोल देते हैं क्योंकि आपको "हमेशा से बेकिंग पसंद थी", तो नतीजा सफलता और लाभ के बजाय असफलता और तबाही ही होगा। हर किसी का कोई न कोई लक्ष्य होता है, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न लगे। अगर आप पिछले कम से कम तीन सालों से लगातार कोई काम कर रहे हैं, तो इसका मतलब है कि आपका भाग्य उसी दिशा में आगे बढ़ रहा है, चाहे अच्छा हो या बुरा। इसलिए, आप जो कर रहे हैं उस पर ध्यान केंद्रित रखने की पूरी कोशिश करें, और अगर आपको कोई दूसरा रास्ता ढूंढना भी पड़े, तो भी उसी दायरे में रहें।
आप तुरंत कुछ आसान कदम उठा सकते हैं। अपना ध्यान केंद्रित रखें। चाहे वे खुश हों या दुखी, बुद्धिमान लोग हमेशा अपने भाग्य का निर्माण उसी मार्ग और क्षेत्र में करते हैं जिसमें वे वर्तमान में मौजूद होते हैं। वास्तव में, अपने सामने मौजूद अवसरों का सदुपयोग करना ही धनवान बनने का सबसे तेज़ तरीका है।
भाग्य के लिए प्राथमिकताएं आवश्यक हैं उम्र बढ़ने के साथ-साथ मस्तिष्क की कार्यक्षमता कम होने लगती है और याददाश्त व निर्णय लेने की क्षमता कमजोर हो जाती है। लेकिन असल में, इस समस्या से केवल बुजुर्ग ही प्रभावित नहीं होते। युवा लोग भी किसी दुखद घटना या अत्यधिक चुनौतीपूर्ण परिस्थिति का सामना करने पर निर्णय लेने में असमर्थ हो सकते हैं, मानो उनका मस्तिष्क काम करना बंद कर चुका हो। रिश्तों, पढ़ाई, नौकरी आदि से जुड़ी समस्याएं अपेक्षाकृत मामूली होती हैं। आप हमेशा किसी और से मिल सकते हैं, परीक्षा दोबारा दे सकते हैं या किसी दूसरी कंपनी में आवेदन कर सकते हैं। लेकिन, सारा पैसा खो देना या अपने करियर के शिखर से गिर जाना एक अलग ही बात है। पैसा या प्रतिष्ठा खोने के परिणाम विनाशकारी होते हैं। एक बार ये चीजें खो जाने पर, इन्हें वापस पाने में लंबा समय लगता है।
अपने जीवन में, जब आपको कोई ऐसी समस्या आती है जो इतनी विनाशकारी हो सकती है कि आप ठीक से सोच भी न सकें, तो सबसे पहले आपको क्या करना चाहिए? कुछ लोग चिंतित रहते हैं कि वे कई चीजों को संभाल नहीं पाएंगे, खासकर तब जब जीवन उन्हें एक साथ कई संकटों में डाल दे। ऐसे हालात में तो सबसे समझदार व्यक्ति भी परेशान हो जाएगा।

अपने काम के दौरान मैंने कई लोगों को मुश्किल हालात में फँसते हुए देखा है, वे मानो सोचने-समझने में असमर्थ हो जाते हैं। सौभाग्य से, मैंने यह सीखा है कि अगर आप अपना दिमाग सही जगह पर रखें तो इन समस्याओं का हल निकालने का लगभग हमेशा कोई न कोई तरीका होता है। दूसरी ओर, मैंने ऐसे लोगों को भी देखा है जिनका दिमाग सदमे से पूरी तरह सुन्न हो जाता है, वे दबाव में आकर जल्दबाजी में फैसले लेते हैं और ऐसे रास्ते पर चल पड़ते हैं जिससे वे कभी वापस नहीं लौट पाते।

जेसी अपने एक करीबी दोस्त द्वारा संचालित जिम में ट्रेनर है। उसके बड़े सपने थे। वह पोषण में अपनी विशेषज्ञता और कोच के रूप में अपने अनुभव के आधार पर अपने नाम से एक स्वास्थ्य खाद्य ब्रांड बनाना चाहता था।
हालांकि, अपनी योजना को अमल में लाना इतना आसान नहीं था। जिम में हर महीने सदस्यों की संख्या घट रही थी। जेसी चिंतित था। उसे यकीन नहीं था कि वह जिम में अपनी नौकरी बचा पाएगा, व्यवसाय शुरू करने की तो बात ही छोड़िए। इसके अलावा, उसकी प्रेमिका उससे शादी करना चाहती थी, लेकिन पैसों का क्या? उसके पास तो एक छोटा सा अपार्टमेंट खरीदने के लिए भी पैसे नहीं थे। उसकी जिंदगी पूरी तरह अस्त-व्यस्त थी। वह समझ नहीं पा रहा था कि अपनी पूरी कोशिश करने के बावजूद उसे इतनी परेशानियां क्यों झेलनी पड़ रही हैं। मुझे बिलकुल भी पता नहीं है कि मुझसे कहाँ गलती हुई।
"आपका मतलब आपकी मौजूदा समस्याओं के कारण से है?"
“हाँ। मैं सोच भी नहीं पा रहा हूँ। ये तो एक आपदा है। मैं अपनी नौकरी नहीं छोड़ सकता क्योंकि मुझे बिल चुकाने हैं। साथ ही, जब हमारे सदस्य लगातार कम हो रहे हैं, तो अपने दोस्त से अपनी तनख्वाह माँगने में भी मुझे असहजता महसूस होती है। शादी का भी यही हाल है। मैं अपनी प्रेमिका से प्यार करता हूँ, लेकिन अभी हम साथ रहने का खर्च नहीं उठा सकते। मुझे लगता है कि मैं बूढ़ा हो जाऊँगा और कभी अपना व्यवसाय शुरू नहीं कर पाऊँगा।”
यह सुनकर मुझे एहसास हुआ कि जेसी की समस्याएँ लगभग हल हो चुकी थीं। वह बस कुछ समय के लिए अचानक आए तूफान में खो गया था। यह स्पष्ट था कि उसके पास

पहले से ही समाधान था; बस उसे अभी तक इसका एहसास नहीं हुआ था। मैंने उसे एक छोटा सा संकेत दिया।
“जरा सोचिए: आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज क्या है?”
पहले तो जेसी असमंजस में दिख रहा था। अचानक उसके चेहरे के भाव बदल गए।

* * *

कुछ महीनों बाद, मुझे जेसी से फिर खबर मिली। उसने मुझे खुशखबरी सुनाने के लिए फोन किया था। फोन पर उसकी खुशी साफ सुनाई दे रही थी।
“सुश्री यू, अब मुझे चीजें ज़्यादा स्पष्ट रूप से समझ आ रही हैं। आपने मुझसे कहा था कि मैं सिर्फ़ एक चीज़ पर ध्यान केंद्रित करूं। पीछे मुड़कर देखने पर, वही सब कुछ का मूलमंत्र था। आप सही थीं। मुझे बस एक ही समस्या का समाधान करना था। मुझे लगा था कि मैं इस उलझन से कभी बाहर नहीं निकल पाऊंगी, लेकिन सब कुछ जादू की तरह बदल गया!”
जेसी ने मुझे बताया कि क्या हुआ था। हमारी मीटिंग के बाद, वह घर गया, अपनी डेस्क पर बैठा और अपने सारे कामों की एक लिस्ट बनाई। उसने सोचा, इस समय मेरे लिए सबसे ज़रूरी चीज़ क्या है? उसे तुरंत जवाब मिल गया। उसके लिए, वह काम था। वह जानता था कि काम से जुड़ी समस्याओं को सुलझाने से बाकी सब कुछ आसान हो जाएगा। उसे समझ आ गया था कि उसे आगे क्या करना है और वह तुरंत हरकत में आ गया। अगली सुबह सबसे पहले उसने दूसरे जिमों में नौकरियों के लिए आवेदन करना शुरू कर दिया।
जेसी की मुलाकात संयोगवश उस पहले जिम के मालिक से हो गई, जहाँ वह नौकरी के लिए आवेदन करना चाहता था। मालिक जिम खोलने की तैयारी कर रहा था। यह एक पुराना और प्रतिष्ठित फिटनेस सेंटर था जो एक आलीशान होटल के अंदर स्थित था। अगर जेसी ने अपना रिज्यूमे किसी अनजान कर्मचारी को दे दिया होता, तो शायद वह कूड़ेदान में चला जाता। अपनी किस्मत को धन्यवाद देते हुए, जेसी ने मुस्कुराते हुए मालिक का अभिवादन किया और उन्हें अपना रिज्यूमे सौंप दिया। कुछ ही समय बाद उसे नौकरी मिल गई। क्या यह किस्मत थी?

* * *

जेसी की किस्मत यहीं खत्म नहीं हुई। यह लगातार आगे बढ़ती रही, जैसे ताश के पत्ते एक के बाद एक गिरते जाते हैं। उसने अपने नए कार्यस्थल पर सबसे

ज्यादा मेहनत की। उसने अपने हर ग्राहक का पूरा ख्याल रखा, जिससे और भी ग्राहक जुड़े, और अंततः उसकी तनख्वाह भी बढ़ गई। इतना ही नहीं, वह वीआईपी सदस्यों से भी अच्छे संबंध बनाने में कामयाब रहा क्योंकि मालिक ने उसे खास सदस्यों के लिए आरक्षित एक महंगे आहार और फिटनेस प्रबंधन कार्यक्रम का जिम्मा सौंप दिया था।
जल्द ही, उनकी रिश्तों से जुड़ी समस्याएं भी सुलझ गईं। सदस्यता घटने और तनाव बढ़ने के कारण उन्होंने अपना पुराना जिम छोड़ दिया। नाराज़गी के बजाय, उनके दोस्त ने मुश्किल समय में खर्च कम करने के लिए उनका आभार व्यक्त किया और दोनों और करीब आ गए। धीरे-धीरे, जेसी को अपने नए कार्यस्थल पर पहचान मिली, वे अधिक बचत करने लगे और अंततः अपनी प्रेमिका से शादी कर ली। इसके अलावा, उन्होंने स्वास्थ्य खाद्य उद्योग में निवेश करने के बारे में चर्चा शुरू कर दी, क्योंकि उनके एक ग्राहक उनके काम से प्रभावित हुए थे और उनकी मदद करना चाहते थे।

* * *

जेसी को पहले से ही जवाब मिल चुका था। रोजमर्रा की जिंदगी की तमाम समस्याओं और दबावों के कारण वह इस बात को भूल गया था कि वास्तव में क्या जरूरी है।
मासिक क्रेडिट कार्ड शुल्क, आसपास के लोगों से संबंध, प्रेमिका से शादी आदि—जेसी को समझ नहीं आ रहा था कि किसे प्राथमिकता दे। एक बार सबसे महत्वपूर्ण समस्या यानी काम-काज का मामला सुलझ जाए, तो बाकी सारी समस्याएं अपने आप एक-एक करके हल हो जाएंगी। जेसी की यही अनिर्णय की स्थिति ही उसकी समस्याओं को कुशलतापूर्वक हल करने में मुख्य बाधा थी।
हर चीज़ में प्राथमिकता का एक क्रम होता है, यहाँ तक कि जीवन भर के भाग्य में भी। कुछ मुद्दे ऐसे होते हैं जिन्हें आपको तुरंत सुलझाना होता है, कुछ ऐसे होते हैं जिन्हें अगले चरण में जाने के लिए पहले हल करना ज़रूरी होता है। कभी-कभी ऐसा लग सकता है कि आपका पूरा जीवन लाखों परेशानियों का जाल है, लेकिन ज़रा गौर से देखने पर अक्सर आपको सिर्फ़ एक ही समस्या का समाधान करना होता है।
भले ही कभी-कभी ऐसा लगे कि आप ऊन के एक उलझे हुए गोले को पकड़े हुए हैं जिसका न कोई शुरुआत है और न कोई अंत, लेकिन अंत में जब आपको उसकी गांठ मिल

जाएगी तो आप सब कुछ सुलझा लेंगे। जीवन में, अपनी प्राथमिकताओं को सही क्रम में रखने से बहुत बड़ा फर्क पड़ सकता है।
अपनी जिंदगी को दांव पर लगा दो, और उसे काटना शुरू कर दो।
लेकिन प्राथमिकता का क्रम कैसे निर्धारित किया जाता है?
महत्वपूर्ण और अत्यावश्यक में अंतर करना अक्सर मुश्किल हो जाता है। सबसे पहले, आपको अपने जीवन का विश्लेषण करना चाहिए और उस पर गहराई से विचार करना चाहिए। इससे आपको दुर्भाग्य से छुटकारा पाने और नई शुरुआत करने में मदद मिलेगी। मैंने जेसी को इसका जवाब नहीं बताया। मैंने बस उसे सलाह दी कि वह अपने लिए "सबसे महत्वपूर्ण चीज़" का पता लगाए और उसे जीवन को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखने के कुछ तरीके सिखाए।
आपको चाकू चलाने का अच्छा ज्ञान होना चाहिए।
“क्या? चाकूबाजी?!”
“हां। आपको अपना जीवन सबके सामने रखकर उसका विश्लेषण करना होगा।”
जेसी ने कबूल किया कि उसने कभी अपनी समस्याओं का सामना नहीं किया, उनका विश्लेषण नहीं किया और यह तय नहीं किया कि पहले क्या ठीक करना है। जीवन की कठोर सच्चाइयों का सामना करने पर, वह उनसे भागने की कोशिश करता रहा, कभी उनका डटकर सामना नहीं किया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह कभी पैसा नहीं कमा पाया, क्योंकि वह हमेशा शॉर्टकट ही ढूंढता रहता था। सौभाग्य पाना उतना आसान नहीं होता जितना लोग सोचते हैं। लेकिन अब, जेसी ने अपने जीवन का गहराई से विश्लेषण करना और उसे बारीकी से परखना सीख लिया है।

* * *

धनवान लोग भी इससे अलग नहीं हैं। आप यह जानकर हैरान रह जाएंगे कि वे अपनी प्राथमिकताओं को तय करने के लिए किस तरह के तरीके अपनाते हैं। एक धनी सज्जन थे जिन्होंने मूल्यवान जमीन की पहचान करने की अपनी असाधारण क्षमता के कारण अपार धन अर्जित किया था, वह भी कीमत बढ़ने से पहले। यहां तक कि उन्होंने मुझसे जो सवाल पूछे वे भी असामान्य थे। जब वे मुझसे निवेश संबंधी सलाह लेने आए, तो वे अपने साथ एक नक्शा लाए जिस पर उन्होंने देश भर में अपनी सारी जमीन को चिह्नित किया हुआ था। उन्होंने कहा कि उन्हें जमीन के अलावा किसी और चीज में कोई दिलचस्पी नहीं है। उनका ध्यान केवल एक ही लक्ष्य पर केंद्रित था। मेरे अनुभव में, जो लोग यह जानते हैं कि वे वास्तव

में क्या चाहते हैं, वे आमतौर पर बिना किसी खास परेशानी के अपने लक्ष्य तक पहुंच जाते हैं।
इसके विपरीत, कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें प्राथमिकता तय करने का कोई ज्ञान नहीं है—या इससे भी बदतर, जिन्होंने कभी प्राथमिकता तय करने के बारे में सोचा ही नहीं। मैं उनके पूछे गए सवालों से ही समझ जाता हूँ। उनके सवाल इतने अस्पष्ट और अमूर्त होते हैं कि यह समझना मुश्किल हो जाता है कि वे जानना क्या चाहते हैं। वे अतीत की समस्याओं, वैश्विक मुद्दों का ज़िक्र करते हैं जिनका उनके तात्कालिक जीवन से कोई लेना-देना नहीं है, और उन लोगों की बात करते हैं जिनका उनसे कोई संबंध नहीं है। उनके सवालों से साफ पता चलता है कि वे बेमतलब की बातें कर रहे हैं और उन्हें यह बिल्कुल भी नहीं पता कि उन्हें किस बात को प्राथमिकता देनी चाहिए। इन दोनों समूहों के लोगों के बीच का अंतर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
सफल लोगों को देखकर मुझे यह आभास हुआ है कि वे वास्तव में अपनी प्राथमिकताओं को जानते हैं। सफल लोग तो यह भी जानते हैं कि कब और कैसे किसे प्राथमिकता देनी है और अपने भाग्य को किस दिशा में ले जाना है।
ज़रा सोचिए, यही तर्क कक्षा के सबसे अच्छे और सबसे कमज़ोर छात्रों पर भी लागू होता है। भले ही दोनों एक ही परीक्षा दें, लेकिन प्रश्नों के पीछे के उद्देश्य को पूरी तरह समझने वाला छात्र और प्रश्न का सार न समझने वाला छात्र, दोनों का परिणाम एक जैसा नहीं होगा। ज़ाहिर है। सबसे अच्छे छात्र ने औसतन पाँच घंटे प्रतिदिन पढ़ाई की, और सबसे कमज़ोर छात्र ने उससे दोगुना समय बिताया। दोनों ने खूब मेहनत की, लेकिन परिणाम अलग-अलग आए। सबसे अच्छे छात्र ने पिछली परीक्षाओं के नमूना प्रश्नों का अध्ययन किया, जो शिक्षक द्वारा कक्षा में बताए गए मुख्य बिंदुओं पर आधारित थे। वहीं, सबसे कमज़ोर छात्र ने सुना कि परीक्षा के प्रश्न पाठ्यपुस्तक पर आधारित होंगे। उसने अपनी किताब का पहला पन्ना खोला, हाइलाइटर उठाए और सब कुछ रटने लगा, पन्नों को इंद्रधनुष के सभी रंगों से भर दिया। यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि यह छात्र पूरी तरह से असफल होने वाला है।
इसीलिए अपनी प्राथमिकताओं को स्पष्ट रूप से निर्धारित करना इतना महत्वपूर्ण है। सबसे निचले पायदान पर रहे छात्र का भविष्य शायद कुछ और होता अगर उसे कोई ऐसा उत्कृष्ट निजी शिक्षक मिल जाता जिसने उसे परीक्षा के लिए प्राथमिकताएं बताई होतीं। हालांकि, आप हमेशा किसी और पर निर्भर नहीं

रह सकते कि वह आपके लिए प्राथमिकताएं तय करे। आपको यह स्वयं ही तय करना होगा।

* * *

अंततः, कोई भी आपका जीवन आपके लिए नहीं जी सकता। गणित की तरह कोई एक सटीक समीकरण नहीं है, जिससे हममें से कोई भी किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन में सही निदान कर सके और सही समाधान और प्राथमिकताओं का निर्धारण कर सके।
एक कहावत है: "सबसे कुशल डॉक्टर भी अपने परिवार के सदस्य का ऑपरेशन नहीं कर सकता।" उनकी निजी भावनाएं आड़े आ जाती हैं। और मैं भी अपने किसी मित्र का भविष्य बताते समय अपनी निजी भावनाओं को आने से नहीं रोक पाता। इसीलिए, आपके अलावा किसी और को आपकी प्राथमिकताओं का क्रम तय नहीं करना चाहिए। इसका एक बहुत ही सरल तरीका है: सबसे पहले उस समस्या से निपटें जो आपको सबसे कमजोर महसूस कराती है। आपको अपनी सभी समस्याओं को एक-एक करके हल करने के लिए तैयार रहना चाहिए। जिन समस्याओं को आप नज़रअंदाज़ करना चाहते हैं, वे आसानी से दूर नहीं होतीं।
समस्या जिसने पैदा की है, उसे ही उसका समाधान करना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्यवश, कई बार आप खुद को ऐसी परिस्थितियों में पाते हैं जहाँ आपको ऐसी समस्या का समाधान करना पड़ता है जिसमें आपका कोई हाथ नहीं होता। यह अन्यायपूर्ण है, लेकिन इससे समस्या गायब नहीं हो जाएगी। अगर आपको इसे हल करना ही है, तो दूसरों या दुनिया को दोष देने में समय बर्बाद करने के बजाय, इसे छोटे-छोटे हिस्सों में बाँटना शुरू करें।
एक बार जब आप अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता तय कर लें, तो उसे सबके सामने रखें और उस पर काम करना शुरू कर दें। यदि कर्ज से मुक्ति पाना आपकी सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकता है, तो सबसे पहले यह पता लगाएं कि आप कर्ज में कैसे फंसे, फिर यह निर्धारित करें कि आपको कितना पैसा चुकाना है। इसके बाद, आपको यह तय करना होगा कि आप आय कैसे अर्जित करेंगे, सफलता की संभावनाओं का आकलन करें और यह अनुमान लगाएं कि आप कब तक पूरा कर्ज चुका पाएंगे। समस्या को अपने सामने रखकर उसका विश्लेषण करने से आपको अपने जीवन की स्पष्ट समझ प्राप्त हो सकती है।

जैसे-जैसे आप काम में जुटते जाएंगे, आप देखेंगे कि स्थिति कम तनावपूर्ण और कम जटिल होती जा रही है। एक बार जब आपकी सर्वोच्च प्राथमिकता, यानी जिस समस्या को हल करने पर आप ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, उस पर आपका पूरा ध्यान लग जाता है, तो आपका भाग्य बदल जाएगा और धन और सौभाग्य मछलियों के झुंड की तरह आपके पीछे-पीछे आने लगेंगे।
परिणाम को अंतिम मत मानो
जीवन परीक्षाओं की एक श्रृंखला है।
प्राथमिक विद्यालय से लेकर उच्च विद्यालय तक, आप स्नातक की तैयारी के लिए हर सेमेस्टर में परीक्षा देते हैं। और कॉलेज में प्रवेश करने के बाद भी यह सिलसिला नहीं रुकता। पहली नौकरी मिलने के बाद, आप नौकरी चाहने वाले और समाज के एक आधिकारिक सदस्य के रूप में अपनी योग्यता साबित करने के लिए परीक्षाएँ देते हैं।
और अभी तो लाइसेंस परीक्षा से लेकर पदोन्नति परीक्षा तक, कई और परीक्षाएं बाकी हैं। संक्षेप में कहें तो, आप जीवन भर परीक्षाओं की एक श्रृंखला में फंसे रहते हैं। लोग खुद को इतनी परेशानी में क्यों डालते हैं? कॉलेज? नौकरी? पदोन्नति? आत्म-साक्षात्कार? ये सभी सही उत्तर हैं। परीक्षा उत्तीर्ण करना सफलता की सीढ़ी चढ़ने के प्रयास में प्रतीकात्मक मील के पत्थर बन जाते हैं। विशेष रूप से कठिन परीक्षाएं उत्तीर्ण करने वाले लोग हम सभी के लिए सफलता और भाग्य के प्रतीक बन जाते हैं। लेकिन इन सफलता की कहानियों के पीछे भाग्य की एक कठिन सच्चाई छिपी है, जिसका हमें सामना करना चाहिए। जो दिखता है वही सब कुछ नहीं होता, और किसी अन्य व्यक्ति की सफलता, जो किसी विशेष मार्ग पर चलती है, जरूरी नहीं कि आपके अपने भविष्य का पूर्वानुमान लगाए। जो आपके लिए महत्वपूर्ण है और जो समाज के लिए महत्वपूर्ण है, वह एक जैसा नहीं हो सकता। ऐसे कई उदाहरण हैं जो हमें यह सबक सिखाते हैं, खासकर परीक्षाओं में, जहां परिणाम का स्पष्ट और दीर्घकालिक प्रभाव हो सकता है।

“मैं जल्द ही नोरयांगजिन[*4] जा रहा हूँ।”

मेरी एक दोस्त थी, शार्लोट, जो सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी कर रही थी। उस समय सरकारी नौकरी को सबसे सम्मानित पेशों में से एक माना जाता था। शार्लोट के इस अनजान क्षेत्र में कदम रखने के फैसले से मैं हैरान थी, क्योंकि हमारे कॉलेज के दोस्तों में से किसी को भी इसमें दिलचस्पी नहीं थी। हालांकि, मुझे अंदर ही अंदर उसकी प्रेरणा का कुछ हिस्सा समझ में आ रहा था। शार्लोट अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी और उनसे बहुत उम्मीदें थीं; उनका लक्ष्य था कि वह एक स्थिर जीवन यापन करे। इसलिए शार्लोट ने परीक्षा की तैयारी के लिए एक साल का ब्रेक लिया।
फिर भी, शार्लोट केवल एक साल बाद ही स्कूल लौट गई।
एक गहरी आह भरते हुए उसने बताया कि उसने लगन से पढ़ाई की थी, फिर भी वह परीक्षा में फेल हो गई।
कुछ समय बाद ही उसने दोबारा छुट्टी ले ली और नोरयांगजिन लौट गई। तमाम कोशिशों के बावजूद वह दूसरी बार असफल रही।
शार्लोट हार नहीं मान सकती थी। उसने कोशिश जारी रखी।
स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के लगभग एक साल बाद, मुझे खुशखबरी मिली: आखिरकार उसे सरकारी नौकरी मिल गई थी। जब हम दोबारा मिले, तो शार्लेट बेहद खुश थी।
“आखिरकार तुमने कर ही दिखाया!”
“जी हां! मैं अपनी आखिरी सांस तक सरकार के लिए काम करूंगा। मैं तरक्की की सीढ़ियां चढ़ता रहूंगा।”
मुझे उस पर बहुत गर्व था कि उसने कड़ी प्रतिस्पर्धा के बावजूद दृढ़ता से प्रयास किया और सफलता प्राप्त की। हमारे सहपाठियों ने उसे बधाई दी और भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। वह अभी बीस वर्ष की युवती ही थी, लेकिन उसका भविष्य उज्ज्वल था। हम दोनों ने अपने-अपने रास्ते चुन लिए, मैं एक प्रसारण स्टेशन में निर्माता के रूप में और वह एक जिला कार्यालय में सरकारी कर्मचारी के रूप में।

* * *

एक साल भी नहीं बीता था कि मुझे शार्लेट की खबर मिली। मुझे विश्वास नहीं हुआ: उसने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी, जिसके लिए उसने इतनी मेहनत की थी। मुझे जानने की उत्सुकता हुई कि आखिर हुआ क्या था।

शुरुआत में, मनचाही नौकरी मिलने की खुशी ने उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। लेकिन जैसे-जैसे उत्साह कम होता गया, शार्लोट को पदानुक्रमित और रूढ़िवादी संगठनात्मक संस्कृति में ढलना मुश्किल होता गया। जिन दिनों शिकायतों की बाढ़ आ जाती थी, उसे रात को घर जाने की उम्मीद ही छोड़नी पड़ती थी। मच्छरों और शोर जैसी छोटी-मोटी शिकायतों पर निवासियों से बहस करना भी तनाव का एक और कारण था। शार्लोट बहुत ही स्वतंत्र स्वभाव की और संवेदनशील थी। काम ने धीरे-धीरे उसकी आंतरिक शांति छीन ली थी। उसने पूरी कोशिश की, लेकिन एक साल बाद उसने हार मान ली।
“चयन मिलना ही सब कुछ नहीं था। रोजमर्रा की हकीकत मेरी उम्मीदों से बिल्कुल अलग थी,” उसने कहा।
भाग्यशाली संदूक या भाग्यशाली ताबीज का डिब्बा भाग्य रग्बी की गेंद की तरह है: यह अनुमान लगाना असंभव है कि यह आगे कहाँ और कब जाएगा। जो एक पल में सौभाग्य का संकेत दे रहा था, वही पल में दुर्भाग्य का कारण बन सकता है। या फिर आपको एहसास हो सकता है कि जिसे आपने उस समय दुर्भाग्य समझा था, वह वास्तव में सौभाग्य था। पैसा भी ऐसा ही है। आपके हाथ में पैसा होने का मतलब यह नहीं है कि वह हमेशा आपके पास रहेगा, या जो पैसा आपके पास नहीं है वह किसी और का हो जाएगा। यही तर्क भाग्य पर भी लागू होता है।
एक समय की बात है, एक गरीब बूढ़ा आदमी रहता था। एक रात, उसकी परदादी सपने में आईं और उसे लॉटरी के जीतने वाले नंबर बताए। बूढ़ा आदमी इतना खुश हुआ कि वह पूरे शहर में सबको बताने लगा कि उसने लॉटरी जीत ली है। जिस रात उसने लॉटरी का पैसा निकाला, उसी रात उसके घर में चोरी हो गई। चोर ने न सिर्फ उसका इनाम का पैसा लिया, बल्कि उसकी कुछ और चीजें भी लूट लीं। बूढ़ा आदमी पूरी तरह टूट गया। जितनी जल्दी वह अमीर हुआ था, उतनी ही जल्दी दिवालिया भी हो गया था। अब, आपको क्या लगता है कि लॉटरी जीतना उसके लिए अच्छा था या बुरा?
बेशक, अप्रत्याशित धन प्राप्ति को सौभाग्य माना जा सकता है। लेकिन यह सौभाग्य कितने समय तक कायम रहता है, यह एक अलग बात है। सफलता और असफलता भाग्य पर निर्भर हो सकती है, लेकिन उसके बाद जो कुछ भी होता है वह पूरी तरह से आप पर निर्भर करता है। सौभाग्य को आकर्षित करना आवश्यक है, इसमें कोई

संदेह नहीं है। लेकिन इतना ही काफी नहीं है। उस सौभाग्य को बनाए रखना और उसे लंबे समय तक कायम रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।
भाग्य के मामले में दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाना आपके लिए बेहतर होगा। हमेशा शांत स्वभाव बनाए रखें और अपनी भावनाओं को अपने ऊपर हावी न होने दें। आज जो धन आपके हाथ में है, वह हमेशा आपके पास नहीं रहेगा, ठीक वैसे ही जैसे परीक्षा उत्तीर्ण करना जीवन भर की सफलता की गारंटी नहीं है। यदि धन को रखने वाला पात्र इतना बड़ा न हो, तो उस धन का कोई मूल्य नहीं है। आप अपनी किस्मत को रखने के लिए किसका इस्तेमाल करेंगे, एक बड़े संदूक का या एक छोटे बक्से का? तात्कालिक भाग्य से ज्यादा महत्वपूर्ण है उसे संभालने की आपकी क्षमता।
स्वर्ग से भेजा गया सेनापति मनोरंजन जगत में भी उतने ही अमीर लोग हैं जितने व्यापार जगत में। लोकप्रियता का सीधा संबंध व्यावसायिक मूल्य से होता है, जिसका बाजार अर्थव्यवस्था में अर्थ है पैसा। मशहूर हस्तियां किसी विज्ञापन में दिखने के लिए कुछ हजार डॉलर से लेकर करोड़ों डॉलर तक कमा सकती हैं।
स्टार बनना सामाजिक सीढ़ी चढ़ने का सबसे तेज़ और पक्का तरीका है। एक बार जब आपका चेहरा जनता के बीच जाना-पहचाना हो जाता है या आपकी कोई फिल्म हिट हो जाती है, तो आपकी फीस आसमान छू जाती है। यही कारण है कि बहुत से लोग उम्मीदें लगाए बैठे रहते हैं, भले ही किस्मत उनका साथ न दे। वे बेसब्री से उस अवसर का इंतज़ार करते हैं जो उन्हें रातोंरात स्टार बना दे, एक ऐसे सेलिब्रिटी की ज़िंदगी जीने का जो प्रतिदिन लाखों कमाता है।
दुनिया में कुछ भी मुफ्त नहीं मिलता, और किस्मत भी इसका अपवाद नहीं है। प्रसिद्धि की भी एक कीमत होती है। जितना अधिक प्यार और ध्यान आपको मिलेगा, उतनी ही अधिक गपशप और चर्चाएँ होंगी। हालांकि, जब आपकी आजीविका लोकप्रियता और प्रसिद्धि पर निर्भर करती है, तो यह सब उस पेशे का हिस्सा है। शायद धन और सामाजिक प्रतिष्ठा के बदले स्वतंत्रता और सम्मान ही वह कीमत है जो आपको चुकानी पड़ती है।

* * *

एक दिन, टीवी चैनल बदलते समय मुझे एक तरह का déjà vu का अनुभव हुआ।
“दस साल में यह आपकी पहली सार्वजनिक उपस्थिति है। क्या आपको डर नहीं लग रहा?” एक पत्रकार ने पूछा।
"अगर आप बारिश के दिन बाहर जाते हैं, तो आपको कम से कम यह उम्मीद रखनी चाहिए कि आपका कॉलर गीला हो जाएगा, भले ही आपके पास छाता हो।"
टीवी स्क्रीन पर, शादी के बाद मनोरंजन जगत से दूर हो चुके एक मशहूर अभिनेता प्रेस कॉन्फ्रेंस कर रहे थे, जिसमें वे मनोरंजन उद्योग में अपनी वापसी की आधिकारिक घोषणा कर रहे थे। अभिनेता के व्यक्तित्व में एक अलग ही चमक थी, जिसे देखकर यकीन करना मुश्किल था कि वे दस साल से दूर थे। यह कोई साधारण साक्षात्कार नहीं था। यह एक ऐसा आयोजन था जिसने राष्ट्रीय संस्कृति में हलचल मचा दी थी। प्रेस के लोग तीखे सवाल पूछ रहे थे और कैमरों की फ्लैश लगातार चमक रही थी।
मीडिया की उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया के विपरीत, जनता अभिनेता के अपने करियर के चरम पर पहुंचने के बाद अचानक संन्यास से लौटने को लेकर बंटी हुई थी। एक तरफ लोगों को लगा कि अभिनेता ने अपने वादे से मुकरकर धोखा दिया है, वहीं दूसरी तरफ लोगों ने उनका खुले दिल से स्वागत किया।
इस सारी हलचल के बीच, अभिनेता पूरी तरह से सहजता से बैठे थे, उनके चेहरे पर ज़रा भी बेचैनी नहीं थी। उनका शरीर सीधा और आत्मविश्वास से भरा था, और उनकी निगाहें दृढ़ और सीधी थीं। ऐसा लग रहा था मानो उन्होंने इस पल के लिए पहले से तैयारी कर रखी थी और मन ही मन सब कुछ पूर्वाभ्यास कर लिया था। उनका रहस्य क्या था?
कुछ क्षण पहले उन्होंने जो कहा था, उससे ऐसा प्रतीत होता था कि वे गपशप, आलोचना और घृणास्पद टिप्पणियों का सामना करने के लिए तैयार हैं। यही आत्मविश्वास कैमरों की भीड़ के सामने उनके आत्मविश्वासपूर्ण रवैये का आधार था।

* * *

अगर रेन सिर्फ तात्कालिक लाभ या अपनी अल्पकालिक सार्वजनिक छवि पर ध्यान केंद्रित करते तो क्या होता? क्या वे युवाओं पर मानहानि और बदनामी का आरोप लगाकर अपनी नाराजगी जाहिर करते तो क्या उन्हें जनता से इतनी अनुकूल राय मिल पाती? रेन अपने दुश्मनों को प्रशंसकों में बदलने में इसलिए सक्षम रहे क्योंकि उन्होंने "स्वर्ग से भेजे गए सेनापति" जैसी ऊर्जा का प्रदर्शन किया, जो किसी भी परिस्थिति को अपने पक्ष में मोड़ लेते हैं।

सन त्ज़ू, जिन्होंने 'द आर्ट ऑफ़ वॉर'[*5] लिखा था, ने सेनापतियों को तीन अलग-अलग प्रकारों में वर्गीकृत किया। पहला है "साहसी नेता"; वे समस्या- समाधान में नेतृत्व करने के लिए अपने असाधारण कौशल का उपयोग करते हैं। "रणनीतिक नेताओं" के पास शानदार रणनीति होती है, और "नैतिक नेता" अपने सद्गुणी व्यवहार से साहसी नेताओं और रणनीतिक नेताओं को अपने अधीन कर लेते हैं।
एक साहसी नेता रणनीतिक नेता को पराजित नहीं कर सकता, और न ही एक रणनीतिक नेता नैतिक नेता को पराजित कर सकता है। लेकिन चाहे वे कितनी भी कोशिश कर लें, ये तीनों मिलकर भी नेता की अंतिम श्रेणी, यानी "स्वर्ग से भेजे गए नेता" के स्तर तक कभी नहीं पहुँच सकते।
प्रेस कॉन्फ्रेंस के ज़रिए अपनी वापसी की घोषणा करने वाले इस अभिनेता ने अपने भाग्य की बागडोर अपने हाथों में ली और एक ऐसे शो में शानदार वापसी की जिसे ज़बरदस्त रेटिंग मिली। उनके आत्मविश्वास ने उन्हें छोटी-छोटी बातों में उलझने से बचाया और एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने में मदद की, जिससे उन्हें पहले से भी कहीं अधिक सफलता मिली।
सफलता के लिए नियत लोग चीजों को बिल्कुल अलग नजरिए से देखते हैं। वे छोटे-मोटे नुकसान सहन कर लेते हैं और बड़ी-बड़ी जीत हासिल करते हैं। इसके विपरीत, जो लोग लगातार मुसीबतों में फंसते रहते हैं, वे बड़ा नुकसान उठाते हैं और छोटी-छोटी जीत हासिल करते हैं। वे छोटी-मोटी किस्मत को जरूरत से ज्यादा महत्व देते हैं और उस तरह की किस्मत को हाथ से फिसलने देते हैं जो

उनके लिए बेहद जरूरी होती है। इसीलिए आपको न तो छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना चाहिए और न ही किस्मत को फिजूलखर्ची करनी चाहिए।
हर किसी को कभी न कभी सौभाग्य प्राप्त होता है, लेकिन यह प्रत्येक व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह सौभाग्य कितना बड़ा या छोटा होगा।
अपनी उंगलियों के इशारों से तीन सेकंड में अपना रास्ता खोजें
मानव जीवन के दो अपरिहार्य पहलू कौन से हैं जो जीवन भर बने रहते हैं? पहला है असफलता, और दूसरा है कर। करों के बारे में तो कोई राष्ट्राध्यक्ष भी कुछ नहीं कर सकता, लेकिन कभी-कभी असफलता से बचने का या कम से कम उसे विकास और प्रगति के साधन के रूप में उपयोग करने का रास्ता मिल जाता है।
यह बात मुझे बहुत समय पहले एक गुरु ने सिखाई थी, लेकिन मैं हाल तक इसे पूरी तरह भूल चुका था। फिर मैंने ज्योतिषियों से भविष्य जानने का काम शुरू किया, और एक खास पल बार-बार मेरे दिमाग में आता रहा, जो मुझे उस व्याख्यान की याद दिलाता था जिसमें मेरे गुरु ने मुझे जीवन का एक रहस्य बताया था: "उन सभी लोगों से जो संघर्ष कर रहे हैं क्योंकि वे खुद को फंसा हुआ महसूस कर रहे हैं, मैं कहना चाहूंगा, 'आगे बढ़ने का यही तरीका है,' और उन्हें बताना चाहूंगा कि एक-एक छोटा कदम उठाना ही काफी है।"

उस साल वसंत ऋतु जल्दी आ गई थी। एक प्रोफेसर, जिन्हें मैं हमेशा से पसंद करता और जिनकी प्रशंसा करता आया हूँ, ने मुझे भोजन के दौरान बताया:
“लोग लगातार इस भ्रम से ग्रस्त रहते हैं कि वे निष्क्रिय हैं, जबकि वे हर समय व्यस्त रहते हैं। यह बात खासकर उन लोगों पर लागू होती है जो धन और सफलता के लिए बेताब रहते हैं। सच्चाई यह है कि कोई भी कभी निष्क्रिय नहीं रहता। गृहिणी घर की देखभाल करती है, छात्र कक्षाएं अटेंड करते हैं और कर्मचारी अपने काम करते हैं। जब आपको यह महसूस होता है कि आप ही अकेले पीछे रह गए हैं और दूसरों से आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं, तो इससे न केवल आप अधीर हो जाते हैं, बल्कि यह आपके पूरे दृष्टिकोण को भी धुंधला कर देता है। ऐसी मानसिकता के साथ आप कभी सफल नहीं हो सकते।”
"आपका क्या मतलब है, प्रोफेसर?"

ज़रा सोचिए। खुद को बेकार समझना आपको अपर्याप्त महसूस कराता है। इस तरह की निराशावादी सोच यह विश्वास पैदा करती है कि सफल लोग एक ऐसा वर्ग हैं जिसका हिस्सा आप कभी नहीं बन सकते। जब आप ऐसा सोचते हैं, तो सफलता और भी दूर होती जाती है, और आपकी यादों में केवल असफलताओं की एक श्रृंखला ही रह जाती है। सफलता अंततः आपसे पूरी तरह अलग हो जाती है। असफलताओं की अधिक यादों और सफलताओं की कम यादों के साथ, अपनी सफलताओं को देखना और पहचानना और भी मुश्किल हो जाता है। सफलता नज़रों से ओझल हो जाती है, और इस तरह मन से भी निकल जाती है।
प्रोफेसर की बात में दम था। अगर आप असफलता के प्रति अपने मनोवैज्ञानिक प्रतिरोध को कम कर लें, तो आप सफलता को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे। अपने द्वारा किए जा रहे सभी कार्यों को आलस्य और असफलता का नाम देने से बचकर, आप उन्हें छोटी-छोटी सफलताओं के रूप में देख सकते हैं। इससे सफलताओं का एक भंडार बनता है। सफलताओं का अधिक से अधिक अनुभव प्राप्त करके, आप असफलता की संभावना को कम कर देंगे, जिसका अर्थ है कि आप धन प्राप्ति के उतने ही करीब पहुंच जाएंगे।

* * *

मुझे याद है मैंने एक अध्ययन के बारे में पढ़ा था जो इस तर्क का समर्थन करता था। शोधकर्ताओं की एक टीम ने पाया कि बुरी यादों को लंबे समय तक याद रखने की मनुष्यों की प्रवृत्ति सीधे तौर पर हमारी गहरी जीवन रक्षा प्रवृत्ति से जुड़ी है। कल्पना कीजिए कि झाड़ियों में आपको फर का एक छोटा सा गोला दिखाई देता है और आपको यह समझने में थोड़ा ज़्यादा समय लग जाता है कि यह खरगोश या हिरण नहीं, बल्कि शेर की पूंछ है। हमारे पूर्वज उस शेर से बाल-बाल मौत से बचे थे, और डर की वह दर्दनाक याद उनके दिमाग में बस गई थी, जो उन्हें भविष्य में हमेशा भूरे रंग के फर वाले जीवों से दूर रहने की याद दिलाती है। हर दर्दनाक अनुभव हमारे डेटाबेस में एक और बुरी याद जोड़ता है। शोधकर्ताओं ने परिकल्पना की है कि ये यादें हमारी आने वाली पीढ़ियों को इसलिए मिलती हैं ताकि वे भी जीवित रह सकें।
मस्तिष्क जानलेवा अनुभवों को दीर्घकालिक यादों में बदल देता है ताकि हम उन्हें दोहराएँ नहीं। इसी प्रकार, किसी विशेष घटना के बारे में आपकी स्मृति तब अधिक समय तक बनी रहेगी जब आप असफलता के अनुभव को खतरे के रूप में

देखते हैं। आपकी स्मृति मुख्य रूप से असफलता के अनुभवों को ही सहेज कर रखेगी, भले ही वे घटना की वास्तविकता से मेल न खाते हों। जब आपकी स्मृतियों का भंडार हमेशा असफलताओं की किताबों से भरा रहेगा, तो यह केवल सफलता को आपसे दूर धकेल देगा। हमारी मानवीय क्षमताएँ इतनी प्रबल नहीं हैं कि हम वास्तविकता को उसके वास्तविक रूप में समझ सकें। इसलिए, सफलता के मार्ग में बाधा बनने वाली चीज़ें असफलता की अधूरी यादें ही होती हैं।
“तो फिर आप क्या करते हैं, प्रोफेसर? जब आप कभी-कभी गतिरोध महसूस करते हैं और लगता है कि आप कहीं नहीं पहुंच रहे हैं, तो आप क्या करते हैं? आपका समाधान क्या है?”
“आप सफलता के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलते हैं। आप इसे अपनी आँखों से अच्छी तरह देखते हैं।”
"मेरी आँखों से?"

आप कर चुकाने से बच नहीं सकते, चाहे आप सरकार के मुखिया ही क्यों न हों, यह निश्चित है। हालांकि, असफलताओं को अलग दृष्टिकोण से देखने के कई तरीके हैं। मेरे प्रोफेसर के अनुसार, यह एक हासिल करने योग्य लक्ष्य था। इसके अलावा, सफलता को देखना उतना कठिन नहीं था जितना मैंने सोचा था। नीचे दिया गया अभ्यास उन निराशा और निष्क्रियता के क्षणों को नए सिरे से देखने में मदद करेगा जब ऐसा लगता है कि आप जो कर रहे हैं वह असफल है।

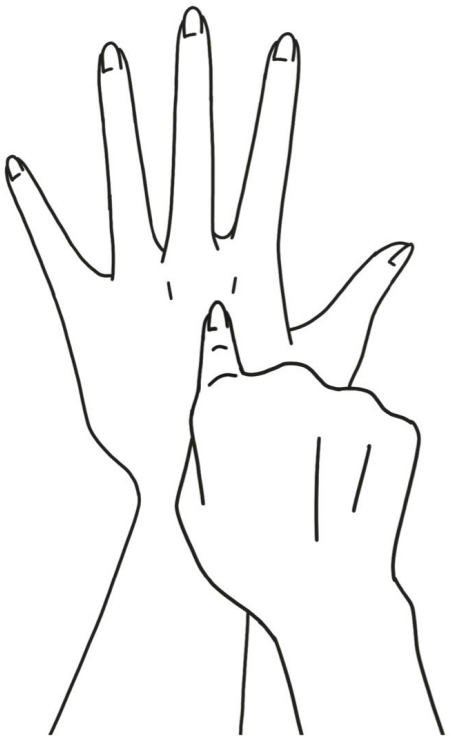

STEP 1

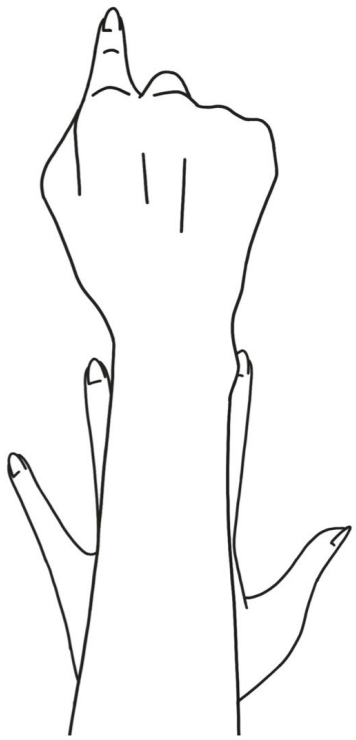

STEP 2

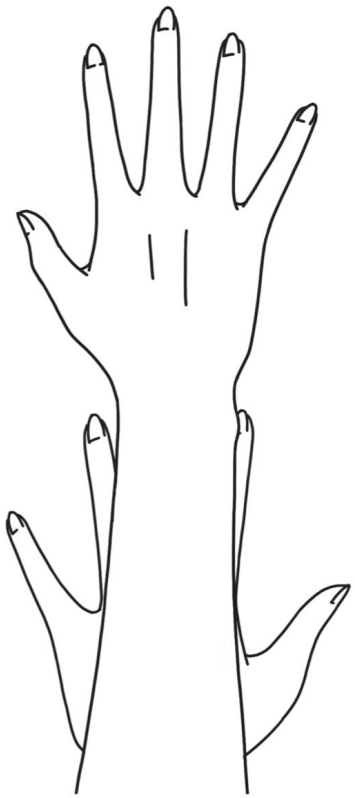

STEP 3

सबसे पहले, ऊपर चरण 1 में दिखाए गए अनुसार अपना बायां हाथ फैलाएं। इसे जीवन के एक सूक्ष्म रूप के रूप में सोचें। आपके दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली आपका प्रतिनिधित्व करती है। आप उस पथ पर खड़े हैं, और आपके सामने पांच उंगलियां हैं जो जीवन की संभावित यात्राओं के रूप में फैली हुई हैं। मुझे किस उंगली से आगे बढ़ना चाहिए? क्या मुझे इस तरफ जाना चाहिए? या उस तरफ? ज्यादातर लोग अपनी चुनी हुई पहली उंगली के दूसरे जोड़ को भी पार नहीं कर पाते। वे दुविधा में पड़ जाते हैं, यह सोचकर कि उन्होंने सही या सबसे अच्छा फैसला लिया है या नहीं। वे अपने जीवन के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़े होकर कीमती समय चिंता में बर्बाद करते हैं। उन्हें अपनी चुनी हुई उंगली के रास्ते के अंत तक पहुंचने के लिए बस थोड़ा सा और आगे जाना होता है, लेकिन ज्यादातर लोग कभी भी "थोड़ा सा" आगे नहीं बढ़ पाते और वापस लौट जाते हैं। उन्हें लगता है कि उन्होंने गलत चुनाव किया है, अचानक उन्हें यकीन हो जाता है कि यह उनके लिए सही रास्ता नहीं था, जबकि उन्होंने यह जानने के लिए अपनी यात्रा पूरी नहीं की थी। उनकी मंजिल बस उंगली के अंत में एक और जोड़ दूर थी।
एक रेखा चुनें और चरण 2 की तरह उसका अनुसरण करते हुए अंत तक जाएं। इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा। जब आप अपनी कलाई तक पहुंच जाएं, तो चरण 3 की तरह अपने दाहिने हाथ को फैलाएं।
क्या आप देख पा रहे हैं? आपने एक कदम आगे बढ़ा लिया है। अब आप जानते हैं कि आपको बस थोड़ा और आगे जाना है। अब आगे बढ़ने और अंत तक पहुँचने का समय है, चाहे आप कोई भी रास्ता चुनें। एक नया रास्ता शुरू होता है। फिर से हाथ बदलें। इस बार, आपकी बाईं तर्जनी उंगली आपका प्रतिनिधित्व करती है। अपना दाहिना हाथ खोलें और चरण 1 से 3 दोहराएँ। आपने एक और कदम बढ़ा लिया है। फिर से हाथ बदलें और दोहराएँ। यही जीवन है। छोटे-छोटे कदम मिलकर एक रास्ता बनाते हैं और एक पूरा जीवन पूरा करते हैं।
अगर आप एक पैर ज़मीन से उठा लेते हैं, तो यह भी एक जीत है, और अगर आप एक छोटा सा कदम भी आगे बढ़ा लेते हैं, तो यह एक सफलता है। एक पैर ज़मीन पर रखते ही, दूसरे पैर को भी तब तक ऊपर उठाते रहें जब तक आप अपने रास्ते के अंत तक न पहुँच जाएँ। सफलता के अनुभवों को बार-बार आत्मसात करते रहें, भले ही वे कितने भी छोटे क्यों न लगें, और ये यादें जल्द ही पिछली असफलताओं की यादों की जगह ले लेंगी।

जब मैंने यह उपयोगी अभ्यास सीख लिया, तो मैंने जानबूझकर हर बार जब भी मैं अटक जाती, उन हाथों के इशारों को दोहराना शुरू कर दिया। मेरे गुरु ने मुझे जैसा सिखाया था, उन्होंने मुझे धीरे-धीरे आगे बढ़ने में मदद की। जब भी मुझे अपने रास्ते के बारे में, सही दिशा में जाने के बारे में, या आगे बढ़ने के बारे में खुद को आश्वस्त करने की ज़रूरत होती है, तो मैं खुद को उन इशारों की याद दिलाती हूँ। जब मैं चिंता से घिर जाती हूँ, तो मुझे इस अभ्यास से सुकून मिलता है। मैं अकेली नहीं थी। मैंने इसे कई लोगों को सिखाया है जो मुझसे मिलने आए हैं और जिन्होंने इसी तरह की भावनाओं का अनुभव किया है, और इशारों की इस छोटी सी श्रृंखला ने उनकी भी मदद की है।
"तो सफलता का एहसास ऐसा होता है।"
मुझे ऐसा लगता है कि मैंने हर दिन को पूरी तरह से जिया है।
"अब तो यह एक आदत बन गई है।"

* * *

जिन लोगों ने खोया हुआ महसूस करने और पिछड़ जाने की बात स्वीकार की, उन्हें इस अभ्यास से शांति और सुकून मिला। यह तीन सेकंड का एक शक्तिशाली अनुस्मारक है कि हमारा रास्ता कई छोटे-छोटे कदमों से बनता है। हर कदम एक छोटी सफलता है, लेकिन एक बार कदम उठाना शुरू करने के बाद आपको उस पर डटे रहना होगा।
एक दोस्त, जो पहले बहुत जल्दी गुस्सा हो जाता था और चीजों को जल्दी छोड़ देता था, ने बताया कि हाथ के इशारों का अभ्यास करने से निवेश के प्रति उसका नजरिया ही बदल गया। उसने मुझे खुशखबरी देने के लिए फोन किया कि उसने कुछ शेयरों को धैर्यपूर्वक अपने पास रखकर भारी मुनाफा कमाया है। इस अभ्यास को सीखने से पहले, वह इन शेयरों को खरीदने के फैसले पर सवाल उठाकर बहुत जल्दी बेच देता था। उसकी कहानी सुनकर मुझे यकीन हो गया कि यह अभ्यास किसी ऐसे व्यक्ति तक पहुंच गया है जिसे इसकी वाकई जरूरत थी। यह एक कारगर तरीका है जो आपके दिमाग को तीन सेकंड के भीतर सफलता की कल्पना करने में सक्षम बनाता है।

एक और दिन, अभ्यास करने का एक और मौका। मैं धीरे-धीरे, एक-एक करके छोटे- छोटे कदम बढ़ाती हूँ। हर नए दिन के लिए एक नई दिशा तय करती हूँ। अभ्यास करते-करते एक समय ऐसा आता है जब आपको एहसास होता है: मैं प्रगति कर रही हूँ।
बिना किसी संदेह के, अपनी उंगलियों के सिरे तक आगे बढ़ते रहिए, और आप देखते ही देखते अपनी मंजिल तक पहुँच जाएँगे। जब आपको जीवन में अपनी स्थिति का कोई अंदाजा न हो, या जब आप यह जानने के लिए उत्सुक हों कि आपको अभी कितना आगे जाना है, तो अपनी उंगलियों के सिरे से ही सफलता का थोड़ा सा स्वाद चखें। आपके द्वारा उठाए गए सभी सफल कदम आपके लिए प्रेरणा और भविष्य में मिलने वाली उस सौभाग्य के लिए चुंबक का काम करेंगे जिसकी आप दिल से कामना करते हैं।
जब मैं जवान और स्वतंत्र था और मेरी कल्पना की कोई सीमा नहीं थी,
मैंने दुनिया को बदलने का सपना देखा था।
जैसे-जैसे मैं बड़ा और समझदार होता गया,
मुझे पता चला कि दुनिया नहीं बदलेगी।
इसलिए मैंने अपने लक्ष्य को थोड़ा सीमित कर दिया।
और मैंने सिर्फ अपना देश बदलने का फैसला किया।
लेकिन वह भी अचल प्रतीत हो रहा था।
जैसे-जैसे मैं अपने जीवन के अंतिम पड़ाव की ओर बढ़ रहा था, एक आखिरी हताश प्रयास में,
मैंने केवल अपने परिवार, अपने सबसे करीबी लोगों को बदलने का फैसला किया।
लेकिन अफसोस, वे इसे मानने को तैयार नहीं थे।
और अब जब मैं अपनी मृत्युशय्या पर लेटा हूँ, तो मुझे अचानक यह एहसास हुआ:
काश मैंने पहले खुद को बदल लिया होता,
तब मैं अपने परिवार को एक उदाहरण के रूप में बदल देता।
उनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन से,
तब मैं अपने देश की बेहतरी कर पाता।
और कौन जाने, शायद मैंने दुनिया को ही बदल दिया हो।
-लेखक अनजान है

ये शब्द वेस्टमिंस्टर एब्बे में एक समाधि पर खुदे हुए हैं। जिस बिशप की यह समाधि है, वे अब इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उन्होंने एक महत्वपूर्ण सबक छोड़ा है। वे हमें सिखाते हैं कि इस जीवन में आप चुटकी बजाकर कुछ भी हासिल नहीं कर सकते। आप हर प्रयास में अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकते हैं, और शायद एक दिन आप पाएंगे कि आपके पिछले सभी प्रयास भविष्य की सफलता में तब्दील हो जाएंगे।
हम सभी के मन में चिंता और घबराहट के कई कारण होते हैं। और हममें से अधिकांश लोग इतने साहसी नहीं होते कि अपनी दुनिया जैसी अनिश्चित चीज़ पर भरोसा कर सकें। जीवन पहले से ही काफी चुनौतीपूर्ण है, ऐसे में अपनी सारी परेशानियों, चिंताओं और घबराहट का बोझ कंधों पर ढोना और भी मुश्किल बना देता है। आपको अपने चुने हुए रास्ते पर हल्के मन से कदम बढ़ाने चाहिए और अपने कदमों को नकारात्मक या सकारात्मक विचारों से बोझिल नहीं करना चाहिए। आपके प्रयास अंततः आपको ही फल देंगे। यही कहावत का अर्थ है, "सफलता की शुरुआत आपसे ही होती है।"
आपकी ऊर्जा के अनुसार आपका स्वभाव नीचे पांच प्रकार की ऊर्जाओं का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। ऐसी वेबसाइटें भी हैं जहाँ आप अपनी जन्मतिथि दर्ज करके अपनी पंच तत्व ऊर्जा का पता लगा सकते हैं। "अपनी जन्मतिथि का उपयोग करके अपनी पंच तत्व ऊर्जा का पता कैसे लगाएं" खोजें। एक बार जब आपको अपनी ऊर्जा का प्रकार पता चल जाए, तो आप धन, सफलता और धन को आकर्षित करने के लिए पंच ऊर्जा सिद्धांत का उपयोग कर सकते हैं। आगे पढ़ने से आपको अपनी ऊर्जा के प्रकार को और अधिक गहराई से समझने में मदद मिलेगी।
आग
• ब्योंग-ह्वा, "यांग की अग्नि" (丙火): आप सूर्य की तरह चमकते हैं और
लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए जाने जाते हैं। आपकी
गर्मजोशी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व किसी भी ऐसे वातावरण में आपके
लिए फायदेमंद साबित होते हैं जहाँ आपको अन्य लोगों से मिलने-
जुलने का अवसर मिलता है।
• जियोंग-ह्वा, "यिन की अग्नि" (丁火): मोमबत्ती की लौ की तरह, आपका एकाग्र और केंद्रित स्वभाव दूसरों का ध्यान आकर्षित करता है।
कला के क्षेत्र में करियर आपके लिए लाभदायक होगा, क्योंकि

मोमबत्ती की लौ की तरह, आप तब फलते-फूलते हैं जब आप सुर्खियों में होते हैं।
पानी
• इम-सू, "यांग का जल" (壬水): आप सागर की तरह विशाल हैं। आप एक सक्रिय व्यक्ति हैं जो विचारों और मौलिकता को महत्व देते हैं। किसी एक विशेष क्षेत्र तक सीमित रहने की बजाय बड़ा व्यवसाय आपके लिए अधिक उपयुक्त रहेगा।
• ग्ये-सू, "यिन का जल" (癸水): आप ठंडी बारिश की तरह हैं, यानी आपको समझना दूसरों के लिए मुश्किल हो सकता है। आप अपनी राय गुप्त रखना पसंद करते हैं और तुरंत निर्णय लेने में माहिर हैं। आपके लिए यह
सलाह दी जाती है कि आप कोई व्यावहारिक मार्ग चुनें जिस पर आपका अच्छा-खासा नियंत्रण हो, जैसे कि स्वरोजगार।
लकड़ी
• गैब-मोक, "यांग का जंगल" (甲木): आप एक विशाल वृक्ष की तरह लंबी शाखाओं से फैले हुए हैं। आपमें एक नेता के गुण हैं और आप सम्मान
की प्राप्ति की ओर अग्रसर होते हैं, जो आपको एक अच्छा राजनीतिज्ञ
या प्रोफेसर बनाता है।
• यूल-मोक, "यिन की लकड़ी" (乙木): आप एक छोटे और नाजुक पेड़ की तरह हैं। आप चतुर हैं और लोगों और परिस्थितियों को जल्दी समझ लेते
हैं। कुशल संचारक होने के कारण, परामर्श या मनोविज्ञान आपके लिए उपयुक्त हो सकता है।
धातु
• ग्योंग-गेउम, "यांग की धातु" (庚金): आप चट्टान की तरह अडिग हैं।
आपके दृढ़ विश्वास और निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता है। आप लोक
सेवा में, अभियोजक कार्यालय में या पुलिस बल में काम करके अच्छा प्रदर्शन करेंगे।
• शिन-गेउम, "यिन की धातु" (辛金): आप एक परिष्कृत रत्न या धातु के समान हैं। एक पूर्णतावादी होने के नाते, आप ऐसे पेशे में सफल होंगे
जिसमें नाजुक और सटीक कार्य की आवश्यकता होती है।
धरती

• मु-तोह, "यांग की धरती" (戊土): आप एक विशाल भूभाग हैं। आप हर चीज़ का समन्वय और मध्यस्थता करने में सक्षम हैं, जो आपको अंतरराष्ट्रीय कार्यों, व्यापार या दलाली के लिए उपयुक्त बनाता है।

• गी-तोह, "यिन की धरती" (己土): नम धरती आपकी छवि को सबसे अच्छे से दर्शाती है। व्यावहारिक और ज़मीनी स्वभाव के कारण आप समाज में

जीवन बिताने के लिए उपयुक्त हैं। वास्तव में, किसी संगठन में काम करना या किसी समूह का हिस्सा बनना आपके लिए बहुत लाभदायक होगा।
नोट्स छोड़ें
*1 ओह (पांच) हैंग (गति, प्रवाह, जिसे कोरियाई में आम तौर पर "ऊर्जा" के रूप में अनुवादित किया जाता है)।
*2 1.50 अमेरिकी डॉलर से कम।
*3 एक कोरियाई एनर्जी ड्रिंक।
*4 सियोल के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक ऐसा क्षेत्र जहाँ कोचिंग सेंटर और उनमें पढ़ने वाले छात्रों के लिए छात्रावास जैसी सुविधाएँ मौजूद हैं। नोरयांगजिन में पढ़ाई का यह गहन माहौल सरकारी नौकरी के इच्छुक छात्रों को लोक सेवा परीक्षाओं की तैयारी में मदद करता है।
*5 वसंत और शरद ऋतु काल के उत्तरार्ध (लगभग 770-481 ईसा पूर्व) की एक प्राचीन चीनी सैन्य ग्रंथ। इसमें तेरह अध्याय हैं, जिनमें से प्रत्येक युद्ध से संबंधित कौशल या कला के एक अलग समूह और सैन्य रणनीति और युक्तियों में इसके अनुप्रयोग से संबंधित है।

5

क्या पैसा स्वार्थी लोगों को पसंद करता है?

एक ही नियति, दो अलग-अलग भाग्य
कुछ लोग पूछते हैं, "अगर मेरी किस्मत में अमीर होना लिखा था, तो क्या मेरा जीवन अभी जैसा है उससे अलग नहीं होना चाहिए था?"
कोरिया में, इंटरनेट पर एक साधारण खोज से ही आपको किसी भी प्रसिद्ध सीईओ का जन्मतिथि पता चल जाता है। उस जानकारी के नीचे, आपको हमेशा ऐसे लोगों की टिप्पणियाँ मिलेंगी जो कहते हैं कि उनका जन्म सीईओ के ही दिन और समय पर हुआ था, इसलिए उन्हें भी अमीर होना चाहिए।
साजू के सिद्धांत के अनुसार, एक ही दिन और समय पर जन्म लेने वाले लोगों को एक जैसा जीवन जीना चाहिए। हालांकि, व्यवहार में कई लोग मशहूर हस्तियों के साथ एक ही समय पर जन्म लेते हैं, फिर भी वे अपने जुड़वां भाई/बहनों जितने अमीर या सफल कभी नहीं बन पाते। अधिकतर मामलों में, एक ही साजू साझा करने वाले लोग बिलकुल अलग-अलग जीवन जीते हैं। जुड़वां बच्चों को ही देख लीजिए। जुड़वां बच्चे नौ महीने एक ही गर्भ में बिताते हैं, फिर भी अधिकतर मामलों में, उनके व्यक्तित्व और पसंद एक दूसरे से बिल्कुल अलग होते हैं। साजू के रहस्यों पर सवाल उठाना आसान है, इसलिए मुझे इसकी पड़ताल करने की जिज्ञासा हुई। क्या भाग्य पहले से तय होता है? अगर एक ही समय में पैदा हुए दो लोगों का भाग्य बिल्कुल अलग हो, तो उनके जीवन में भाग्य को क्या

निर्धारित करता है? अगर यह साजू नहीं है—या सिर्फ साजू ही नहीं है—तो फिर यह क्या है?

मान लीजिए हमारे दो बच्चे हैं। उनके नाम जेम्स और जेमी हैं। ये दोनों बच्चे एक ही दिन, एक ही समय पर पैदा हुए हैं। उनके नाम भी मिलते-जुलते हैं। जेम्स और जेमी दोनों ही स्वतंत्र स्वभाव के हैं, इसलिए वे कोरिया की तुलना में विदेश में जीवन बिताने के लिए ज़्यादा उपयुक्त हैं। भाषाओं का प्रशिक्षण भी उन्हें बड़ी सफलता दिलाने में सहायक हो सकता है, क्योंकि उनमें इस क्षेत्र में असाधारण प्रतिभा जन्मजात है।
जेम्स ने कम उम्र में ही विदेश में पढ़ाई शुरू कर दी थी, क्योंकि उनके माता-पिता आर्थिक रूप से सक्षम थे। अपनी असाधारण भाषाई क्षमताओं के कारण, वे अब एक प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय वकील हैं जो पांच भाषाएँ बोलते हैं। अपनी सफलता की कहानी पर आधारित पुस्तक के बेस्टसेलर बनने के बाद जेम्स को एक लेखक के रूप में और भी अधिक पहचान मिली।
हालांकि, जेमी का पालन-पोषण एक अलग ही माहौल में हुआ। एक साधारण परिवार में जन्मे जेमी विदेश में पढ़ाई करने का खर्च नहीं उठा सकते थे और उन्हें स्कूली स्तर की बुनियादी शिक्षा से ही संतोष करना पड़ा। अच्छे अंकों और कक्षा में प्रथम स्थान के कारण उन्हें स्थानीय राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में दाखिला मिल गया। फिर भी, सबसे बड़े बेटे होने की ज़िम्मेदारी उन पर ज़रूर रही होगी। जेमी जानते थे कि पढ़ाई को लंबा खींचने के बजाय उन्हें जल्द से जल्द पैसे कमाना शुरू करना होगा। इसीलिए उन्होंने स्कूल खत्म होते ही काम करना शुरू कर दिया और स्थानीय कॉलेज प्रवेश परीक्षा के लिए निजी ट्यूटर के रूप में अपनी पहचान बनाई।

* * *

जेम्स और जेमी का जीवन एक दूसरे से बिलकुल अलग है, हालांकि दोनों का जन्म एक ही समय पर हुआ था। एक ने अंतरराष्ट्रीय वकील के रूप में सफलता हासिल की; दूसरे ने निजी शिक्षक के रूप में। मैं इन दोनों मामलों की तुलना करके यह साबित करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ कि कौन सा बेहतर है। फिर भी, यह बात

साफ है कि जेम्स और जेमी अलग-अलग स्तर पर जीवन जीते हैं। इसका कारण क्या हो सकता है? जन्मजात प्रतिभा का कोई महत्व नहीं होता अगर उसे निखारने का मौका ही न मिले। यहीं से जीवन अलग-अलग रास्तों पर मुड़ जाते हैं।
यहां मुख्य बात "विशेष संबंध" हैं—वे लोग जो आपके जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। बचपन में वे आपके माता-पिता हो सकते हैं, या वयस्क होने पर आपका जीवनसाथी। यही वह चीज़ है जो इतना बड़ा फर्क पैदा करती है, भले ही आपका जन्म और भाग्य किसी और के समान ही क्यों न हुआ हो।
बचपन में माता-पिता की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है। चाहे आप अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनना कितना भी चाहें, अगर आपके माता-पिता आपको रोकते हैं तो आप कुछ भी नहीं कर पाएंगे। आपके शिशुकाल से लेकर प्रारंभिक बचपन तक और यहां तक कि प्राथमिक विद्यालय के बाद भी, आपके माता- पिता ही आपके लिए अधिकांश निर्णय लेते हैं। माता-पिता ही हमारी पूरी दुनिया हैं, हमारा पूरा ब्रह्मांड हैं, इसलिए स्वाभाविक रूप से उनका हमारे जीवन पर प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

* * *

मुझे अक्सर एक सवाल सुनने को मिलता है: "तो जब तक आपके माता-पिता अमीर हैं, तब तक आपको कोई चिंता नहीं होगी, है ना?"
यह बात हमेशा सच नहीं होती। चलिए चार्ली और डोमिनिक नाम के दो और बच्चों की कल्पना करते हैं। वे दोनों भी एक ही दिन, एक ही समय पर पैदा हुए थे। दोनों ही आकर्षक व्यक्तित्व वाले थे, सबका ध्यान अपनी ओर खींचना पसंद करते थे और अपनी प्रतिभाओं को दिखाने में माहिर थे।
चार्ली एक मशहूर टैलेंट एजेंसी के पास पले-बढ़े। रोज़ाना स्कूल आने- जाने के दौरान ही उनमें मनोरंजन जगत में दिलचस्पी पैदा हो गई। एक दिन, इत्तेफ़ाक से, पड़ोस में ही उन्हें देखकर एक टैलेंट एजेंट ने उन्हें चुन लिया। चार्ली ने बीस साल की उम्र से पहले ही अपना डेब्यू कर दिया। उन्हें अपनी पहचान मिल चुकी थी। स्टेज पर वे बेहद खुश रहते थे। वे जन्मजात पॉप स्टार थे। प्रतिभा और हुनर से भरपूर चार्ली को अपना मकसद मिल गया था और वे

इतने खुशकिस्मत थे कि उन्हें अपनी किस्मत को साकार करने का मौका मिला। वे अपने जीवन के इस मोड़ से बेहद खुश थे।
दूसरी ओर, डोमिनिक वकीलों के परिवार में पला-बढ़ा। चाहे पैसा हो या जान-पहचान, उसे कभी भी आर्थिक सहायता की कमी नहीं हुई। हालांकि, डोमिनिक के माता-पिता मनोरंजन जगत में जाने के उसके सपने को बिल्कुल पसंद नहीं करते थे। डोमिनिक बचपन से ही ऐसी आलोचनाएँ सुनता आया, “क्या? मनोरंजन उद्योग? हमारे परिवार में ऐसा अजनबी कैसे आ गया?!” आखिरकार, अपने माता-पिता की इच्छा के अनुसार, उसने लॉ स्कूल में दाखिला लिया, लेकिन वह बार परीक्षा में असफल रहा और इसके बजाय एक लेखाकार बन गया। लेखाकार के रूप में काम करते हुए भी, डोमिनिक की एक अलग तरह की जिंदगी जीने की प्रबल इच्छा कभी खत्म नहीं हुई। जब भी वह अपनी प्रतिभा को काबू नहीं कर पाता, डोमिनिक तनाव कम करने के लिए कराओके क्लब चला जाता था। अंदर ही अंदर, मंच पर जाने और टेलीविजन पर आने की उसकी अधूरी इच्छा उसे आज भी पीड़ा देती थी।
अगर आपके माता-पिता आपकी जन्मजात प्रतिभा को नज़रअंदाज़ करते हैं, जैसा कि डोमिनिक के माता-पिता ने किया, तो आपके मुंह में पलने वाली चांदी की चम्मच का कोई फायदा नहीं होता। जीवन में जिन पहले लोगों से हम मिलते हैं, उनके साथ हमारा एक खास रिश्ता होता है। हर कोई अलग-अलग पारिवारिक परिवेश में, अलग-अलग क्षमताओं और विश्वदृष्टिकोण वाले माता-पिता के साथ पलता-बढ़ता है, जिससे परिणाम भी अलग-अलग होते हैं।
बेशक, कुछ लोग अपने माता-पिता के प्रभाव के बावजूद, अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार ढालने में कामयाब हो जाते हैं। आप स्वयं अपने भाग्य का निर्णय लेकर अपना जीवन बदल सकते हैं। यही स्वतंत्र इच्छाशक्ति है। माता-पिता जैसे विशेष संबंध किसी व्यक्ति के जीवन पर कुछ हद तक प्रभाव डालते हैं, लेकिन उनके पास किसी के भाग्य को पूरी तरह से बिगाड़ने या नष्ट करने की शक्ति कभी नहीं होती। वास्तव में, मैंने पाया है कि कई सफल व्यक्तियों के माता-पिता आदर्श नहीं थे।
अगर आपको लगता है कि आपके माता-पिता की वजह से आपका भाग्य खराब है और यही चीज़ आपको कभी सफल नहीं होने देगी, तो बस यहीं तक सीमित रह जाइए। इसके विपरीत, अगर आप अपने दुर्भाग्यपूर्ण पारिवारिक माहौल को एक ऐसी कसौटी के रूप में देखते हैं जिससे आप अपनी ताकत को निखारेंगे, तो संभावना है कि सब कुछ अच्छा ही होगा। किसी भी व्यक्ति के लिए लचीला बनने और वयस्क जीवन की

कठिनाइयों को सहने में सक्षम होने के लिए कुछ हद तक कठिनाइयाँ ज़रूरी हैं। बेशक, आप अपने माता-पिता या अपने परिवेश से प्रभावित होंगे, लेकिन आपको यह सोच छोड़ देनी चाहिए कि ये कारक आपके पूरे जीवन को निर्धारित करते हैं। इसलिए अपने जीवन पर गौर करें। आपके जीवन में वे कौन से खास लोग हैं जो आपको प्रभावित करते हैं? वे कौन हैं जो आपकी क्षमता को पहचानते हैं? अगर आप उनमें से एक का भी नाम याद कर पाते हैं, तो आप अपनी कल्पना से कहीं अधिक भाग्यशाली हैं। हालांकि, अगर ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है तो चिंता न करें। बेशक, अगर कोई ऐसा व्यक्ति होता जिसका आप अनुसरण कर सकते, तो जीवन आसान हो सकता था, लेकिन अगर कोई नहीं भी है, तो भी कोई बड़ी बात नहीं है। अंततः, यह समझना कि आप स्वयं अपने उद्धारकर्ता हैं, सौभाग्य को आकर्षित करने का सबसे तेज़ तरीका है। अपनी क्षमता पर आपका विश्वास ही सबसे महत्वपूर्ण है। अच्छे पुरुषों से शादी करने वाली महिलाओं का रहस्य
मुझे रिश्तों में इतनी दिक्कत क्यों हो रही है? ऐसा तो है नहीं कि मैं कोई वरदान मांग रही हूँ!
आकर्षक और मनमोहक एल्सा बेहद लोकप्रिय थीं, और उनकी सहेलियाँ इस बात से ईर्ष्या करती थीं। वह ऐसे पुरुषों के साथ डेट करती थीं जिनमें हर खूबी थी: रूप-रंग, पृष्ठभूमि, करियर—सब कुछ। एल्सा को जानने वाले सभी लोग कहते थे कि पुरुषों के मामले में उनकी किस्मत बहुत अच्छी थी, लेकिन एल्सा की सोच अलग थी।
"मेरी तरफ हमेशा अजीबोगरीब लड़के ही आकर्षित होते हैं। एकदम घटिया वाले!"
वह बिल्कुल सही थी। कई पुरुष उसे पसंद करते थे, लेकिन उनमें से किसी के मन में उसके लिए सच्ची भावनाएँ नहीं थीं और न ही कोई उससे लगातार प्यार करता था। पुरुष उसे महंगे गहनों से लेकर रोमांटिक इशारों तक, अनगिनत उपहारों से लुभाते थे। लेकिन एक बार जब वे डेटिंग शुरू कर देते, तो उनका असली रंग सामने आ जाता। वे धोखा देते। वे गुपचुप तरीके से कई रिश्ते चलाते। एक ने तो उससे पैसे उधार भी मांगे। फिर भी, एल्सा के प्रेम जीवन में कोई राहत नहीं थी। ब्रेकअप तो बस अस्थायी होते थे। एक रिश्ता खत्म होते ही वह दूसरा शुरू कर देती। ज़ाहिर है, यह इसलिए संभव था क्योंकि उसके चाहने वालों की कोई कमी नहीं थी।

क्या पुरुषों के मामले में एल्सा वाकई "किस्मतवाली" थी? कई लोग कहते हैं कि डेटिंग का जितना अधिक अनुभव होता है, अच्छे व्यक्ति से शादी करने की संभावना उतनी ही बढ़ जाती है। यह बात सच हो सकती है। कम से कम, लोगों को परखने की आपकी क्षमता तो बेहतर हो जाती है। हालांकि, यह अच्छी शादी की कोई गारंटी नहीं है। डेटिंग और शादी करना दो बिल्कुल अलग बातें हैं। सेलिब्रिटी जगत में अक्सर ऐसा देखने को मिलता है: एक स्टार जो सही चुनाव करता हुआ और एक आदर्श जीवनसाथी से शादी करता हुआ प्रतीत होता है, एक साल बाद स्वीकार करता है कि उसे धोखे में आकर शादी करनी पड़ी थी, जो बेहद दुखद साबित हुई। फिर भी, डेटिंग का अनुभव होना या सार्वजनिक जगत में मशहूर होना किसी भी तरह से सफल वैवाहिक जीवन की गारंटी नहीं देता।

* * *

तो "रिश्तों में भाग्य" का वास्तव में क्या अर्थ है? ज्योतिष की दुनिया में, रिश्तों में भाग्य और विवाह में भाग्य के बीच एक स्पष्ट अंतर होता है। "रिश्तों में भाग्य" का मतलब है कि आपका बहुत से लोगों से मिलना तय है। कोरियाई कहावत "भाग्य गले में छुपे गले के पट्टे में होता है" इस बात को दर्शाती है कि राह चलते लोगों से भी आसानी से संबंध बन जाते हैं। इसका मतलब है कि आपको नए और विविध लोगों से मिलने के बहुत सारे अवसर मिलेंगे और आप जहां भी जाएंगे, लोगों का ध्यान आकर्षित करेंगे। आप वाकई बहुत से लोगों से मिलेंगे, लेकिन यह एक अच्छा जीवनसाथी मिलने से अलग है।
जिन लोगों की "वैवाहिक किस्मत" अच्छी होती है, उनके डेटिंग अनुभव अच्छे नहीं होते, रिश्तों में किस्मत अच्छी नहीं होती, या उन्हें संभावित जीवनसाथी से मिलने के अधिक अवसर नहीं मिलते, लेकिन उनकी शादी एक अच्छे व्यक्ति से बिना किसी खास परेशानी के हो जाती है। संक्षेप में, "रिश्ते की किस्मत" और "वैवाहिक किस्मत" की बात करें तो, एक चीज का होना और दूसरी का न होना पूरी तरह संभव है।
तो फिर, मैंने पहले जिस "अच्छे व्यक्ति" की बात की थी, उसे परिभाषित करने वाले कारक क्या हैं? शायद सबसे पहले लोगों के दिमाग में यही आता है कि वह व्यक्ति समाज की नज़र में "योग्य" हो। लेकिन मैंने अक्सर देखा है कि ये मापदंड हर किसी पर लागू नहीं होते।

सब कहते थे कि ये एक बेहतरीन जोड़ी है। वो एक साधारण ऑफिस कर्मचारी थीं; वो एक दंत चिकित्सक थे। उनकी पहली मुलाकात एक मरीज और डॉक्टर के रूप में हुई, जब वो अपने अक्ल के दांत निकलवाने क्लिनिक आई थीं। वो महिला किसी अच्छे पति की तलाश में नहीं थीं। शादी के बाद, सबने सोचा कि उन्हें एक बहुत ही अच्छा जीवनसाथी मिल गया है, लेकिन वो ऐसा नहीं सोचती थीं। उन्हें अपने उस करियर पर गर्व था जिसके लिए उन्होंने इतनी मेहनत की थी। वो इस शादी को दूसरों की तरह सकारात्मक नजरिए से नहीं देखती थीं।
वाह, आपका पति तो दंत चिकित्सक है!
अब तुम्हारा जीवन फूलों की सेज होगा!
अब आपके पास बस यही विकल्प बचा है कि आप अपनी नौकरी छोड़ दें और जीवन का आनंद लें, है ना?
जब उसने सबको बताया कि उसने प्यार के लिए शादी की है, तो किसी ने उसकी बात पर यकीन नहीं किया, चाहे उसने कितनी ही बार यह बात कही हो। उसे एक ऐसे व्यक्ति से प्यार हो गया था जिसकी नौकरी अच्छी तनख्वाह वाली और इज्जतदार थी, लेकिन ज्यादातर लोगों की उसकी शादी को लेकर गहरी पूर्वाग्रह वाली राय थी, वे सोचते थे, "उसने एक अच्छे साथी को पा लिया है।"
कुछ साल बाद, उनके पति ने सैकड़ों मील दूर बुसान में एक और क्लिनिक खोला।[*1] इस विस्तार में वे इतने व्यस्त हो गए कि उनकी पत्नी को उनकी मदद करने के लिए अपने काम से छुट्टी लेनी पड़ी। उन्हें अपने पति के साथ सामाजिक कार्यक्रमों में जाते समय भी उचित पहनावा अपनाना पड़ता था। उनके पुराने कपड़े और बैग धीरे-धीरे बदल दिए गए, लेकिन चाहे कपड़े कितने भी आलीशान हों या पर्स कितने भी महंगे हों, वे खुश नहीं थीं। वे भी अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाहती थीं और चाहती थीं कि उनके पति उनके प्रयासों में उनका साथ दें, न कि इसके विपरीत। उन्हें अपने करियर की बहुत याद आती थी, जिसे उन्हें ठीक उसी समय रोकना पड़ा जब वे सफलता के शिखर पर थीं। तीस वर्ष की आयु में ही, वे डिज़ाइन में अपनी डिग्री और फैशन उद्योग में अपने अनुभव को व्यर्थ जाने देने के लिए बहुत छोटी थीं।
जैसे-जैसे उसकी उदासी बढ़ती गई, वैसे-वैसे उसके पति की झुंझलाहट भी बढ़ती गई। उसने अपने पति का सहारा बनने के लिए काम से छुट्टी ली थी, लेकिन

उसे सारा दिन घर पर बैठे-बैठे ऊब महसूस होने लगी। जैसे-जैसे सप्ताह बीतते गए, उनके बीच झगड़े और भी बढ़ गए। उनके बीच का यह मनमुटाव धीरे-धीरे उनके निजी जीवन में भी घुस गया और बाहरी दुनिया को भी प्रभावित करने लगा। पति को क्लिनिक में अपने काम पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल हो गया और उसका काम काफी कम हो गया। अंततः, उनका वैवाहिक जीवन टूट गया।

* * *

आपके साथी का भाग्य आपके भाग्य की दिशा बदल सकता है। महिला और उसके पति का रिश्ता शुरू से ही दुर्भाग्यपूर्ण था। अगर वह बाहरी दुनिया के सामने अपनी बात रखने के बजाय सहायक भूमिका निभाने में सहज महसूस करती, तो उनका रिश्ता स्वर्ग में बना होता। लेकिन इस महिला के लिए, एक ऐसा पुरुष बेहतर साथी होता जो उसे खुले मैदानों में आज़ादी से घूमने देता। उसका पति बिल्कुल विपरीत था, उसकी ज़रूरतों से पूरी तरह अलग, और इस शादी के सफल होने की कोई उम्मीद ही नहीं थी। इस मामले में, पति-पत्नी के रिश्ते का ऐसा कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा जिससे उनका भाग्य बेहतर हुआ हो। बल्कि इसके विपरीत, दोनों पति-पत्नी ने एक-दूसरे के भाग्य को ही नुकसान पहुंचाया। इससे मुझे लगता है कि एक सफल शादी वह है जिसमें दो लोग एक-दूसरे के लिए सौभाग्य लाते हैं, चाहे उनकी शिक्षा, धन या समाज द्वारा महत्व दिए जाने वाले अन्य गुण कुछ भी हों। एक ऐसा रिश्ता जो दोनों पक्षों के लिए अच्छा हो, वह है जो तालमेल पैदा करता है, जहां प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के लिए एक मूल्यवान साथी बन जाता है।

* * *

एक युवा दंपति सुशी रेस्टोरेंट चलाते थे। उनका रेस्टोरेंट हर दिन ग्राहकों से खचाखच भरा रहता था और दोनों मिलकर काम करते थे। पत्नी रसोई में काम करती थी और किसी भी जापानी सुशी शेफ की तरह कुशल थी। हंसमुख चेहरे और मिलनसार स्वभाव के साथ, पति कैश रजिस्टर संभालने और ग्राहकों की सेवा करने में इतना माहिर था कि उन्हें अतिरिक्त मदद की ज़रूरत ही नहीं पड़ी।

ये उनकी एकमात्र खूबी नहीं थी। स्थानीय वितरक से महंगी मछली खरीदने के बजाय, पति टोंगयोंग[*3] की यात्रा करते और सीधे बाजार से कम कीमत पर बढ़िया मछली लाते। ताज़ी सामग्री और लाजवाब स्वाद के साथ-साथ बेहतरीन आतिथ्य सत्कार के कारण, दंपति ने कई शाखाएँ खोलीं और सुशी रेस्तरां का शुद्ध लाभ 30 प्रतिशत से अधिक बढ़ गया। ज़ुबान-ज़ुबान उनकी लोकप्रियता बढ़ती गई और देश के सबसे बड़े डिपार्टमेंट स्टोर ने उनसे एक नई शाखा खोलने के लिए संपर्क किया।
शुरुआत में, पत्नी अकेले ही रेस्टोरेंट चला रही थी और पति अंशकालिक कर्मचारी के रूप में काम कर रहा था। पत्नी एक बेहतरीन रसोइया थी, लेकिन अपने अंतर्मुखी स्वभाव के कारण वह रेस्टोरेंट की मेज़बान और मालकिन के रूप में ग्राहकों से व्यवहार करने में असमर्थ थी। इसके विपरीत, उसका पति मिलनसार था और इस महत्वपूर्ण काम के लिए एकदम सही व्यक्ति था। दोनों पति- पत्नी अपने-अपने क्षेत्र में निपुण थे और साथ मिलकर काम करते हुए उन्होंने एक अद्भुत तालमेल बनाया। इस युवा जोड़े ने एक-दूसरे की कमियों को पूरा किया और एक-दूसरे की तरक्की में योगदान दिया। निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उन्हें व्यावसायिक सफलता के साथ-साथ वैवाहिक सफलता भी मिली थी। एनसीसॉफ्ट[*4] के सीईओ किम ताएकजिन की कहानी एक और अच्छा उदाहरण है। किम ने अपनी कंपनी की शुरुआत एक लाख डॉलर से भी कम पूंजी से की थी। शादी के बाद उनकी कंपनी का विकास हुआ और दंपति ने मिलकर कारोबार संभालना शुरू किया। उन्होंने साथ मिलकर ऐसे फैसले लिए जो कंपनी के लिए फायदेमंद साबित हुए: उन्होंने एआई विकास में काफी संसाधन लगाए और पेशेवर बेसबॉल टीम की मालिक बनने वाली पहली घरेलू वीडियो गेम कंपनी बन गईं।

* * *

यही कारण है कि अपने लिए सही जीवनसाथी मिलना बेहद ज़रूरी है। ऐसे जीवनसाथी को पहचानना आपके जीवन को बदल सकता है। हालांकि, यह ध्यान रखें कि एक सफल रिश्ते का परिणाम हमेशा धन ही नहीं होता। समाज के अनुसार, एक "अच्छी शादी" का अर्थ हमेशा दूसरों की राय सुनना होता है। लेकिन अगर पति-पत्नी खुद खुश हैं तो दूसरों की राय से क्या फर्क पड़ता है?
एक ऐसे व्यक्ति के लिए जिसका पालन-पोषण एकल माता-पिता ने किया हो, जो अकेला हो और मानसिक स्थिरता की तलाश में हो, एक आदर्श साथी वह हो सकता है

जो स्नेही हो और हमेशा उसके साथ खड़ा रहे, भले ही वह बहुत पैसा न कमाता हो। वहीं दूसरी ओर, एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी संपत्ति बढ़ाने में माहिर हो, वह उस व्यक्ति के लिए सबसे कीमती साथी हो सकता है जिसका लक्ष्य अमीर बनना हो और जो पैसे को सबसे ऊपर मानता हो। अंततः, आपके विवाह की सफलता का एकमात्र और सर्वोपरि निर्णय आप ही कर सकते हैं।

* * *

जो भी व्यक्ति अच्छे इंसान से शादी करने की इच्छा जताता है, मैं उसे यही बात कहता हूँ:
“अगर आप किसी सच्चे और सार्थक व्यक्ति से मिलना चाहते हैं, तो पहले दूसरों के लिए उपयोगी बनें। इसी तरह आप वैवाहिक जीवन में सच्ची सफलता पा सकते हैं। सिर्फ पाने के बारे में न सोचें। सिंड्रेला को भले ही सब कुछ पाकर खुशी हुई हो, लेकिन राजकुमार के साथ ऐसा नहीं हुआ। यह आपसी संबंध नहीं, बल्कि असंगत संबंध था।”
“एक और बात: आपको खुद यह तय करना चाहिए कि कोई व्यक्ति आपके लिए उपयुक्त है या नहीं। इस तरह आप अपने वैवाहिक जीवन के एकमात्र निर्णायक बन सकते हैं और दूसरों के निर्णयों को इसमें दखल देने से रोक सकते हैं।”
एक ऐसा गठबंधन जो दोनों भागीदारों के लिए तालमेल पैदा करता है, एक समान मूल्य का मिलन जिसमें किसी भी पक्ष को लाभ या हानि नहीं होती: इसी तरह से जो जोड़े अपने भाग्य को एक साथ जोड़ते हैं, वे अपनी संपत्ति और सफलता को बढ़ाते हैं।
दूसरों को अपनी ऊर्जा चुराने न दें जीवन में अक्सर लोग ही भाग्य और धन लाते हैं। अब जब आप पूरी दुनिया में किसी से भी मिल सकते हैं, तो हर कोई नेटवर्किंग के प्रति जुनूनी है। जो लोग मानते हैं कि "जितने ज़्यादा लोग, उतना अच्छा", वे बिना सोचे-समझे हर नए नंबर को सेव कर लेते हैं, जबकि दूसरे लोग जो केवल उपयोगी संपर्कों को ही रखना बेहतर समझते हैं, वे उन्हें क्रमबद्ध तरीके से प्रबंधित करते हैं। लेकिन एक पल के लिए इस बारे में सोचिए। क्या आपको मिली सहायता की मात्रा आपके जान-पहचान वाले लोगों की संख्या के अनुरूप है? क्या जिन लोगों पर आपने सबसे अधिक समय और मेहनत लगाई है, वे बदले में आपको उतनी ही मेहनत से मदद करते हैं?

जिस दिन आप सड़क पर गिर पड़ें और आपकी मदद करने वाला व्यक्ति हो, वह शायद कोई अजनबी हो जिससे आप पहले कभी नहीं मिले हों। अक्सर यही अनजान लोग आपदा से पीड़ित लोगों को सांत्वना और सहायता प्रदान करते हैं।
जैसे-जैसे हम जीवन में आगे बढ़ते हैं, अक्सर भाग्य हमें पहले से मौजूद संबंधों की तुलना में अप्रत्याशित संबंधों के माध्यम से मिलता है। हम इसे "भाग्य" कहते हैं। तो फिर उस भाग्य का स्रोत क्या है जो हमें ये अनमोल संबंध प्रदान करता है?

एक निर्माण कंपनी के कार्यकारी अधिकारी, जेक, एक अपार्टमेंट पुनर्निर्माण परियोजना का ठेका हासिल करने के लिए अपनी पूरी ऊर्जा लगा रहे थे। जेक ने मुझे बताया कि वह कई दिनों से इस पर काम कर रहे थे। वह मुझसे अपनी इस खामी के बारे में बता रहे थे।
मुझे लगता है कि इसमें थोड़ा और प्रयास करना पड़ेगा…
मैंने कहा, "ऐसा लगता है कि इस परियोजना की वजह से आप काफी चिंतित हैं।" “हां, हमारी कंपनी इस परियोजना पर इस कदर निर्भर है जैसे कि इसका अस्तित्व इसी पर टिका हो, लेकिन हम कोई प्रगति नहीं कर पा रहे हैं। मुझे लगता है कि हम किसी बड़ी उपलब्धि के कगार पर हैं, लेकिन यह ग्राहक इतना अस्थिर है कि हमें कुछ समझ नहीं आ रहा कि आगे क्या होगा।”
अपनी कहानी खत्म करते ही जेक का चेहरा उदास हो गया। मैं उसकी मदद करना चाहता था। दांव पर सिर्फ कंपनी का भविष्य ही नहीं था, बल्कि उसके सभी कर्मचारियों की आजीविका भी थी।
जेक स्पष्ट रूप से बहुत परेशान था। वह अपने फोन के कैलेंडर को बार-बार स्क्रॉल कर रहा था और अपने क्लाइंट के साथ अगली मुलाकात के दिनों को गिन रहा था।
मैंने दबे स्वर में एक टिप्पणी की।
ऐसा लगता है कि आप अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहे हैं।
"हम्म?"
"ऐसा लगता है कि आप उसमें बहुत रुचि रखते हैं।"
“हां। मुझे हर हाल में इस सौदे को पूरा करना ही होगा।”

जेक के अनुसार, उनकी कंपनी इस परियोजना के लिए बोली लगाने वाली अकेली कंपनी नहीं थी। कई अन्य निर्माण कंपनियां भी उसी ग्राहक को लुभाने की कोशिश कर रही थीं। शुरुआत में, संभावित ग्राहक जेक की कंपनी की ओर झुका हुआ प्रतीत हो रहा था; लेकिन हाल ही में, जेक ने सुना कि वह अक्सर किसी दूसरी कंपनी से मिल रहा था। जेक को लग रहा था कि अनुबंध जीतने का उसका मौका हाथ से फिसल रहा है। जब ऐसा लग रहा था कि पलड़ा प्रतिद्वंद्वी के पक्ष में झुक गया है, तो मेरे पास उसे देने के लिए कोई अचूक समाधान नहीं था। इसके बजाय, मैंने जेक को एक सलाह दी जो मुझे लगा कि उसकी कंपनी को फिर से पटरी पर लाने में मदद कर सकती है:
आपको आगे चलकर अपनी ऊर्जा बचाकर रखनी होगी।
"आपका क्या मतलब है?"
“ज्यादातर लोग उस व्यक्ति को नहीं पहचान पाते जो उनके लिए सौभाग्य लेकर आएगा। इसीलिए वे अनजान लोगों पर अपना समय और ऊर्जा लुटाते हैं। किसी स्वार्थ के लिए किसी से संबंध बनाने की कोशिश करना और भी थका देने वाला होता है, क्योंकि आप अपने कार्यों के बदले कुछ पाने की उम्मीद करते हैं। फिर भी, आपको याद रखना चाहिए कि आप अपने आस-पास के हर व्यक्ति पर एक समान ऊर्जा नहीं लगा सकते; अन्यथा, आपकी सारी शक्ति समाप्त हो जाएगी।”
कुछ हद तक प्रयास आवश्यक है, लेकिन आप अपनी सारी ऊर्जा रिश्तों पर नहीं लगा सकते। संतुलन बनाए रखना बेहद ज़रूरी है। किसी चीज़ की उम्मीद रखना, अपेक्षाएँ रखना बहुत ऊर्जा खर्च करवाता है। किसी के व्यवहार से निराश होने पर जो भावनात्मक आघात लगता है, वह गंभीर परिणाम दे सकता है। इससे एक ऐसा रिश्ता भी टूट सकता है जो सालों तक चल सकता था। इसलिए इस मामले में खुद पर ज़्यादा दबाव न डालें।
समझ गया। मैं कोशिश करूंगा।
मैंने जेक को सलाह दी कि वह अपने ग्राहकों के साथ अपने व्यवहार में संयम बरते और इसके बजाय, बिना किसी स्वार्थ या छिपे मकसद के, अपनी कंपनी से संपर्क करने वाले हर व्यक्ति के साथ निष्पक्ष व्यवहार करे।

* * *

जेक का अनुमान था कि अगर वह अपने व्यवसाय की आय में काफी वृद्धि नहीं कर पाता, तो उसके सफल होने के लिए केवल छह महीने बचे थे। उसने मेरी सलाह मानी

और अपने ग्राहकों से बिना अपनी कार्यक्षमता पर सवाल उठाए या उनसे होने वाली कमाई के बारे में सोचे बिना बातचीत शुरू कर दी। उसने हर सवाल का जवाब विनम्रता से दिया, चाहे काम कितना भी छोटा हो, चाहे सौदा होने की संभावना कितनी भी कम हो। उसने हर किसी के साथ यथासंभव निष्पक्ष व्यवहार किया। कंपनी के भविष्य और अन्य बातों की चिंता करके खुद पर पड़ने वाले अत्यधिक दबाव को कम करने के बाद, विचारशील और दयालु व्यवहार सहजता से होने लगा। उसका तनाव स्तर भी कम हो गया, क्योंकि अब वह इस उम्मीद में हर किसी को संतुष्ट करने के लिए बेतहाशा प्रयास नहीं कर रहा था कि इससे उसकी कंपनी जीवित रहेगी। आश्चर्यजनक रूप से, उसने पाया कि अब उसे इस बात की निराशा नहीं होती थी कि बिना किसी अपेक्षा के परामर्श सत्र के अंत में कोई अनुबंध नहीं हुआ।
फिर भी, वह हमेशा उन ग्राहकों के प्रति आभार व्यक्त करता था जो उससे मिलने के लिए दूर-दूर से आते थे। इधर-उधर मिलने वाले छोटे-मोटे प्रोजेक्ट्स से कंपनी कुछ समय तक चलती रही। एक दिन, साठ वर्ष के एक बुजुर्ग सज्जन एक पुराने ओवरकोट में कार्यालय आए। उनके पहनावे को देखकर ऐसा लग रहा था कि जेक को उनसे कोई अनुबंध नहीं मिलेगा। फिर भी, जेक ने मुस्कुराते हुए उन्हें एक कप कॉफी पेश की। बुजुर्ग ने अपना परिचय एक पूर्व रियल एस्टेट एजेंट के रूप में दिया और दुकान का स्थान बदलने की लागत के बारे में कुछ सवाल पूछे। जब जेक ने उन्हें निर्माण कार्य की लागत समझाई, तो बुजुर्ग आश्चर्यचकित रह गए।
उसने हाथ ऊपर उठाकर कहा कि कीमत बहुत ज़्यादा है। जेक को यही उम्मीद थी। परामर्श सत्र आधे घंटे से भी ज़्यादा चला। शायद बूढ़े आदमी को जेक का इतना समय बर्बाद करने का अफ़सोस हुआ। दफ्तर से निकलते समय बूढ़े आदमी ने जेक से कहा, "मुझे बहुत अफ़सोस है, लेकिन शायद मैं तुम्हें किसी ऐसे व्यक्ति से मिलवा सकूँ जिसे मैं जानता हूँ।"
जेक उसे बाहर तक छोड़ने गया, मुस्कुराया और उससे कहा कि वह इसके बारे में चिंता न करे।
कुछ दिनों बाद, जेक से उस सज्जन के एक परिचित मिलने आए। पता चला कि वे इलाके के जाने-माने संपत्ति मालिक थे, जिनके पास कई टाउनहाउस और आवासीय इमारतें थीं। अचानक, जेक की कंपनी को एक पूरे आवासीय परिसर के लिए करोड़ों डॉलर के निर्माण अनुबंध का जिम्मा मिल गया।

जिस पुनर्विकास अनुबंध को हासिल करने के लिए उन्होंने इतनी मेहनत की थी, वह एक दूसरी कंपनी को मिल गया जिसने इस मुश्किल ग्राहक को मनाने के लिए हर संभव प्रयास किया था। हालांकि, जेक के नज़रिए से, असली विजेता वही थे, क्योंकि उन्होंने केवल दोस्ताना व्यवहार और शांत मन से काम करके उतना ही आकर्षक अनुबंध जीत लिया था।

अक्सर लोग कहते हैं, "मुझे बुरी तरह धोखा दिया गया है," "मुझे नहीं लगता कि मैं अब कभी किसी पर भरोसा कर पाऊंगा," या "जब मैं उनके साथ इतना अच्छा व्यवहार करता रहा हूं तो वे मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकते हैं?" खासकर पैसे के मामले में, विशेष रूप से निवेश या व्यवसाय के मामलों में।
लेकिन जब आप खुद को ऐसा कहते हुए सुनें, तो एक पल रुककर सोचें। क्या आपने जल्दबाजी तो नहीं कर दी? जब भी आप किसी दूसरे व्यक्ति के साथ रिश्ते में प्रयास करते हैं, तो उसमें काफी ऊर्जा खर्च होती है, और अगर वह व्यक्ति आपकी इच्छानुसार प्रतिक्रिया नहीं देता है, तो वह सारा प्रयास व्यर्थ हो सकता है। आपको हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आप अपनी ऊर्जा किस पर खर्च कर रहे हैं और यह स्वीकार करना चाहिए कि आप इस बात को नियंत्रित नहीं कर सकते कि वह आपके प्रयासों पर कैसी प्रतिक्रिया देगा।

* * *

कई सालों तक, मेरे पिता (जो अब इस दुनिया में नहीं हैं) को छुट्टियों के आसपास उनके कार डीलर से एक कार्ड मिलता था। मेरे पिता उस डीलर के कई ग्राहकों में से एक थे, और उन्होंने कई सालों से उससे कोई कार नहीं खरीदी थी। वह डीलर दशकों से अपने ग्राहकों का इसी तरह ख्याल रखता आ रहा था। यह पुराने ज़माने का लगता था, जैसे लोग हाथ से लिखे पत्र भेजते हों।
हालांकि, डीलर के हॉलिडे कार्ड में ज्यादा कुछ लिखा नहीं था। उसमें सिर्फ एक पंक्ति थी, “आपको आने वाले साल की हार्दिक शुभकामनाएं, और आपके दिन हमेशा खुशियों से भरे रहें।” यह एक सामान्य शुभकामना थी, और पहली नजर में ऐसा लगा जैसे डीलर ने ज्यादा मेहनत नहीं की हो। लेकिन जब मैंने

हस्ताक्षर देखे, तो मुझे पता चला कि उसने वाकई मेहनत की थी: हस्ताक्षर विशिष्ट थे, बड़े ध्यान से और स्पष्ट रूप से हाथ से लिखे गए थे।
जब भी मेरे पिताजी कुछ खरीदते थे, तो उसकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल करते थे, इसलिए उन्हें शायद ही कभी उसे बदलने की ज़रूरत पड़ती थी। उस कार को खरीदने के बाद उन्होंने मरम्मत पर ज़्यादा पैसा खर्च नहीं किया, लेकिन डीलर उन्हें धन्यवाद भेजता रहा, भले ही कार खरीदने के बाद के दस सालों में उसे मेरे पिताजी से कोई और काम नहीं मिला।
लगभग एक लाख मील चलने के बाद, मेरे पिताजी के लिए नई कार खरीदने का समय
आ गया था। उन्होंने उस डीलर से संपर्क किया जिसके बारे में हम सभी को लगा था कि वे उसे भूल चुके हैं। डीलर को मेरे पिताजी से कोई उम्मीद या अपेक्षा नहीं थी। वह बस उनके साथ अपना संबंध बनाए हुए था, जैसा कि वह अपने अन्य सभी ग्राहकों के साथ करता था। तभी एक पूर्व ग्राहक—मेरे पिताजी—जिनकी उसने उम्मीद नहीं की थी, ने फोन करके खुशखबरी दी कि वे उससे कार खरीदना चाहते हैं।

* * *

सौभाग्य अक्सर किसी ऐसे व्यक्ति से नहीं मिलता जिसकी आप अपेक्षा करते हैं। अक्सर यह किसी अप्रत्याशित स्थान से आता है। इसीलिए लोगों पर अपना समय और ऊर्जा खर्च करने में संयम बरतना ही बेहतर है। अपनी भावनात्मक ऊर्जा को बचाकर रखें और न तो बहुत उदार बनें और न ही बहुत संयमित। यदि आप बिना किसी स्वार्थ के दुनिया से जुड़ें, तो अप्रत्याशित संबंध अक्सर आपके लिए सौभाग्य लेकर आते हैं।
ग्वाई-इन की समाप्ति तिथि मानवीय रिश्ते बदलते रुझानों के अधीन होते हैं। यहाँ तक कि जो व्यक्ति मुझे पहले मददगार लगता था, वह भी कुछ समय बाद मेरा दुश्मन बन सकता है, और समय के साथ दुश्मन भी मददगार बन सकता है। लोग अपने समय की परिस्थितियों से भी प्रभावित होते हैं। कभी कोई रिश्ता अच्छा होता है, तो कभी बुरा। कुछ रिश्ते हमेशा के लिए बने रहते हैं, और कुछ का अंत होना तय है। किसी रिश्ते के सकारात्मक या नकारात्मक होने को पहचानना और उसे आगे बढ़ाना या खत्म करना, अपने भाग्य को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा

हो सकता है। मैंने ऐसे कई रिश्तों (जिन्हें मैं "समय-समय पर बनने वाले रिश्ते" कहता हूँ) की नाटकीय शुरुआत और अंत को देखा है।

गर्मी का मौसम शुरू ही हुआ था। पचास वर्ष के आसपास के व्यवसायी लियोनार्ड आगामी स्थानीय चुनावों की तैयारी में जुटे थे। उनके बगल में उनका तीस साल पुराना सबसे अच्छा दोस्त फिलिप बैठा था। दोनों की मुलाकात स्थानीय विश्वविद्यालय में कॉलेज के युवा छात्रों के रूप में हुई थी और स्नातक होने के बाद भी उनकी दोस्ती कायम रही, क्योंकि वे समाज के पूरी तरह से सक्रिय सदस्य बन गए थे।
लियोनार्ड को एक मशहूर इलेक्ट्रॉनिक पुर्जों के निर्माता के यहाँ नौकरी मिल गई, और फिलिप ने एक छोटी व्यापारिक कंपनी में काम करना शुरू कर दिया। दोनों एक-दूसरे के लिए गहरे आत्मीय थे, एक-दूसरे की कमियों को पूरा करते थे। वे एक छोटे से कस्बे में पड़ोसी बन गए, और उम्र बढ़ने के साथ-साथ उनकी दोस्ती और भी मजबूत होती गई।
जब लियोनार्ड सेवानिवृत्त होने वाले थे, तो उन्होंने फिलिप के सामने एक प्रस्ताव रखा। उन्होंने सुझाव दिया कि वे दोनों अपनी-अपनी कंपनियों में काम करने से प्राप्त ज्ञान और अनुभव का उपयोग करते हुए एक साथ व्यवसाय शुरू करें। फिलिप तुरंत सहमत हो गए, यह सोचकर कि यह उनके जीवन का एक नया अध्याय होगा।
फिलिप और लियोनार्ड व्यापार में भी एक साथ अच्छा काम करते थे। दरअसल, लियोनार्ड का हमेशा से एक गुप्त सपना था: स्थानीय राजनेता बनना। उन्हें उम्मीद थी कि एक बार उनका व्यवसाय सफल हो जाए, तो वे राजनीति में प्रवेश कर सकेंगे और खुद को एक सफल उद्यमी के रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे। लियोनार्ड का जीवन का मूलमंत्र हमेशा से "मैं यह कर सकता हूँ" रहा था, और उन्होंने इसे बखूबी निभाया। उनका दृढ़ संकल्प बेजोड़ था। प्रौद्योगिकी और बिक्री के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं के सहयोग से, कंपनी जल्द ही दस मिलियन डॉलर का वार्षिक राजस्व अर्जित करने में सक्षम हो गई। जब कंपनी का मुनाफा स्थिर हो गया और वह मजबूती से स्थापित हो गई, तो लियोनार्ड ने सीईओ पद से इस्तीफा दे दिया और राजनीति में प्रवेश

करने के अपने लंबे समय से संजोए सपने का खुलासा किया। फिलिप ने अपने मित्र के इस निर्णय की सराहना की। उनका समर्थन इतना हार्दिक था कि ऐसा लगा मानो वे दोनों एक साथ चुनाव लड़ रहे हों।

* * *

चुनाव से पहले, लियोनार्ड कंपनी के अंदर और बाहर दोनों जगह काफी विवादों में घिरे रहे। मीडिया ने उनके खिलाफ कई राज़ खोले, जिनमें गबन और रिश्वतखोरी के आरोप भी शामिल थे, और लियोनार्ड का नाम लगातार सुर्खियों में बना रहा। दुर्भाग्य से, जनता ने लियोनार्ड को फिलिप से जोड़ दिया, और इस संबंध ने उनके द्वारा मिलकर बनाए गए व्यवसाय को खतरे में डाल दिया। लियोनार्ड पर लगे विभिन्न आरोपों में से कई ऐसे थे जिनकी जानकारी फिलिप को नहीं थी। फिलिप को बार-बार पुलिस के चक्कर लगाने पड़े और उन्हें अपना नाम साफ़ करने के लिए संघर्ष करना पड़ा। जांच पूरी होने से पहले ही कंपनी के शेयरों की कीमत में भारी गिरावट आई।
जीवन भर चली आ रही, बेहद सौभाग्यशाली दोस्ती पूरी तरह बदल गई थी। लियोनार्ड के कुकर्मों के बारे में जानने के बाद फिलिप के लिए उससे दोस्ती बनाए रखना मुश्किल हो गया था। "माफ़ करें या न करें?" अंततः, फिलिप ने अपने पुराने दोस्त से संबंध तोड़ने का फैसला किया, न केवल अपने भले के लिए, बल्कि अपनी कंपनी के अस्तित्व और स्थिरता के लिए भी।
बाद में लियोनार्ड को चुनाव में करारी हार का सामना करना पड़ा। फिलिप को इस बात का दुख हुआ, लेकिन अंततः उसे लगा कि उसने सही फैसला लिया है। अगर वह अपनी दोस्ती के जाल में फंसकर अपने बिगड़े हुए रिश्ते की वजह से बर्बाद हो जाता तो क्या होता? पूरी कंपनी खतरे में पड़ सकती थी और उनके बीच विश्वास दोबारा कायम करना मुश्किल हो जाता।
फिलिप के खिलाफ गबन के आरोप अंततः हटा दिए गए। फिलिप एक दागदार रिश्ते को खत्म करके मुश्किल हालात से निकलने में कामयाब रहे और कंपनी भी उबर गई।

* * *

यह कहानी केवल फिलिप और लियोनार्ड की टूटी दोस्ती के बारे में नहीं है।
अंततः, उनके रिश्ते की एक समय सीमा थी, जिसे आने में उन्हें कई दशक लग गए।
वर्षों तक, उन्हें यह एहसास ही नहीं हुआ कि उनके मूल्य एक-दूसरे से कितने अलग थे। लियोनार्ड, जिसका गबन और रिश्वतखोरी का पर्दाफाश हो चुका था, और फिलिप, जिसने एक नेक जीवन जिया था, दो बिल्कुल अलग-अलग राहों पर चल रहे थे। जब लियोनार्ड के राज़ उजागर हुए और फिलिप ने उनके मूल्यों में भारी अंतर देखा, तभी उसे एहसास हुआ कि उसे लियोनार्ड से संबंध तोड़ लेना चाहिए, भले ही वे इतने वर्षों तक कॉलेज के दोस्त, पड़ोसी और व्यावसायिक सहयोगी रहे हों। यदि कोई रिश्ता अब आपके लिए उपयोगी नहीं है, यदि उसका अंत हो चुका है, तो बेहतर है कि जैसे ही आपको एहसास हो कि वह अब आपके लिए उपयोगी नहीं है, उसे समाप्त कर दें।
प्रेम संबंधों के मामले में भी यही बात लागू होती है।
एक दंपत्ति के दोनों के नौकरी के इंटरव्यू थे और उन्होंने एक-दूसरे को तैयारी में मदद की। लड़की को नौकरी मिल गई; लड़के को नहीं मिली। वे अब भी एक-दूसरे से प्यार करते थे, लेकिन युवक अपने अस्वीकार किए जाने पर अपना गुस्सा और निराशा लगातार ज़ाहिर करता रहा और जल्द ही वह अवसाद में डूब गया। पहले तो उसकी प्रेमिका ने उसे दिलासा देने और उसका हौसला बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन उसका अवसाद कम होने का कोई संकेत नहीं दिखा।
समय बीतने के साथ, उनकी उदासी की भावना हीन भावना में बदल गई। उनके बीच गहरी दरारें पैदा हो गईं। उनकी बातचीत के विषय बदल गए। हर बार जब वे एक-दूसरे से मिलते, तो उनके बीच लंबी और तीखी बहसें होतीं।
अगर आप मुश्किल समय में एक-दूसरे का सहारा बन सकते हैं, तो सब कुछ ठीक रहने की संभावना है। लेकिन अगर आप उस दूरी को कम नहीं कर पाते और इसका असर आप दोनों के जीवन पर पड़ने लगता है, तो आपका रिश्ता शायद जल्द ही खत्म हो जाएगा। अगर आप अपना 60 प्रतिशत से ज़्यादा समय एक-दूसरे से झगड़ने में बिताते हैं, तो यह इस बात का संकेत है कि रिश्ता खत्म होने की कगार पर है और आपको गंभीरता से सोचना चाहिए कि क्या इसे जारी रखना उचित है।

* * *

चाहे माता-पिता हों, दोस्त हों या सहकर्मी, जीवन के हर दौर में एक ऐसा ही करीबी रिश्ता होता है। जब किसी करीबी रिश्ते का समय समाप्त हो जाता है, तो

आपको उस रिश्ते को छोड़ना पड़ता है ताकि दूसरे रिश्ते के लिए जगह बन सके। नए अनुभवों और नए करीबी रिश्तों के माध्यम से ही आप जीवन में आगे बढ़ते हैं।
उपकार बाँटो; कष्ट सहो
यू जैसियोक एक कोरियाई टीवी होस्ट हैं, जिनकी हर कोई प्रशंसा करता है। कई लोग उन्हें अपना आदर्श मानते हैं। उनकी उदारता किसी आम इंसान की क्षमता से कहीं अधिक है। उन्होंने एक जरूरतमंद युवा सहकर्मी की शादी में बड़ी आर्थिक मदद की और यह सुनिश्चित करते हैं कि उनके शो में आने वाले कम प्रसिद्ध लोगों को भी पर्याप्त स्क्रीन टाइम मिले। पूरे देश में उनकी लोकप्रियता और लोकप्रियता का बोलबाला है। उनके पास करोड़ों की संपत्ति होने की अफवाहें शायद अतिशयोक्ति नहीं हैं।
गायिका-गीतकार आईयू भी इससे अलग नहीं हैं। हर साल छुट्टियों के मौसम में, वह उन सभी लोगों को उपहार भेजती हैं जिनके साथ उन्होंने काम किया है। उनके उपहार पाकर भावुक हुए लोगों की दिल छू लेने वाली कहानियाँ इंटरनेट और रेडियो पर खूब फैलती हैं और दिखाती हैं कि वह रिश्तों को कितना महत्व देती हैं।

* * *

ऐसा लगता है मानो मशहूर हस्तियों के अच्छे कामों की कहानियाँ ही उनकी सफलता का मूल मंत्र हैं। भले ही ये अच्छे काम सफलता का सटीक कारण न हों, लेकिन अंततः उनकी कहानियाँ सफल लोगों के बारे में एक ऐसी बात उजागर करती हैं जो मैंने अपने काम में देखी है: वे अक्सर अपने आस-पास के लोगों की देखभाल करके उन्हें मिलने वाले प्यार का प्रतिफल देते हैं। परिणामस्वरूप, हममें से कई लोग उन्हें अपना स्नेहपूर्ण समर्थन देते हैं और उनके शब्दों और कार्यों से प्रेरणा लेते हैं।
कुछ लोगों को यह सोचकर प्रेरणा मिल सकती है कि मुझे और अधिक दान करना चाहिए, या मुझे उनकी तरह उदार बनना चाहिए। बेशक, दूसरों को दान देने से भाग्य का एक हिस्सा बढ़ जाता है। हालांकि, मैंने अपने अनुभव में यह भी देखा है कि इसका मतलब यह नहीं है कि आपको हमेशा उदार रहना चाहिए। कभी-कभी, उदारता आपके जीवन को बेहतर बनाने के बजाय उसे बदतर बना सकती है।

“मुझे पैसे बचाने में कोई कामयाबी नहीं मिल रही है। यह बहुत अजीब है। मैं ज्यादा खर्च भी नहीं करता।”
मेरी एक दोस्त थी, स्टेला, जो हमेशा शिकायत करती रहती थी कि उसकी सहकर्मी के मुकाबले उसके पास हमेशा पैसे की कमी रहती है। उसकी सहकर्मी हमेशा मुस्कुराती रहती थी क्योंकि उसकी बचत बढ़ती जा रही थी। दोनों को हर महीने एक ही दिन बराबर वेतन मिलता था। स्टेला की जीवनशैली भी कोई बहुत खर्चीली नहीं लगती थी। मैं सोचती थी, आखिर उसके पास कभी पैसे क्यों नहीं होते?
कुछ समय बाद ही मुझे समझ आ गया कि स्टेला को परेशानी क्यों हो रही थी। उसकी समस्या दूसरे लोग और उनसे उसका व्यवहार था।
स्टेला स्वभाव से ही उदार थी। जब भी उसका मन करता, वह अपने आसपास के लोगों को बढ़िया दावत देने में कभी संकोच नहीं करती थी, और वह हमेशा अपने दोस्तों और परिवार के सदस्यों को जन्मदिन के उपहार देती थी। अगर उसके किसी परिचित को पदोन्नति मिलती, कोई नया घर लेता, स्नातक की उपाधि प्राप्त करता या किसी स्कूल में दाखिला लेता, तो वह उन्हें बधाई का उपहार भेजने का अवसर कभी नहीं छोड़ती थी। वह हर सालगिरह पर अपने प्रेमी को महंगे पर्स, कपड़े और सौंदर्य प्रसाधन देकर खुश करती थी।
इसके विपरीत, स्टेला अपने ऊपर खर्च करने वाले पैसों को लेकर बेहद कंजूस थी। किताबें खरीदने के बजाय, वह दुकान में खड़े-खड़े ही उतने पन्ने पढ़ लेती थी जितने की उसे ज़रूरत होती थी। सौंदर्य प्रसाधन खरीदने के बजाय, वह केवल प्रमोशनल इवेंट्स से मिले मुफ्त सैंपल्स का ही इस्तेमाल करती थी।
स्टेला की समस्या यह थी कि उसका सारा खर्च दूसरों पर होता था, खुद पर नहीं। इसीलिए उसके पास कभी पैसे नहीं होते थे, क्योंकि वह सब कुछ दूसरों को दे देती थी। बेशक, अगर इससे उसे खुशी मिलती तो कोई समस्या नहीं थी, लेकिन स्टेला लगातार शिकायत करती रहती थी कि उसकी मेहनत से कमाया हुआ पैसा गायब हो रहा है। मैंने उसे समझाया कि उसकी "अत्यधिक उदारता" एक समस्या है।

* * *

मैंने जिस मशहूर टीवी होस्ट का ज़िक्र पहले किया था, उसके किसी की शादी में हज़ारों डॉलर दान करने का कारण उसकी प्रसिद्धि नहीं, बल्कि उसकी अमीरी है। ज़रा सोचिए, अगर स्टेला जैसी कोई आम ऑफिस कर्मचारी, जो महीने में दो हज़ार डॉलर कमाती है, हर शादी में इतना बड़ा दान करती, तो उसकी उदारता की तारीफ़ होने से पहले ही वह बेघर होकर सड़कों पर आ जाती। क्या होता अगर वह सारा पैसा दूसरों पर खर्च करने के बजाय खुद में निवेश करती और इस तरह अमीर और कामयाब बन जाती? तब शायद वह अपनी मर्ज़ी से जितना चाहे उतना दान कर सकती थी, और उसे अपने बैंक खाते की हालत की शिकायत भी नहीं करनी पड़ती।
मेरा मतलब यह नहीं है कि आप कंजूस बनें या दूसरों को दान देने से बचें। मेरा कहना यह है कि दान देने के मामले में भी, प्राथमिकता का एक क्रम होता है, यह बात हमेशा ध्यान में रखें। अगर आप सौभाग्य पाना चाहते हैं, तो सोच-समझकर पैसा खर्च करें, चीजों और लोगों को समझदारी से चुनें और खुद को प्राथमिकता देना कभी न भूलें—कम से कम तब तक जब तक आप बहुत अमीर न हो जाएं और दूसरों को प्राथमिकता देने में सक्षम न हो जाएं!

* * *

माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स ने अपनी 200 अरब डॉलर की संपत्ति का लगभग पूरा हिस्सा दान करने की घोषणा की है। दशकों से वे जलवायु परिवर्तन, गरीबी उन्मूलन आदि सहित कई क्षेत्रों में दान करते आ रहे हैं। अरबपति बनने के बाद से उनके द्वारा किए गए सक्रिय दान से यह और भी स्पष्ट होता है कि उन्होंने धन का सही संतुलन हासिल कर लिया है। उन्होंने पहले खुद में निवेश किया और फिर धनवान बनने के बाद दान करना शुरू किया।
संक्षेप में कहें तो, धनी लोग निवेश करने, लाभ प्राप्त करने और दान देने के तरीकों से भली-भांति परिचित होते हैं। यह एक ऐसी बात है जो पहले उल्लेखित राष्ट्रव्यापी लोकप्रिय टीवी होस्ट और शीर्ष गायक में समान है। आज भी हमारे आस-पास ऐसे लोग हैं जो स्वयं जरूरतमंद होते हुए भी अथक दान करते हैं। क्या आपने इनमें से किसी को अमीर बनते देखा है? शायद नहीं। दूसरी ओर, ऐसे लोगों के उदाहरण आसानी से मिल जाते हैं जो अमीर बनने के बाद भी उदारतापूर्वक दान करते हैं। क्योंकि वे पहले ही एक निश्चित स्तर की सफलता प्राप्त कर चुके होते हैं, इसलिए वे लोग परिस्थितियों की परवाह किए बिना निःस्वार्थ भाव से दान करने में सक्षम होते हैं।

* * *

“बांटने से आशीर्वाद मिलता है” इस कहावत का एक अनकहा पहलू है, जिसे वास्तव में शुरुआत में ही शामिल किया जाना चाहिए, और वह है, “जब आपके पास बहुत कुछ हो।” उन लोगों को देखिए जो दूसरों के लिए खाना या कॉफी खरीदने में संकोच नहीं करते, लेकिन खुद पर कम खर्च करते हैं। आप देखेंगे कि वे अपने सीखने और कौशल हासिल करने के मामले में भी समय और पैसे की कंजूसी करते हैं। जो व्यक्ति खुद पर सही तरीके से निवेश नहीं करता, उसके लिए कभी भी उन चुनिंदा लोगों में शामिल होना और धनी और सफल बनना लगभग असंभव है।
जब आपके पास पर्याप्त धन-संपत्ति नहीं होती, तो दूसरों के साथ बांटने से हमेशा आपको खुशी या संतुष्टि नहीं मिलती। इसके विपरीत, अक्सर इससे आपका जीवन और भी कठिन हो जाता है। एक आरामदायक स्थिति में पहुँचने के बाद भी दूसरों की मदद करने में कभी देर नहीं होती। यदि आप अपने लिए धन-संपत्ति का सदुपयोग करने से पहले ही उसे दूसरों में बाँटने की कोशिश करते हैं, तो अंततः आपके पास अपने लिए कुछ भी नहीं बचेगा। धन के विपरीत, भाग्य को छोटे- छोटे टुकड़ों में नहीं बाँटा जा सकता।
अंत में, यदि आप अमीर बनने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं, तो सबसे पहले खुद पर ध्यान दें। यदि आपके पास अतिरिक्त धन है, तो सबसे पहले खुद में निवेश करें। धन बचाने और संपत्ति अर्जित करने का यही सबसे तेज़ तरीका है।
अपनी ताकत छुपाओ; सही समय का इंतजार करो "अगर आप अपने सपने को सच करना चाहते हैं, तो इसके बारे में जितना हो सके उतना लोगों को बताएं।"
यह सलाह आपको अक्सर आत्म-सहायता पुस्तकों में मिलेगी। लोग कहते हैं कि आपकी इच्छा जितनी प्रबल होगी, आपको अपने आस-पास के सभी लोगों को इसके बारे में उतना ही अधिक बताना चाहिए। ये आत्म-सहायता पुस्तकें कहती हैं कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप अपने सपने को बोलकर बताएं या लिखकर। वे बस इतना कहते हैं कि इसे इतनी ज़ोर से बताएं कि यह किसी मार्गदर्शक तक पहुंचे, जो आकर आपकी मदद करेगा। भले ही यह तुरंत न हो, लेकिन इन आत्म-सहायता लेखकों के

अनुसार, आपके सपनों और महत्वाकांक्षाओं के बारे में दुनिया को बताने के कारण कोई अप्रत्याशित घटना घटित होगी और आपका भाग्य बदल जाएगा।
लेकिन क्या यह सच है? क्या इतने लंबे समय तक अपने प्यारे सपने को संजोकर रखने के बाद, उसे इतनी आसानी से एक अविश्वसनीय दुनिया के सामने प्रकट करना बुद्धिमानी है?

* * *

दोस्तों का एक समूह बचपन से साथ है। चलिए उन्हें नोआ, टेलर और विक्टर कहते हैं। नोआ और टेलर एक छोटी कंपनी में काम करते हैं और उनके कोई खास सपने नहीं हैं। वहीं दूसरी ओर, विक्टर हमेशा से अमीर बनना चाहता था। वह मनोरंजन जगत में कदम रखने का मौका तलाशता रहता था।
उनकी ऊर्जा स्थिर, कार्यालय की नौकरी की तुलना में गतिशील नौकरी के लिए अधिक उपयुक्त थी। वे एक सेलिब्रिटी मैनेजर के रूप में काम करना चाहते थे क्योंकि उनका व्यक्तित्व जीवंत था और उन्हें लोगों से बातचीत करना अच्छा लगता था।
विक्टर अभी बीस साल का ही था, यानी उसका पूरा जीवन उसके सामने था। उसने अपने दो दोस्तों से खुलकर अपने सपने के बारे में बात की। लेकिन हर बार जब उसने ऐसा किया, तो उसे समर्थन मिलने के बजाय उपहास का सामना करना पड़ा। “मैनेजर? तुम? अरे यार।”
उसके सपने को साकार करने का तरीका ढूंढने में मदद करने के बजाय, उन्होंने उस नौकरी को यह कहकर खारिज कर दिया कि यह उस तरह की नौकरी है जो उसे कभी कहीं नहीं ले जाएगी।
नोआ ने कहा, "मैनेजरों को बहुत कम वेतन मिलता है।"
"मैंने सुना है कि उन्हें सप्ताहांत में भी छुट्टी नहीं मिलती," टेलर ने कहा।
ये बयान किसी प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित नहीं थे। नोआ और टेलर मनोरंजन उद्योग में प्रबंधक बनने के बारे में दूसरों से सुनी नकारात्मक बातों को ही दोहरा रहे थे।

नोआ और टेलर की लगातार नकारात्मक टिप्पणियाँ सुनकर विक्टर का हौसला पस्त हो गया। वह अपने सपने पर लगातार सवाल उठाता रहा, सोचता रहा, क्या यही सही रास्ता है? और क्या मैं अपना समय बर्बाद कर रहा हूँ? उसके सबसे अच्छे दोस्त मददगार होने के बजाय बाधा बन रहे थे। विक्टर दिन-ब-दिन और भी निराश और हतोत्साहित होता जा रहा था।
फिर भी उन्होंने अपने सपने को नहीं छोड़ा। उन्होंने फैसला किया कि जब तक उनका सपना सच नहीं हो जाता, तब तक वे चुप रहेंगे।
अभी वह समय नहीं आया है। मैं फिलहाल अपने इरादों को छुपा कर रखूंगा।

* * *

नए साल की शुरुआत होते ही विक्टर सियोल चले गए। उन्होंने एक-एक करके हर एंटरटेनमेंट एजेंसी का दरवाजा खटखटाया, आखिरकार उनमें से एक ने उन्हें छोटे-मोटे काम सौंप दिए, जैसे कि किसी टैलेंट मैनेजर या कास्टिंग डायरेक्टर की सहायता करना। वह प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने अपनी ज़ुबान से एक ऐसे गायक को मैनेज करने का काम हासिल कर लिया, जिसने अभी-अभी अपना करियर शुरू किया था। यह उनकी पहली असली मैनेजमेंट की नौकरी थी।
तब तक विक्टर ने अपने दोस्तों को अपने इरादों के बारे में नहीं बताया था; उसने भविष्य के अपने बड़े सपनों को गुप्त रखा था। वह अपने दोस्तों की नकारात्मकता और दखलंदाजी से निराश नहीं होना चाहता था।
विक्टर ने अपना करियर धीरे-धीरे बनाया। वह मेहनती थे और इतने लोकप्रिय थे कि उन्होंने उन सितारों के साथ काम करना शुरू कर दिया जिन्हें हर कोई नाम से जानता था। जैसे-जैसे उद्योग में उनका करियर आगे बढ़ा, उनकी तनख्वाह भी आसमान छू गई। उन्हें विशेष रूप से लंबे समय तक चलने वाले रिश्तों को पोषित करने और बनाए रखने की उनकी क्षमता के लिए सराहा जाता था। वह अभिनेताओं के साथ संपर्क में रहते थे, उनका हौसला बढ़ाते थे और उनके अनुबंध समाप्त होने के बाद एजेंसी छोड़ने पर भी उनका ख्याल रखते थे। जिन मशहूर हस्तियों के साथ उन्होंने काम किया, वे विक्टर की कार्यशैली से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके।
अंततः, विक्टर ने वर्षों के भरोसे और अपनी साख का इस्तेमाल करते हुए अपनी खुद की मनोरंजन एजेंसी खोली। शुरुआत में, वह केवल कुछ कलाकारों को ही

मैनेज करता था। हालांकि, उसके द्वारा बनाए गए मजबूत संबंधों के कारण लोग अनुबंध शुल्क की परवाह किए बिना उसकी ओर आकर्षित होते रहे। विक्टर द्वारा इतनी देखभाल और सहयोग से मैनेज किए जा रहे कलाकारों का भाग्य भी चमकने लगा। जल्द ही विक्टर लाखों डॉलर की बिक्री वाली एक शीर्ष मनोरंजन कंपनी का सीईओ बन गया। अब जब उसने अपना सपना पूरा कर लिया है, विक्टर अपने दोस्तों से अपने सपने के बारे में खुलकर और गर्व से बात करता है।

जितना आप सोचते हैं, लोग आपके सपनों या लक्ष्यों में उतनी दिलचस्पी नहीं रखते। वे सभी अपनी-अपनी जिंदगी जीने में व्यस्त हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो, आपके आस-पास के लोग आपको सफलता दिलाने वाली ज़रूरी जानकारी देने में सक्षम नहीं हैं, या उनके पास इसके लिए पर्याप्त समय नहीं है। अगर उनके पास ऐसी जानकारी होती भी, तो वे शायद ही कभी इसे आपके साथ साझा करना चाहते हैं। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है, क्योंकि हर किसी के लिए खुद को प्राथमिकता देना स्वाभाविक है। आप अपनी भविष्य की आकांक्षाओं के बारे में चाहे जितनी बात करें, आपके आस-पास के लोगों से मिलने वाली उपयोगी जानकारी की भी एक सीमा होती है।
सौभाग्य से, हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ कोई भी व्यक्ति अपनी ज़रूरत की अधिकांश जानकारी ऑनलाइन आसानी से प्राप्त या सत्यापित कर सकता है। इससे दूसरों को अपने लक्ष्यों के बारे में बताने की आवश्यकता नहीं रह जाती। अपने सपनों के बारे में बहुत अधिक बात करने से नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, जिससे आप गपशप, अनावश्यक दखलअंदाज़ी या ताने-बाने का शिकार बन सकते हैं, जो आपके मनोबल को गिरा देगा। लोग अक्सर उन चीजों के बारे में हल्के में बात करते हैं जिनका उनसे कोई लेना-देना नहीं होता। मेरे अपने अनुभव में, दूसरों की सलाह अक्सर बेकार होती है, और कभी-कभी तो पूरी तरह से निरर्थक होती है।
और ईर्ष्या को भी न भूलें। यह हर क्षेत्र में एक समस्या है, हालांकि मेरे अनुभव में, मनोरंजन उद्योग में यह विशेष रूप से तीव्र होती है। चूंकि कलाकारों का अस्तित्व भाग्य और लोकप्रियता पर निर्भर करता है, इसलिए ऐसे लोग बहुत कम होते हैं जो दूसरों को सफल होते देख सहन कर पाते हैं।

इन्हीं कारणों से, कभी-कभी चीनी कहावत, "अपनी शक्ति को छुपाओ, सही समय का इंतज़ार करो (韜光養晦, Tāo guāng yǎng huì)" का पालन करना आवश्यक हो जाता है। अपने गहरे विचारों को आसानी से प्रकट न करें। इसके बजाय, अपने कौशल को निखारें और सही समय आने पर अपनी मनचाही चीज़ हासिल करें।
अपनी रोशनी को थोड़ा सा ढक कर रखें। तेज धूप आपकी आंखों को चौंधिया सकती है और आपको यह देखने से रोक सकती है कि आप कहां जा रहे हैं। यह आपको उस गर्माहट से भी चिढ़ दिला सकती है जिसका आप आमतौर पर आनंद लेते हैं। यही नियम मानवीय रिश्तों पर भी लागू होता है। जिन प्रतिभाओं और महत्वाकांक्षाओं का अत्यधिक प्रदर्शन होता है, वे अक्सर नफरत और नाराजगी का कारण बनती हैं, और ये आपके भाग्य और सफलता की राह में कांटों की तरह चुभ सकती हैं।
निष्कर्षतः, किसी लक्ष्य को प्राप्त करने की अपनी इच्छा को तब तक छुपाए रखना ही सबसे अच्छा होता है जब तक कि यह 90 प्रतिशत निश्चित न हो जाए कि आप उसे प्राप्त कर लेंगे। अपने सपनों के बारे में खुलकर बोलने से आपकी सारी अच्छी किस्मत छिन सकती है। अंततः, आपके आस-पास के लोग कभी-कभी छोटी- मोटी मदद कर सकते हैं, लेकिन पहल आपको ही करनी होगी।
इसलिए बताओ मत, बस दिखाओ। धनी लोग अपनी सच्ची भावनाओं को चतुराई से छुपाना बखूबी जानते हैं।
अपने इरादों को साइफर में लिखें।
भावनाएं आत्मा के द्वार हैं।
सबसे व्यावहारिक ज्ञान तो उन्हें छुपाने में ही निहित है।
जो व्यक्ति अपने पत्ते खुले रखकर खेलता है, उसे दांव हारने का
खतरा रहता है।
सतर्कता का भाव जिज्ञासुओं की जिज्ञासा का मुकाबला करना चाहिए:
जब आपका प्रतिद्वंदी आपकी तर्कशक्ति को लोमड़ी की तरह भेद लेता
है,
अपने विचारों को स्याही से सनी कटलफिश की तरह छुपा लें।
अपनी पसंद-नापसंद का किसी को पता भी न चलने दें।
कहीं ऐसा न हो कि दूसरे लोग उनका विरोध करके या उनकी चापलूसी करके उनका फायदा उठा लें।
-बाल्टासर ग्रेसियान, स्पेनिश दार्शनिक

और अधिक भाग्य पाने के लिए आपको पहले भाग्य प्राप्त करना होगा।
आपको सौभाग्य किससे मिलता है? आपको धन किससे मिलता है? मेरे विचार से, हमेशा लोग ही इसके लिए जिम्मेदार होते हैं। मनुष्य होने के नाते, हम अकेले रहने के लिए नहीं बने हैं। भले ही दो व्यक्ति एक समान परिस्थितियों में समान प्रयास करें, लेकिन उनके परिणाम अलग-अलग होंगे, क्योंकि रास्ते में उन्हें कई लोगों से मिलने का अवसर मिलता है। ज़रा सोचिए, जीवन में हम जिनसे भी मिलते हैं और बातचीत करते हैं, उनके अनुसार हमारा रवैया भी बदल जाता है। कुछ लोग रिश्तों के मामले में बेहद भाग्यशाली होते हैं, ऐसे लोग जो हमेशा किसी न किसी मददगार के सहारे आगे बढ़ते हैं, चाहे वे कहीं भी जा रहे हों। हम कहते हैं कि उनका भाग्य अच्छा होता है। एक दिन मेरी मुलाकात ऐसे ही एक व्यक्ति से हुई, और इसने मुझे फिर से अच्छे भाग्य के महत्व को समझाया।

2012 की सर्दियों में, जब मैं कॉलेज में पढ़ रहा था, मैंने गंगनम में एक कैफे खोला। यह कोई ऐसा काम नहीं था जो मैंने अचानक ही शुरू कर दिया हो। मैं खूब पैसा कमाना चाहता था, और मैं उस पैसे को बेहतर तरीके से खर्च करना चाहता था।
सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा था, यह देखते हुए कि मैं पहली बार कोई व्यवसाय चला रहा था। मासिक बिक्री लगातार बढ़ती गई, लेकिन स्कूल में मेरी उपस्थिति कम होती गई। मैं व्यवसाय को लेकर और भी महत्वाकांक्षी हो गया, यह सोचकर कि अगर मैं और दुकानें खोलता रहूँ तो मैं बहुत पैसा कमा सकता हूँ। मैंने तो स्कूल छोड़ने और अपना करियर बदलने के बारे में भी सोचा। फिर एक दिन अचानक कोई मेरे सामने आ गया और मेरा रास्ता रोक दिया। वह मेरे उस कार्यक्रम के एक प्रोफेसर थे, जिसमें मैं पढ़ रहा था और जो मुझे मनोरंजन जगत में निर्माता बनने का प्रशिक्षण दे रहे थे।
“आप पैंतालीस साल की उम्र में भी कारोबार कर सकते हैं। आपको अपनी उम्र के हिसाब से उचित निर्णय लेने चाहिए। यही इस दुनिया में जीने का समझदारी भरा तरीका है।”
“मुझे ऐसा नहीं लगता, प्रोफेसर। मैंने पहले ही अपना मन बना लिया है।”

“पच्चीस साल की उम्र के बाद आप प्रोड्यूसर नहीं बन सकते। देर होने से पहले वापस स्कूल जाओ और ज़रूरी ट्रेनिंग हासिल करो।”
मैंने अपना फैसला कर लिया है। मुझे नहीं लगता कि यह बदलेगा।
“लेकिन आपने अभी व्यापार जगत में सिर्फ एक कदम रखा है। मुझ पर भरोसा रखिए; वापस आइए और हम फिर से कोशिश करेंगे। आपका क्या कहना है?” लेकिन…ठीक है, मैं इस बारे में सोचूंगा।
उस बेतुकी बातचीत के बाद भी, प्रोफेसर मुझसे मिलने कैफे आते रहे। मैं जिद्दी था और हार मानने को तैयार नहीं था। इसके अलावा, प्रसारण परीक्षाओं में सफलता की दर—और पास होने पर भी मिलने वाली नौकरियों की संख्या—हजार में एक थी। मैंने इसे एक संकेत माना कि मुझे निर्माता बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। मैं अपने विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों की वास्तविकता में वापस नहीं जाना चाहता था।
प्रोफेसर मुझसे तीन बार मिलने आए। अगर वे दूसरी बार के बाद आना बंद कर देते, तो मैं सारा ध्यान पैसा कमाने के धंधे में लगा देता और कभी प्रोड्यूसर नहीं बन पाता। अब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो एहसास होता है कि वे मेरे लिए ऐसे भाग्यशाली इंसान थे जिनसे शायद मैं अपनी जिंदगी में दोबारा कभी न मिल पाऊँ। उस समय तो मैं बस हैरान था, समझ नहीं पा रहा था कि वे मुझे मीडिया की पढ़ाई पूरी करने के लिए इतना क्यों मना रहे थे। स्कूल तो ब्रॉडकास्टिंग इंडस्ट्री में जाने की चाह रखने वाले छात्रों से भरा पड़ा था; फिर वे उस छात्र के पीछे क्यों पड़े थे जो पहले ही स्कूल छोड़ चुका था? कई साल बाद, मैं अपनी जिज्ञासा को रोक नहीं सका और सीधे प्रोफेसर से ही पूछ लिया।
"प्रोफेसर जी, आपने मुझे वापस स्कूल आने के लिए क्यों कहा?"
"वास्तव मैं तुम जानना चाहते हो?"
"हां, मैं यह समझना चाहता हूं कि आप मुझसे मिलने के लिए इतनी दूर क्यों आए..."
"क्योंकि लोगों के मामले में मेरी किस्मत बहुत अच्छी है।"
"आपका क्या मतलब है?"

* * *

उस दिन मेरे उपकारी ने मुझे जो कहानी सुनाई, वह बहुत ही रोचक थी। प्रोफेसर ने बताया कि पिछले कई दशकों में उनके साथ कुछ अजीबोगरीब घटनाएं हुई थीं, जिनमें कोई न कोई सही समय पर प्रकट होकर उनकी मदद करता था। प्रोफेसर ने इस सौभाग्यशाली और समय पर मिली मदद का श्रेय अपने "लोगों के साथ अच्छे संबंध" को दिया; उन्हें पूरा यकीन था कि उस मदद के बिना वे जीवन में इतनी तरक्की नहीं कर पाते।
“मैंने अपने प्रसारण करियर की शुरुआत पहले प्रांतों में की थी। परीक्षाओं में मेरा भाग्य अच्छा नहीं था, और अच्छे परिणाम के बिना सियोल में प्रसारण करियर शुरू करने की कोई उम्मीद नहीं थी। आज की तरह, तब भी सियोल में प्रसारण क्षेत्र में नौकरी पाना नए स्नातक के लिए बहुत मुश्किल था। लेकिन एक दिन, मुझे सियोल में काम करने वाले एक वरिष्ठ निर्माता का फोन आया। उन्होंने मुझे सियोल आने के लिए कहा, लेकिन यह नहीं बताया कि उन्होंने मुझे क्यों बुलाया है। मेरे पास नौकरी में करने के लिए बहुत काम था, लेकिन फिर भी मैं उनसे मिलने गया। पता चला कि निर्माता ने मनोरंजन विभाग में करियर प्रोड्यूसर के पद के लिए मेरा इंटरव्यू तय कर दिया था। मैंने इंटरव्यू पास कर लिया और तुरंत काम करने के लिए सियोल चला गया। वह वरिष्ठ निर्माता वास्तव में मेरे 'ग्वि-इन' थे।”
प्रोफेसर की कहानी जारी रही। चमत्कारिक संबंध यहीं खत्म नहीं हुए।
“बात यहीं खत्म नहीं हुई। मुझे ऐसे शानदार सहकर्मी और कलाकार मिले जिन्होंने मुझ पर भरोसा किया और स्वेच्छा से मेरा साथ दिया। इसी वजह से मैंने जिन भी मनोरंजन कार्यक्रमों पर काम किया, वे सभी बेहद सफल रहे। समय बीतता गया और देखते ही देखते मैं बूढ़ा हो गया। प्रसारण जगत में, अक्सर निर्माताओं के शो उम्र बढ़ने के साथ-साथ कम पसंदीदा समय पर शिफ्ट हो जाते हैं, जिससे मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि क्या मेरे बेहतरीन दिन बीत चुके हैं।”
“लेकिन फिर किसी ने मुझे विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बनने का प्रस्ताव दिया। मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि यह कितना अच्छा समय था। इसलिए एक बार फिर, मैंने ग्वाई-इन द्वारा बढ़ाए गए हाथ को थाम लिया। यही कारण है कि मैं आप सभी को पढ़ाने आया हूँ। मैं उन सभी को गिन नहीं सकता, लेकिन मेरे जीवन में ऐसी कोई चीज नहीं है जो मैंने बिना किसी की मदद के हासिल की हो। मैंने जो भी कदम उठाया, मैं किसी और का हाथ थामे आगे बढ़ता रहा, फिर किसी और

का हाथ और दो कदम आगे। इसी तरह मैं जीवन में कदम-दर-कदम आगे बढ़ता रहा। जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि मेरा पूरा जीवन ऐसा ही रहा है।”
“क्या इसीलिए आप मुझसे मिलने आए हैं?”

* * *

जब मैंने अपने जीवन के बारे में सोचा, तो मुझे एहसास हुआ कि मेरा अनुभव भी कुछ ऐसा ही था। मैंने अपने प्रोफेसर द्वारा बढ़ाए गए समर्थन का सहारा लेकर ब्रॉडकास्टिंग प्रोड्यूसर बनने का अपना सपना पूरा किया था। फिर, जब मैंने ब्रॉडकास्टिंग की दुनिया को दोबारा छोड़ा, तो किसी और ने मुझसे संपर्क किया और मुझे नौकरी की पेशकश की।
"निर्देशक यू, क्या आप मेरे साथ काम करने में रुचि रखेंगे?"
मुझे टीवी चोसुन के एक उच्च पदस्थ अधिकारी का फोन आया था। उन्होंने देश का सबसे सफल आइडल प्रोग्राम बनाया था। कोरियाई प्रसारण उद्योग में हर कोई उन्हें जानता था। ऐसे उच्च पदस्थ अधिकारी द्वारा मुझे एक बिल्कुल नया प्रोग्राम शुरू करने का अवसर देना मेरे लिए सुनहरा मौका था।
उस समय मैंने अभी-अभी एक और स्टेशन छोड़ा था, इसलिए मैंने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया। एक नया कार्यक्रम बनाना मेरे लिए एक बहुत बड़ा मानसिक बोझ लग रहा था, साथ ही मेरा व्यवसाय भी अच्छा चल रहा था, इसलिए मुझे पैसे कमाने में मज़ा आ रहा था।
कुछ ही महीनों बाद मुझे एक और कॉल आया। इस बार मैंने सब कुछ रोक दिया और तुरंत उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। उन्होंने मुझे ऐसा प्रस्ताव दिया जिसे मैं ठुकरा नहीं सकता था: मुझे अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने की पूरी छूट दी गई। प्रसारण उद्योग में, जहाँ वरिष्ठता सीधे उम्र से जुड़ी होती थी, एक युवा निर्माता के रूप में पूर्ण अधिकार मिलना दुर्लभ था।

* * *

मुझे अभी तक अपने प्रोफेसर से इस बात का सटीक जवाब नहीं मिला था कि उन्होंने मुझ जैसे साधारण व्यक्ति की मदद क्यों की, इसलिए मैंने उनसे

दोबारा पूछा। उनके चेहरे पर मुस्कान फैल गई। प्रोफेसर ने मुझसे कहा: “क्योंकि मैंने तुममें क्षमता देखी। मुझे लगा कि अगर मैं अपना हाथ बढ़ाऊँ, तो तुम उसे थाम लोगे। मैं अपने पूरे जीवन में उन लोगों का ऋणी हूँ जिनसे मैं मिला और जिन्होंने मुझे सौभाग्य दिया। इसीलिए मुझे भाग्य पर इतना विश्वास है। अगर आपको किसी से मदद मिलती है, तो आपको भी किसी और की मदद करनी चाहिए। इसी तरह सौभाग्य आपके पास लौटकर आता है।”
इससे बात स्पष्ट हो गई। प्रोफेसर अपनी किस्मत को संजो रहे थे। उन्हें पहले भी कई बार दूसरों से सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जिसकी बदौलत वे कार खरीद सके, घर खरीद सके और आर्थिक तंगी से मुक्त हो सके।
वे दूसरों के जीवन में अपनी मदद से मिलने वाली खुशी को किसी और से बेहतर जानते थे। वे अपने द्वारा अर्जित और प्राप्त सौभाग्य को अनदेखा नहीं कर सकते थे। इसलिए जब भी उन्हें मौका मिलता, वे मदद, सौभाग्य और समृद्धि के बीज इधर-उधर बिखेर देते थे, और बदले में फल प्राप्त करने के किसी भी अवसर के लिए आभारी रहते थे।
लेकिन वे किसी भी अनजान व्यक्ति को मदद की पेशकश नहीं करते थे। वे केवल उन्हीं लोगों की मदद करते थे जो उनकी मदद का हाथ थामना जानते थे। एक तरह से देखा जाए तो वे उदार और दानशील थे। साथ ही, दूसरों को सौभाग्य देकर अपना सौभाग्य बढ़ाने का उनका दृढ़ संकल्प पूरी तरह से स्वयं पर केंद्रित था। यह एक तरह का संभाव्यता का खेल था। प्रोफेसर ने इस तरह के लेन-देन के दोनों पहलुओं का कई बार अनुभव किया था: किसी से मदद लेने के बाद दूसरों की मदद करना और किसी ऐसे व्यक्ति से मदद प्राप्त करना जिसकी उन्होंने पहले मदद की हो।
अंततः, आपके लिए मददगार साबित हो सकने वाले लोग वे हो सकते हैं जिनसे आप पहले ही मिल चुके हैं या भविष्य में मिलेंगे। मैंने यह सीखा है कि जिन लोगों ने मेरी मदद की है या जिन्हें मैंने मदद की है, उनके मददगार बनने की संभावना अधिक होती है।
फिर भी, यह उम्मीद न करें कि दूसरों की मदद हमेशा आपके लिए सौभाग्य बनकर लौटेगी। अगर ऐसा होता है तो अच्छी बात है, लेकिन अगर नहीं भी होता है तो भी कोई बात नहीं। बस इसे ऐसे समझें कि आपने जो अतिरिक्त सौभाग्य प्राप्त किया है, उसे आप इधर-उधर बीज की तरह बो रहे हैं। फिर, किसी दिन, वह आपके पास लौट आएगा। जीवन किसी की मदद या देखभाल के बिना अधूरा है।

सफल लोग इसी तरह सौभाग्य प्राप्त करते हैं। वे मदद लेने और देने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं, इस बात से अवगत रहते हैं कि सौभाग्य कभी भी आ सकता है, इसलिए सौभाग्य बोना और जब भी वह प्रकट हो, उसे प्राप्त करना दुर्भाग्य के अपरिहार्य समयों से पार पाने में सहायक होता है। उनके लिए, लोग धन के समान हैं; लोग बीज के समान हैं।
अपने ग्वाई-इन को कैसे पहचानें धनी लोग अपने दायरे में किसी को भी आसानी से शामिल नहीं करते। वे अपने व्यवसाय और विवाह के मामले में बेहद चुनिंदा होते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि एक व्यक्ति उनकी संपत्ति पर कितना बड़ा प्रभाव डाल सकता है। हाल के दिनों में फ्रीक्वेंसी वीडियो की लोकप्रियता में हो रही वृद्धि और लाखों व्यूज़ मिलना भी इसी से संबंधित है।
रेडियो तरंगों या ध्वनि तरंगों की तरह, प्रत्येक व्यक्ति की एक अनूठी आवृत्ति होती है। शांत अवस्था में हमारी आवृत्ति कम होती है, और उत्तेजित होने पर बढ़ जाती है। हम दूसरों से किसी न किसी हद तक प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते, ठीक वैसे ही जैसे हवा चलने पर पेड़ हिलते हैं। इसमें आपका प्रेमी/प्रेमिका, जीवनसाथी, सहकर्मी, व्यावसायिक सहयोगी या मित्र शामिल हैं। परिणामस्वरूप, किसी ऐसे व्यक्ति से मिलना जो आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरे, अपने आप में बहुत से दुर्भाग्य को दूर कर सकता है। यह आपके जीवन में भी बहुत बड़ा बदलाव ला सकता है।
वैसे तो, ग्वाई-इन ढूंढना काफी आसान है। साथ में भोजन करें। भाग्य की दुनिया में भोजन करना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। पुराने समय में भोजन की कमी थी, इसलिए जीविका कमाना ही सबसे बड़ी चुनौती थी। म्योंगली के विज्ञान के अनुसार, भोजन के मामले में सौभाग्य का संबंध धन और समृद्धि से था। इसलिए, किसी दूसरे व्यक्ति के साथ भोजन करना अमूल्य आशीर्वाद का प्रतीक बन गया और एक-दूसरे की ऊर्जा का प्रत्यक्ष मूल्यांकन करने का एक अवसर बन गया।
कुछ लोग आपके साथ भोजन करने मात्र से ही आपकी भूख बढ़ा देते हैं और आपका मनोबल बढ़ा देते हैं, जबकि कुछ अन्य लोग आपके सामने स्वादिष्ट भोजन होने पर भी आपकी भूख कम कर देते हैं और आपकी ऊर्जा का स्तर गिरा देते हैं। इसके अलावा, कुछ लोगों के साथ आप सहजता से भोजन कर सकते हैं, जबकि दूसरों के साथ आपको हर समय असहजता महसूस होती है। जैसा कि आप देख सकते हैं, किसी

व्यक्ति के साथ भोजन साझा करने से आपको एक ऐसा माहौल मिलता है जिसमें आप उनकी ऊर्जा और आप पर उसके प्रभाव का तुरंत आकलन कर सकते हैं।

तो अगर आप यह जानना चाहते हैं कि कोई व्यक्ति आपके साथ घुलमिल पाएगा या नहीं, तो साथ में खाना खाएं। यही कारण है कि किसी व्यावसायिक बैठक या डेट से ठीक पहले हम खाने की बात करते हैं: "चलिए कभी साथ में खाना खाते हैं।" नोट्स छोड़ें
*1 कोरिया के दक्षिणपूर्वी तट पर स्थित एक बंदरगाह शहर।
*2 किसी व्यक्ति में एक ग्वी (कीमती, मूल्यवान) एक मूल्यवान संबंध है, एक ऐसा व्यक्ति जिसकी उपस्थिति महत्वपूर्ण है और जिसका आपके जीवन में एक विशेष अर्थ है।
*3 टोंगयोंग दक्षिण कोरिया के ग्योंगसांग प्रांत में स्थित एक शहर है, जो सियोल से कार द्वारा लगभग 378 किमी (235 मील) दूर है। यह अपने समृद्ध मछली पकड़ने के उद्योग के लिए जाना जाता है, और यह शहर समुद्री भोजन का एक प्रमुख केंद्र है, जो अपने सीप, एंकोवी और समुद्री स्क्वर्ट के लिए प्रसिद्ध है।
*4 एक दक्षिण कोरियाई वीडियो गेम कंपनी जो लाइनएज और गिल्ड वॉर्स जैसे एमएमओआरपीजी बनाने के लिए जानी जाती है।

6

भाग्य के पहिये से कुचलने से कैसे बचें

धनी परिवारों पर ही हमेशा विपत्तियां क्यों आती हैं?
एक दिन, एक बड़े अखबार में काम करने वाले मेरे एक दोस्त ने मुझे कुछ ऐसा बताया जिससे मैं स्तब्ध रह गया। प्रसारण क्षेत्र में काम करते हुए मैंने इतनी घटनाएं और दुर्घटनाएं सुनी थीं कि ज्यादातर खबरों पर मुझे कोई हैरानी नहीं होती थी। लेकिन इस बार मामला अलग था। एक बेहद धनी परिवार पर विपत्ति आ पड़ी थी। ऐसा लगा जैसे "स्वर्ग में संकट" छा गया हो, मानो समृद्धि और शांति से भरे पवित्र देश में विपत्ति आ गई हो।
“क्या आप XX ग्रुप के अध्यक्ष को जानते हैं? उनके बेटे का कल निधन हो गया।”
“बस यूं ही? क्या हुआ?”
मैंने सुना था कि यह आत्महत्या थी।
“क्या आप सच कह रहे हैं? उसे क्या हो गया होगा? वह तो इतने अमीर परिवार से था…”
“फिलहाल यह बात गुप्त रखी गई है। हमें कल रात उस समूह से फोन आया था। उन्होंने हमसे कहा कि जब तक अंतिम संस्कार पूरे नहीं हो जाते, तब तक इसे सार्वजनिक न करें। फैसला हो चुका है, इसलिए सभी इसे गुप्त रख रहे हैं।”
हे भगवान, मुझे विश्वास नहीं हो रहा है।
मुझे भी नहीं। लगता है पैसा ही सब कुछ नहीं होता।

* * *

एक जाने-माने कारोबारी के परिवार ने अपने बेटे को खो दिया था। परिवार का कहना था कि यह घटना तब घटी जब युवक विदेश में पढ़ाई कर रहा था, लेकिन मौत के सटीक हालात और कारण स्पष्ट नहीं थे। लोग तरह-तरह के कयास लगा रहे थे, सोच रहे थे कि क्या वह पार्टियों में नशे में धुत हो गया था या गलत लोगों की संगति के कारण मुसीबत में फंस गया था। निराधार अफवाहें हर जगह फैल रही थीं।
"क्या उन्हें पता है कि उसने ऐसा क्यों किया?"
"कौन जाने? कोई कुछ नहीं बोल रहा है।"
"अरे, आपको क्या लगता है कि अमीर परिवारों पर ही लगातार विपत्तियां क्यों आती हैं?"
“उन्हें इस बात का एहसास ही नहीं है कि वे कितने भाग्यशाली हैं। क्या उन्होंने उस नाटक में यही नहीं कहा था? अगर किसी गरीब और अमीर व्यक्ति में कोई एक बात समान है, तो वो ये है कि दोनों को ही जीवन नीरस लगता है। मैं कभी इतना अमीर नहीं रहा, इसलिए मुझे पता नहीं। खैर, लगता है कि पैसा हमेशा खुशी नहीं लाता। इतने अमीर होकर भी इतने दुखी…”
क्या अत्यधिक धन होने से समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं? क्या इसका अर्थ यह है कि अकल्पनीय रूप से धनी होने की तुलना में एक साधारण, सरल व्यक्ति होना बेहतर है? जाहिर है, जितना अधिक धन होगा, उतना ही अधिक सुख मिलेगा।
जब मैंने इस कहानी के बारे में सोचा, तो मुझे एहसास हुआ कि एक बात के बारे में मैं गलत था: स्वयं पैसे का स्वरूप।

* * *

चाहे उन्हें इसका एहसास हो या न हो, जनता हमेशा अमीरों के बारे में जानने को उत्सुक रहती है। धनवान परिवार में जन्म लेना सबसे बड़ा सौभाग्य माना जाता है। यह एक ऐसा जीवन है जिसे हर कोई चाहता है, खासकर आजकल। अमीर होने पर आप जो चाहें पा सकते हैं—गाड़ियाँ, विलासिता की वस्तुएँ, भविष्य। संक्षेप में, अमीर होना एक आशीर्वाद है, स्वर्ग से मिला एक उपहार है।

लेकिन एक पल रुककर इस पर गौर कीजिए। चाहे कोरिया के चैबोल हों या अन्य देशों के तथाकथित "अति धनाढ्य", इन परिवारों को अक्सर अपने बच्चे को खोने का दुख झेलना पड़ता है। थोड़ी सी खोजबीन करने पर पता चलता है कि कई प्रमुख उद्यमियों या चैबोलों ने इस तरह की त्रासदी का सामना किया है। बात यहीं खत्म नहीं होती, आपको आत्महत्या के प्रयास और ड्रग्स या शराब पीकर गाड़ी चलाने से जुड़े सार्वजनिक घोटाले भी देखने को मिलेंगे। इसके अलावा, परिवार के सदस्यों के बीच कलह, तलाक और विरासत के विवाद लगातार उनकी शांति भंग करते रहते हैं। इन परिवारों के साथ छोटी-बड़ी त्रासदियां घटती-बढ़ती रहती हैं, भले ही आम जनता को इनकी जानकारी न हो।

* * *

आप यह कैसे समझा सकते हैं कि अमीर परिवारों पर लगातार विपत्तियाँ क्यों आती रहती हैं? ऐसा क्यों लगता है कि भाग्य कभी उनका पीछा नहीं छोड़ता? भाग्य की दुनिया में कदम रखने के बाद से मैंने अनगिनत बार खुद से ऐसे ही सवाल पूछे हैं। मैं समस्या की जड़ खोजना चाहता था। मैं भाग्य के उन टुकड़ों को खोजना चाहता था जो उन्हें लगाम की तरह बांधे रखते हैं, उन्हें एक-एक करके जोड़ना चाहता था, और एक ऐसा संतोषजनक उत्तर खोजना चाहता था जो हमेशा के लिए सब कुछ स्पष्ट कर दे। कुछ समय बाद, मैं उस मुकाम पर पहुँच गया जहाँ मुझे लगा कि आखिरकार मुझे उस लंबे समय से चले आ रहे रहस्य को सुलझाने की कुंजी मिल गई है: कर्म।
बच्चे अपने माता-पिता से प्राप्त जीन के साथ जन्म लेते हैं। इन जीन में माता-पिता के बारे में कई तरह की जानकारी होती है, जो उनके पालन-पोषण के वातावरण, शिक्षा के स्तर और माता-पिता से मिले आर्थिक सहयोग से प्रभावित होती है। इससे बुद्धि, भावनात्मक लचीलापन और शारीरिक स्वास्थ्य जैसी विरासत का संकेत मिलता है। बच्चे को यह तय करने का अधिकार नहीं होता कि वह इन जीन को प्राप्त करना चाहता है या नहीं, लेकिन जीवन में आगे बढ़ते हुए उसे लगातार इस मानसिक और भौतिक "कारण और प्रभाव के प्रवाह"—अपनी मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक विरासत—का सामना करना पड़ता है। यही कर्म है। विशेष रूप से चाएबोल परिवारों के वारिसों को बड़ी मात्रा में संसाधन और धन विरासत में मिलता है, जिसमें पारिवारिक धन का कर्म भी शामिल होता है।

परिस्थिति के अनुसार, धन का अच्छा और बुरा दोनों तरह का प्रभाव हो सकता है। बच्चों को उनके माता-पिता के बुरे कर्मों के लिए दंडित किया जा सकता है, या उन्हें उनके अच्छे कर्मों के लिए पुरस्कृत किया जा सकता है। अधिकतर मामलों में, अच्छा कर्म ही होता है। धन मनुष्य की इच्छा और संकल्प का परिणाम है, इसलिए इससे जुड़े कर्मों के परिणाम कहीं अधिक गंभीर होते हैं।

* * *

मेरे सामने बैठे व्यक्ति को देखकर ऐसा लग रहा था कि हमारी मुलाकात के दौरान कोई न कोई बात उन्हें परेशान कर रही थी। वे एक दवा कंपनी के चेयरमैन थे, जिसकी स्थापना उन्होंने अट्ठाईस साल की उम्र में की थी। उनकी कंपनी ने एक ऐसी सर्दी-जुकाम की दवा विकसित की थी जो इतनी कारगर साबित हुई कि पूरे देश में घर-घर में मशहूर हो गई और उन्होंने खूब धन कमाया। उनकी कंपनी अब एक सुस्थापित मध्यम आकार का व्यवसाय थी, जिसका वार्षिक कारोबार तीन सौ मिलियन डॉलर था, और ऐसा लग रहा था कि सब कुछ उनके और कंपनी के लिए अच्छा चल रहा है। फिर भी, उम्र बढ़ने के साथ-साथ, एक-दो ऐसी परेशानियां तो जरूर आती हैं, जिन्हें आप दूसरों के साथ साझा नहीं करना चाहते।
"मेरी कोई संतान नहीं है जिसे मैं अपनी कंपनी सौंप सकूं।"

* * *

एक झुग्गी बस्ती में जन्मे चेयरमैन दिन में डिलीवरी बॉय का काम करते थे और रात में स्कूल जाते थे। वे एक सफल, आत्मनिर्भर व्यक्ति का जीता-जागता उदाहरण थे। तीस से साठ वर्ष की आयु तक उन्होंने अपना सारा समय नई दवाइयाँ विकसित करने और अपनी कंपनी का प्रबंधन करने में लगाया। उन्होंने कभी छुट्टी नहीं ली, न ही उनका कोई शौक था। वे बस काम करते रहे, काम करते रहे और पैसा कमाते रहे। बाद में उन्होंने अपनी कंपनी को सार्वजनिक किया और एक उद्यमी के रूप में नाम कमाया। इतनी प्रभावशाली कंपनी को शून्य से खड़ा करने के बाद, वे सेवानिवृत्ति के बाद मिलने वाली राहत और मानसिक शांति की आशा कर रहे थे। उन्होंने कल्पना की थी कि कंपनी को अपने बच्चों को सौंपने के बाद वे वृद्धावस्था का आनंद उठाएँगे। अफसोस, यह एक कोरी कल्पना ही थी।

उनके बच्चे उनसे बिल्कुल असहमत थे। उनके लिए चेयरमैन एक गैर-मौजूद पिता थे, जो हमेशा काम में इतने डूबे रहते थे कि परिवार के साथ मुश्किल से ही समय बिता पाते थे। उन्होंने अपने बेटे के दीक्षांत समारोह में भी शिरकत नहीं की थी। बच्चों को चेयरमैन एक बेहद दुखी इंसान लगते थे। उन्होंने मन ही मन ठान लिया, "मैं कभी अपने पिता जैसा नहीं बनूंगा।"
उस व्यक्ति ने अपना पूरा जीवन अपनी कंपनी बनाने में लगा दिया, लेकिन उसके बच्चों ने उसे नज़रअंदाज़ कर दिया। दूसरी ओर, उसके बच्चों ने तमाम कोशिशों के बावजूद अपने पिता की स्वीकृति कभी नहीं पाई। स्वाभाविक रूप से, कंपनी को अपने पिता को सौंपने वाले माता-पिता और इससे कोई नाता नहीं रखने वाले बच्चों के बीच टकराव शुरू हो गया।

लोग कहते हैं, “पहली पीढ़ी के चैबोल (बड़े व्यापारिक उद्यम) खूब फलते- फूलते और सफल होते हैं; दूसरी पीढ़ी को तो बस किसी तरह टिके रहने के लिए भी सराहना मिलनी चाहिए; लेकिन तीसरी पीढ़ी को संकट का सामना करना ही पड़ता है।” दूसरे शब्दों में, पहली पीढ़ी, यानी संस्थापक, सफलता के प्रति जुनूनी होने और आसानी से हार न मानने के कारण तेजी से विकास करते हैं। हालांकि, ये गुण दूसरी और तीसरी पीढ़ी में नहीं होते, क्योंकि उन्हें संस्थापक जैसी कठिनाइयों का सामना कभी नहीं करना पड़ा। दूसरी और तीसरी पीढ़ी को अप्रत्याशित दबाव और पीड़ा झेलनी पड़ती है क्योंकि उनके माता-पिता अपने बच्चों और पोते-पोतियों से अपनी बनाई हुई विरासत को आगे बढ़ाने की उम्मीद करते हैं। यही पीढ़ियों के बीच संघर्ष और मतभेदों का कारण बनता है। अगर वे इन मतभेदों को सुलझाने में कामयाब नहीं होते, तो यह सब बड़े पैमाने पर असंतोष का कारण बन सकता है।
अंततः, क्षमता से अधिक धन होना अभिशाप ही है। यह आपको बीमारी, नशे, घोटालों, आत्महत्या और भाग्य के अन्य जालों की ओर खींचता है। परिवार को भाग्यशाली माना जाता है यदि इस तरह की विपत्ति केवल एक व्यक्ति के साथ घटे। कुछ मामलों में, यह पूरी कंपनी को तबाह कर देता है या परिवार की नींव को हिला देता है। आपदा का पैमाना आमतौर पर परिवार के पास मौजूद धन की मात्रा के अनुपात में होता है।

यही धन के अनसुलझे कर्म की वास्तविकता है, वह कर्मिक बोझ जो अगली पीढ़ी को हस्तांतरित होता रहता है। सब कुछ देखते हुए, अत्यधिक धनवान परिवार में जन्म लेने की तुलना में एक सामान्य रूप से धनी व्यक्ति होना शायद बेहतर है।
अंततः, दवा कंपनी की जिम्मेदारी अध्यक्ष के सबसे बड़े बेटे के कंधों पर आ गई, जिसने उनकी इच्छा के विरुद्ध कार्यभार संभाला। यह कहना स्वाभाविक है कि युवा अध्यक्ष को वरिष्ठ अधिकारियों के कड़े विरोध का सामना करना पड़ा।
एक समृद्ध चाएबोल परिवार में जन्म लेना कई लोगों के लिए ईर्ष्या का कारण बनता है, लेकिन चेयरमैन के सबसे बड़े बेटे को ऐसा लगा जैसे उससे सारी खुशियाँ छीन ली गई हों। उसे न केवल अपने पिता की कंपनी विरासत में मिली थी, बल्कि सैकड़ों कर्मचारियों की आजीविका की ज़िम्मेदारी के साथ-साथ पारिवारिक संपत्ति को बनाए रखने और व्यवसाय को और भी आगे बढ़ाने का दबाव भी था।
कर्म की तुलना एक ऐसे वाहन से की जा सकती है जो केवल आगे बढ़ता है और कभी रुकता नहीं। धन के साथ आने वाला क्रोध, चिंता और उत्पीड़न, चेयरमैन द्वारा अपने सबसे बड़े बेटे को विरासत में मिली चीजों का हिस्सा थे। भाग्य का सातवाँ शत्रु
क्या खुद को भाग्यशाली कहना वाकई भाग्यशाली बना देता है? मैंने कई स्व-सहायता पुस्तकें देखी हैं जिनमें इसी तरह का संदेश दिया गया है। बेशक, आत्म-सुझाव कारगर हो सकता है, लेकिन भाग्यशाली बनना इतना आसान और झटपट नहीं होता। यह सिर्फ शब्दों से हासिल नहीं किया जा सकता। खुद से यह कहना कि "मेरा भाग्य बेहतर होगा" इसकी गारंटी नहीं है। अगर आप भाग्य को मेरी तरह समझते हैं, तो आप जानते हैं कि यह एक ऐसा तथ्य है जो बदलने वाला नहीं है। तो फिर इसके विपरीत क्या होगा? अगर कोई और आपसे कहे कि आप भाग्यशाली होने वाले हैं? मैं अपने सभी ग्राहकों को यही बात बताता हूँ ताकि वे एक जैसी प्रतिक्रिया दें। यह सुनकर उन्हें बहुत खुशी होती है कि अब उनके लिए उम्मीद की किरण है। वे उन बच्चों की तरह थे जिन्हें मिठाई मिली हो। वे सभी उत्साह से बोले:
मैं वादा करता हूँ कि अब से मैं कड़ी मेहनत करूंगा!

“इससे मुझे बहुत ताकत मिलती है। मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करूंगा!”
लेकिन बहुत कम लोग ही अपने शब्दों को अमल में लाते हैं। भविष्य को एक कदम पहले से जान लेने के भी गंभीर दुष्प्रभाव हो सकते हैं।

* * *

मेरे एक दोस्त का दोस्त, जिसका नाम हम निक रखेंगे, येओइडो[*1] के वित्तीय ज़िले में काम कर रहा था और अच्छी तरक्की कर रहा था। निक एक निवेश बैंकर था जो चालीस की उम्र में सेवानिवृत्त होने की योजना बना रहा था। वह ट्रेडिंग का काम छोड़ने के बाद भी पैसा कमाना चाहता था। काफी सोच-विचार के बाद उसने अपना व्यवसाय शुरू करने का फैसला किया।
शायद एक अनुभवी वित्तविद होने के नाते, उन्हें आर्थिक मामलों का अच्छा ज्ञान था और व्यापार की अच्छी समझ थी। उन्होंने सबसे पहले कॉफी उद्योग में कदम रखा। उस समय विनिमय दरें स्थिर थीं और घरेलू बाजार भी काफी गतिशील था, जिससे उन्हें अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए अनुकूल वातावरण मिला।
निक ब्राजील, कोलंबिया और इथियोपिया जैसे देशों से कॉफी बीन्स आयात करता था और उन्हें उचित दामों पर बेचता था। वह कॉफी बाजार में अग्रणी बनने के लिए कड़ी मेहनत करता था। ज़ाहिर है, उस पर बहुत दबाव था। अपने व्यवसाय में शुरू में निवेश किए गए एक लाख डॉलर खोने का डर उसे रातों को सोने नहीं देता था।
फिर भी, निक के लिए हालात अच्छे दिख रहे थे। एक दिन जब मेरी उससे अचानक मुलाकात हुई, तो मैंने उसे कुछ अनौपचारिक सलाह दी। मुझे आभास हो गया था कि उसकी किस्मत चमकने वाली है, और मैं आशा कर रहा था कि वह इसका लाभ उठाएगा। "अगला साल कारोबार के लिए अच्छा साल रहने वाला है।"
निक अपनी आंखों में आशा की एक चमक लिए घर लौटा।

लगभग एक महीने तक, ऐसा लग रहा था कि हालात सुधर रहे हैं। निक को काफी शांति महसूस हो रही थी। उसकी अनिद्रा की समस्या भी ठीक हो गई थी। दुर्भाग्य से, वह एक महत्वपूर्ण बात को नज़रअंदाज़ कर रहा था। हमारी बातचीत से पहले, निक अपना 80 प्रतिशत समय चिंता करने में बिताता था और बाकी 20 प्रतिशत समय में ही ठोस प्रयास करता था। यह जानते हुए कि अब उसकी किस्मत चमकने वाली है, वह अपने व्यवसाय की चिंता कम कर सकता था और इसके बजाय सार्थक कदम उठा सकता था। कुछ घरेलू कंपनियाँ पहले से ही बाजार पर हावी होने लगी थीं, जिससे निक को अपने उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए था— उदाहरण के लिए, कम से कम व्यक्तिगत कैफे मालिकों को नमूने वितरित करना। लेकिन अफसोस, निक ने सारा भरोसा किस्मत पर छोड़ दिया और प्रयास करना ही बंद कर दिया।
जैसे-जैसे निक का ध्यान अपने कारोबार से हटता गया, उसने डेटिंग शुरू कर दी। उसका कारोबार स्थिर तो नहीं था, लेकिन निक महिलाओं से मिलने-जुलने लगा और दोस्तों के साथ समय बिताने लगा। उसने कुछ महंगे शौक भी पूरे किए जिन्हें वह टालता आ रहा था। इसके लिए उसके पास एक ही बहाना था: "उसने कहा था कि अगले साल कारोबार अच्छा चलेगा।"

* * *

तीन महीने बीत गए। निक का वजन बढ़ गया था और वह ज़्यादा शराब पीने लगा था। वह अपना 80 प्रतिशत समय व्यर्थ के कामों में बर्बाद कर रहा था। एक दिन, मेरी उससे मुलाक़ात हुई और मैंने उससे पूछा: “क्या कोई बात है? मैं कैसे कहूँ… तुम इतने आराम से, इतने बेफिक्र लग रहे हो।”
उन्होंने बेपरवाही भरे अंदाज में जवाब दिया कि वह इस पर काम कर रहे हैं, और मुझे बताया कि वह एक संभावित ग्राहक से बात कर रहे थे जो पाजू, ग्योंगगी-डो में सात हजार वर्ग फुट का कैफे खोलने वाला था।[*2]
निक के जवाब ने मुझे चौंका दिया। यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि अपनी मौजूदा स्थिति में निक की कंपनी बाज़ार में पिछड़ने वाली थी। उस समय भी, उसके प्रतिस्पर्धी दिन-रात मेहनत कर रहे थे, एक-दूसरे से ज़बरदस्त प्रतिस्पर्धा कर रहे थे ताकि ज़्यादा से ज़्यादा ग्राहक हासिल कर सकें और

उपनगरों में तेज़ी से फैल रहे बड़े-बड़े कैफे को निशाना बना रहे थे। निक का अपने "सफल सौदे" को लेकर इतना उत्साहित होना, जबकि उसके हाथ में एक कागज़ भी नहीं था, सरासर मूर्खतापूर्ण लग रहा था।
तब मुझे एहसास हुआ कि मैंने एक गंभीर गलती कर दी है। मुझे किसी दूसरे व्यक्ति के भाग्य में इतनी लापरवाही से दखल नहीं देना चाहिए था। मास्टर कांग हेओन, जो पहले संगीत समीक्षक थे और बाद में म्योंगली वैज्ञानिक बन गए, एक व्यक्ति के भाग्य का विश्लेषण करने में कम से कम तीन दिन लगाते हैं। इससे पता चलता है कि किसी इंसान के जीवन का आकलन करना कितना मुश्किल है। भाग्य कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे हल्के में लिया जा सके, कोई साधारण अवधारणा जिसे सिर्फ आठ अक्षरों में आंका जा सके। लेकिन मैं... मैं अपने "अच्छे इरादों" के आगे झुक गया, निक की भलाई की कामना करने लगा, और मैंने लापरवाही से उसके जीवन में दखल दे दिया।
“अहा…किस्मत तो सचमुच होती है, लेकिन अगर आप इंसानी फितरत को नहीं समझते तो यह सब बेमानी है।”
बेहतर किस्मत की खबर सुनकर ज्यादातर लोग राहत महसूस करने लगते हैं। वे अक्सर अचानक उन सभी चीजों की भरपाई करने का फैसला कर लेते हैं जिन्हें उन्होंने अपने मौजूदा लक्ष्यों को प्राप्त करने के दौरान खुद से छीन लिया था।
कुछ लोग कह सकते हैं, "आपको अपने निजी मनोरंजन के लिए भी समय चाहिए," और यह बात बिल्कुल सही है। हालांकि, निक के मन में एक स्पष्ट व्यावसायिक लक्ष्य था, और उसे हासिल करने के लिए समय का विशेष महत्व था। अगर वह अपने व्यवसाय का विस्तार करना चाहता था, तो उसे डेटिंग और शराब पीने में सारा समय बिताने के बजाय एक मजबूत ग्राहक आधार बनाना आवश्यक था।
इसीलिए मैं कभी-कभी लोगों से कहता हूँ कि वे भाग्य पर बहुत अधिक भरोसा
न करें। अगर आपके पास आराम करने और भाग्य के चमत्कार का इंतज़ार करने का समय है, तो मैं उन्हें बताता हूँ कि अपने लक्ष्य की ओर सक्रिय रूप से काम करना कहीं अधिक बुद्धिमानी है। यह सुनना या जानना कि आपका भाग्य सुधरने वाला है, आपको कम से कम थोड़े समय के लिए मन की शांति दे सकता है। हालाँकि, यदि आप सावधान नहीं रहते हैं, तो आप आत्मसंतुष्ट हो सकते हैं और अपने ही कर्मों से अपना भाग्य बर्बाद कर सकते हैं। इसीलिए आलस्य को सात घातक पापों में से एक माना जाता है।

अंततः, निक ने आधा साल "इंतजार" में बर्बाद कर दिया। पाजू में जिस बड़े कैफे के मालिक से उसकी "अच्छी बातचीत" चल रही थी, उसने आखिरकार एक ऐसे प्रतिद्वंद्वी के साथ काम करना चुना जो निक से कम दाम पर सामान बेच रहा था। निक ने कुछ नहीं किया, बस अचानक मिले लाभ का इंतजार करता रहा, और उसे इसका खामियाजा भुगतना पड़ा।
काश, विनिमय दरें बढ़ने से पहले निक को अक्ल आ जाती। काश, उसने मिले हुए अतिरिक्त समय को अपने नए काम में लगा दिया होता। तब शायद निक का व्यवसाय भाग्य के सहारे खूब तरक्की कर लेता। अफसोस, निक की आलस ही उसकी सबसे बड़ी दुश्मन थी, और उसी ने उसकी सफलता की राह रोक दी।
वे लोग जो हर परिस्थिति में सफल होते हैं “पांच लाख डॉलर की वार्षिक आय के साथ, मुझे पांच साल में अमीर हो जाना चाहिए!”
डेविड भारी विनिर्माण उद्योग में शोधकर्ता थे। उन्होंने विदेश में एक इंजीनियरिंग स्कूल से पढ़ाई की थी और डिग्री मिलते ही एक निगम में नौकरी पा ली थी। जब उनसे उनके सपने के बारे में पूछा जाता, तो वे हमेशा यही जवाब देते: किसी कंपनी के उपाध्यक्ष बनना। हालाँकि उन्होंने निचले स्तर से शुरुआत की थी, लेकिन डेविड शीर्ष पर पहुँचने के लिए हर संभव प्रयास करने को तैयार थे। एक साधारण व्यक्ति के रूप में यह उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी। हर चीज़ के प्रति जुनूनी डेविड के पास अपने उन साथियों की तुलना में बेहतर आधार था, जिन्होंने अपनी पढ़ाई के लिए कोरिया में ही रहकर पढ़ाई की थी। विदेशी डिग्री ने उन्हें अपेक्षाकृत अच्छी शुरुआती तनख्वाह दिलाई, जिसकी बदौलत वे कुछ बचत कर पाए। सत्तर वर्ष की आयु के करीब पहुँच चुके उनके माता-पिता को उन पर बहुत गर्व था। लेकिन शायद उन्हें रुकना नहीं आता था। अमीर बनने की डेविड की लालसा ने अतिरिक्त आय अर्जित करने के लिए नासमझी भरे विचारों को जन्म दिया।
डेविड ने अपनी कॉर्पोरेट नौकरी के दौरान बिटकॉइन में निवेश करना शुरू किया। हर रात, वह घंटों अपने फोन पर निवेश से संबंधित यूट्यूब वीडियो देखता था, और उस दिन का सपना देखता था जब वह दुनिया को अपने बेहद सफल निवेश अनुभवों के बारे में बताएगा। लेकिन वह यहीं नहीं रुका। उसने अपने थोड़े से ज्ञान का उपयोग करते हुए एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से हस्तरेखा

शास्त्र की कक्षाएं देना शुरू कर दिया, और यहाँ तक कि अपने "व्याख्यानों" के लिए भुगतान भी लेने लगा।
जैसे-जैसे उसका ध्यान अपने अतिरिक्त काम पर बढ़ता गया, वैसे-वैसे वह अपने मुख्य काम पर कम ध्यान देने लगा। यहाँ तक कि उसने कार्यालय समय में ही अपनी ऑनलाइन कक्षाओं की योजना बनाना शुरू कर दिया। वह दिन-रात व्यस्त होता गया और अपने कार्यक्रम को मिनट-दर-मिनट व्यवस्थित करने लगा। फिर भी, यह अतिरिक्त काम उसकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतर रहा था और उसे नियमित आय का स्रोत नहीं मिल पा रहा था।
पांच साल बाद की बात है। डेविड अब भी एक निचले स्तर का कर्मचारी था, एक कंपनी से दूसरी कंपनी में नौकरी बदलता रहता था। खराब प्रदर्शन के कारण उसे पदोन्नति नहीं मिली और वह अपने क्षेत्र में ही लगातार नौकरियां बदलता रहा। इस सब के दौरान, वह लोगों से यही कहता रहा:
मुझे समझ नहीं आता कि मुझे कभी प्रमोशन क्यों नहीं मिलता। मैं इतनी मेहनत करता हूँ!
मैंने पैसे कमाने के लिए हर संभव कोशिश की है। फिर भी मैं गरीब क्यों हूँ?
अगर डेविड ने अपने मुख्य काम पर ध्यान केंद्रित किया होता और अच्छे परिणाम दिए होते या कंपनी के भीतर नेटवर्किंग में अपना समय और प्रयास लगाया होता, तो उसे पदोन्नति मिल जाती या कम से कम उसके बारे में पहले से कुछ जानकारी मिल जाती। इसके बजाय, वह उपाध्यक्ष बनने के अपने सपने से दूर होता जा रहा था, दो ऐसे लक्ष्यों के पीछे भाग रहा था जो अलग-अलग दिशाओं में जा रहे थे।
अमीर बनने की चाह रखना कोई गलत बात नहीं है, लेकिन अगर आप जल्दबाजी करेंगे और तैयार होने से पहले ही पैसा कमाने के बारे में सोचेंगे तो गलतियाँ करने से बच नहीं पाएंगे।
तेरह सौ डिग्री की आग में कई हज़ार बार पीटे गए बैंग्जा युगी[*3] का उन प्लास्टिक के कटोरे से कोई लेना-देना नहीं है जो इंजेक्शन मोल्ड से प्रति सेकंड चार की दर से निकलते हैं। देखने में ये दोनों वस्तुएँ अपेक्षाकृत समान लग सकती हैं, लेकिन इनमें खाना डालकर देखिए, आपको पता चलेगा कि स्वाद एक जैसा नहीं होता, और न ही प्लास्टिक के बर्तन में खाना ज़्यादा देर तक टिकता है।

पैसों के मामले में भी यही बात लागू होती है। आप किसी भी पात्र में जितना चाहें उतना पैसा रख सकते हैं, लेकिन अगर पात्र टिकाऊ नहीं है, तो वह टिकेगा नहीं। अस्थिर पात्र में रखा पैसा कभी भी गिरकर खराब हो सकता है।

* * *

जितना आप सोचते हैं, उससे कहीं अधिक लोग अपने जीवन के अंतिम वर्षों में अमीर बनते हैं। मेरे कई ग्राहकों के साथ भी ऐसा ही हुआ, जिनमें पचास वर्ष की आयु के एक परिवार के मुखिया भी शामिल थे। बच्चों के जन्म के बाद उन्होंने कई वर्षों तक गरीबी में जीवन बिताया और बाद में स्पीकर और एम्पलीफायर बेचने का एक छोटा व्यवसाय शुरू किया, जिसे उन्होंने एक लाभदायक मध्यम आकार की कंपनी में बदल दिया।
जब लोग मुझसे ऐसी कहानियाँ सुनते हैं, तो उन्हें राहत महसूस होती है। वे सोचते हैं, अरे, ये तो देर से सफल हुए, या सफलता इन्हें देर से मिली। ऐसी प्रतिक्रियाओं के पीछे यह धारणा होती है कि संयोगवश ही इन लोगों को सफलता मिली, कि वे "भाग्यशाली" थे। यह बकवास है। लोग रातोंरात इतने अमीर नहीं बन जाते। शायद "एक स्वस्थ बीज पत्ती"[*4] वाली अभिव्यक्ति अधिक उपयुक्त होगी, इस अर्थ में कि इन लोगों को सफलता और भी पहले मिल जानी चाहिए थी।

* * *

जीवन का नियम कहता है कि कोई भी व्यक्ति तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक उसने सफलता पाने के लिए कोई प्रयास न किया हो, चाहे वह कितना भी इंतजार क्यों न करे। कोई भी नहीं। जो लोग देर से अमीर बने हैं, वे अक्सर कहते हैं: "अगर मैंने इतनी मेहनत न की होती, तो मैं आज इस मुकाम पर नहीं पहुँच पाता।" हैरानी की बात यह है कि कुछ लोग इसे आत्म-संतोष के रूप में लेते हैं, जैसे कि "मैं अभी अमीर नहीं हूँ, लेकिन एक दिन ज़रूर हो जाऊँगा।" यह महज़ एक कोरी कल्पना है कि भले ही वे अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए पूरी कोशिश न करें, फिर भी अवसर उन्हें मिल जाएगा।
इसीलिए मैं लोगों से कहता हूँ कि अगर उनकी किस्मत में देर से सफलता पाना लिखा है, तो जल्दी अमीर बनने की चाहत उनके काम नहीं आएगी। शायद यह

कहावत "महान प्रतिभा देर से खिलती है" के अर्थ पर फिर से विचार करने का अच्छा समय है। मैं कभी-कभी लोगों को यह कहावत इसलिए कहता हूँ ताकि उन्हें याद दिला सकूँ कि कुछ सपनों को पूरा होने में लंबा समय लगता है। लेकिन मैं उनसे यह भी कहता हूँ, चाहे मुझे लगे कि वे देर से सफलता पाने वाले हैं या नहीं: "जिन लोगों की सफलता तय होती है, वे हर हाल में सफल होते हैं।"
वे इसी तरह के लोग हैं।
सबसे बड़ी विपत्ति के बाद ही सबसे बड़ा सौभाग्य प्राप्त होता है।
मुझे शक है कि इस दुनिया में कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो खुद को साल के 365 दिन भाग्यशाली मानता हो। यहां तक कि सबसे भाग्यशाली लोगों को भी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
जब ऐसा पहली बार होता है, तो लोग सोचते हैं: ओह, कोई बात नहीं, लेकिन कोई बात नहीं।
दूसरी बार, उन्हें संदेह होने लगता है: हम्म... मेरा भाग्य साथ नहीं दे रहा है।
जब ऐसा दोबारा होता है, तो लोग अलग तरह से सोचने लगते हैं: आह... शायद मेरे साथ ऐसा होना तय ही नहीं है।
और जब उन्हें बार-बार हार का सामना करना पड़ता है, तो वे हार मान लेते हैं: मुझे पता था... मैं कभी कुछ नहीं बन पाऊंगा।
जब आपको लगातार ऐसा लगता है कि जीवन आपको हरा रहा है, तो आप निराश हो जाते हैं और उम्मीद खो देते हैं। फिर, आप एक नकारात्मक ऊर्जा फैलाने लगते हैं जो लोगों को आपसे दूर कर देती है। आप लगातार असफल होते जाते हैं और आपकी निराशा बढ़ती जाती है। एक दुष्चक्र शुरू हो जाता है। जब आपका भाग्य साथ नहीं देता, खासकर आपकी जवानी के अहम दौर में, तो इसका असर आपके व्यक्तित्व पर पड़ता है। यह सचमुच आपके भाग्य को बदल सकता है।
एक बार ऐसा हो जाए तो, बाद में किस्मत आपके दरवाजे पर दस्तक दे, तब भी आप उसे पकड़ने में असमर्थ हो जाते हैं। यहां तक कि जब पैसा और अवसर आपके सामने होते हैं, तब भी आप उन्हें पकड़ने में असमर्थ प्रतीत होते हैं। हालांकि, अगर ऐसा हो भी जाए तो निराश न हों। जीवन एक नदी की तरह है; सिर्फ इसलिए कि आपने एक बार बहते हुए किसी अवसर को खो दिया, इसका मतलब यह नहीं है कि आप अगली बार आने वाले अवसर को नहीं पकड़ सकते।

जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, इसलिए जब आपको कोई झटका लगे, तो समझदारी से काम लें और उसके भावनात्मक प्रभाव को अपने ऊपर हावी न होने दें। बल्कि, इतना मजबूत बनें कि उस झटके से उबरकर फिर से उठ खड़े हों। इसे एक रूलेट गेम की तरह समझें, जहाँ आप गेंद को यूँ ही लुढ़कने देने के बजाय, बाधाओं और किनारों का उपयोग करके उसे वापस उछालते हैं।

जब टॉम मेरे सामने बैठा, तो मैंने देखा कि उसके कांपते हाथों को स्थिर करने में उसे कुछ समय लगा। सात साल तक टॉम एक पांच सितारा होटल में सबसे कम उम्र का हेड शेफ रहा था, जहाँ वह बिना आराम किए खाना बनाता और मिठाइयाँ सजाता था। लेकिन उसकी शुरुआती सफलता ने उसके ईर्ष्यालु सहकर्मियों में काफी जलन पैदा कर दी थी। जब भी वह पीठ फेरता, उसे बेरहमी से उंगली उठाने का सामना करना पड़ता था। सात साल बाद, उसने होटल छोड़ दिया। वह होटल उद्योग में अपने अनुभव का इस्तेमाल करते हुए अपनी खुद की मिठाई की दुकान खोलने की योजना बना रहा था।
फिलहाल, उसने स्वीकार किया कि अपनी योजना को अमल में लाने से पहले उसे कुछ आराम की ज़रूरत है, जो मुझे आश्चर्यजनक नहीं लगा। मैं टॉम को इस तरह दुविधा में नहीं छोड़ सकता था, इसलिए मैंने धीरे से उससे कहा, "अपना व्यवसाय शुरू करने से पहले कुछ समय लेना ठीक है, लेकिन तुम्हें अपनी वर्तमान भावनात्मक स्थिति से बाहर निकलना होगा।"
"आपका क्या मतलब है?"
"रेत के गड्ढे खतरनाक होते हैं क्योंकि आप जितना ज्यादा खोदते हैं, रेत उतनी ही नीचे खिसकती जाती है, जिससे आपके फंसने का खतरा बढ़ जाता है।" भावनाएँ भी वैसी ही होती हैं। अगर आप अपनी भावनाओं में डूबे रहेंगे और उनका मुकाबला नहीं करेंगे, तो अंततः आप खुद को ही बर्बाद कर लेंगे। क्या आपको लगता है कि एक या दो साल का ब्रेक लेने से आपको वह आत्मविश्वास मिल जाएगा जिसकी आपमें कमी है? इसके विपरीत, यह शायद आपके सारे आत्मविश्वास को ही खत्म कर देगा। आप नया व्यवसाय शुरू करने से डरेंगे, और लगातार हिचकिचाते और काम टालते रहने से आप वह सब कुछ भूल जाएंगे जो आपने सीखा है। जब आपका भाग्य साथ छोड़ दे, तो आप वहीं पड़े रहकर सदमे को सहते नहीं हैं; आप

उस बुरी स्थिति से खुद को निकालने की पूरी कोशिश करते हैं ताकि आप उसमें बह न जाएँ।
मैं सही थी। टॉम एक पूर्णतावादी था, ऐसा व्यक्ति जो पत्थर के पुलों को पार करने से पहले उन्हें खटखटाता था। वह बेहद संवेदनशील और कोमल स्वभाव का व्यक्ति था। उसने खुद माना कि वह बर्फ जमाने वाले चाकू को देखे बिना भी दिल की धड़कन तेज कर लेता था।
टॉम अपने पिछले कार्यस्थल के थका देने वाले और दर्दनाक रिश्तों को याद करके और भी ज़्यादा उदास होता जा रहा था। अगर टॉम मिठाई की दुकान खोल भी लेता, तो उसके जैसे अंतर्मुखी और शर्मीले स्वभाव वाले व्यक्ति को दुकान का प्रभावी प्रचार करने में कम से कम छह महीने और कारोबार को स्थिर होने में एक साल लग जाता। क्या वह इतने लंबे समय तक अनिश्चितता का सामना करने के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम था? ज़्यादातर लोगों के लिए भावनात्मक उथल-पुथल से बाहर निकलना मुश्किल होता है, लेकिन टॉम जैसे लोगों के लिए यह बात और भी ज़्यादा सच थी।
मैंने उसे आखिरी सलाह दी: "कुछ ऐसा करो जिससे तुम्हें कोई पैसा न मिले। यह कुछ भी हो सकता है।"
आमतौर पर, बुरे दौर से गुजरते समय कुछ भी शुरू न करना ही बेहतर होता है क्योंकि चाहे आप कुछ भी कर लें, कोई नतीजा नहीं निकलता। लेकिन टॉम का मामला अलग था। उसे अपनी भावनाओं में डूबने से बचने के लिए कुछ न कुछ करना ही था, चाहे वह छोटा सा ही क्यों न हो।
टॉम ने सिर हिलाते हुए सहमति जताई। फिर उसने आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाना शुरू किया।
उन्हें कुछ ऐसा काम ढूंढना था जिससे तुरंत कोई आर्थिक लाभ न हो, लेकिन फिर भी उनका जीवन चलता रहे। उन्होंने सबसे पहले चीनी शिल्प की योग्यता हासिल करने पर ध्यान केंद्रित किया। मिठाई का व्यवसाय शुरू करने के लिए यह एक आवश्यक तकनीक थी जिसे सीखना उनके लिए अनिवार्य था।
कुछ महीनों बाद, टॉम ने गंगनम के दोसान-डेरो[*5] इलाके में एक प्रमुख स्थान पर एक शानदार मिठाई की दुकान खोली। उन्होंने उच्च श्रेणी के बुटीक कॉन्सेप्ट को अपनाया और कीमतें भी ऊंची रखीं, जिसके चलते उनकी मासिक आय सत्तर हजार डॉलर तक पहुंच गई। उनका कारोबार इतना सफल रहा है कि वे इसे बढ़ा रहे हैं और दूसरी और तीसरी शाखा खोलने की तैयारी में हैं। टॉम ने कहा कि अब

उन्हें ऐसा नहीं लगता कि वे किसी अथाह गड्ढे में फंसे हैं और अब वे काफी हल्का महसूस करते हैं।
“मैं अब अपनी भावनाओं का गुलाम नहीं हूँ। मुझे लगता है कि मैं कुछ भी कर सकता हूँ। मुझे अपने पुराने सहकर्मियों या बर्फ जमाने वाले चाकू से डरना बंद हो गया है।”
अवसाद आपको रेत में फंसे होने जैसा एहसास कराता है। एक बार जब आप अपनी भावनाओं को खुद पर हावी होने देते हैं, तो कुछ भी ठीक नहीं होता, चाहे आपका भाग्य अच्छा हो या बुरा। यहां तक कि धन भी आपसे दूर भाग जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि नकारात्मक ऊर्जा आने वाले किसी भी भाग्य को भगा देती है।

* * *

कुछ समय के लिए, "अवसाद पानी में घुल जाता है" यह वाक्यांश सोशल मीडिया पर ट्रेंड कर रहा था। इंटरनेट उपयोगकर्ता यह तर्क दे रहे थे कि नहाने के बाद बेहतर महसूस करना इस बात का प्रमाण है कि पानी अवसाद को धोकर दूर कर देता है।
क्या सच में ऐसा है? मनोचिकित्सकों द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, व्यायाम करना और टहलना ही ऐसी गतिविधियाँ हैं जो वैज्ञानिक रूप से अवसाद के खिलाफ प्रभावी साबित हुई हैं।
टॉम के उदाहरण ने मुझे एक बात का पक्का यकीन दिला दिया: "अवसाद से क्षय होता है" यह कहना अवसाद को पानी में घुलनशील बताने से कहीं ज़्यादा सटीक है। अपने निराशावादी विचारों में उलझने से आप अभिभूत और शक्तिहीन महसूस करेंगे, मानो रेत आपको निगल रही हो। दूसरी ओर, अगर आप अपनी नकारात्मक भावनाओं को अकेला छोड़ दें, तो वे धीरे-धीरे गायब हो जाएंगी। उन नकारात्मक भावनाओं से दूर रहने से आपका भाग्य फिर से ऊपर की ओर बढ़ने लगेगा: आप अपनी भावनाओं को खुद पर हावी न होने देकर अपने भाग्य को पलट सकते हैं।
अंततः, केवल वही लोग अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रख सकते हैं और अपनी किस्मत को बुलंद कर सकते हैं और अपने धन-संपत्ति पर पूर्ण नियंत्रण पा सकते हैं। एक बार अवसाद में डूब जाने पर, किसी भी काम को करने के लिए खुद को प्रेरित करना मुश्किल हो जाता है। हालांकि, अगर आप उदास होकर बिस्तर पर

पड़े रहेंगे तो कुछ भी नहीं बदलेगा। इसीलिए आपको जल्द से जल्द कुछ काम शुरू करना चाहिए ताकि इन नकारात्मक भावनाओं से छुटकारा पा सकें।

* * *

इस कुशल होटल शेफ को अब इस बात की कोई चिंता नहीं है कि उसके पूर्व सहकर्मी उसके बारे में क्या सोचते हैं। उसे नौकरी छोड़ने या अपने करियर में आए इस व्यवधान का कोई पछतावा नहीं है। केवल अपनी भावनाओं के बंधन से मुक्त हो जाने मात्र से ही वह एक धनी व्यक्ति बन गया है। आप देख सकते हैं कि उसकी सबसे बड़ी खुशी उसके सबसे बड़े दुर्भाग्य के अंत में उसका इंतजार कर रही थी।
अंतिम ग्राहक
बुखान पर्वत की तलहटी में सर्दी आ चुकी थी। मैं सुबह तड़के उठा और वेदी पर ओक-सू[*6] का एक ताजा कटोरा रखा। मैं हमेशा सूर्योदय के साथ अपने मन को शुद्ध करके अपने दिन की शुरुआत करता हूँ।
मैंने अपने घर का भारी लोहे का दरवाजा खोला और बगीचे में कदम रखा, जहाँ हरे-भरे पेड़ और एक पहाड़ी झरना बह रहा था, और चारों ओर प्राचीन ईंटों की दीवारें थीं। एक चीड़ का शंकु जो कल तक मुश्किल से अपनी शाखा पर लटका हुआ था, ज़मीन पर गिर गया था। हवा या किसी गिलहरी ने उसे गिरा दिया होगा। "किसी चीज ने इसे डाल से नीचे गिरा दिया होगा।"
अदृश्य शक्तियों द्वारा संचालित विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं को देखना हमेशा से ही बेहद दिलचस्प रहा है। इससे मुझे भाग्य के चक्र की याद आती है। एक तरह से, मुझे यह कुछ हद तक विडंबनापूर्ण लगा कि मुझ जैसा व्यक्ति, जिसने शोहरत और लोकप्रियता की भौतिक दुनिया में खूब मौज-मस्ती की थी, अब धन और भाग्य को नियंत्रित करने वाली आध्यात्मिक दुनिया में भविष्यवाणियां कर रहा था। दूसरी ओर, मैं इस बात से भी अवगत था कि यह भी एक ऐसा चुनाव था जो मुझे करना ही था। एक और दिन शुरू हो चुका था, जो प्योंगचांग-डोंग की घुमावदार पहाड़ियों से होते हुए एक और जीवन को मेरे दरवाजे तक ले आया था।

"सुश्री यू, मुझे जीवन में कोई अर्थ नहीं दिखता।"

मेरे सामने बैठी बुजुर्ग महिला ने अपना परिचय देते हुए बताया कि वह पहले एक डिजाइनर रह चुकी हैं। वह एक दिग्गज अभिनेता की बड़ी बहन भी थीं। उन्हें देखते ही मुझे लगा कि वह एक बेहद प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।
लगभग सत्तर वर्ष की आयु में भी, वह एक साधारण दादी की बजाय किसी कुलीन महिला जैसी दिखती थीं, उनके भूरे बाल करीने से एक स्टाइलिश जूड़े में बंधे हुए थे। उनका मोटा, लहराता हुआ रेशमी हर्मेस स्कार्फ और आलीशान हस्तनिर्मित बड़ा शॉल मुझे यह यकीन दिलाने के लिए काफी थे कि वह बेहद धनी थीं।
बुजुर्ग महिला धीरे-धीरे बोलने लगी। उसकी कहानी काफी रोचक थी।
उनके पति का देहांत कई साल पहले हो गया था। उनके बच्चे अमेरिका में रहते थे और हर साल उनसे मिलने आते थे। दोस्तों के साथ गोल्फ़ खेलना ही उनका एकमात्र शौक था। उनके पास जीवन भर के लिए पर्याप्त धन था। उन्हें भौतिक चीजों में कोई विशेष रुचि नहीं थी, न ही उन्हें कोई विशेष चिंता थी। अगर उनकी कोई एक इच्छा थी, तो वह यह थी कि वे अपनी विशाल संपत्ति बिना किसी अधिक परेशानी के अपने पोते-पोतियों को सौंप दें। फिर भी उन्होंने कहा कि उन्हें जीवन असहनीय रूप से उबाऊ लगता है।
उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था कि वह बुजुर्ग महिला इतनी गरिमामयी हैं कि मानो अकेली हों। उन्होंने अपनी कहानी जारी रखी।
सच कहूँ तो... मेरे पास करने को कुछ नहीं है। शायद आप समझ न पाएँ। मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं अकेला या दुखी हूँ, बस इतना है कि अब ज़िंदगी में कोई रोमांच नहीं रह गया है। मैंने सब कुछ देख लिया है, सब कुछ अनुभव कर लिया है। मैं उन सभी जगहों पर जा चुका हूँ जिन्हें लोग धरती पर स्वर्ग कहते हैं। अब हर जगह एक जैसी लगती है, चाहे मैं कहीं भी जाऊँ। अब मुझे ज़िंदगी में कुछ भी रोमांचक नहीं लगता। मुझे खुशी या उदासी जैसी भावनाएँ महसूस करना भी मुश्किल लगता है। मैं बस साँस ले रहा हूँ। जब आपके पास कुछ भी ऐसा न हो जिसमें आपकी रुचि हो, तो इसका मतलब है कि आपके पास जीने का कोई मकसद नहीं है।
उनकी सबसे बड़ी बेटी एक प्रतिभाशाली महिला थीं, जिन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका में कानून की पढ़ाई पूरी की, एक कोरियाई-अमेरिकी व्यवसायी से शादी की और एक सुखी परिवार बसाया। उनकी सबसे छोटी बेटी भी बहुत होशियार थीं। उन्होंने कोरियाई विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की और

फिर दुनिया के तीन शीर्ष फैशन स्कूलों में से एक, पार्सन्स स्कूल ऑफ डिजाइन में दाखिला लिया। अब वह अपनी इन डिग्रियों के दम पर एक वैश्विक डिजाइनर के रूप में अपना करियर शुरू कर रही थीं।
उस महिला की छोटी बहन का जीवन भी सुखमय था। उन्होंने दशकों तक एक सफल अभिनय करियर बनाया था और आज भी उतनी ही लोकप्रिय थीं। बुजुर्ग महिला और उनकी बहन हमेशा एक-दूसरे के बहुत करीब थीं और दोनों बहनें एक-दूसरे को बहुत प्यार करती थीं। उनके बच्चे और बहन दोनों ही बेहद सफल रहे। उनका पूरा जीवन सफलता से भरा हुआ प्रतीत होता था।
लेकिन उस बूढ़ी महिला ने आपत्ति जताते हुए साफ तौर पर कहा कि उसके परिवार के सदस्यों का जीवन उनका अपना मामला है और उससे उसका कोई लेना-देना नहीं है।
"इतनी दौलत होने पर आप खुश क्यों नहीं होंगे?"
मुझे समझ नहीं आया।
“जब मैं छोटी थी, तो सोचती थी कि कितना अच्छा होता अगर मेरे पास बहुत सारा पैसा होता। खासकर तब जब मैं एक डिज़ाइनर के तौर पर काम कर रही थी। उस समय मैं पैसे और सफलता के पीछे इतनी भागती थी कि मेरा सारा ध्यान उसी पर केंद्रित था। फैशन डिज़ाइनर के रूप में शुरुआत करने के तीन साल बाद ही मैंने अपना पहला ब्रांड लॉन्च कर दिया। मैंने अमेरिका में अपना कारोबार फैलाने का सपना भी पूरा कर लिया। जैसे-जैसे मेरे ग्राहक बढ़ते गए, मुझे हाई फैशन के कपड़ों के ऑर्डर भी मिलने लगे। मैंने बहुत जल्दी बहुत पैसा कमा लिया। पैसा मेरे लिए कोई चिंता की बात नहीं रह गई थी, मैं जहाँ भी जाती, जो भी करती। पिछले चालीस सालों से मैं इसी तरह जी रही हूँ। लेकिन अब जब मुझे किसी चीज की कमी नहीं है, तो मैं सोचती हूँ कि मैं अपनी जिंदगी में क्या कर सकती हूँ। बस यही एक बात मेरे दिमाग में घूमती रहती है, और मैं असमंजस में हूँ। मैंने यह सीख लिया है कि महंगे बैग लेकर घूमना और विदेशी कारों में सफर करना कुछ ही समय के लिए खुशी देता है। ये चीजें मुझे ज़्यादा से ज़्यादा दो हफ़्ते तक ही खुश रख पाती थीं।”
उस बूढ़ी औरत की खाली आँखों में देखते हुए मुझे एहसास हुआ।
उसे अब तक के सबसे बड़े रोमांच का अनुभव हो चुका है, और वह यह जानती है।
उस बुढ़िया और आम कामगारों के बीच इतना बड़ा अंतर था, जो हर महीने की तनख्वाह पर जीते थे, जो मुझे विडंबनापूर्ण लगा। जहाँ आम कामगार अपनी

जीविका चलाने के लिए क्या कर सकते हैं? या मैं अपना घर कब खरीद पाऊँगी? जैसी बुनियादी व्यावहारिक बातों को लेकर चिंतित रहते थे, वहीं उस बुढ़िया का मन आध्यात्मिक सवालों में उलझा रहता था, जैसे, क्या मैं कह सकती हूँ कि मैंने सुखी जीवन जिया है? या एक सार्थक जीवन क्या होता है?

मेरे मन में एक बुनियादी सवाल था: जब पैसे से करने के लिए इतनी सारी चीजें मौजूद हैं, तब भी इंसान अधूरापन क्यों महसूस कर सकता है?
किस्मत की दुनिया में कदम रखने से पहले और बाद में, मैं जीवन के हर क्षेत्र से जुड़े लोगों से मिला हूँ। लगभग पूरी तरह से मशहूर हस्तियों और अमीर लोगों के साथ रहने के कारण, मेरे मानदंड बहुत ऊँचे थे। इसने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया था कि धन ही एक संपूर्ण जीवन की, सच्ची खुशी पाने की आखिरी कुंजी है। मैं गलत था। अक्सर, एक सितारे का वास्तविक जीवन बाहरी व्यक्ति को जैसा दिखता है, उससे बिल्कुल अलग होता है, चाहे वे कितना भी कमा लें।
शिखर पर पहुँचते ही, नीचे उतरने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचता। यही वजह थी कि एक मेहनती कॉमेडियन शिखर पर पहुँचने के तुरंत बाद टूट गया और लोगों की नज़रों से पूरी तरह गायब हो गया: उसे इस सोच से असहनीय निराशा हुई कि वह "और आगे नहीं चढ़ सकता।" कुछ लोग चढ़ाई के बीच में ही थककर हार मान लेते हैं, और कुछ लोग अपने लक्ष्य तक पहुँचते ही जीने की इच्छा खो देते हैं।
दो चरम सीमाओं में हमेशा एक बात समान होती है: दोनों में से कोई भी पक्ष खुश नहीं हो सकता।

* * *

बुजुर्ग महिला कुछ पल तक खालीपन में देखती रही, फिर उसकी निगाह खिड़की के दूसरी ओर मौजूद चीड़ के पेड़ पर टिक गई। इसके बाद उसने जो कहा, उससे मैं हैरान रह गया।
“सुश्री यू। कुछ ऐसा करना जो आप चाहती हों, कुछ ऐसा पाना जो आप चाहती हों, यही सबसे अच्छी बात है। तीन हज़ार डॉलर की किसी चीज़ की चाह रखना, जबकि आपके पास सिर्फ़ एक हज़ार डॉलर हों। किसी चीज़ के लिए वो तड़प, पैसा

कमाने का वो मकसद, यही सबसे अच्छी बात है। यही आपको ‘जीने की ताकत’ देता है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता? मेरे पास तो अब वो भी नहीं है…”
जब मैंने इस बारे में गहराई से सोचा, तो वास्तव में एक इच्छाहीन धनी व्यक्ति और एक इच्छाशील धनी व्यक्ति में बहुत बड़ा अंतर था। पहले प्रकार के धनी व्यक्ति की पाँचों इंद्रियाँ तृप्त हो चुकी थीं, इसलिए उनके लिए "अगला कदम" जैसी कोई बात ही नहीं थी। वहीं, दूसरे प्रकार के धनी व्यक्ति में जीवन के प्रति एक अटूट प्यास थी क्योंकि अभी भी बहुत कुछ ऐसा था जिसे वे अनुभव करना चाहते थे।
वृद्धावस्था में सुख का आनंद लेने वाले धनी लोग वे होते हैं जो वास्तविकता से अवगत रहते हैं। वे अपनी इच्छाशक्ति का प्रयोग जारी रखते हुए आध्यात्मिक संतुष्टि और भौतिक समृद्धि, दोनों को एक साथ प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। वे अपने लक्ष्यों को कभी नहीं भूलते और उन्हें साकार करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ते, चाहे वह धन की एक निश्चित राशि हो या कोई अधूरा सपना।

* * *

तीस मिनट के पूरे सेशन के दौरान उस बुज़ुर्ग महिला ने मुझसे एक भी सलाह नहीं मांगी। उन्होंने अपने मन में गहरे खालीपन का एहसास खुलकर साझा किया और फिर चली गईं। वह पहली और आखिरी मरीज़ थीं जिन्होंने मुझे धन और भाग्य के बारे में सबक सिखाया, जबकि आमतौर पर मैं ही उन्हें सिखाता हूँ।
उन्होंने मुझे सिखाया कि एक सपना देखना बेहतर है, चाहे वह छोटा ही क्यों न हो, जिस पर आपको विश्वास हो, भले ही इसका मतलब यह हो कि आपका भाग्य अभी बनना बाकी है। उस बुजुर्ग महिला से मैंने जो सीखा वह एक अनमोल सबक था जिसे मैं दुनिया के सारे सोने के बदले भी नहीं छोड़ूंगा।
अब जब आपने धन और भाग्य का रहस्य जान लिया है, तो आपको किस प्रकार का धनी व्यक्ति बनने का लक्ष्य रखना चाहिए?
जहां भाग्य की देवी निवास करती है
एक समस्या सुलझाते ही दूसरी सामने आ जाती है। जब से मैंने ज्योतिषी बनना शुरू किया है, तब से कई बार ग्राहकों के साथ ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ा है। मैं उनकी एक समस्या सुलझाता, तो वे दूसरी समस्या लेकर लौट आते।

फिर एक समय मुझे एहसास हुआ: बहुत से लोग उस समस्या से उपजे तनाव से छुटकारा पाने में असमर्थ थे, जिसके बारे में वे कुछ नहीं कर सकते थे।
बहुत कम लोग इस सवाल को लेकर परेशान होते हैं कि, अगर कल मेरा बॉस मुझे कोई काम दे दे तो क्या होगा? ज़्यादातर लोग उन अस्पष्ट समस्याओं को लेकर चिंतित रहते हैं जिनके बारे में उन्हें तुरंत चिंता करने की ज़रूरत नहीं होती, जैसे कि, क्या मुझे इस कंपनी में काम करते रहना चाहिए? या अगले साल मैं अपनी रोज़ी-रोटी कमाने के लिए क्या करूँगा?
भाग्य के मामले में भी कुछ ऐसा ही है। झगड़े के बाद कोई मुझसे यह नहीं पूछता कि अपने पार्टनर से सुलह कैसे की जाए। ज्यादातर मामलों में, लोग दूर के भविष्य के बारे में जानना चाहते हैं, जैसे, "क्या यह व्यक्ति शादी के लिए अच्छा साथी है?" या "क्या हम साथ में खुश रहेंगे?" पैसे के मामले में, लोग उन मुद्दों पर ज्यादा ध्यान देते हैं जिन्हें वे खुद हल नहीं कर सकते, बजाय इसके कि वे कितना पैसा कमाने की योजना बना रहे हैं और कैसे।

* * *

एक आदमी "चिंता" नामक देश में रहता था और अमीर बनने का सपना देखता था। उसकी ज़िंदगी भर की पहेली और मिशन यही था कि पैसा मिलने पर उसे कहाँ निवेश किया जाए। उसने सबसे पहले करों से बचने के लिए एक स्विस बैंक में गुप्त खाता खोला। यह हो जाने के बाद, उसे एक और समस्या का सामना करना पड़ा। वह सोचने लगा कि अपने खाते में इतनी बड़ी रकम जमा करने के लिए वह पैसा कैसे कमाएगा। कुछ सोचने के बाद, उस आदमी ने पैसा कमाने के लिए हर संभव कोशिश शुरू कर दी। उसने पूरी ज़िंदगी मितव्ययी जीवन जिया, भोजन और कपड़ों जैसी ज़रूरी चीज़ों पर भी कम खर्च किया।
कई उतार-चढ़ावों और बलिदानों के बाद, वह दस लाख डॉलर बचाने में कामयाब रहा। अब स्विट्जरलैंड भेजने का समय आ गया था। लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं हुई। उसकी तरह अमीर बनने का सपना देखने वाले लोग सालों से वहां पैसे भेज रहे थे। बात यहां तक पहुंच गई थी कि सरकार ने कर चोरी के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी थी, वित्तीय मामलों की जांच शुरू कर दी थी और नागरिकों से विदेशों में भेजे गए पैसों का कारण बताने को कहा था। एक और अप्रत्याशित

मोड़ आ गया था। अब उस आदमी को बस यही चिंता सता रही थी कि दस लाख डॉलर स्विट्जरलैंड कैसे भेजे जाएं। अफसोस, जवाब मिलने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। उसने अपना सारा ध्यान दस लाख डॉलर पर लगा दिया था, इस बात से बेखबर कि वह पैसे बचाने के लिए अपनी सेहत की कुर्बानी दे रहा है। वह अनिश्चित भविष्य से खुद को बचाने की कोशिश में इतना मग्न था कि उसने अपने सामने की वास्तविकता को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया था। उसने अपनी चिंता को उसे गुमराह करने दिया। चिंता का यही नतीजा होता है।
अगर आपका लक्ष्य लाखों कमाना है, तो सिर्फ़ सपने मत देखिए। इसे छोटे- छोटे हिस्सों में बाँटिए और उन्हें अपना लक्ष्य बनाइए, ताकि एक ही सपने के पीछे भागते हुए आप अपनी ज़िंदगी को बर्बाद न कर दें। एक ऐसे धन का सपना देखिए जो व्यावहारिक हो। इस दुनिया में भाग्य भी होता है, जैसे हर चीज़ का एक सही समय होता है। इसलिए भाग्य और समय की उन अदृश्य शक्तियों के बारे में चिंता न करें जिन पर आपका कोई नियंत्रण नहीं है। इसके बजाय, अपने सामने मौजूद चीज़ों से अपना भाग्य खुद बनाइए, ताकि सौभाग्य और धन आपके रास्ते में ज़रूर आए।

* * *

“धन्यवाद, यह वाकई बहुत बढ़िया सामग्री थी। मुझे उम्मीद है कि हमें अक्सर साथ काम करने का मौका मिलेगा।”
एक मधुर ध्वनि से मुझे पता चला कि मुझे एक संदेश मिला है। मैंने अपना फोन चेक किया। यह उस प्रोडक्शन टीम का ईमेल था जिसने एक कार्यक्रम का ऑर्डर दिया था।
कुछ समय पहले, मैंने अपने बैंक खाते में एक ऐसी रकम देखी जिसकी मुझे उम्मीद नहीं थी। मैंने एक के बाद के शून्य गिने। पाँच शून्य थे। एक लाख डॉलर। मुझे उतनी ही रकम मिली जितनी उन लोगों को मिली थी जिन्हें मैं कभी खुद से बिल्कुल अलग श्रेणी में रखता था। मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ।
पिछले साल लगभग इसी समय मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी थी। मैंने नेटवर्क छोड़ दिया, लेकिन प्रसारण का काम कभी नहीं छोड़ा। अपना खुद का काम शुरू

करने के बाद कई महीनों तक मैंने अपना पूरा समय कंटेंट बनाने में लगाया। मेरा ध्यान सिर्फ काम पर था, यहाँ तक कि मैंने अपने बैंक खाते में आने वाले पैसों को भी नज़रअंदाज़ कर दिया।
इसी दौरान मैंने अपने नाम से एक प्रोडक्शन कंपनी स्थापित की। किस्मत ने साथ दे दिया था, फिर भी मैं अपने सपनों के काम को छोड़ने का इरादा नहीं रखता था। एक मुख्य निर्माता (सीपी) के रूप में, मैंने बेहतरीन कंटेंट बनाने के लिए दिन-रात मेहनत की।
कुछ भी आसान नहीं था। मैंने जिस वेब ड्रामा में बहुत पैसा लगाया था, वह रिलीज़ होने से पहले ही रद्द हो गया, जिससे मुझे भारी नुकसान हुआ। उसके बाद, मैंने अपनी पिछली असफलता से मिले सबक को शामिल करते हुए एक मनोरंजन शो बनाया और उस नुकसान की भरपाई कर ली। जैसे-जैसे मेरी आय बढ़ती गई, मैंने नए कर्मचारियों को भर्ती करना शुरू कर दिया और मेरी कंपनी लगातार बढ़ती रही। धीरे-धीरे, हमने अपने व्यवसाय को प्रसारण शो से मोबाइल और यूट्यूब कंटेंट, वायरल वीडियो और अन्य क्षेत्रों तक विस्तारित किया।
अब मैं यहाँ हूँ, अपने सौभाग्य को पूरी तरह से महसूस कर रहा हूँ। मैंने देखा है कि मेरी आमदनी पहले महीने में पाँच सौ डॉलर से बढ़कर दो सौ गुना हो गई है, जब मैंने खुद का काम शुरू किया था। यह नाटकीय बदलाव एक परिवर्तन का दौर भी था: अब समय आ गया था कि मैं अपने भाग्य को एक सुनहरे अवसर में तब्दील करने के लिए किए गए प्रयासों को सही दिशा में लगाऊँ। जब मैं अपने भाग्य में आए इस बदलाव पर विचार करता हूँ, तो मुझे भाग्य की देवी के बारे में एक पुरानी कहानी याद आ जाती है, जो मैंने पहले सुनी थी।

रोमन पौराणिक कथाओं में फोर्टुना नाम की एक देवी हैं। उन्हें हमेशा एक चक्र पकड़े हुए दिखाया जाता है, जिसका उपयोग वे मनुष्य के भाग्य का निर्धारण करने के लिए करती हैं। देवी की यह छवि आमतौर पर एक रूपक के रूप में समझी जाती है जो यह दर्शाती है कि जीवन की शुरुआत और अंत पहले से ही निर्धारित होते हैं। फोर्टुना के चक्र से चिपके हुए मनुष्य उन लोगों का प्रतीक हैं जिनका जीवन भाग्य की मनमानी के कारण उलट-पुलट हो जाता है, या वे

स्वयं मानव जीवन को दर्शाते हैं, जिसमें इसके स्वर्णिम युग और अंधकारमय युग दोनों शामिल हैं।
फोर्टुना के एक हाथ में पतवार है जिसका उपयोग वह भाग्य को नियंत्रित करने के लिए करती है। उसके जूतों पर बने पंख भाग्य की मायावी प्रकृति का संकेत देते हैं। अंत में, उसके पास एक अथाह घड़ा भी है जो अप्राप्य सुख की स्थिति को दर्शाता है।
एक महत्वपूर्ण बात जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए वह यह है कि फोर्टुना को अक्सर उनके बगल में एक ग्लोब के साथ चित्रित किया जाता है, जो भाग्य की अपूर्णता का प्रतीक है। ग्लोब का उपयोग यह बताने के लिए किया जाता है कि एक देवता भी हमेशा मनुष्य के भाग्य का आकलन नहीं कर सकता, और व्यक्ति अपनी इच्छाशक्ति से अपने भाग्य को बदल सकता है।
अब मैं भाग्य और किस्मत को बेहतर ढंग से समझता हूँ। अगर कोई अटल नियति नहीं है, तो आपको अपनी नियति खुद बनानी होगी। कोई नहीं जानता कि उसकी नियति उसे कहाँ ले जाएगी और किन रास्तों से गुज़ारेगी। हवा की तरह आप उसकी दिशा का एक अस्पष्ट अनुमान लगा सकते हैं, लेकिन अंततः, आपको उसे जीकर ही पता लगाना होता है।
मैं पहले खुद से पूछता था: क्या मेरी किस्मत अच्छी है? क्या मेरी किस्मत खराब है? अब मैं खुद से पूछता हूं और अपने ग्राहकों को भी धीरे से यही सवाल पूछने के लिए प्रेरित करता हूं: क्या मैं उस तरह का व्यक्ति हूं जो किस्मत का इंतजार करता है या अपनी किस्मत खुद बनाता है?

* * *

जब से मैंने भाग्य की दुनिया में कदम रखा है, तब से बहुत कुछ बदल गया है। अब मुझे अपने भाग्य के बारे में एक व्यापक समझ है, और मैं समझता हूं कि अधिकांश लोगों का भाग्य अपेक्षाकृत सामान्य होता है।
इस समय, मेरे अतीत के संघर्ष धुंधली यादों में तब्दील हो गए हैं।
अब मुझे पैसों की चिंता या फिक्र नहीं होती। इसके बजाय, मैं हर दिन को यथासंभव सच्चाई से जीने की पूरी कोशिश करती हूँ, एक-एक कदम करके। अंततः, जीवन का पहिया तो मैं ही घुमाती हूँ, और भाग्य की बागडोर मेरे भीतर ही है।

अपनी किस्मत बदलने के अप्रत्याशित तरीके करियर, प्रेम, विवाह, धन, दौलत, सफलता, सम्मान, दीर्घायु... जीवन में और क्या- क्या भाग्य द्वारा निर्धारित होता है? कुछ लोग कहते हैं कि सब कुछ पहले से तय होता है। वे लोग केवल आधे ही सही हैं। आप अपने भाग्य को अपने अंदर भरी हुई चीजों के आधार पर बदल सकते हैं, जैसे कहावत है, "फूलदान में फूल रखने से वह फूलदान बन जाता है, और शहद से भरने से वह शहद का घड़ा बन जाता है।"
इस दुनिया में ऐसे लोग हैं जो हर दिन अपने जीवन को संवारकर और निखारकर अपनी किस्मत बदल देते हैं। उन्होंने इस प्रयास में एक हजार घंटे समर्पित किए हैं। यह तरीका वास्तव में काफी सरल है।
ये लोग सुबह उठते ही सबसे पहले यह सोचते हैं कि उन्हें उस दिन क्या करना है। अगर आप पहले से ही अनुमान लगा लें कि क्या हो सकता है, तो आप अप्रत्याशित जोखिमों और गलतियों पर कुछ हद तक नियंत्रण रख सकते हैं। आगे की योजना बनाना ही अपनी किस्मत बदलने का पहला कदम है। मान लीजिए आप किसी ग्राहक से मिल रहे हैं। अगर आप पूरी तरह से तैयार हैं, तो आप उन पर अच्छा प्रभाव डालने के लिए और भी अधिक प्रयास करेंगे। इस तरह का दृष्टिकोण बेहतर परिणाम भी लाएगा, क्योंकि अगर आपको अचानक कुछ करना पड़े, तो आप पूरी तरह से असमंजस में नहीं पड़ेंगे।
ये लोग हर रात सोने से पहले जो आखिरी काम करते हैं, वह है दिन भर के अपने कार्यों का गहन चिंतन करना। यह प्रक्रिया उन्हें अपने भविष्य और उसके प्रति अपने दृष्टिकोण को निखारने और आने वाले कल पर नियंत्रण पाने में मदद करती है। वे अपने सही कार्यों के लिए खुद की प्रशंसा करते हैं और बेहतर करने के लिए खुद को प्रोत्साहित करते हैं। वे यह भी देखते हैं कि उनमें धैर्य की कमी कहाँ थी, उन्हें कहाँ कठिनाई हुई, इत्यादि। अपने भविष्य को बदलने के लिए प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा करके प्रयास करने से आपको अपने हृदय पर भी नियंत्रण मिलता है। यही कारण है कि एक अकुशल व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता, चाहे उसका भविष्य कितना भी महान क्यों न हो।
नोट्स छोड़ें
*1 सियोल में एक छोटा सा नदी द्वीप जो लंदन के सिटी या न्यूयॉर्क के वॉल स्ट्रीट के समकक्ष है।
*2 पाजू, सियोल के उत्तर-पश्चिम में, ग्योंगगी-डो क्षेत्र में स्थित एक शहर है।
*3 बैंग्जा युगी एक प्रकार का पारंपरिक कोरियाई कांस्य बर्तन है। इसके रोगाणुनाशक और रोगाणुरोधी गुणों के कारण इसका उपयोग अक्सर शाही परिवार द्वारा किया जाता था।

*4 कोरियाई कहावत से, "आप एक ऐसे पेड़ को पहचान सकते हैं जो बीज के पत्ते के रूप में भी बड़ा और स्वस्थ होने वाला है।"
*5 दोसान-डेरो के आसपास का क्षेत्र एक लोकप्रिय लक्जरी खरीदारी स्थल है, जो अपने ट्रेंडी रेस्तरां और कैफे, कॉस्मेटिक सर्जरी क्लीनिक और उच्च स्तरीय आवासीय भवनों के लिए भी जाना जाता है। पश्चिमी देशों में इसका समकक्ष न्यूयॉर्क का फिफ्थ एवेन्यू होगा।
*6 शाब्दिक रूप से "जेड जल" या जियोंग-ह्वा-सू, जो भोर में कुएं से निकाले गए दिन के सबसे ताजे
और स्वच्छ जल को दर्शाता है। यह देवताओं को अर्पित की जाने वाली सबसे बुनियादी और आवश्यक वस्तुओं में से एक है।

लेखक के बारे में

मिन जी यू भाग्य और नियति की आजीवन अध्येता हैं, जिनका संबंध कोरियाई रहस्यवादियों की एक लंबी परंपरा से है। अपने बीसवें दशक में उन्होंने कोरियाई टीवी उद्योग में काम किया, जहाँ उन्होंने देखा कि सफल लोग अपने भाग्य का सदुपयोग कैसे करते हैं। वे कोरियाई परंपराओं के अपने ज्ञान और अपनी दादी से विरासत में मिली सहज क्षमताओं का उपयोग करते हुए ग्राहकों को हर रूप में धन प्राप्त करने के लिए सलाह देती हैं।
जिनम्युंग ली एक कॉन्फ्रेंस इंटरप्रेटर और ट्रांसलेटर हैं जो अंग्रेजी, फ्रेंच और कोरियाई भाषाओं में काम करती हैं। उन्होंने साइंसेज पो पेरिस से इंटरनेशनल पब्लिक मैनेजमेंट में एम.ए. और इवा वूमेंस यूनिवर्सिटी से कोरियाई-अंग्रेजी इंटरप्रिटेशन में एम.ए. किया है। वह वर्तमान में दक्षिण कोरिया के सियोल में रहती हैं।

Penguin
Random House
PENGUIN PUBLISHING GROUP

[illegible]?

[illegible]!

[illegible]

[illegible]

_156335384_